सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

८१

(१७ जुलाई, १९४५ – ३१ अक्तूबर, १९४५)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

अक्तूबर, १९९० (कार्तिक १९१२)

दस रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली - ११०००१ द्वारा प्रकाशित और
जितेन्द्र ठाकोरभाई देसाई, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद - ३८००१४ द्वारा मुद्रित

भूमिका

प्रस्तुत खण्डकी साढ़े तीन महीनेकी अवधि (१७ जुलाईसे ३१ अक्तूबर, १९४५) में से लगभग ढाई महीने (बम्बईके संक्षिप्त प्रवासको छोड़कर) गांधीजी ने पूनाके प्राकृतिक चिकित्सालयमें वल्लभभाई पटेलके इलाजकी देखरेख करने तथा असंख्य पत्रोंके उत्तर देने-दिलाने में बिताये। इस दौरान गांधीजी ने सार्वजनिक समस्याओंके प्रति धैर्यपूर्वक अनासक्ति रखी और उन्होंने इस विषयमें बहुत कम कहा या लिखा। यहाँ तक कि (६ तथा ९ अगस्तको) हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम गिराये जाने जैसी महत्त्वपूर्ण घटनापर भी उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं की। एक अमेरिकी संवाददातासे केवल इतना ही कहा, "अगर कुछ कर सका तो अवश्य करूँगा" (पृ० ४५६)। इसी संवाददातासे उन्होंने इससे पहले यह कहा था, "दुनियाको मेरे विचार जानने की जल्दी नहीं है" (पृ० १७७)।

खण्डका आरम्भ अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए जून-जुलाईमें हुए शिमला सम्मेलनकी विफलतासे होता है। शिमलासे लौटते हुए 'पीपुल्स वार' के संवाददाताको दी गई भेंटमें गांधीजी ने कहा कि सम्मेलनमें अपनाये कांग्रेसके रुखसे उसका अपना "राष्ट्रीय स्वरूप" सिद्ध हो गया है। "यह कहना गलत है कि सम्मेलन एक स्थानके सवालको लेकर विफल हो गया। कांग्रेस एक सिद्धान्तके लिए लड़ रही थी...हम तो सभी दलों और सम्प्रदायोंके सुयोग्य व्यक्तियोंकी तलाशमें थे। हमें इस बातकी कोई फिक्र नहीं थी कि किस दलको कितने स्थान मिलते हैं।" गांधीजी ने महसूस किया कि "स्थितिके गृह-युद्धका रूप ले लेने का खतरा है" इसलिए आपसमें दोषारोपण नहीं करना चाहिए। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "सत्य तो कहना ही होगा" (पृ० २-३)।

किन्तु जल्दी ही राजनीतिक स्थितिमें एक सुखद परिवर्तन आ गया, जब ग्रेट ब्रिटेनकी लेबर पार्टीने आम चुनावमें शानदार विजयके पश्चात् अगस्तके प्रथम सप्ताहमें सत्ता सँभाली। लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्सकी भारत मन्त्रीके पदपर नियुक्ति होने पर गांधीजी ने सतर्कतापूर्ण आशावादी दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए अपने बधाई-सन्देशमें यह आशा प्रकट की कि उनके हाथों "इंडिया ऑफिस का ठीकसे अन्तिम संस्कार" होगा तथा उसकी "भस्म-राशिपर एक भव्यतर स्मारक खड़ा" होगा (पृ० ७५)। उनकी यह आशा उचित सिद्ध होती सी लगी। २१ अगस्तको भारत सरकारने यह घोषणा की कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सभाओंके चुनाव, जो युद्धके कारण स्थगित कर दिये गये थे, जल्दी ही होंगे तथा वाइसरायने ब्रिटिश सरकारसे विचार-विमर्श करके अपनी लन्दन यात्राके पश्चात् १९ सितम्बरको

ब्रिटिश सरकारके इस आशयकी घोषणा की कि वह विधान-सभाके नव-निर्वाचित सदस्योंके साथ मिलकर संविधान निर्माण समितिका गठन करेगी। इस प्रकार कांग्रेस वल्लभभाईकी देखरेखमें चुनावकी तैयारीमें जुट गई।

इन चुनावोंमें गांधीजी ने कोई रुचि नहीं ली। जैसा कि बम्बईके उदारवादी नेता चिमनलाल सीतलवाडको एक पत्रमें गांधीजी ने लिखा कि उन्होंने बहुत सालोंसे चुनावोंमें दिलचस्पी लेना छोड़ दिया है और अभी भी पूनामें वल्लभभाईके साथ एक ही छतके नीचे रहते हुए भी उन्होंने इस विषयमें उनसे शायद ही कभी बात की हो (पृ० ३३३)। गांधीजी इस बातका हमेशा ध्यान रखते थे कि उनके सहयोगियोंको किसी प्रकार अटपटी स्थितिका सामना न करना पड़े और अब तो यह संयम गांधीजी और कांग्रेस नेताओंके बीच मतभेदोंको देखते हुए और भी जरूरी हो गया था। इस सम्बन्धमें उन्होंने एक सार्वजनिक वक्तव्य भी जारी किया जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जब कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य जेलमें थे तो वे उन्हें कभी-कभी कांग्रेस सम्बन्धी मामलोंमें सलाह देते रहते थे, लेकिन अब उनसे ऐसे प्रश्नोंको न पूछा जाये क्योंकि "यदि मैंने स्वतन्त्र रूपसे सलाह दी तो हो सकता है कि वह उनकी रायके विरुद्ध हो और उनके लिए परेशानी पैदा कर दे, बल्कि उन्हें या मुझे शायद गलत स्थितिमें भी डाल दे..." (पृ० ७९)। वास्तवमें ऐसी स्थिति शिमला सम्मेलनके समय उत्पन्न हो गई थी। गांधीजी द्वारा स्वीकृत भूलाभाई देसाई-लियाकत अली समझौतेमें अस्थायी सरकारके गठनके लिए कांग्रेस-लीग समानताकी शर्तपर बल दिया गया था, लेकिन गांधीजी के आग्रहके बावजूद कांग्रेस कार्य-समिति वाइसराय द्वारा प्रस्तावित हिन्दू-मुस्लिम समानताके फार्मूलेको अमलमें लाने पर सहमत हो गई (पृ० ३)। सितम्बर १९४४ में हुई बातचीतके दौरान कांग्रेस कार्य-समितिने गांधीजी द्वारा जिन्नाको सीमित पाकिस्तान देने के सुझाव का भी विरोध किया (देखिए खण्ड ७८); फिर भी, गांधीजी ने यह स्पष्ट करना जरूरी समझा कि ये उनके व्यक्तिगत विचार थे (पृ० ७९) और वल्लभभाई तथा अन्य सदस्य सार्वजनिक रूपसे इसका विरोध प्रकट करने के लिए स्वतन्त्र हैं (पृ० ११८)।

परन्तु जवाहरलाल नेहरूके साथ हुए एक और मतभेदका गांधीजी पर व्यक्तिगत रूपसे बहुत असर पड़ा। हालाँकि एक लोकतान्त्रिक व्यक्ति होने के नाते उन्होंने इस बातको स्वीकार तो कर लिया कि जवाहरलालको अपने विचारोंपर अमल करने की पूरी आजादी है, फिर भी इस मतभेदके कारण उन्हें गहरा आघात पहुँचा। यह मतभेद गांधीजी के स्वतन्त्र भारतके स्वरूपकी कल्पनासे सम्बन्धित था जिसका वर्णन उन्होंने 'हिन्द स्वराज' में किया था। इस पुस्तिकाका बहुत गलत अर्थ लगाया गया और इसके कारण गांधीजी की पुनरुत्थानवादी तथा मध्ययुगीन दृष्टि वाला व्यक्ति कहकर निन्दा की गई। शायद नेहरूका भी गांधीजी के बारेमें यही विचार था और उद्योगीकरण तथा विज्ञानके माध्यमसे प्रगति

करने के अपने जीवन्त विश्वासके कारण वे गांधीजी के ग्रामीण पुनर्निर्माणके कार्यक्रमोंके प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। गांधीजी ने एक स्पष्ट और व्यक्तिगत पत्रमें अपने दिलकी बात कह डाली। इसमें उन्होंने उन मानवीय मूल्योंको स्पष्ट किया जिन्होंने उनके ठोस कार्यक्रमोंको प्रेरणा दी तथा उन्हें बल प्रदान किया। इसका मुख्य विषय उनकी यह धारणा थी कि यदि समाजकी नींव सत्य और अहिंसापर नहीं रखी गई तो "मनुष्य जातिका नाश" हो जायेगा। और यह भी कि लोग "सत्य तथा अहिंसाके दर्शन केवल देहातोंकी सादगीमें ही कर सकते हैं" या फिर उन्हें उस अर्थ-व्यवस्थामें देखा जा सकता है जिसका प्रतीक चरखा है और जिसमें "मनुष्य जीवनके लिए जितनी जरूरतकी चीज है उसपर उसका निजी काबू हो"। गांधीजी का विचार था कि ऐसे नियन्त्रणके अभावमें "व्यक्ति बच ही नहीं सकता है। आखिर तो जगत व्यक्तियोंका ही बना है। बिन्दु नहीं है तो समुद्र नहीं है"। व्यक्तिके महत्त्वके बारेमें यह विचार युगोंसे चली आ रही एक आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि है और गांधीजी इसे आधुनिक विचार और विज्ञानकी उपलब्धियोंके साथ एक सूत्रमें पिरोकर चलना चाहते थे। उन्होंने स्वीकार किया कि "अगर ऐसा समझोगे कि मैं आजके देहातोंकी बात करता हूँ तो मेरी बात नहीं समझोगे। मेरा देहात आज मेरी कल्पनामें ही है।" यह गाँव अज्ञानता, गन्दगी तथा आजके भारतीय गाँवोंकी समस्त बुराइयोंसे मुक्त होगा और इसमें आर्थिक तथा सामाजिक असमानताएँ भी नहीं होंगी। गांधीजी ने कहा कि इस आदर्शको साकार रूप देने के लिए उन्हें "अभी अनेक चीजोंके बारेमें सोचना है जिन्हें बादमें बड़े पैमानेपर संगठित करना होगा"। गांधीजी की इच्छा थी कि नेहरू और वे इस मूल विषयके बारेमें एक दूसरेको अच्छी तरह समझ लें। उन्होंने नेहरूको समझाया कि "हमारा रिश्ता केवल राजनीतिक ही नहीं है, यह उससे कहीं अधिक गहरा है। इस गहराईको नापने के लिए उनके पास कोई मापदण्ड नहीं है...यह उचित ही होगा कि कमसे-कम मैं अपने वारिसको समझ लूँ और मेरा वारिस मुझे समझ ले तभी मुझे चैन मिलेगा" (पृ० ३४४-४६)। नेहरूने इस बातका विस्तारसे उत्तर दिया और बहस जारी रही।

जे० सी० कुमारप्पा द्वारा लिखित 'द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स' पुस्तककी प्रस्तावनामें गांधीजी ने ग्रामोद्योगोंमें अपने इस विश्वासको पुनः दोहराया कि इन्हीं के माध्यमसे शरीरको अपनी चन्द आवश्यकताओंकी शुभ सन्तुष्टिके उपरान्त "अनश्वर आत्माके उद्देश्यकी पूर्तिमें सहायता देने का पूरा अवकाश रहेगा" (पृ० १५८)।

सार्वजनिक रूपसे सरकारकी आलोचना न करके गांधीजी ने सम्बन्धित अधिकारियोंको निजी रूपसे अपने विचारोंसे अवगत कराना अधिक ठीक समझा। बिहार, मध्य प्रदेश तथा बंगालमें कैदियोंके ऐसे कई मामले थे जिन्हें भारत छोड़ो आन्दोलन के फलस्वरूप फौजदारीके आरोपमें मृत्यु-दण्डकी सजा सुनाई गई थी और उस सजाको

कम करने के लिए वाइसरायको आवेदन दिये गये थे। गाधीजी ने वाइसरायको लिखे अपने पत्रोंमें उनसे क्षमाके विशेषाधिकारका प्रयोग करने की अपील की (पृ० ७२, २७३-७४, ४१०-११ तथा खण्ड ८०, पृ० ४५१-५२) और एकको छोड़कर सभी मामलोंमें वे सफल भी हुए और वह मामला था विहारके नवयुवक महेन्द्र चौधरीका, जिसे अदालतने डकैती तथा हत्याके आरोपमें अपराधी करार पाया जबकि लोगोंकी दृष्टिमें वह निर्दोष था। गांधीजी ने वाइसरायके इस विवेकहीन निर्णयपर खेद व्यक्त किया (पृ० २०) और अमृतकौरको एक पत्रमे लिखा, "यह एक अपशकुन है" (पृ० २१)। हालांकि इस विषयमें गांधीजी ने जो सार्वजनिक वक्तव्य जारी किया (पृ० ११३-१४) उसमें उन्होंने जनतासे "निरुद्विग्न भावसे हालमें निष्पन्न हुए इस मृत्यु-दण्डसे शिक्षा" लेने के लिए कहा। गाधीजी ने इस मुकदमेमें सरकारके रुखपर अपने तटस्थ तथा निष्पक्ष विचार व्यक्त किये और यह स्वीकार किया कि 'बहुत-से पेशेवर डाकुओंने राजनीतिक विक्षोभका उपयोग अपने लाभके लिए किया"। इस विशेष मामलेमें ऐसा हुआ है या नही इसका पता पूर्णतया 'निष्पक्ष वकीलोंकी समिति' के सिवा कौन लगा सकता है। गांधीजी ने सरकारसे अपील भी की कि वह ऐसी जाँचका स्वागत करे।

एक अन्य मामला जिसने जनसाधारणकी भावनाको उद्वेलित करना शुरू कर दिया था वह सुभाषचन्द्र बोसकी आजाद हिन्द फौज द्वारा जापानियोके विरुद्ध की गई सैनिक कार्यवाहीमें बन्दी बनाये-गये दिल्लीके लालकिलेमें कैद अफसरो तथा सैनिकोंका था। ऐसी अफवाह थी कि उनमें से कुछका तो कोर्ट मार्शल कर दिया गया तथा शेषपर मुकदमा चलाया जायेगा। वाइसरायको लिखे अपने एक पत्रमें गांधीजी ने बन्दियोंको उनके मन-मुताबिक कानूनी सहायता देने की अपील की (पृ० ३६)। उनके इस अनुरोधको स्वीकार कर लिया गया और जब मुकदमा आरम्भ हुआ तो भूलाभाई देसाई और तेजबहादुर सप्रू प्रतिरक्षा समितिमें तथा जवाहरलाल नेहरू वकीलके रूपमें अदालतमें उपस्थित हुए। गाधीजी ने वाइसरायसे इस पूरे मामलेपर आखिरी बार पुनः गौर करने की अपील करते हुए कहा, "भारत इन लोगोंको, जिनपर मुकदमा चल रहा है, पूजता है" (पृ० ४७५-७६)।

प्रस्तुत खण्डकी अवधिमें गांधीजी ने सार्वजनिक मामलोंमें बहुत ही कम भाग लिया, इसीलिए इस खण्डमें अधिकतर उनके व्यक्तिगत पत्र ही हैं। इनमें से बहुत से तो व्यक्तिगत समस्याओंसे ही सम्बन्धित हैं जिनमें गाधीजी के मनुष्योंके प्रति व्यवहारमें पूर्णत. तटस्थता तथा मातृत्व सदृश कोमलताका सुन्दर सामंजस्य देखने को मिलता है। भूलाभाई देसाईको आहत भावनाओंको सान्त्वना देने में यह कोमलता अपने चरम रूपमें प्रगट होती है। भूलाभाई देसाईके बारेमें यह समझा जाता था कि उन्होंने जिस ढगसे लियाकत अली खाँसे बातचीत की, और विशेष रूपसे जिस तरह कांग्रेस-लीग समानताके सिद्धान्तको स्वीकार किया उससे कांग्रेसको नुकसान पहुँचा। इसी कारण वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषदके लिए कांग्रेसके

प्रस्तावित सदस्योंके नामोंमें उनका नाम शामिल नहीं किया गया, हालांकि वे १९३४ से केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस दलके नेता थे। और अब आगामी विधान-सभा चुनावोंमें भी उनका नाम कांग्रेसके प्रत्याशीके रूपमें शामिल नहीं किया गया। इस निर्णयकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए गांधीजी ने लिखा, "... मैं स्वयं दृढ़ हूं, क्योंकि मैं तो केवल तुम्हारे हितेच्छुका ही काम करना चाहता हूं। मुझे तुमसे, अगर तुम कर सको तो, बड़ा काम करवाना है। मैं तो तुम्हें जनताके प्रतिनिधिके रूपमें देखने का इच्छुक हूं" (पृ० ४३३)। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भी गांधीजी के बहुत निकट थे, लेकिन गांधीजी उन्हें भी कांग्रेसियोंकी नाराजगीसे बचा नहीं पाये। राजाजी के भारत छोड़ो आन्दोलनका विरोधी होने तथा सीमित पाकिस्तान देने से सम्बन्धित तथाकथित राजाजी फार्मूलेका प्रणेता होने के कारण कांग्रेसी उन्हें क्षमा नहीं कर पाये। गांधीजी ने राजाजी को लिखा, "... मैं यह नहीं चाहता कि आप इस बातको ज्यादा महसूस करें।... आप यहां आयें और हम अपना मन बहला सकें। चुनावोंको उनके भाग्यके भरोसे छोड़िए।... आप एक कांग्रेसीके पास दूसरे कांग्रेसीकी तरह नहीं, किसी कामसे नहीं, बल्कि एक मित्रकी तरह आयेंगे" (पृ० ३२२-२३)। लेकिन इन दोनों ही मामलोंमें गांधीजी का नुस्खा बेकार साबित हुआ। भूलाभाई देसाई तो निराश हो गये और तुरन्त बाद ही उनका देहान्त हो गया तथा राजगोपालाचारी भी अपनी व्यथा भुला नहीं पाये और गांधीजी को उन्हें एक बार फिर लिखना पड़ा: "यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि आप बीमार और उदास हैं।... जैसी विनोद वृत्ति आपमें है उसके रहते.. आप उदास हों, इस बातपर तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है" (पृ० ३४९)।

सेवाग्राम आश्रमके कार्यकर्ताओंके बीच बराबर झगड़े होते रहते थे (पृ० १११, १२६, १३८, १५३-५४, २०२, २५७, २६८-६९, २८३ तथा ३१०); कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टके कार्यक्रमको लेकर अमृतलाल ठक्कर तथा मृदुला साराभाईके बीच मतभेद थे (पृ० २८५-८६) तथा बंगालके खादी कार्यकर्ताओं, सतीशचन्द्र दासगुप्त और प्रफुल्लचन्द्र घोषके बीच भी अनबन थी (पृ० ४०१ तथा ४२९)। कस्तूरबाके बीमार भाई, जिन्हें गांधीजी ने प्राकृतिक चिकित्सकके पास भेजा था, असन्तुष्ट थे और चिकित्सालय छोड़ने पर आमादा थे, जबकि न तो उनके पास साधन थे और न कोई उनकी देखभाल करने वाला था (पृ० ७६-७७)। गांधीजी ने सबका हितैषी होते हुए भी कड़े अनुशासनका रुख अपनाया। उन्होंने उनमें से एकको अत्यन्त कटु शब्दोंमें लिखा, "तुम्हारा अज्ञान तथा अभिमान तुम्हें खाता है" और कहा कि यदि वह आश्रममें शान्तिपूर्वक काम नहीं कर सकते तो आश्रम छोड़ दें (पृ० २२५ और २५१)। इन सभी स्थितियोंमें गांधीजी का यही प्रयास रहा कि पत्र-लेखक स्वयं देखे कि सच क्या है। उनमें से एक व्यक्तिको जो हिन्दू-मुस्लिम एकताकी अपनी योजनामें जनताकी रुचि जाग्रत न कर सकने की वजहसे क्षुब्ध था, गांधीजी ने लिखा, "मेरा कहना यह है कि अपनी असफलताके लिए अपने

भीतर देखो, बाहर नही। ..मैंने यह तर्कके लिए नही लिखा है, बल्कि यदि हो सके तो तुम्हें रोशनी दिखाने के लिए लिखा है" (पृ० ९३)।

अपने सहयोगियोसे गाधीजी को कितना अनुराग था, इसकी अभिव्यक्ति उनके स्वास्थ्यके प्रति गाधीजी की लगातार चिन्तामे भी देखने को मिलती है। उन्होने मीराबहन और सुचेता कृपलानीको किसी ठंडे स्थानपर जाने की सलाह दी (पृ० ३१ तथा ४२) तथा सुशीला नैयर (पृ० १८), अमृतकौर (पृ० ९९ तथा २९६) और किशोरलाल मशरूवाला (पृ० ४१६) की बीमारीके बारेमें बराबर चिन्तित रहे तथा कई रोगियोको प्राकृतिक चिकित्साके लिए भेजा (पृ० ७, ८, १० तथा ६२) और स्वय पूनामें दिनशा मेहताके चिकित्सा केन्द्रमे वल्लभभाई पटेलके इलाजकी देखरेख की। आश्रमके एक सम्मानित कार्यकर्ता चिमनलाल शाहकी पुत्री शारदा चोखावालाकी बीमारीसे तो गाधीजी इतने परेशान हो गये (पृ० १६२, १७८) कि जब उन्होंने सूरतमें, जहाँ शारदा चोखावाला रहती थी, भारी वर्षा होने की बात सुनी तो उन्होने उसे लिखा, "वहांकी बरसातके समाचार पढकर मेरा मन तेरी ओर दौड़ गया, जैसे मुझे दूसरोकी चिन्ता ही न हो। अनासक्तिका चाहे जितना अभ्यास करो, फिर भी ऐसा कुछ हो ही जाता है" (पृ० ३०२)।

लेकिन ऐसा कभी-कभी ही होता था। साधारणत तो गाधीजी का ध्यान करोडो जनताकी दुर्दशाकी ओर ही लगा रहता था। नारणदासको लिखे अपने पत्रमें उन्होंने स्वीकार किया कि "...मेरा मन आजकल जो काम हमारे सामने उपस्थित है, उसीमें उलझा रहता है। इसलिए मै व्यक्तियोंके विषयमें ध्यानपूर्वक विचार नही कर पाता। उसी क्षण जो विचार आया सो आया। उसके बाद फिर मेरा ध्यान मूल वस्तुपर चला जाता है" (पृ० १२)। एक अन्य पत्र-लेखकको उन्होंने लिखा, "मै तो अब किसी एक व्यक्तिका रह ही नही गया" (पृ० ४०५)। उस समयकी उनकी मन.स्थितिका अंदाजा उनकी बंगालकी प्रस्तावित यात्राके सम्बन्धमें कही गई इस उक्तिसे लगाया जा सकता है, "मैं निश्चित मुद्दतके लिए नही आ रहा हूँ। बगालके दु:खमें ओत-प्रोत हो जाना है" (पृ० १४५)।

इन सब समस्याओका हृदयपर बोझ होने के बावजूद गांधीजी कभी-कभी विश्राम भी कर लेते थे। हुमायूं कबीरके उपन्यास 'मनुष्य और नदी' को उन्होंने बहुत शौकसे पढा और उनकी लेखन-क्षमताकी सराहा भी (पृ० ४२०)। इसी प्रकार उन्होंने अपने एक कवि मित्रको लिखा, "आपकी कविताएँ सुनने के लिए भी मुझे महाबलेश्वर आना अच्छा लगेगा" (पृ० ३२८)। गांधीजी के इस कविता प्रेमको वन्य-जीवन तथा प्राकृतिक सम्पदाकी रक्षाके लिए स्थापित ग्रीन क्रॉस सोसाइटीकी श्रीमती एम० एच० मॉरिसनको लिखे पत्रमें भी देखा जा सकता है। कवि वर्ड्सवर्थकी भावनाको ही प्रतिध्वनित करते हुए उन्होंने लिखा, "... बहुत समयसे मैं यह मानता आया हूँ कि काष्ठमें आत्माका निवास है"

(पृ० ४६९-७०)। एक शोक-संतप्त बहनको सान्त्वना देते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं प्रतिदिन कुछ मिनट भर्तृहरिके नीति और वैराग्यसे सम्बन्धित उन श्लोकोंका पाठ करता हूँ जो "ऐसे मौकेपर बहुत मननीय है" (पृ० ३९०)।

अपने एक अमेरिकी मित्रको गांधीजी ने लिखा, "'ईश्वरका साम्राज्य तेरे अन्दर है'—यह वचन सभी प्रयोजनोंके लिए पर्याप्त है। इसे व्यवहारमें उतारने पर और किसी चीजकी जरूरत नहीं रह जाती" (पृ० १७६)। दुविधामें फँसी पुष्पा देसाईको आश्वासन देते हुए उन्होंने लिखा, "निष्काम कर्म भक्तिका विरोधी नहीं होता, बल्कि... वही सच्ची भक्ति है" (पृ० २३६)। एक ईसाई सामाजिक कार्यकर्ताके इस कथनको उन्होंने पूर्णतः स्वीकार किया कि "जिस प्रकार कार्यके बिना आस्था निष्प्राण है उसी प्रकार आस्थाके बिना कार्य भी निष्प्राण है" (पृ० २५१)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं:

संस्थाएँ: साबरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक ट्रस्ट और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार और नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली; भारत कला भवन, वाराणसी; मध्य प्रदेश सरकार, तमिलनाडु सरकार और पुलिस कमिश्नर कार्यालय, बम्बई।

व्यक्ति: श्री अतुलानन्द चक्रवर्ती; श्री अमृतलाल चटर्जी; श्री आनन्द तो० हिंगोरानी, नई दिल्ली; श्रीमती इन्दुमती एन० तेन्दुलकर, बम्बई; श्री एस० आर० वेंकटरामन; श्री क० मा० मुन्शी; श्री कनु गांधी, राजकोट; श्री कान्ति गांधी, बम्बई; श्री कृष्णचन्द्र, उरूलीकांचन; श्री गजानन जोशी; श्री गणेश शास्त्री जोशी; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्रीमती चम्पा र० मेहता; श्री छगनलाल गांधी; श्री जीवणजी डा० देसाई; श्री डाह्याभाई म० पटेल; श्री नारणदास गांधी; श्री पुरुषोत्तम का० जेराजाणी, बम्बई; श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, इलाहाबाद; श्री पृथ्वीसिंह, लालरू, पंजाब; श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली; श्री प्रभाकर पारेख; श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी; श्रीमती प्रेमा कंटक, सासवड; श्री बी० जगन्नाथदास; श्री व्रजकृष्ण चाँदीवाला, दिल्ली; श्रीमती मीराबहन, गाडेन, आस्ट्रिया; श्री मुन्नालाल गं० शाह; श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर; श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई; श्रीमती वनमाला म० देसाई, नई दिल्ली; श्री शान्तिकुमार मोरारजी, बम्बई; श्रीमती शारदाबहन गो० चोखावाला, सूरत और श्री शिवाभाई जी० पटेल, बोचासण।

पुस्तकें: '(द) इकॉनमी ऑफ परमानेन्स'; 'कैपिटलिज्म, सोशलिज्म और विलेजिज्म?'; 'गांधीज एमिसरी'; 'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७'; 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद'; 'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस'; 'बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने'; 'बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने'; 'बापुनी प्रसादी'; 'बापूकी कलमसे'; 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष'; 'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार); 'महात्मा: लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी'; 'माई डेज विद गांधी' तथा 'राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गांधीजी और टंडनजी का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार'।

पत्र-पत्रिकाएँ: 'खादी-जगत्'; 'ग्राम उद्योग पत्रिका', भाग–१; 'बॉम्बे क्रॉनिकल'; 'सर्वोदय'; 'हरिजन'; 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू।'

अनुसंधान और सन्दर्भ सम्बन्धी सुविधाओंके लिए हम नई दिल्ली स्थित इंडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स और नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालयके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांधीजी के स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोंकी स्पष्ट भूलें सुधार दी गई हैं।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमें प्राप्त हो सके हैं, उनका हमने मूलसे मिलान और संशोधन करने के बाद उपयोग किया है। नामोंको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणमें संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजी ने अपने गुजराती लेखोंमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोंमें दिये गये अंश सम्पादकीय हैं। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अंश उन्होंने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणोंकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजी के कहे हुए नहीं हैं, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये हैं। भाषणों और भेंटकी रिपोर्टोंके उन अंशोंमें जो गांधीजी के नहीं हैं, कुछ परिवर्तन किया गया है और कहीं-कहीं कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है, लेकिन जिन लेखों, टिप्पणियों आदिके अन्तमें लेखन-तिथि दी गई है उनमें उसे यथावत् रहने दिया गया है। जहाँ यह उपलब्ध नहीं है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोंमें दी गई है और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें प्रसंगानुसार मास तथा वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियों और लेखोंको जहाँ लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नहीं हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिया गया है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गाधी सग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोका, 'एम० एम० यू०' राष्ट्रीय गाधी सग्रहालय और पुस्तकालयकी मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार की गई रीलोका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गाधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाधी) द्वारा सगृहीत दस्तावेजोका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये है। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

भूमिका — पाँच
आभार — तेरह
पाठकोंको सूचना — पन्द्रह
१. सन्देश : विद्यार्थियोंको (१७-३-१९४५) — १
२. भेंट : 'पीपुल्स वार' के संवाददाताको (१७-३-१९४५) — २
३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (१८-३-१९४५) — ४
४. पत्र : रफी अहमद किदवईको (१८-३-१९४५) — ५
५. पत्र : अमृतकौरको (१९-३-१९४५) — ६
६. पत्र : माधवदास गोपालदास कापड़ियाको (१९-३-१९४५) — ६
७. पत्र : प्रेमा कंटकको (१९-३-१९४५) — ७
८. पत्र : दिनशा मेहताको (१९-३-१९४५) — ७
९. पत्र : कृष्ण वर्माको (१९-३-१९४५) — ८
१०. पुर्जा : परचुरे शास्त्रीको (१९-३-१९४५) — ९
११. बातचीत : आश्रमके कार्यकर्ताओंके साथ (१९-३-१९४५) — ९
१२. सन्देश : छात्र कांग्रेस कार्यकर्ताओंको (२०-३-१९४५) — ९
१३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२०-३-१९४५) — १०
१४. पत्र : मनु गांधीको (२०-३-१९४५) — १०
१५. पत्र : वनमाला परीखको (२०-३-१९४५) — ११
१६. पत्र : नारणदास गांधीको (२०-३-१९४५) — ११
१७. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२०-३-१९४५) — १२
१८. पत्र : रमेण चटर्जीको (२०-३-१९४५) — १३
१९. पत्र : अब्दुल हकको (२०-३-१९४५) — १३
२०. पत्र : मनु गांधीको (२१-३-१९४५) — १४
२१. पत्र : सरला मेहताको (२१-३-१९४५) — १४
२२. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२१-३-१९४५) — १५
२३. पत्र : मु० रा० जयकरको (२२-३-१९४५) — १५
२४. पत्र : भारतन कुमारप्पाको (२२-३-१९४५) — १६
२५. पत्र : मनु गांधीको (२२-३-१९४५) — १७
२६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (२२-३-१९४५) — १७
२७. पत्र : पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको (२२-३-१९४५) — १८
२८. पत्र : सुशीला नैयरको (२२-३-१९४५) — १८

२९. तार: मृदुला साराभाईको (२३-७-१९४५) १९
३०. तार: राजेन्द्रप्रसादको (२३-७-१९४५) १९
३१. पत्र : लॉर्ड वेवलको (२३-७-१९४५) २०
३२. पत्र : अमृतकौरको (२३-७-१९४५) २१
३३. पत्र : मदालसाको (२३-७-१९४५) २२
३४. पत्र : अन्नपूर्णा मेहताको (२३-७-१९४५) २२
३५. पत्र : मचरशा अवारीको (२३-७-१९४५) २३
३६. पत्र : अमतुस्सलामको (२३-७-१९४५) २३
३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२३-७-१९४५) २४
३८. पत्र . ए० कालेश्वर रावको (२३-७-१९४५) २४
३९. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको (२३-७-१९४५) २५
४०. पत्र : महेश चरणको (२३-७-१९४५) २५
४१. पत्र : श्यामलालको (२३-७-१९४५) २६
४२. पत्र : ईषकुमारको (२३-७-१९४५) २७
४३. पत्र : श्यामलालको (२३-७-१९४५) २७
४४. पत्र : वेन्ट्रेको (२४-७-१९४५) २८
४५. पत्र : रामदास गांधीको (२४-७-१९४५) २८
४६. पत्र . सैयद अब्दुल्ला ब्रेल्वीको (२४-७-१९४५) २९
४७. पत्र : श्रीमन्नारायणको (२४-७-१९४५) २९
४८. पत्र : श्यामलालको (२४-७-१९४५) ३०
४९. पत्र : अमृतकौरको (२५-७-१९४५) ३०
५०. पत्र : मीराबहनको (२५-७-१९४५) ३१
५१. पत्र : सीता गांधीको (२५-७-१९४५) ३१
५२. पत्र : पुष्पा देसाईको (२५-७-१९४५) ३२
५३. पत्र : मणिबहन पटेलको (२५-७-१९४५) ३२
५४ पत्र : वल्लभभाई पटेलको (२५-७-१९४५) ३३
५५. पत्र : आप्टेको (२५-७-१९४५) ३४
५६. पत्र . जमशेदजी मेहताको (२५-७-१९४५) ३४
५७. पत्र : कृष्ण वर्माको (२५-७-१९४५) ३५
५८. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको (२५-७-१९४५) ३५
५९. पत्र : सुखदेवको (२५-७-१९४५) ३६
६०. पत्र . लॉर्ड वेवलको (२५-७-१९४५) ३६
६१. पत्र जे० सी० कुमारप्पाको (२६-७-१९४५) ३७
६२. पत्र . पट्टाभि सीतारामैयाको (२६-७-१९४५) ३८
६३. पुर्जा : मुन्नालाल गंगादास शाहको (२६-७-१९४५) ३८
६४. पत्र : कृष्ण वर्माको (२६-७-१९४५) ३९

६५. पत्र : गोसीबहन कैप्टेनको (२७-७-१९४५) ४०
६६. पत्र : बलवन्तसिंहको (२७-७-१९४५) ४०
६७. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको (२७-७-१९४५) ४१
६८. पत्र : होशियारीको (२७-७-१९४५) ४१
६९. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको (२७-७-१९४५) ४२
७०. पत्र : सुचेता कृपलानीको (२७-७-१९४५) ४२
७१. भेंट : 'हिन्दू' के संवाददाताको (२८-७-१९४५) ४३
७२. पत्र : सुधीर घोषको (२८-७-१९४५) ४४
७३. पत्र : बी० एस० मूर्तिको (२८-७-१९४५) ४५
७४. पत्र : सी० सी० गांगुलीको (२८-७-१९४५) ४५
७५. पत्र : दिनशा मेहताको (२८-७-१९४५) ४६
७६. पत्र : सम्पूर्णानन्दको (२८-७-१९४५) ४७
७७. पत्र : अब्दुल गफ्फार खाँको (२८-७-१९४५) ४७
७८. पत्र : हीरालाल शर्माको (२८-७-१९४५) ४८
७९. पत्र : श्यामलालको (२८-७-१९४५) ४८
८०. पत्र : सरला देवीको (२९-७-१९४५) ४९
८१. पत्र : छतारीके नवाबको (२९-७-१९४५) ४९
८२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (२९-७-१९४५) ५०
८३. पत्र : नायडूको (२९-७-१९४५) ५०
८४. पत्र : अबुल कलाम आजादको—अंश (२९-७-१९४५ के पश्चात्) ५१
८५. तार : राजेन्द्रप्रसादको (३०-७-१९४५) ५१
८६. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको (३०-७-१९४५) ५२
८७. पत्र : अमृतकौरको (३०-७-१९४५) ५२
८८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (३०-७-१९४५) ५३
८९. पत्र : मृदुला साराभाईको (३०-७-१९४५) ५४
९०. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (३०-७-१९४५) ५४
९१. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको (३०-७-१९४५) ५५
९२. पत्र : देवराजको (३०-७-१९४५) ५५
९३. पत्र : देवराज वोराको (३०-७-१९४५) ५६
९४. पत्र : गालिब साहबको (३०-७-१९४५) ५६
९५. पत्र : रामनारायण चौधरीको (३०-७-१९४५) ५७
९६. पत्र : ज्योतिलाल मेहताको (३१-७-१९४५) ५७
९७. पत्र : चन्द्रकला और कृष्णकुमारको (३१-७-१९४५) ५८
९८. सूतके बदले खादी क्यों और पैसेके बदले क्यों नहीं? (जुलाई, १९४५) ५८

९९. पत्र . दिनशा मेहताको (१-८-१९४५) ६२
१००. पत्र : कृष्ण वर्माको (१-८-१९४५) ६२
१०१. पत्र . पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको (१-८-१९४५) ६३
१०२. पत्र . व्रजकृष्ण चाँदीवालाको (१-८-१९४५) ६४
१०३. पत्र . जयरामदास दौलतरामको (२-८-१९४५) ६५
१०४. पत्र : प्रेमी जयरामदासको (२-८-१९४५) ६५
१०५. पत्र . बंगालके गवर्नरको (२-८-१९४५) ६६
१०६. पत्र : सुशीला गांधीको (२-८-१९४५) ६७
१०७. पत्र अब्दुल हकको (२-८-१९४५) ६७
१०८. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (२-८-१९४५) ६८
१०९. पत्र . अबुल कलाम आजादको (२-८-१९४५) ६९
११०. पत्र : पट्टाभि सीतारामैयाको (२-८-१९४५) ७०
१११ वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (३-८-१९४५) ७१
११२. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (३-८-१९४५) ७२
११३. पत्र : नारणदास गांधीको (३-८-१९४५) ७३
११४. सन्देश . भगवानजी पु० पण्ड्याको (३-८-१९४५) ७३
११५ पत्र : वल्लभभाई पटेलको (३-८-१९४५) ७४
११६. पत्र : लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्सको (४-८-१९४५) ७५
११७. पत्र . अमृतकौरको (४-८-१९४५) ७५
११८ पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (४-८-१९४५) ७६
११९. पत्र . माधवदास गोपालदास कापड़ियाको (४-८-१९४५ ७६
१२०. पत्र : कुँवरजी पारेखको (४-८-१९४५) ७७
१२१. पत्र : कृष्ण वर्माको (४-८-१९४५) ७८
१२२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (४-८-१९४५) ७९
१२३. भेंट : 'हिन्दू' के संवाददाताको (४-८-१९४५) ८०
१२४. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको (५-८-१९४५) ८१
१२५. पत्र : गोसीबहन कैप्टेनको (५-८-१९४५) ८१
१२६. पत्र : हसुमति धीरजलाल देसाईको (५-८-१९४५) ८२
१२७. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (५-८-१९४५) ८३
१२८. पत्र : रामदास गांधीको (५-८-१९४५) ८४
१२९. पत्र : सुमित्रा गांधीको (५-८-१९४५) ८५
१३०. पत्र : सी० सी० गांगुलीको (५-८-१९४५) ८६
१३१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (५-८-१९४५) ८७
१३२. पत्र . एम० एस० केलकरको (५-८-१९४५) ८७
१३३. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको (५-८-१९४५) ८८

१३४. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (६-८-१९४४) ८८
१३५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (६-८-१९४४) ८९
१३६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (६-८-१९४४) ९१
१३७. पत्र : बलवन्तसिंहको (६-८-१९४४) ९२
१३८. पत्र : अल्फ्रेड फ्रेंशको (७-८-१९४४) ९२
१३९. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको (७-८-१९४४) ९३
१४०. पत्र : दलजीतसिंहको (७-८-१९४४) ९३
१४१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (७-८-१९४४) ९४
१४२. पत्र : अमृतकौरको (७-८-१९४४ या उसके पश्चात्) ९४
१४३. छूटी हुई कड़ी (८-८-१९४४ के पूर्व) ९५
१४४. तार: वी० एन्० श्रीनिवास शास्त्रीको (८-८-१९४४) ९७
१४५. तार: पुरुषोत्तमदास टंडनको (८-८-१९४४) ९८
१४६. प्रशस्ति: जगलुल पाशाकी (८-८-१९४४) ९८
१४७. पत्र : अमृतकौरको (८-८-१९४४) ९९
१४८. पत्र : रिचर्ड साइमण्ड्सको (८-८-१९४४) १००
१४९. पत्र : वी० के० कृष्ण मेननको (८-८-१९४४) १००
१५०. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (८-८-१९४४) १०२
१५१. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (८-८-१९४४) १०२
१५२. पत्र : गोप गुरबक्शानीको (८-८-१९४४) १०४
१५३. पत्र : कुसुम नायरको (८-८-१९४४) १०४
१५४. वक्तव्य: चन्देकी अपीलके सम्बन्धमें (८-८-१९४४) १०५
१५५. पत्र : एम० एस० केलकरको (८-८-१९४४) १०६
१५६. पत्र : रामनारायण चौधरीको (८-८-१९४४) १०६
१५७. तार: वाइसरायके निजी सचिवको (९-८-१९४४) १०७
१५८. पत्र : शिवाभाई पटेलको (९-८-१९४४) १०८
१५९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (९-८-१९४४) १०८
१६०. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको (९-८-१९४४) १०९
१६१. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको (९-८-१९४४) ११०
१६२. पत्र : वेंकटाकृष्णैयाको (९-८-१९४४) ११०
१६३. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको (९-८-१९४४) १११
१६४. पत्र : इन्दुमती गुणाजीको (१०-८-१९४४) १११
१६५. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको (१०-८-१९४४) ११२
१६६. पत्र : महेशदत्त मिश्रको (१०-८-१९४४) ११२
१६७. पुर्जा: इन्दुमती गुणाजीको (१०-८-१९४४ के पश्चात्) ११३
१६८. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको (११-८-१९४४) ११३

१६९. पत्र : अमृतकौरको (११-८-१९४५) ११४
१७०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (११-८-१९४५) ११५
१७१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (११-८-१९४५) ११५
१७२. सन्देश : अखिल भारतीय चरखा संघ, लाहौरको (१२-८-१९४५ या उसके पूर्व) ११६
१७३. पत्र : अरुणा आसफ अलीको (१२-८-१९४५) ११६
१७४. पत्र : प्रभावतीको (१२-८-१९४५) ११७
१७५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (१२-८-१९४५) ११८
१७६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१२-८-१९४५) ११९
१७७. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (१२-८-१९४५) ११९
१७८. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको (१२-८-१९४५) १२०
१७९. पत्र : निशीथ नाथको (१२-८-१९४५) १२०
१८०. पत्र : परचुरे शास्त्रीको (१२-८-१९४५) १२१
१८१. पत्र : रत्नमयी देवीको (१२-८-१९४५) १२१
१८२. पत्र : समरफोर्ड ऑर्चर्डके व्यवस्थापकको (१३-८-१९४५) १२२
१८३. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को (१३-८-१९४५) १२२
१८४. पत्र : वी० लक्ष्मीको (१३-८-१९४५) १२३
१८५. पत्र : हरजीवन कोटकको (१३-८-१९४५) १२३
१८६. पत्र : रामप्रसादको (१३-८-१९४५) १२४
१८७. पत्र : इन्दुमती गुणाजीको (१३-८-१९४५) १२४
१८८. पत्र : जसवन्तसिंहको (१३-८-१९४५) १२५
१८९. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१३-८-१९४५) १२५
१९०. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको (१३-८-१९४५) १२६
१९१. पुर्जा : इन्दुमती गुणाजीको (१३-८-१९४५ के पश्चात्) १२७
१९२. पत्र : हमीदुल्लाको (१३/१४-८-१९४५) १२८
१९३. बातचीत : बी० एस० मूर्तिके साथ (१४-८-१९४५ के पूर्व) १२८
१९४. तार : हनुमानप्रसाद पोद्दारको (१४-८-१९४५) १३०
१९५. पत्र : बंगालके गवर्नरको (१४-८-१९४५) १३१
१९६. पत्र : लाला मेघराजको (१४-८-१९४५) १३१
१९७. पत्र : जे० पॉपलटनको (१४-८-१९४५) १३२
१९८. पत्र : कनु गांधीको (१४-८-१९४५) १३२
१९९. पत्र : कृष्ण वर्माको (१४-८-१९४५) १३३
२००. पत्र : वसुमती पण्डितको (१४-८-१९४५) १३३
२०१. पत्र : देवराजको (१४-८-१९४५) १३४
२०२. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको (१४-८-१९४५) १३४

२०३. पत्र : शरद कुमारीको (१४-८-१९४५) १३५
२०४. पत्र : वी० भाष्यम अय्यंगारको (१४-८-१९४५) १३५
२०५. पत्र : अमृतकौरको (१४-८-१९४५) १३६
२०६. भाषण : हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय मण्डलकी बैठकमें (१४-८-१९४५) १३६
२०७. पत्र : अबुल कलाम आजादको (१५-८-१९४५) १३७
२०८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१५-८-१९४५) १३८
२०९. पत्र : विनोबा भावेको (१५-८-१९४५) १३९
२१०. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको (१५-८-१९४५) १४०
२११. पत्र : मुहम्मद सलीमको (१५/१६-८-१९४५) १४१
२१२. सलाह : इंजीनियरोंको (१६-८-१९४५ या उसके पूर्व) १४१
२१३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१६-८-१९४५) १४२
२१४. पत्र : नारणदास गांधीको (१६-८-१९४५) १४३
२१५. पत्र : लक्ष्मीनारायण अग्रवालको (१६-८-१९४५) १४४
२१६. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (१६-८-१९४५) १४५
२१७. पत्र : सुशीला गांधीको (१८-८-१९४५ के पूर्व) १४६
२१८. पत्र : ग० ना० म० तेन्दुलकरको (१८-८-१९४५) १४७
२१९. सूतदान (१८-८-१९४५) १४८
२२०. पत्र : विनोबा भावेको (१८-८-१९४५) १५०
२२१. पत्र : श्रीमन्नारायणको (१८-८-१९४५) १५१
२२२. पुर्जा : कृष्णनाथ शर्माको (१९-८-१९४५) १५२
२२३. पत्र : सरला देवी चौधरानीको (१९-८-१९४५) १५२
२२४. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको (१९-८-१९४५) १५३
२२५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१९-८-१९४५) १५३
२२६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१९-८-१९४५) १५५
२२७. पत्र : दीपक दत्त चौधरीको (१९-८-१९४५) १५५
२२८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (१९-८-१९४५) १५६
२२९. कैसे करें? (२०-८-१९४५) १५६
२३०. प्रस्तावना : 'द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स' की (२०-८-१९४५) १५८
२३१. तार : दीपक दत्त चौधरीको (२०-८-१९४५) १५९
२३२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२०-८-१९४५) १५९
२३३. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (२०-८-१९४५) १६०
२३४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (२०-८-१९४५) १६०
२३५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (२०-८-१९४५) १६१
२३६. पत्र : पुष्पा देसाईको (२०-८-१९४५) १६१

२३७. पत्र : शारदाबहन और गोरधनदास चोखावालाको (२०-८-१९४५) १६२
२३८. पत्र : होशियारीको (२०-८-१९४५) १६२
२३९. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको (२०-८-१९४५) १६३
२४०. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको (२१-८-१९४५) १६३
२४१. पत्र : चाँदरानीको (२१-८-१९४५) १६४
२४२. पत्र : रामचन्द्र रावको (२१-८-१९४५) १६५
२४३. पत्र : प्रयागदत्त शुक्लको (२१-८-१९४५) १६५
२४४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२१/२२-८-१९४५) १६६
२४५. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (२२-८-१९४५) १६७
२४६. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (२२-८-१९४५) १६७
२४७. पत्र : त्रिभुवनदास शाहको (२२-८-१९४५) १६८
२४८. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको (२२-८-१९४५) १६८
२४९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (२२-८-१९४५) १६९
२५०. पत्र : रामनारायण चौधरीको (२२-८-१९४५) १६९
२५१. पत्र : वीणा चटर्जीको (२२-८-१९४५) १७०
२५२. तार : दीपक दत्त चौधरीको (२३-८-१९४५) १७०
२५३. पत्र : एन मारी पीटरसनको (२३-८-१९४५) १७१
२५४. पत्र : श्यामलालको (२३-८-१९४५) १७२
२५५. पत्र : राधा गांधीको (२३-८-१९४५) १७२
२५६. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (२३-८-१९४५) १७३
२५७. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको (२३-८-१९४५) १७३
२५८. पत्र : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको (२३-८-१९४५) १७४
२५९. पत्र : माधवी कुट्टि अम्मा नयनारको (२३-८-१९४५) १७४
२६०. पत्र : सुशीला पुरीको (२३-८-१९४५) १७५
२६१. पत्र : अमृतकौरको (२४-८-१९४५) १७५
२६२. पत्र : सी० पी० रामस्वामी अय्यरको (२४-८-१९४५) १७६
२६३ पत्र : लॉरेन्स मैक्केनरको (२४-८-१९४५) १७६
२६४. पत्र : ग्रोवरको (२४-८-१९४५) १७७
२६५. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (२४-८-१९४५) १७७
२६६. पत्र : मेसर्स बच्छराज ऐंड कम्पनी लिमिटेडको (२४-८-१९४५) १७८
२६७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (२४-८-१९४५) १७८
२६८. पत्र : कृष्ण वर्माको (२४-८-१९४५) १७९
२६९. पत्र : लक्ष्मीको (२४-८-१९४५) १७९
२७०. पत्र : रंगनायकी देवीको (२४-८-१९४५) १८०
२७१. पत्र : एम० एस० केलकरको (२४-८-१९४५) १८०

२७२. पत्र : नवाब साहबको (२५-८-१९४५) १८१
२७३. पत्र : डॉ बी० एन० सरदेसाईको (२५-८-१९४५) १८१
२७४. पत्र : रामनारायण चौधरीको (२५-८-१९४५) १८२
२७५. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको (२५-८-१९४५) १८२
२७६. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (२६-८-१९४५) १८३
२७७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२६-८-१९४५) १८४
२७८. पत्र : रामदास गांधीको (२६-८-१९४५) १८४
२७९. तार : अमियनाथ बोसको (२७-८-१९४५) १८५
२८०. पत्र : भटनागरको (२७-८-१९४५) १८५
२८१. पत्र : भगवानजी अनूपचन्द मेहताको (२७-८-१९४५) १८६
२८२. पत्र : आदम अलीको (२७-८-१९४५) १८६
२८३. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको (२७-८-१९४५) १८७
२८४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (२७-८-१९४५) १८७
२८५. पत्र : व्रज विहारी अवस्थीको (२७-८-१९४५) १८८
२८६. पुर्जा : देवप्रकाश नैयरको (२७-८-१९४५) १८९
२८७. पत्र : होशियारीको (२७-८-१९४५) १८९
२८८. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (२७-८-१९४५) १९०
२८९. पत्र : लावण्यप्रभा दत्तको (२७-८-१९४५) १९०
२९०. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (२७-८-१९४५) १९१
२९१. पत्र : परसराम ताहिलरामानीको (२७-८-१९४५) १९१
२९२. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको (२७-८-१९४५) १९२
२९३. पत्र : टी० प्रकाशम्को (२७-८-१९४५) १९२
२९४. पत्र : विनायक रावको (२७-८-१९४५) १९३
२९५. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (२८-८-१९४५) १९३
२९६. पत्र : ए० पार्थसारथीको (२८-८-१९४५) १९४
२९७. पत्र : गोरधनदास चोखावालाको (२८/२९-८-१९४५) १९४
२९८. सन्देश : अमेरिकाको (२९-८-१९४५ या उसके पूर्व) १९५
२९९. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२९-८-१९४५) १९५
३००. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको (२९-८-१९४५) १९६
३०१. पत्र : चन्द्रकान्त कोटाईको (२९-८-१९४५) १९६
३०२. पत्र : जयन्त संघवीको (२९-८-१९४५) १९७
३०३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (२९-८-१९४५) १९७
३०४. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको (२९-८-१९४५) १९८
३०५. पत्र : कंचन मु० शाहको (२९-८-१९४५) १९८
३०६. पत्र : गंगारामको (२९-८-१९४५) १९९

३०७. पत्र . कृष्णचन्द्रको (२९-८-१९४५) १९९
३०८. पत्र गालिबको (२९-८-१९४५) २००
३०९ पत्र जोहरा अन्सारीको (२९-८-१९४५) २००
३१०. पत्र कृष्णदास बेगराजको (२९-८-१९४५) २०१
३११ पत्र . परचुरे शास्त्रीको (२९-८-१९४५) २०१
३१२. पत्र : एस० निजलिंगप्पाको (२९-८-१९४५) २०२
३१३. पत्र . यशवन्त महादेव पारनेरकरको (२९-८-१९४५) २०२
३१४ पत्र पुष्पा देसाईको (२९-८-१९४५) २०३
३१५. पुर्जा श्रीकृष्णनाथ शर्माको (२९-८-१९४५ या उसके पश्चात्) २०३
३१६ पत्र . लीलावती आसरको (३०-८-१९४५) २०४
३१७. पत्र प्रभावतीको (३०-८-१९४५) २०४
३१८ पत्र प्रभावतीको (३०-८-१९४५) २०५
३१९. पत्र प्रियवदा नन्दकियोलियारको (३०-८-१९४५) २०५
३२० पत्र . लक्ष्मी गांधीको (३०-८-१९४५) २०६
३२१. पत्र तारा गाधीको (३०-८-१९४५) २०६
३२२. पत्र : राजमोहन गाधीको (३०-८-१९४५) २०७
३२३. पत्र . रामचन्द्र गाधीको (३०-८-१९४५) २०७
३२४. पत्र : अरुण वाई० पण्डयाको (३०-८-१९४५) २०८
३२५ पत्र · प्रवीणा वाई० पण्डयाको (३०-८-१९४५) २०८
३२६ पत्र पी० एच० गद्रेको (३१-८-१९४५) २०९
३२७. पत्र डी० परिमालाको (३१-८-१९४५) २१०
३२८ पत्र . जयकृष्ण भणसालीको (३१-८-१९४५) २१०
३२९ पत्र : कान्तिलाल गाधीको (३१-८-१९४५) २११
३३०. पत्र : ए० के० चन्दाको (३१-८-१९४५) २११
३३१ पत्र : ए० रहीमको (३१-८-१९४५) २१२
३३२. पत्र · धीरेन्द्रनाथ मुखर्जीको (३१-८-१९४५) २१२
३३३. पत्र पृथ्वीसिंह आजादको (३१-८-१९४५) २१३
३३४. पत्र : पन्नालालको (३१-८-१९४५) २१३
३३५. पत्र · रामभाई मामटाणीको (३१-८-१९४५) २१४
३३६ पत्र राजेन्द्रप्रसादको (३१-८-१९४५) २१४
३३७ पत्र वामन कृष्ण पराजपेको (३१-८-१९४५) २१५
३३८ पत्र . वीणा चटर्जीको (३१-८-१९४५) २१५
३३९. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको (३१-८-१९४५) २१६
३४० पत्र बन्नो गिडवानीको (१-९-१९४५) २१६
३४१ पत्र उत्तिमचन्द गगारामको (१-९-१९४५) २१७

३४२. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (१-९-१९४५) २१८
३४३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१-९-१९४५) २१८
३४४. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (१-९-१९४५) २१९
३४५. पत्र : लीलावती मुन्शीको (१-९-१९४५) २२०
३४६. पत्र : मंगलदास हरिकिशनदासको (१-९-१९४५) २२०
३४७. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१-९-१९४५) २२१
३४८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (१-९-१९४५) २२१
३४९. पत्र : सन्तराम अग्रवालको (१-९-१९४५) २२२
३५०. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (१-९-१९४५) २२२
३५१. पत्र : विद्या देवीको (१-९-१९४५) २२३
३५२. पत्र : उपेन्द्र चौधरीको (१-९-१९४५) २२३
३५३. पत्र : श्रीमती जॉर्ज जोजेफको (१-९-१९४५) २२४
३५४. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (१-९-१९४५) २२४
३५५. पत्र : शंकरनको (१-९-१९४५) २२५
३५६. पत्र : अब्दुल गफ्फार खाँको (१-९-१९४५) २२५
३५७. बातचीत : नरेन्द्र देव तथा सूरजप्रसाद अवस्थीके साथ (२-९-१९४५ के पूर्व) २२६
३५८. तार : जतीनदास अमीनको (२-९-१९४५) २२७
३५९. पत्र : एगाथा हैरिसनको (२-९-१९४५) २२७
३६०. पत्र : अनसूया साराभाईको (२-९-१९४५) २२८
३६१. पत्र : जतीनदास अमीनको (२-९-१९४५) २२८
३६२. पत्र : अमतुस्सलामको (२-९-१९४५) २२९
३६३. पत्र : अमृतलाल बयाको (२-९-१९४५) २३०
३६४. पत्र : एन० अम्बुजम्मालको (२-९-१९४५) २३०
३६५. पत्र : सत्यवतीको (२-९-१९४५) २३१
३६६. पत्र : प्रेमकान्त भार्गवको (२-९-१९४५) २३१
३६७. पत्र : मीठूबहन पेटिटको (२/३-९-१९४५) २३२
३६८. पत्र : मीराबहनको (३-९-१९४५) २३२
३६९. पत्र : मोहन कुमारमंगलमको (३-९-१९४५) २३३
३७०. पत्र : ए० वरदाराजुलु नायडूको (३-९-१९४५) २३३
३७१. पत्र : एस० बी० सरदेसाईको (३-९-१९४५) २३४
३७२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (३-९-१९४५) २३५
३७३. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको (३-९-१९४५) २३५
३७४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (३-९-१९४५) २३६
३७५. पत्र : पुष्पा देसाईको (३-९-१९४५) २३६
३७६. पत्र : सीता गांधीको (३-९-१९४५) २३७

३७७. पत्र : माणेकलाल अमृतलाल गांधीको (३-९-१९४५) २३७
३७८. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको (३-९-१९४५) २३८
३७९. पत्र : डॉ० जीवराज मेहताको (३-९-१९४५) २३८
३८०. पत्र : हरिश्चन्द्र भट्टको (३-९-१९४५) २३९
३८१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (३-९-१९४५) २३९
३८२. पत्र : प्रभाकर पारेखको (३-९-१९४५) २४०
३८३. पत्र : प्रभावतीको (३-९-१९४५) २४०
३८४. पत्र : गणेश शास्त्री जोशीको (३-९-१९४५) २४१
३८५. पत्र : श्यामलालको (३-९-१९४५) २४१
३८६. पत्र : पूनमचन्द राँकाको (३-९-१९४५) २४२
३८७. पत्र : अली रजा दवीरको (३-९-१९४५) २४२
३८८. पत्र : शकरनको (३-९-१९४५) २४३
३८९. पत्र : गोकुलचन्द नारंगको (३-९-१९४५) २४३
३९०. पत्र : प्रबोध रजन घोषको (३-९-१९४५) २४४
३९१. पत्र : देवदास गांधीको (४-९-१९४५) २४४
३९२. पत्र : गजानन नारायण कानिटकरको (४-९-१९४५) २४५
३९३. तार : वसन्ती देवी दासको (५-९-१९४५) २४५
३९४. पत्र : भूपेन्द्रनाथ सैनगुप्तको (५-९-१९४५) २४६
३९५. पत्र : एन मारी पीटरसनको (५-९-१९४५) २४६
३९६. पत्र : श्यामलालको (५-९-१९४५) २४७
३९७. तार : पुलिनसीलको (६-९-१९४५) २४७
३९८. पत्र : इनायतुल्ला खाँको (६-९-१९४५) २४८
३९९. पत्र : अहमद दस्तगीरको (६-९-१९४५) २४९
४००. पत्र : हेमेन्द्र किशोरदास शाहको (६-९-१९४५) २४९
४०१. पत्र : गजानन नारायण कानिटकरको (६-९-१९४५) २५०
४०२. तार : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (७-९-१९४५) २५०
४०३. पत्र : शंकरनको (७-९-१९४५) २५१
४०४. पत्र : आर० सी० हॉफमैनको (७-९-१९४५) २५१
४०५. पत्र : मनहर दीवानको (७-९-१९४५) २५२
४०६. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको (८-९-१९४५) २५३
४०७. पत्र : विभावती बोसको (८-९-१९४५) २५३
४०८. पत्र : कनु गांधीको (८-९-१९४५) २५४
४०९. पत्र : कैलाश डाह्याभाई मास्टरको (८-९-१९४५) २५४
४१०. पत्र : मुन्नालाल गगादस शाहको (८-९-१९४५) २५५
४११. पत्र : शंकरनको (८-९-१९४५) २५५

४१२. पत्र : होशियारीको (८-९-१९४५) २५६
४१३. पत्र : प्रभाकर पारेखको (८-९-१९४५) २५६
४१४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (९-९-१९४५) २५७
४१५. तार : घनश्यामदास बिड़लाको (१०-९-१९४५) २५७
४१६. पत्र : मध्य प्रान्त सरकारके मुख्य सचिवको (१०-९-१९४५) २५८
४१७. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को (१०-९-१९४५) २५८
४१८. पुर्जा : अमृतकौरको (१०-९-१९४५) २५९
४१९. पुर्जा : अमृतकौरको (१०-९-१९४५) २५९
४२०. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१०-९-१९४५) २६०
४२१. पत्र : रमणलाल शाहको (१०-९-१९४५) २६०
४२२. पत्र : कान्ताको (१०-९-१९४५) २६१
४२३. पत्र : सुशीला नैयरको (१०-९-१९४५) २६१
४२४. पत्र : कृष्ण वर्माको (१०-९-१९४५) २६२
४२५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको (१०-९-१९४५) २६२
४२६. पत्र : सुरेन्द्रको (१०-९-१९४५) २६३
४२७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१०-९-१९४५) २६३
४२८. पत्र : चिमनलाल माणेकलाल त्रिवेदीको (१०-९-१९४५) २६४
४२९. पत्र : छगनलाल जोशीको (१०-९-१९४५) २६४
४३०. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१०-९-१९४५) २६५
४३१. पत्र : अमलप्रभा दासको (१०-९-१९४५) २६५
४३२. पत्र : इन्दुमती तेन्दुलकरको (१०-९-१९४५) २६६
४३३. पत्र : मनहर दीवानको (१०-९-१९४५) २६७
४३४. पत्र : यशोधरा दासप्पाको (१०-९-१९४५) २६८
४३५. पत्र : जतीनदास अमीनको (१०/११-९-१९४५) २६८
४३६. पत्र : मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैयाको (११-९-१९४५) २६९
४३७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (११-९-१९४५) २७०
४३८. पत्र : कृष्णचन्द्रको (११-९-१९४५) २७१
४३९. पत्र : नारणदास गांधीको (१२-९-१९४५) २७१
४४०. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (१२-९-१९४५) २७३
४४१. पत्र : लॉर्ड वेवलको (१४-९-१९४५) २७३
४४२. पत्र : रणजीतसिंह हरभामजीको (१४-९-१९४५) २७४
४४३. पत्र : सरस्वती गडोदियाको (१४-९-१९४५) २७५
४४४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१४-९-१९४५) २७५
४४५. पत्र : लक्ष्मणसिंह गेलाकोटीको (१४-९-१९४५) २७६
४४६. पत्र : डॉ० बी० एस० मुंजेको (१४-९-१९४५) २७६

४४७. भाषण : प्रार्थना-सभामें (१४-९-१९४५) २७७
४४८. पत्र . भोपालके नवाबको (१६-९-१९४५) २७८
४४९ पत्र : जयरामदास दौलतरामको (१६-९-१९४५) २७८
४५०. पत्र : हर्षदा दीवानजीको (१६-९-१९४५) २७९
४५१. पत्र . मथुरादास त्रिकमजीको (१६-९-१९४५) २७९
४५२. पत्र . चम्पा मेहताको (१६-९-१९४५) २८०
४५३. पत्र : कृष्ण वर्माको (१६-९-१९४५) २८०
४५४. पत्र : जमशेदजी मेहताको (१६-९-१९४५) २८१
४५५. पत्र : कनु गांधीको (१६-९-१९४५) २८१
४५६ पत्र · बनारसीदास चतुर्वेदीको (१६-९-१९४५) २८२
४५७ पत्र . ख्वाजा साहबको (१६-९-१९४५) २८२
४५८. पुर्जा . अमृतकौरको (१७-९-१९४५) २८३
४५९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (१७-९-१९४५) २८३
४६०. पत्र : रामनारायण चौधरीको (१७-९-१९४५) २८४
४६१ पत्र : कृष्णचन्द्रको (१७-९-१९४५) २८४
४६२. पत्र . पृथ्वीसिंह आजादको (१७-९-१९४५) २८५
४६३. पत्र . वीणा चटर्जीको (१७-९-१९४५) २८५
४६४. पत्र · होशियारीको (१७-९-१९४५) २८६
४६५. पत्र अनुग्रह नारायण सिंहको (१७-९-१९४५) २८६
४६६ पत्र : बलवन्तसिंहको (१७-९-१९४५) २८७
४६७. पत्र : मीराबहनको (१७-९-१९४५) २८७
४६८. पत्र . पामु राममूर्तिको (१९-९-१९४५) २८८
४६९. पत्र : नारणदास गांधीको (१९-९-१९४५) २८८
४७० पत्र : गजानन नायकको (१९-९-१९४५) २८९
४७१. पत्र : प्रभावतीको (१९-९-१९४५) २८९
४७२. एक पुर्जा (१९-९-१९४५) २९०
४७३. एक पुर्जा (१९-९-१९४५) २९०
४७४. पत्र : श्यामलालको (१९-९-१९४५) २९०
४७५. पत्र : सुशीला नैयरको (१९-९-१९४५) २९१
४७६. तार : 'टाइम्स' को (२१-९-१९४५) २९२
४७७. पत्र : अमरावापाको (२१-९-१९४५) २९२
४७८. पत्र कैलाश डाह्याभाई मास्टरको (२१-९-१९४५) २९३
४७९. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२१-९-१९४५) २९४
४८०. भाषण प्रार्थना-सभामें (२१-९-१९४५) २९५
४८१ पत्र : अमृतकौरको (२३-९-१९४५) २९६

४८२. पत्र : सनत्कुमार जोशीको (२४-९-१९४५ के पूर्व) २९६
४८३. प्रस्तावना (२४-९-१९४५) २९७
४८४. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (२४-९-१९४५) २९८
४८५. पत्र : कंचन मु० शाहको (२४-९-१९४५) २९८
४८६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (२४-९-१९४५) २९९
४८७. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको (२४-९-१९४५) २९९
४८८. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२४-९-१९४५) ३००
४८९. पत्र : अमतुस्सलामको (२४-९-१९४५) ३००
४९०. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (२४-९-१९४५) ३०१
४९१. पत्र : धीरेन्द्र चटर्जीको (२४-९-१९४५) ३०१
४९२. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (२५-९-१९४५) ३०२
४९३. पत्र : सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धनको (२५-९-१९४५) ३०२
४९४. पत्र : श्रीमती शुक्लको (२५-९-१९४५) ३०३
४९५. पत्र : सुशीला नैयरको (२५-९-१९४५) ३०४
४९६. पत्र : रानी राजवाड़ेको (२५-९-१९४५) ३०४
४९७. पत्र : आनन्द सुन्दरम्को (२६-९-१९४५) ३०५
४९८. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को (२७-९-१९४५) ३०५
४९९. पत्र : एन० रामनाथनको (२७-९-१९४५) ३०६
५००. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको (२७-९-१९४५) ३०६
५०१. पत्र : सीता गांधीको (२७-९-१९४५) ३०७
५०२. पत्र : डाह्याभाई मणिभाई पटेलको (२७-९-१९४५) ३०७
५०३. पत्र : कृष्ण वर्माको (२७-९-१९४५) ३०८
५०४. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको (२७-९-१९४५) ३०८
५०५. पत्र : एन० व्यासतीर्थको (२७-९-१९४५) ३०९
५०६. पत्र : नारणदास गांधीको (२८-९-१९४५) ३०९
५०७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (२८-९-१९४५) ३१०
५०८. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको (२८-९-१९४५) ३१०
५०९. पत्र : शशिकान्त मेहताको (२८-९-१९४५) ३११
५१०. पत्र : डंकन ग्रीनलीजको (२९-९-१९४५) ३१२
५११. पत्र : बैसिकको (२९-९-१९४५) ३१२
५१२. पत्र : पुष्पा देसाईको (२९-९-१९४५) ३१३
५१३. पत्र : सुमित्रा गांधीको (२९-९-१९४५) ३१३
५१४. पत्र : रामदास गांधीको (२९-९-१९४५) ३१४
५१५. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२९-९-१९४५) ३१४
५१६. पत्र : सुन्दरीको (२९-९-१९४५) ३१५

५१७. पत्र : ह्रोशियारीको (२९-९-१९४५) ३१५
५१८. पत्र : लालचन्दको (२९-९-१९४५) ३१६
५१९. प्रस्तावना . 'नेहरू योर नेबर' की (३०-९-१९४५) ३१६
५२०. पत्र : पी० डी० टंडनको (३०-९-१९४५) ३१७
५२१. पत्र · उत्तिमचन्द गगारामको (३०-९-१९४५) ३१७
५२२. पत्र : जयकृष्ण भणसालीको (३०-९-१९४५) ३१८
५२३. पत्र : सुशीला गाधीको (३०-९-१९४५) ३१८
५२४. पत्र : प्रेमा कटकको (३०-९-१९४५) ३१९
५२५. पत्र . किशोरलाल घ० मशरूवालाको (३०-९-१९४५) ३१९
५२६. पत्र : गजानन नायकको (३०-९-१९४५) ३२०
५२७. खादी खरीदने के लिए सूत देने की शर्त (सितम्बर, १९४५) ३२१
५२८. तार : वीणा दासको (१-१०-१९४५) ३२२
५२९ पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (१-१०-१९४५) ३२२
५३०. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको (१-१०-१९४५) ३२३
५३१. पत्र : रेहाना तैयबजीको (१-१०-१९४५) ३२४
५३२. तार . तान युन-शानको (२-१०-१९४५) ३२४
५३३. पत्र : कोंडा वेंकटप्पैयाको (२-१०-१९४५) ३२५
५३४. पत्र : एन मारी पीटरसनको (२-१०-१९४५) ३२५
५३५. पत्र : के० राम रावको (२-१०-१९४५) ३२६
५३६ पत्र : मुन्नालाल गगादास शाहको (२-१०-१९४५) ३२६
५३७. पत्र · प्रभावतीको (२-१०-१९४५) ३२७
५३८. पत्र : आनन्द गो० चोखावालाको (२-१०-१९४५) ३२७
५३९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (२-१०-१९४५) ३२८
५४०. पत्र : टी० पी० जोशीको (२-१०-१९४५) ३२८
५४१. पत्र : लीलावती आसरको (२-१०-१९४५) ३२९
५४२. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२-१०-१९४५) ३२९
५४३. पत्र : रमणलाल अग्रवालको (२-१०-१९४५) ३३०
५४४. पत्र : चाँदरानीको (२-१०-१९४५) ३३०
५४५. पत्र : गोपी बिड़लाको (२-१०-१९४५) ३३१
५४६. तार : कस्तूरी श्रीनिवासनको (३-१०-१९४५) ३३१
५४७. तार : इन्डो-ब्रिटिश फ्रेन्डशिप ग्रुपके अध्यक्षको (३-१०-१९४५) ३३२
५४८. पत्र · नारणदास गाधीको (३-१०-१९४५) ३३२
५४९. पत्र : प्रेमा कंटकको (३-१०-१९४५) ३३३
५५०. पत्र : चिमनलाल सीतलवाडको (३-१०-१९४५) ३३३
५५१. पत्र यूसुफ मेहरअलीको (३-१०-१९४५) ३३४

५५२. पत्र : करसनदास चितलियाको (३-१०-१९४५) ३३४
५५३. पत्र : जमनाबहन गांधीको (३-१०-१९४५) ३३५
५५४. पुर्जा : दिनशा मेहताको (३-१०-१९४५) ३३५
५५५. पत्र : जमशेदजी मेहताको (३-१०-१९४५) ३३६
५५६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको (३-१०-१९४५) ३३७
५५७. पत्र : राधाकान्त मालवीयको (३-१०-१९४५) ३३७
५५८. पत्र : गोकुलभाई भट्टको (४-१०-१९४५) ३३८
५५९. पत्र : मृदुला साराभाईको (४-१०-१९४५) ३३८
५६०. पत्र : मणिलाल शुक्लको (४-१०-१९४५) ३३९
५६१. पत्र : कंचन मु० शाहको (४-१०-१९४५) ३४०
५६२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (४-१०-१९४५) ३४०
५६३. पत्र : शरतचन्द्र बोसको (५-१०-१९४५) ३४१
५६४. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको (५-१०-१९४५) ३४२
५६५. पत्र : एन० के० बोसको (५-१०-१९४५) ३४२
५६६. पत्र : कुँवरजी पारेखको (५-१०-१९४५) ३४३
५६७. पत्र : प्रभावतीको (५-१०-१९४५) ३४३
५६८. पत्र : गुणोत्तम हठीसिंहको (५-१०-१९४५) ३४४
५६९. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (५-१०-१९४५) ३४४
५७०. पत्र : अमतुस्सलामको (५-१०-१९४५) ३४७
५७१. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (५-१०-१९४५) ३४७
५७२. पत्र : इफ्तिखारुद्दीन और इस्मतको (५-१०-१९४५) ३४८
५७३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (५-१०-१९४५) ३४८
५७४. भाषण : गोवर्धन संस्थामें (५-१०-१९४५) ३४९
५७५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (६-१०-१९४५) ३४९
५७६. पत्र : प्रेमा कंटकको (६-१०-१९४५) ३५०
५७७. पत्र : पूनमचन्द रांकाको (६-१०-१९४५) ३५०
५७८. पत्र : माधव श्रीहरि अणेको (६-१०-१९४५) ३५१
५७९. पत्र : रेहाना तैयबजीको (६-१०-१९४५) ३५१
५८०. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको (७-१०-१९४५) ३५२
५८१. पत्र : सुरेन्द्रको (७-१०-१९४५) ३५२
५८२. पत्र : जतीनदास अमीनको (७-१०-१९४५) ३५३
५८३. पत्र : कृष्णचन्द्रको (७-१०-१९४५) ३५३
५८४. पत्र : अबुल कलाम आजादको (७-१०-१९४५) ३५४
५८५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (८-१०-१९४५) ३५४
५८६. पत्र : मदालसाको (८-१०-१९४५) ३५५

५८७. पत्र : ग० वा० मावलंकरको (८-१०-१९४५) ३५५
५८८. पत्र : गजानन नायकको (८-१०-१९४५) ३५६
५८९. पत्र . चम्पा मेहताको (८-१०-१९४५) ३५६
५९०. पत्र : वीरमानुको (८-१०-१९४५) ३५७
५९१. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको (८-१०-१९४५) ३५७
५९२. पत्र : श्यामलालको (८-१०-१९४५) ३५८
५९३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (९-१०-१९४५) ३५८
५९४. पत्र मीराबहनको (९-१०-१९४५) ३५९
५९५. पत्र . कान्तिलाल गांधीको (९-१०-१९४५) ३५९
५९६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (९-१०-१९४५) ३६०
५९७. पत्र . चम्पा मेहताको (९-१०-१९४५) ३६०
५९८. पत्र : पुष्पा देसाईको (९-१०-१९४५) ३६१
५९९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (९-१०-१९४५) ३६१
६००. पत्र : गोकुलभाई भट्टको (९-१०-१९४५) ३६२
६०१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (९-१०-१९४५) ३६२
६०२. एक पत्र (१०-१०-१९४५ या उसके पूर्व) ३६३
६०३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (१०-१०-१९४५) ३६३
६०४. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (१०-१०-१९४५) ३६४
६०५ पत्र : जयरामदास दौलतरामको (१०-१०-१९४५) ३६५
६०६. पत्र : ग० वा० मावलंकरको (१०-१०-१९४५) ३६६
६०७. पत्र : खुशाल शाहको (१०-१०-१९४५) ३६६
६०८. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको (१०-१०-१९४५) ३६७
६०९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१०-१०-१९४५) ३६७
६१०. पत्र : सत्यदेवीको (१०-१०-१९४५) ३६९
६११. पत्र : चौंडे महाराजको (१०-१०-१९४५) ३६९
६१२. एक पत्र (१०-१०-१९४५) ३७०
६१३. पत्र : महाजनीको (१०-१०-१९४५) ३७१
६१४. एक पत्र (११-१०-१९४५ या उसके पूर्व) ३७१
६१५. पत्र : रामप्रसादको (११-१०-१९४५) ३७२
६१६. पत्र : दिनेश सिंहको (११-१०-१९४५) ३७२
६१७. पत्र . श्रीकृष्णदास जाजूको (११-१०-१९४५) ३७३
६१८. पत्र : देवदास गांधीको (११/१२-१०-१९४५) ३७३
६१९. पत्र : उमा अग्रवालको (१२-१०-१९४५) ३७४
६२०. पत्र : प्रेमा कंटकको (१२-१०-१९४५) ३७५
६२१. पत्र : रामदास गांधीको (१२-१०-१९४५) ३७५

६२२. पत्र : लीलावती आसरको (१२/१३-१०-१९४५) ३७६

६२३. पत्र : एफ० एम० पिंटोको (१३-१०-१९४५) ३७६

६२४. पत्र : के० ईश्वर दत्तको (१३-१०-१९४५) ३७७

६२५. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (१३-१०-१९४५) ३७८

६२६. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (१४-१०-१९४५) ३७८

६२७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१४-१०-१९४५) ३७९

६२८. पत्र : रतिलाल बेचरदास मेहताको (१४-१०-१९४५) ३७९

६२९. पत्र : धर्मकुमार गिरिको (१४-१०-१९४५) ३८०

६३०. पत्र : मुन्नालाल शाहको (१४-१०-१९४५) ३८०

६३१. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१४-१०-१९४५) ३८१

६३२. पत्र : अभ्यंकरको (१४-१०-१९४५) ३८१

६३३. पत्र : गोप गुरबक्शानीको (१४-१०-१९४५) ३८२

६३४. पत्र : विमलारानी गुरबक्शानीको (१४-१०-१९४५) ३८२

६३५. पत्र : अमृतकौरको (१५-१०-१९४५) ३८३

६३६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको (१५-१०-१९४५) ३८३

६३७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (१५-१०-१९४५) ३८४

६३८. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको (१५-१०-१९४५) ३८५

६३९. पत्र : मृदुला साराभाईको (१५-१०-१९४५) ३८५

६४०. पत्र : वजुभाई शुक्लको (१५-१०-१९४५) ३८६

६४१. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१५-१०-१९४५) ३८७

६४२. पत्र : आर० अच्युतनको (१५-१०-१९४५) ३८७

६४३. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को (१५-१०-१९४५) ३८८

६४४. पत्र : चांदरानीको (१५-१०-१९४५) ३८८

६४५. पत्र : अबुल कलाम आजादको (१५-१०-१९४५) ३८९

६४६. पत्र : अब्दुल गफ्फार खांको (१५-१०-१९४५) ३८९

६४७. पत्र : वामनराव जोशीको (१५-१०-१९४५) ३९०

६४८. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (१५-१०-१९४५) ३९०

६४९. पत्र : जे० बी० कृपलानीको (१५-१०-१९४५) ३९१

६५०. पत्र : एन मारी पीटरसनको (१६-१०-१९४५) ३९१

६५१. पत्र : छोटूभाई मेहताको (१६-१०-१९४५) ३९२

६५२. पत्र : ताराबहन मोडकको (१६-१०-१९४५) ३९२

६५३. पत्र : हरकिशनदास चावड़ाको (१६-१०-१९४५) ३९३

६५४. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (१६-१०-१९४५) ३९४

६५५. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको (१७-१०-१९४५) ३९४

६५६. पत्र : छगनलाल जोशीको (१७-१०-१९४५) ३९५

६५७. पत्र : शान्तिलाल मेहताको (१७-१०-१९४५) ३९६
६५८. पत्र : प्रभावतीको (१७-१०-१९४५) ३९६
६५९. पत्र : गजानन नायकको (१७-१०-१९४५) ३९७
६६०. पत्र : मयाशंकरको (१७-१०-१९४५) ३९७
६६१. पत्र : एल० कृष्णस्वामी भारतीको (१७-१०-१९४५) ३९८
६६२. पत्र : रतनदेवीको (१७-१०-१९४५) ३९८
६६३. पत्र : भारतन कुमारप्पाको (१८-१०-१९४५ या उसके पूर्व) ३९९
६६४. तार : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (१८-१०-१९४५) ३९९
६६५. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (१८-१०-१९४५) ४००
६६६. तार : जाकिर हुसैनको (१८-१०-१९४५) ४०२
६६७. पत्र : जाकिर हुसैनको (१८-१०-१९४५) ४०२
६६८. पत्र : अमृतकौरको (१८-१०-१९४५) ४०३
६६९. पत्र : के० सन्तानमको (१८-१०-१९४५) ४०३
६७०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१८-१०-१९४५) ४०४
६७१. पत्र : मगनलाल मेहताको (१८-१०-१९४५) ४०५
६७२. पत्र : मंगलदास पकवासाको (१८-१०-१९४५) ४०५
६७३. पत्र : वल्लभदास जोशीको (१८-१०-१९४५) ४०७
६७४. पत्र : गुलजार सिंहको (१८-१०-१९४५) ४०८
६७५. पत्र : मोहनलाल वर्माको (१८-१०-१९४५) ४०८
६७६. पत्र : अग्रवालको (१८-१०-१९४५) ४०९
६७७. पत्र : एस० के० गुप्तको (१८-१०-१९४५) ४०९
६७८. पत्र : ए० एस० सहजानन्दको (१९-१०-१९४५ या उसके पूर्व) ४१०
६७९. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (१९-१०-१९४५) ४१०
६८०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१९-१०-१९४५) ४११
६८१. पत्र : जी० एल० क्रॉसको (१९-१०-१९४५) ४१२
६८२. पत्र : शैलेशचन्द्र बोसको (१९-१०-१९४५) ४१२
६८३. एक पत्र (१९-१०-१९४५) ४१३
६८४. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको (१९-१०-१९४५) ४१३
६८५. पत्र : पुष्पा देसाईको (१९-१०-१९४५) ४१४
६८६. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको (१९-१०-१९४५) ४१४
६८७. पत्र : अमतुस्सलामको (१९-१०-१९४५) ४१५
६८८. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१९-१०-१९४५) ४१५
६८९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (१९-१०-१९४५) ४१६
६९०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१९-१०-१९४५) ४१७
६९१. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (१९-१०-१९४५) ४१७

६९२. पत्र : डॉ० एस० एम० कुलकर्णीको (१९-१०-१९४४) ४१८
६९३. पत्र : भवानीदयाल संन्यासीको (१९-१०-१९४४) ४१८
६९४. पत्र : राममनोहर लोहियाको (१९-१०-१९४४) ४१९
६९५. पत्र : देवप्रकाश नैयरको (१९-१०-१९४४) ४२०
६९६. पत्र : हुमायूं कबीरको (१९-१०-१९४४) ४२०
६९७. पत्र : वामनराव जोशीको (१९-१०-१९४४) ४२१
६९८. पत्र : सत्यभामा देवीको (१९-१०-१९४४) ४२१
६९९. पत्र : हीरालाल शर्माको (१९-१०-१९४४ या उसके पश्चात्) ४२२
७००. पत्र : एस० ए० वैजको (२०-१०-१९४४) ४२३
७०१. पत्र : टी० एस० अब्दुर्रहमानको (२०-१०-१९४४) ४२३
७०२. पत्र : सुशीला गांधीको (२०-१०-१९४४) ४२४
७०३. पत्र : नरेन्द्र त्रिवेदीको (२०-१०-१९४४) ४२४
७०४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको (२०-१०-१९४४) ४२५
७०५. पत्र : लीलावती आसरको (२०-१०-१९४४) ४२५
७०६. पत्र : नवनीत शाहको (२०-१०-१९४४) ४२६
७०७. पत्र : पी० एन० मैथ्यूको (२०-१०-१९४४) ४२७
७०८. पत्र : वीणा चटर्जीको (२०-१०-१९४४) ४२७
७०९. पत्र : कन्या गुरुकुलकी मुख्य अधिष्ठाताको (२०-१०-१९४४) ४२८
७१०. पत्र : डॉ० कृष्णाबाई निम्बकरको (२०-१०-१९४४) ४२८
७११. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (२०-१०-१९४४) ४२९
७१२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (२०-१०-१९४४) ४२९
७१३. पुर्जा : चाँदरानीको (२१-१०-१९४४ के पूर्व) ४३०
७१४. तार : सत्यवती देवीको — मसौदा (२१-१०-१९४४) ४३१
७१५. पत्र : अमृतकौरको (२१-१०-१९४४) ४३१
७१६. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको (२१-१०-१९४४) ४३२
७१७. पत्र : मूलाभाई देसाईको (२१-१०-१९४४) ४३३
७१८. टिप्पणी (२१-१०-१९४४) ४३५
७१९. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको (२१-१०-१९४४) ४३५
७२०. पत्र : अनन्तरामको (२१-१०-१९४४) ४३६
७२१. पत्र : श्रीमन्नारायणको (२१-१०-१९४४) ४३६
७२२. पत्र : मणिलाल गांधीको (२१-१०-१९४४) ४३७
७२३. तार : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२२-१०-१९४४) ४३८
७२४. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको (२२-१०-१९४४) ४३८
७२५. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (२२-१०-१९४४) ४३९
७२६. पत्र : जतीनदास अमीनको (२२-१०-१९४४) ४३९

७२७. पत्र : चाँदरानीको (२२-१०-१९४५) ४४०
७२८. पत्र : काशी गांधीको (२३-१०-१९४५) ४४०
७२९. पत्र : दुर्गा देसाईको (२३-१०-१९४५) ४४१
७३०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२३-१०-१९४५) ४४१
७३१. पत्र : जेठालाल गांधीको (२३-१०-१९४५) ४४२
७३२. पत्र : कमाल खाँको (२३-१०-१९४५) ४४२
७३३. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको (२३-१०-१९४५) ४४३
७३४. पत्र : श्रीमन्नारायणको (२३-१०-१९४५) ४४३
७३५. पत्र : नायरबुल भोवालीको (२३-१०-१९४५) ४४४
७३६. पत्र : डॉ० एच० के० लालको (२३-१०-१९४५) ४४५
७३७. पत्र : महादेवशास्त्री दिवेकरको (२३-१०-१९४५) ४४५
७३८. पत्र : वासुदेव दास्तानेको (२३-१०-१९४५) ४४६
७३९. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२३-१०-१९४५) ४४७
७४०. पत्र : अबुल कलाम आजादको (२३-१०-१९४५) ४४७
७४१. तार : राधाबाई सुब्बारायनको (२४-१०-१९४५) ४४८
७४२. पत्र : के० सन्तानम्को (२४-१०-१९४५) ४४८
७४३. पत्र : नीलकण्ठ मशरूवालाको (२४-१०-१९४५) ४४९
७४४. पत्र : डॉ० एम० डी० डी० गिल्डरको (२४-१०-१९४५) ४४९
७४५. पत्र : जहाँगीर पटेलको (२४-१०-१९४५) ४५०
७४६. पत्र : वेणुबाई गोडबोलेको (२४-१०-१९४५) ४५०
७४७. पत्र : सुशीला गांधीको (२५-१०-१९४५) ४५१
७४८. पत्र : मणिलाल गांधीको (२५-१०-१९४५) ४५२
७४९. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (२५-१०-१९४५) ४५२
७५०. पत्र : व्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२५-१०-१९४५) ४५३
७५१. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको (२५-१०-१९४५) ४५३
७५२. पत्र : इच्छानन्दको (२५-१०-१९४५) ४५४
७५३. पत्र : अभ्यंकरको (२५-१०-१९४५) ४५४
७५४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२५-१०-१९४५) ४५५
७५५. पत्र : प्रेस्टन ग्रोवरको (२६-१०-१९४५) ४५५
७५६. पत्र : फ्लोरेन्स वेजवुडको (२६-१०-१९४५) ४५६
७५७. पत्र : महेन्द्र गोपालदास देसाईको (२६-१०-१९४५) ४५७
७५८. पत्र : पी० एन० कौलको (२६-१०-१९४५) ४५७
७५९. पत्र : डॉ० सुरेश बनर्जीको (२६-१०-१९४५) ४५८
७६०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको (२६-१०-१९४५) ४५८
७६१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२६-१०-१९४५) ४६०
७६२. पत्र : एल० एन० गोपालस्वामीको (२७-१०-१९४५) ४६०

७६३. पत्र : जी० रामचन्द्र रावको (२७-१०-१९४५) ४६१
७६४. पत्र : मणिलाल गांधीको (२७-१०-१९४५) ४६३
७६५. पत्र : किशोरलाल ध० मशरूवालाको (२७-१०-१९४५) ४६४
७६६. पत्र : जतीनदास अमीनको (२७-१०-१९४५) ४६५
७६७. पत्र : हरजीवन कोटकको (२७-१०-१९४५) ४६५
७६८. पत्र : हीरालाल शर्माको (२७-१०-१९४५) ४६६
७६९. पत्र : आबिद अलीको (२७-१०-१९४५) ४६७
७७०. पत्र : अमृतकौरको (२८-१०-१९४५) ४६७
७७१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२८-१०-१९४५) ४६८
७७२. पत्र : दिलीपकुमार रायको (२८-१०-१९४५) ४६८
७७३. पत्र : श्रीमती एम० एच० मॉरिसनको (२८-१०-१९४५) ४६९
७७४. पत्र : काह्यालाल जानीको (२८-१०-१९४५) ४७१
७७५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२८-१०-१९४५) ४७२
७७६. पत्र : गिरिराज किशोरको (२८-१०-१९४५) ४७२
७७७. पत्र : स्वामी सत्यदेवको (२८-१०-१९४५) ४७३
७७८. पत्र : चाँदरानीको (२८-१०-१९४५) ४७३
७७९. पत्र : विचित्रनारायण शर्माको (२८-१०-१९४५) ४७४
७८०. पत्र : एम० दत्तको (२८-१०-१९४५) ४७४
७८१. प्रस्तावना : 'गीता प्रवेशिका' की (२९-१०-१९४५) ४७५
७८२. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (२९-१०-१९४५) ४७५
७८३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको (२९-१०-१९४५) ४७६
७८४. पत्र : मीराबहनको (२९-१०-१९४५) ४७७
७८५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (२९-१०-१९४५) ४७८
७८६. पत्र : जीवणजी देसाईको (२९-१०-१९४५) ४७८
७८७. पत्र : क० मा० मुन्शीको (२९-१०-१९४५) ४७९
७८८. पत्र : गोमती मशरूवालाको (२९-१०-१९४५) ४८०
७८९. पत्र : किशोरलाल ध० मशरूवालाको (२९-१०-१९४५) ४८०
७९०. पत्र : श्रीकान्त गुप्तको (२९-१०-१९४५) ४८१
७९१. पत्र : जे० बरुआको (२९-१०-१९४५) ४८१
७९२. पत्र : देवप्रसाद नैयरको (२९-१०-१९४५) ४८२
७९३. तार : फैजाबाद जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको (३०-१०-१९४५) ४८२
७९४. तार : डी० जी० तेन्दुलकरको (३०-१०-१९४५) ४८३
७९५. तार : श्रीमन्नारायणको (३०-१०-१९४५) ४८३
७९६. पत्र : डॉ० कृष्णाबाई निम्बकरको (३०-१०-१९४५) ४८४
७९७. पत्र : सर्वजीतलाल वर्माको (३०-१०-१९४५) ४८४
७९८. उत्तर : एक पत्र-लेखकको (३१-१०-१९४५ या उसके पूर्व) ४८५

७९९. पत्र : कंचन मु० शाहको (३१-१०-१९४५) ४८५
८००. पत्र : जयकृष्ण भणसालीको (३१-१०-१९४५) ४८६
८०१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (३१-१०-१९४५) ४८६
८०२. पत्र : वसनजी हाँसजीको (३१-१०-१९४५) ४८७
८०३. पत्र : छगनलाल जोशीको (३१-१०-१९४५) ४८७
८०४. पत्र : सत्यदेवी गिरिको (३१-१०-१९४५) ४८८
८०५. पत्र : जेठालाल गांधीको (३१-१०-१९४५) ४८९
८०६. पत्र : खुशाल शाहको (३१-१०-१९४५) ४८९
८०७. पत्र : छगनलाल शाहको (३१-१०-१९४५) ४९०
८०८. पत्र : डॉ० प्रकाशको (३१-१०-१९४५) ४९१
८०९. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (३१-१०-१९४५) ४९१
८१०. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌को (३१-१०-१९४५) ४९२
८११. पत्र : कालीचरण घोषको (३१-१०-१९४५) ४९२
८१२. पत्र : चेरियन कौपेनको (अक्तूबर, १९४५) ४९३
८१३. रोजके विचार (अक्तूबर, १९४५) ४९३

परिशिष्ट

१. लॉर्ड वेवलको अबुल कलाम आजादका पत्र ५०५
२. विवाह-विधि ५०७

सामग्रीके साधन-सूत्र ५०९
तारीखवार जीवन-वृत्तान्त ५११
शीर्षक-सांकेतिका ५१३
सांकेतिका ५२०

१. सन्देश : विद्यार्थियोंको[1]

आगरा
१७ जुलाई, १९४५

[गांधीजी :] पढ़ो और देशकी आजादीके लिए काम करो। भारतके विद्यार्थियोंके लिए यही मेरा सन्देश है।

उन्होंने कहा कि शिमला सम्मेलनकी विफलतासे[2] विद्यार्थी जगतमें व्याप्त निराशा और हिन्दू तथा मुसलमान विद्यार्थियोंके बीच उसके कारण पैदा हो सकनेवाली दुर्भावनाके खतरेको मैं समझता हूँ। लेकिन आशा नहीं छोड़नी चाहिए।

गांधीजी ने विद्यार्थियोंमें एकताकी आवश्यकतापर बल देते हुए कहा कि यह बड़े दुःखका विषय है कि [विद्यार्थियोंके बीच] कई पार्टियाँ कायम हैं और स्थिति ऐसी हो गई है कि कभी-कभी पुलिसके बीच-बचावकी जरूरत पड़ती है। मेरी कामना है कि हर धर्म, रंग और जातिके विद्यार्थी ऐक्यबद्ध संगठनके रूपमें सबके समान ध्येयके लिए काम करें। उन्होंने लोगोंको आपसी दोषारोपण [से बचने] की सलाह दी।

जब गांधीजी से पूछा गया कि क्या शिमला सम्मेलन एक गैर-लीगी को दिये गये एक स्थानके प्रश्नपर विफल हो गया तो उन्होंने इस बातका प्रतिवाद किया। उन्होंने कहा कि इस समस्याके बारेमें अपने विचार मैं अवसर मिलते ही जल्दीसे-जल्दी प्रकाशित करूँगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, १९-७-१९४५

१. शिमला सम्मेलनके बाद वर्धा जाते हुए गांधीजी विशेष ट्रेनसे दिनके ३ बजकर ४० मिनटपर जब आगरा छावनी स्टेशन पहुँचे तब वहाँ उनका स्वागत करने के लिए खासी भीड़ एकत्र थी, जिसको सम्बोधित करते हुए उन्होंने ये बातें कहीं।

२. शिमला सम्मेलनका संयोजन वाइसराय लॉर्ड वेवलने किया था और उसमें विभिन्न दलोंके नेता शरीक हुए थे, जिनमें प्रमुख थे, अबुल कलाम आजाद, भूलाभाई देसाई, मुहम्मद अली जिन्ना, डॉ० खान साहब, लियाकत अली खाँ, सर हेनरी रिचर्डसन, राव बहादुर शिवराज और मास्टर तारासिंह। गांधीजी सम्मेलनमें शामिल नहीं हुए, बल्कि शिमला में उपस्थित रहे, ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे परामर्श किया जा सके। सम्मेलन २५ जूनको आरम्भ हुआ और २९ जूनको स्थगित कर दिया गया, ताकि अलग पार्टियाँ प्रस्तावित कार्यकारिणी परिषद्के लिए सदस्योंके नामोंकी सूचियाँ दे सकें। लेकिन जब १४ जुलाईको फिर उसकी बैठक आरम्भ हुई तब वाइसरायने घोषित किया कि सम्मेलन विफल हो गया है।

२. भेंट : 'पीपुल्स वार' के संवाददाताको[1]

[१७ जुलाई, १९४५][2]

म० ना० टंडन : शिमलाकी विफलतासे वे लोग निराश हो गये हैं जो शासनमें परिवर्तनकी आशा बाँधे हुए थे।

गांधीजी : उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। कांग्रेसने सही रुख अपनाया है और उसने अपना राष्ट्रीय स्वरूप सिद्ध कर दिया है।

म० ना० टं० : कांग्रेस और लीगके नेताओंमें और समाचारपत्रोंमें आपसमें एक-दूसरेको दोष देने का सिलसिला शुरू हो गया है। क्या इससे ऐसा नहीं होगा कि सम्बन्धोंमें कटुता आयेगी और किसी भी भावी समझौतेकी आशा दूर हो जायेगी और इस प्रकार हम गृह-युद्ध और दंगे-फसादोंकी स्थितिमें पहुँच जायेंगे?

गां० : आपसमें दोषारोपण नहीं करना चाहिए, हालाँकि सत्य तो कहना ही होगा। स्थितिके गृह-युद्धका रूप ले लेने का खतरा है। दिल्ली स्टेशनपर मौलाना आजादके डिब्बेके सामने हुई झड़प उसकी सूचक है। लेकिन हमें ऐसी स्थिति नहीं पैदा होने देनी चाहिए जब हमारे बीच व्यवस्था कायम रखने का काम पुलिसको करना पड़े। मगर दंगे हो जाने पर हम क्या कर सकते हैं? दंगे तो हमेशा होते रहे हैं।...[3] के शासन-कालमें भी दंगे और उपद्रव होते थे। इस देशमें तरह-तरहके परस्पर विरोधी विचारोंवाली बहुत बड़ी आबादीका निवास है।

म० ना० टं० : उस जमानेके नागरिक उपद्रवों और आजके राजनीतिक तथा आर्थिक फलितार्थोंवाले उपद्रवोंके बीच कोई तुलना नहीं है। कांग्रेस और लीगके देशभक्त लोग जनसेवाके लिए एक होने के बजाय आपसमें झगड़ेंगे तो नतीजा यह होगा कि जनता दोनोंकी ईमानदारी और देशभक्तिमें आस्था खो बैठेगी। इस तरह उनके दुःखोंमें दस गुनी वृद्धि होगी और राष्ट्रीय आन्दोलन बिखर जायेगा।

गां० : हाँ। हमें कोशिश करनी चाहिए कि ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो।

१ और २. गांधीजी ने वर्धा जाते हुए आगरा स्टेशनपर १७ जुलाईको इस साम्यवादी साप्ताहिकके संवाददाता महादेव नारायण टंडनको मुलाकात दी थी।

३. संवाददाताके अनुसार गांधीजी ने यहाँ एक प्रजापालक भारतीय राजाका नाम लिया जिसे वे प्लेटफार्मके शोर-गुलमें सुन नहीं पाये।

म० ना० टं० : क्या आपको यह आशा है कि निकट भविष्यमें कांग्रेस और लीगमें समझौता हो जायेगा ?

गां० : हम सबको ऐसी आशा करनी चाहिए।

म० ना० टं० : आम लोगोंकी मान्यता है कि नेताओंके बीच मतभेद होने के कारण सिर्फ एक स्थानके सवालको लेकर सम्मेलन विफल हो गया।

गां० : यह कहना गलत है कि सम्मेलन सिर्फ एक स्थानके सवालको लेकर विफल हो गया। कांग्रेस एक सिद्धान्तके लिए लड़ रही थी।

म० ना० टं० : यदि ऐसा भी था कि कांग्रेस केवल हिन्दू कांग्रेसियोंको ही नामजद कर सकती थी तो भी वे ही राष्ट्रवादी मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व कर सकते थे और उनके हितोंकी रक्षा कर सकते थे। कांग्रेसी–कांग्रेसीमें तो कोई अन्तर नहीं है।

गां० : लेकिन हम तो सभी दलों और सम्प्रदायोंके सुयोग्य व्यक्तियोंकी तलाशमें थे। हमें इस बातकी कोई फिक्र नहीं थी कि किस दलको कितने स्थान मिलते हैं।

म० ना० टं० : आपने कांग्रेस-लीग समानताका भूलाभाईका 'फार्मूला'[1] स्वीकार कर लिया था और इस आशयका एक सार्वजनिक वक्तव्य भी जारी किया था।[2] लेकिन कांग्रेस कार्य-समिति वेवलकी प्रस्तावित हिन्दू-मुस्लिम समानता[3] पर सहमत हो गई, और इस प्रकार उसने सम्मेलनके भंग होनेका कारण उपस्थित कर दिया, क्योंकि कांग्रेस और लीग हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों और मुसलमानों द्वारा हिन्दुओंकी नामजदगीपर सहमत नहीं हो सकती थी। क्या यह सच है कि कार्य-समिति आपसे सहमत नहीं हुई और उसने कांग्रेस-लीग समानता के सिद्धान्तको अस्वीकार कर दिया ?

गां० : अब यह तो आप मुझे परेशानीमें डाल रहे हैं। हां, बात कुछ ऐसी ही है। निकट भविष्यमें मैं इसके सम्बन्धमें लिखूंगा।

म० ना० टं० : आपको शायद मालूम हो कि पूरे सम्मेलनके दौरान साम्यवादियोंका नारा यही रहा है कि "हिन्दू-मुस्लिम समानताको कांग्रेस-लीग समानतामें बदल दो" और वे इसके लिए प्रयत्न भी कर रहे हैं।

गां० : उन्हें अपना प्रयत्न जारी रखना चाहिए।

१. देखिए खण्ड ८०, परिशिष्ट ५।

२. देखिए खण्ड ८०, पृ० ३४७-४९।

३. वाइसरायके १४ जूनके रेडियो प्रसारणके लिए देखिए खण्ड ८०, परिशिष्ट ३।

स० ना० टं० : पूरणचन्द्र जोशीसे आपके पत्र-व्यवहार[1] का निष्फल अन्त किन कारणोंसे हुआ ?

गा० : कौन कहता है कि पत्र-व्यवहारका अन्त हो गया है ?

स० ना० टं० : क्या कार्य-समितिने साम्यवादियोंके बारेमें कोई निर्णय किया है ?

गा० : नहीं, कोई निर्णय नहीं किया है।

स० ना० टं० : आपको मालूम है कि संयुक्त प्रान्तमें तीन साम्यवादी साप्ताहिकोंपर[2] संयुक्त प्रान्त सरकारका प्रतिबन्ध जारी है।

गा० : तो क्या उसने अब तक प्रतिबन्ध नहीं हटाया है ? सरकारका यह काम तो बहुत गलत है।

स० ना० टं० : श्री जे० सी० गुप्त[3] और अन्य लोग आपसे शिमलामें सुधार-पूर्वके राजनीतिक कैदियोंके सवालको लेकर मिले थे। ये लोग १४ से २० साल तक की सजा भोग चुके हैं। आप उन्हें रिहा कराने में समर्थ हैं।

गा० . उनकी रिहाईके लिए निश्चय ही प्रयत्न किया जाना चाहिए।[4] यह कहना गलत है कि केवल मैं ही उन्हें रिहा कराने में समर्थ हूँ।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-८-१९४५

३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम
१८ जुलाई, १९४५

जैसे यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी है, वैसे ही जनताको भी यह जानकर अच्छा नहीं लगेगा कि कालकासे वर्धा तक मुझे चोरकी तरह छिपकर सफर करना पड़ा। ऐसा मैं केवल अधिकारियोंके सौजन्यसे ही कर सका। मुझे जनताके परेशान कर देने वाले स्नेहसे बचने की कोशिश आखिर क्यों करनी पड़ती है ? जब मैंने फ्रंटियर मेलसे बम्बईसे कालकाका सफर किया[5] तो हर स्टेशनपर उन्मत्त प्रदर्शन किया गया। दुर्घटनाएँ, यहाँ तक कि घातक दुर्घटनाएँ होने का पूरा खतरा था। ऐसा कुछ नहीं

१. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीके महामन्त्री पूरणचन्द्र जोशीसे गांधीजी के पत्र-व्यवहारके लिए देखिए खण्ड ७७, पृ० ४६३-६६, खण्ड ७८, पृ० ११३ और खण्ड ७९, पृ० १०५।

२. लोकयुद्ध, पीपुल्स वार और कौमी जंग

३. सर्वदलीय राजनीतिक बन्दी मुक्ति संघर्ष समितिके अध्यक्ष

४. इस सम्बन्धमें वाइसरायके नाम कांग्रेस अध्यक्षके पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट १।

५. २२ और २३ जूनको

हुआ, इसे चमत्कार ही समझिए। जो लोग मेरे साथ डिब्बेमें थे उनपर समय बहुत कठिन गुजरा और दो रातें जागकर बितानी पड़ीं।

अकेला तो मैं उस भीड़के गुल-गपाड़े, शोर और रेल-पेलसे शायद निबट ही नहीं सकता था। बेशक ऐसे उन्मत्त प्रदर्शनका सामना मुझे कोई पहली बार नहीं करना पड़ा था और मैं इस बातसे भी अनभिज्ञ नहीं हूँ कि अन्य नेताओंको भी ऐसी परीक्षाओंमें से गुजरना पड़ता है। लेकिन बात यह है कि उनको झेलने की मेरी सामर्थ्य हर साल कम होती जाती है। मेरे कान शोर नहीं बरदाश्त कर सकते। प्रदर्शन-कारियोंके बीच मैं कोई काम नहीं कर सकता और ऐसी परिस्थितियोंमें हरिजन-कार्यके लिए चन्दा भी इकट्ठा नहीं कर सकता। सबसे दुःखकी बात तो यह है कि यह उन्माद स्वराज्यकी भूमिका और अहिंसाका लक्षण नहीं है।

नेताओंका स्वागत करने के लिए भीड़ होनी चाहिए, लेकिन उसे शान्त, शोभनीय और पूर्णतया अनुशासित होना चाहिए। मैंने साधारण सैनिकोंको, हजारोंकी संख्यामें होते हुए भी, पूर्ण शान्तिका पालन करते देखा है, चाहे वे कूच कर रहे हों या आराम कर रहे हों। हमारे जनसमूहोंको, यदि वे स्वराज्यके अहिंसक सैनिक हैं तो, साधारण सैनिकोंसे कहीं अधिक अनुशासित होना चाहिए। क्या स्वयंसेवकोंके नेता कालकासे वर्धाकी मेरी रेल-यात्रासे कुछ सबक सीखेंगे और इस बातका ध्यान रखेंगे कि स्टेशनोंपर तथा अन्यत्र, केवल या खास तौरसे मेरे लिए ही नहीं बल्कि सभी प्रसंगोंपर सबके लिए, शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हों?

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २०-७-१९४५

४. पत्र : रफी अहमद किदवईको

१८ जुलाई, १९४५

भाई रफी[1],

तुम्हारे छूटने का मैंने कालकामें जाना। इस शामको सेवाग्राम आया। तुम भले छूटे। कुछ बुखार आता है? कमजोरी है क्या? सब हाल लिखो।

बापूकी दुआ

रफी अहमद किदवई
आनन्द भवन
अल्लाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. रफी अहमद किदवई (१८९४-१९५४); १९२६ के बाद केन्द्रीय विधान-सभामें स्वराज पार्टीके मुख्य सचेतक; संयुक्त प्रान्तमें १९३७-३९ और १९४६-४७ में राजस्व, गृह-विभाग और जेल-विभागके मन्त्री; १९४७ से मृत्युपर्यन्त केन्द्रीय सरकारके संचार और खाद्य मन्त्री

५. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
१९ जुलाई, १९४५

चि० अमृत[1],

हम कल २-३० पर वर्धा और ४ बजे शाम सेवाग्राम पहुँचे। अधिकतर रास्ता हम पैदल ही चले। यह पत्र मैं सुबहकी प्रार्थनासे पहले लिख रहा हूँ।

तुम सबसे हमें बेहद प्यार मिला। इसके लिए ईश्वर तुमपर कृपालु हो। आशा है, तुम तोफा[2]के बिछोहपर अब और दुःख नहीं कर रही होगी। वैसे तो दुःख बिलकुल करना ही नहीं चाहिए।

बारिश तो है, पर ठंडक नहीं है। ठंडे शिमलासे तुम्हें यहाँ आना है, यह सोचकर मुझे बहुत घबराहट होती है। लेकिन तुम खुद देख लोगी कि तुम्हारे आने का उपयुक्त समय कब रहेगा।

मैं तुम्हारी चीजोंके बारेमें सोचूँगा।

तुम सबको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६९६)से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६५०५ से भी

६. पत्र : माधवदास गोपालदास कापड़ियाको

१९ जुलाई, १९४५

चि० माधवदास[3],

तुम अभी भी वहाँ अपनेको व्यवस्थित अनुभव नहीं करते, यह अच्छा नहीं है। तुम्हें निश्चय करना चाहिए कि तुम्हें वहीं अच्छा होना है, और वहाँसे बिलकुल हिलना नहीं है। जो डॉ० कृष्ण वर्मा कहें, वही करना चाहिए और प्रफुल्लित मनसे करना चाहिए। यह मैं सवेरेकी प्रार्थनासे पहले जागने के तुरन्त बाद लिख रहा हूँ। अब प्रार्थना होगी। उठा तो ४ बजे था। कल यहाँ ४ बजे पहुँचा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२४) से

१. इस पत्रमें तथा अमृतकौरको लिखे अन्य पत्रोंमें भी सम्बोधन देवनागरीमें है।
२. अमृतकौरका पालतू कुत्ता, जो गांधीजी के शिमला प्रवासके दिनोंमें मर गया था।
३. कस्तूरबा गांधीके भाई

७. पत्र : प्रेमा कंटकको

१९ जुलाई, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरा ११ तारीखका पत्र आज पढ़ा। राजकुमारीका पत्र भी साथ ही है। डाक कालकामें मिली मालूम होती है। इस समय साढ़े चार बजे हैं। दातुन-कुल्ला करके यह लिख रहा हूँ। मच्छरदानीमें हूँ। बत्ती बाहर है। अब प्रार्थनाकी घंटी बजेगी।

आज तेरी वर्षगाँठ है। यह पत्र तेरे हाथमें तो दो दिन बाद पड़ेगा। तुझे अभी तो बहुत वर्ष बिताने हैं। उन्हें सुखमें और सेवामें बिताना। सेवा हमारे हाथमें है और सुख-दुःखको समान मानें तो सुख भी हमारे हाथमें ही है। विष्णुको भूलना ही सच्चा दुःख है न? उसे क्यों भूलें?

तुझपर खीझने की बात मुझे याद नहीं है। अगर खीझा होऊँगा तो कारण रहा होगा। परन्तु मेरी खीझ खीझ नहीं है। यह तो तू समझती है न?

तू अपना शिविर स्वतन्त्र रूपसे चलाये और पैसा न माँगे, तो क्या हर्ज है? तुझसे दूसरे सीखेंगे। मैं भी सीखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३६) से। सी० डब्ल्यू० ६८७५ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

८. पत्र : दिनशा मेहताको

१९ जुलाई, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारे पास दो लड़कियाँ[1] तो हैं। उनके इलाजमें तुम्हें पूरी सफलता मिले। अब मैं बालकृष्ण[2]को तुम्हारे पास भेजने का विचार कर रहा हूँ। यदि वे आ सके तो अगस्तमें आयेंगे। स्वर्ण पर्पटी देने से उनका वजन बढ़ा था, लेकिन जितना वजन

१. जयसुखलाल गांधीकी पुत्री मनु गांधी और नरहरि परीखकी पुत्री वनमाला परीख; देखिए पृ० १०-११।

२. बालकृष्ण भावे, विनोबा भावेके छोटे भाई

बढ़ा था वह फिर कम हो गया है। इसलिए अब उन्हें तुम्हारे पास भेजने का मन होता है। उन्हें मैंने शिमलासे लिखा था। उनका उत्तर इसके साथ है।

कदाचित सरदार भी वहाँ आयें। मैंने उन्हें सुझाव तो दिया ही है। यदि वे आये तो शायद मुझे भी आना पड़ेगा। तुम यही चाहते हो न कि वे आयें?

दो लड़कियोंके अतिरिक्त एक तीसरी और है। उसे भी वहाँ भेजने की इच्छा होती है। वह भी उपचर्या (नर्सिंग) सीखती है। उसका स्वास्थ्य कमजोर है। उसे जब-तब बुखार आ जाता है। क्या वह आ जाये? मुझे आशा है कि तीनों वहाँ अच्छी हो जायेंगी और उपचर्या भी सीख सकेंगी। मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें उस ढंगसे तैयार करो।

क्या तुमने गुलबहन[1]को पंचगनी भेज दिया है?

तुम तीनोंको —

बापूके आशीर्वाद

क्लीनिक
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९. पत्र : कृष्ण वर्माको

१९ जुलाई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारे पत्र मिले। तुम मामा[2] तथा शैलेन[3] पर खूब मेहनत कर रहे हो। भाई शैलेनके मामलेमें तो अच्छा परिणाम निकला जान पड़ता है। लेकिन मामाके मामले में कुछ ठीक नहीं है। लगता है यह तुम्हारे लिए बेहद मुश्किल मामला है। तुमने जो हो सके सो करना। आखिरकार अगर वह चला जाता है तो तुम क्या कर सकते हो? मैं इसे अन्तिम प्रयास मानता हूँ।

जो पत्र तुम निकालते थे वह तो बन्द ही हो गया होगा। अब नया पत्र मत निकालना। जो कार्य तुम कर रहे हो यदि उसे भली-भाँति करो तो मैं यह मानूँगा कि तुमने बहुत किया।

बापूके आशीर्वाद

नेचर क्योर अस्पताल
मलाड (बम्बई)

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दिनशा मेहताकी पत्नी
२. माधवदास कापडिया
३. शैलेन्द्र, अमृतलाल चटर्जीके पुत्र

१०. पुर्जा: परचुरे शास्त्रीको

१९ जुलाई, १९४५

रजस्वला धर्मको मैं मेरे धर्ममें जानबूझकर स्थान नहीं देता हूं। लेकिन उसका यह अर्थ नहीं है कि कोई भी विषयी पुरुष रजस्वला स्त्रीका स्पर्श विषय तृप्तिके लिये कर सकता है। वहम मात्रका मैं कट्टर विरोधी हूं।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

११. बातचीत: आश्रमके कार्यकर्ताओंके साथ

१९ जुलाई, १९४५

शिमला सम्मेलनकी असफलतासे हताश या निराश होने की कोई जरूरत नहीं है। हमें अपनी स्थिति मजबूत बनाने के लिए और जनताकी सेवाके लिए अपना रचनात्मक कार्य तथा अन्य राष्ट्रीय कार्य और भी शक्तिसे करने चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-७-१९४५

१२. सन्देश: छात्र कांग्रेस कार्यकर्ताओंको[1]

वर्धागंज
२० जुलाई, १९४५

करो और सामर्थ्य-भर पूरा प्रयत्न करो। उगाहा जा सकने वाला हर पैसा उगाहो।[2]

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २२-७-१९४५

१. ये छात्र गांधीजी से बेगम आजाद पैसा फंडकी उगाहीके सिलसिलेमें मिले थे।
२. देखिए "पत्र: अबुल कलाम आजादको", २-८-१९४५ भी।

१३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२० जुलाई, १९४५

प्रिय कु०,

स्वास्थ्य ठीक रखो।

सितम्बरके पहले हफ्तेकी कोई तारीख रखो।

मैं बराबर भारतन[1]के बारेमें ही सोच रहा हूँ।

मैंने तुम्हारी पुस्तक[2]की दो प्रतियाँ गैर-भारतीय ईसाइयोको दी हैं। मुझे और भी प्रतियाँ सुलभ कराओ।

स्नेह।

बापू

मगनवाड़ी, वर्धा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४. पत्र : मनु गांधीको

२० जुलाई, १९४५

चि० मनुड़ी,

तू काफी कष्ट भोग रही है। डॉ० दिनशामें मेरा बहुत विश्वास है, इसलिए मैं तेरी चिन्ता नहीं करता। इससे अच्छी जगह तू हो नहीं सकती थी। तेरी लिखाई से ही मैं समझ सकता हूँ कि तुम दोनों बहनें[3] वहाँ जरूर कुछ सीखोगी। याद रखो, तुम्हें ताँबे जैसा शरीर लेकर वहाँसे लौटना है। निश्चिन्त होकर जो डाक्टर कहे वह करती जाओ। जो भी हो, लिखने में संकोच मत करना। अगर संकोच किया, तो मेरी चिन्ता बढ़ जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१. जे० सी० कुमारप्पाके भाई, अ० भा० ग्रामोद्योग संघके सहायक सचिव और ग्राम उद्योग पत्रिका के सम्पादक

२. प्रैक्टिस एंड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस

३. दूसरी थी वनमाला परीख; देखिए अगला शीर्षक।

१५. पत्र : वनमाला परीखको

२० जुलाई, १९४५

चि० वनु,

अगर तू वनुडी हो गई तो क्या तेरा सर्वा चौपट नहीं हो जायेगा? क्या तू जन्म-भर मूर्ख ही बनी रहेगी? तो फिर रहना वनुडी। तुझमें सचमुच कुछ मूर्खता हो, तो उसे वहां छोड़कर ही लौटना। बेकार नवीं तो तू वहां छोड़ने ही गई है और काम भी अच्छा करना ही है। प्रार्थना आदिका ठाठ तूने वहां अच्छा जमा लिया है। तेरे वहांके निवाससे मैं बड़ी आशा कर रहा हूं। मेरी ये दो चिट्ठियां तुम दोनों बहनोंके लिए हैं।

बाकी और तो दूसरे पत्रोंसे जान लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७९८) से। सी० डब्ल्यू० ३०१७ से भी; सौजन्य: वनमाला म० देसाई

१६. पत्र : नारणदास गांधीको

२० जुलाई, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हें मैंने बहुत समयसे पत्र नहीं लिखा। कनैयासे वर्णन सुनकर आज लिखने का मन हो आया। मैंने क०को बम्बईमें बड़ी आशासे रखा था। किन्तु यह आशा पूरी नहीं हुई। सम्भव है, यही ठीक हो। इसके सिवा उसके हाथमें फोड़ा उभर आया। फोड़ा क्यों हुआ, यह समझमें नहीं आया। उसके ठीक होने में लगभग ८

१. छोटोंके प्रति प्रगाढ़ स्नेह बताने के लिए गुजरातीमें नामके अन्तमें 'डी' लगाया जाता है, जिससे यह भी प्रकट होता है कि व्यक्ति अपने स्नेह-भाजनको बच्चेकी तरह अबोध मानता है।

२. नारणदास गांधीके पुत्र कनु गांधी

दिन लग जायेंगे, ऐसा खयाल है। इसके बाद उसका वहाँ आने का विचार है। अब सोचना यह है कि उसे किस काममें लगाया जाये। उसमें शक्ति तो बहुत है। किस शक्तिका किस कार्यमें उपयोग किया जाये, यही सोचना है। मेरे मनमें यह खयाल जरूर आता है कि वह मेरे साथ रहे और सीखता रहे, यही सबसे आसान होगा। किन्तु मैं इस विषयमें तुम्हारे विचारको प्रमुखता देना चाहूँगा। कारण, मेरा मन आजकल जो काम हमारे सामने उपस्थित है उसीमें उलझा रहता है। इसलिए मैं व्यक्तियोंके विषयमें ध्यानपूर्वक विचार नहीं कर पाता। उसी क्षण जो विचार आया सो आया। उसके बाद फिर मेरा ध्यान मूल वस्तुपर चला जाता है। अत तुम जैसा चाहोगे वैसा करूँगा। कनैयाकी अपनी इच्छा क्या है, उसका विचार तो करना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२६ से भी; सौजन्य नारणदास गांधी

१७. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम
२० जुलाई, १९४५

भाई अमृतलाल,

तुमारा हिंदी खत मिला। अच्छा किया हिंदीमें लिखा। इस वखत यहा तुमारे आने से ठीक नही है। आश्रम बहुत अस्थिर है। ब्लड प्रेशर है तो खादी प्रतिष्ठानका[1] आश्रय लो। वहां काम तो है ही। रेणु[2] और शांति[3] भी शायद वहां रह सकें। धीरेन[4] से मशिवरा करो।

शैलेन अच्छा हो गया है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०५) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१. सोदपुरमें सतीशचन्द्र दासगुप्त द्वारा संचालित
२, ३ और ४. अमृतलाल चटर्जीके क्रमशः पुत्र, पुत्री और पुत्र

१८. पत्र : रमेण चटर्जीको

सेवाग्राम
२० जुलाई, १९४५

चि० रमण,

तूने जो किया है सो समज बूजकर ही किया होगा।[1] कालेजकी तालीमकी मेरे पास कोई किम्मत नहीं है। जो लड़के निकलते हैं सब (करीब २) नौकरी करते हैं और नौकरी भी ऐसी जि[स]से देशको लाभ नहीं पहुँचता लेकिन हानि ही होती है। तू क्या कर सकता है, बच्चा है। सब वड़ील लोग कहें कालेजमें जाओ। उनकी बातको तू कैसे रोक सकता है? अच्छा हो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९७) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

१९. पत्र : अब्दुल हकको

सेवाग्राम
२० जुलाई, १९४५

भाई साहेब,

डा० शौकत अली अन्सारी[2]का मकान, जो आपके पास है, उसका कब्जा आप नहीं दे रहे हैं इस बारेमें बहन जोहरा[3] मेरे पास है। इस बारेमें आपका कहना मैं सुनना चाहूँगा। आप तो मरहूम डा० अन्सारी[4]के दोस्त थे। आपके साथ कैसे कुछ भी झगड़ा हो सकता है? आपके खतकी मैं उम्मीद रखूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० अब्दुल हक
देहली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रमेण चटर्जीने कलकत्ता विश्वविद्यालयकी इंटरमीडिएट कक्षामें प्रवेश लिया था।

२. अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिसके मन्त्री, १९४४-४७; तुर्कीमें भारतीय दूतावासमें कौंसलर, १९४७-४८

३. शौकतुल्ला शाह अन्सारीकी पत्नी जोहरा अन्सारी

४. मु० अ० अन्सारी (१८८०-१९३६); दिल्लीके प्रमुख चिकित्सा-शास्त्री; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके अध्यक्ष, १९२७

२०. पत्र : मनु गांधीको

सेवाग्राम
२१ जुलाई, १९४५

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र मैंने फाड़ डाला। बिलकुल बेढगा था। अगर उसमे कुछ खानगी था, तो वह तेरी मूर्खता थी। अगर वे तुझे वहाँ एक वर्ष रखें, तो उतनी अवधि तक वहाँ रहने को तू प्रतिवद्ध हो चुकी है, और अब उससे मुकरना चाहती है? ऐसे में कौन तेरा विश्वास करेगा? भाईसे पैसा लेने मे बिलकुल कोई हर्ज नही है। वे तेरे बाप हैं। अगर मुझसे पूछे, तो मै तो कहूँगा कि बिना जरा भी आगा-पीछा सोचे तुझे वही रहकर स्वस्थ होना है। अगर डॉक्टरका खर्च होता है, तो यह उसके और मेरे सोचने-विचारने की बात है। जो पैसा चाहिए हो, उससे ले लेना। तेरा पूरा पत्र बिना ठौर-ठिकाने का है। उसे पढ़कर मुझे दु.ख हुआ। अगर तू दृढ-निश्चय हो सके तो हो। आखिर तो अपने मनकी रानी तू ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से

२१. पत्र : सरला मेहताको

२१ जुलाई, १९४५

चि० सरला[1],

तेरा लम्बा पत्र मिला। इस पारिवारिक झंझटमें मै क्या कर सकता हूँ? इस मामलेमें तो समय ही अपना काम करेगा। किन्तु इतना जान लेना कि जो सच्चा होगा उसे कोई आँच आयेगी ही नही। भाई नानालाल[3] वहाँ है, तुम सबको उनसे मिलना चाहिए। मैं तो आजकल बहुत व्यस्त हूँ।

बापूके आशीर्वाद

चन्द्रकुंज
जागनाथ प्लॉट
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल। सी० डब्ल्यू० १६२० से भी; सौजन्य : चम्पा मेहता

१. डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके ज्येष्ठ पुत्र रतिलाल और चम्पा मेहताकी पुत्री
२. डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके -
३. नानालाल के० जसानी

२२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२१ जुलाई, १९४५

चि० कृ० चं०,

(१) थोड़ा गोलमाल है। मुझपर जिम्मेवारी कितनी और क्या और क्यों नहीं, इसमें दलील आ जाती है। श्रद्धामें दलीलको अवकाश नहीं है।

(२) रजवत बनने की कोशिश हो सकती है। 'वत्' प्रत्यय समझो।

(३) जो मनुष्य आश्रमको चाहिये वहां तक रजवत नहीं बना है वह पूरा उपयोग कैसे दे सकता है? यह स्वयं सिद्ध होना चाहिये।

(४) आश्रमके लायक दूसरे भी बन सकते हैं, बने हैं, बन रहे हैं। यह बात समझने लायक है और जो लायक बने हैं वे कहीं भी जाय तो भी अपनेको आश्रममें ही समझेंगे।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१८) से.

२३. पत्र : मु० रा० जयकरको

सेवाग्राम
२२ जुलाई, १९४५

प्रिय डॉ० जयकर,

आपके पत्र[1]के लिए धन्यवाद। इसे मैं मौलानाके पास भेज रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि वे इसे पसन्द करेंगे।

आप भरोसा रख सकते हैं कि जो-कुछ भी मुझसे बन पड़ेगा, मैं करूँगा।

१. अपने १९ जुलाईके इस पत्रमें मु० रा० जयकरने लिखा था कि जिन्नाको ऐसी कोई भी व्यवस्था, चाहे वह कितनी अल्पकालिक हो, स्वीकार करना रास नहीं आता जिससे हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरेके निकट आयें। जिन्नाने केवल व्यवस्थाको "एक जाल" कहा और उनके विचारसे अन्तरिम व्यवस्था स्वीकार करने का मतलब तो पाकिस्तानके सवाल को ताकपर रख देना होगा। अपने पत्रमें जयकरने शिमला सम्मेलनमें शोभनीय और स्पष्ट रुख अपनाने के लिए कांग्रेसी नेताओं और खास तौरसे कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजादको बधाई दी थी।

आशा है, आप स्वस्थ-सानन्द होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० मु० रा० जयकर
विंटर रोड
मलाबार हिल
बम्बई[1]

[अंग्रेजीसे]

गांधी-जयकर पेपर्स, फाइल नं० ८२६। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

२४. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

२२ जुलाई, १९४५

प्रिय भारतन,

मैं संलग्न कागज तुम्हें आज तक नहीं भेज सका। यदि तुम इस तरहका जवाब नहीं चाहते थे तो खुद इसे सुधार लो या फिरसे लिखकर मुझे दिखा दो। हम 'ग्राम उद्योग पत्रिका' के स्तम्भ भरना नहीं चाहते। जब मैं बाहर था तब जो किया गया वह उस समय अनिवार्य था। अब जब मैं यहाँ हूँ, तब हमें जो भी हो उसका अन्तिम रूप ही प्रकाशित करना चाहिए।

तुमसे और तुम्हें जानकारी देने वालोंसे वैसे देर हो गई है। क्या तुमने मेरे लेख पढ़े हैं ?

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७४) से

१. पता प्यारेलाल पेपर्ससे लिया गया है।

२५. पत्र : मनु गांधीको

२२ जुलाई, १९४५

चि० मनुड़ी,

क्या तू यह समझती है कि जयसुखलालने तुझपर अविश्वास करने के कारण तुझे पैसा न भेजने की बात लिखी? अगर तू ऐसा समझती है, तो अपने बापके प्रति घोर अन्याय करती है। तुझे सीधे पैसे न भेजे जायें, ऐसा मैंने जयसुखलालसे कहा है, इसलिए उसने मेरा हवाला दिया। तुझे पैसे चाहिए, तो मुझे लिख। लेकिन जरूरत क्या है? डॉ० मेहताको लिख सकता हूँ। अगर तू शान्तिसे वहाँ नहीं रहेगी और भागूं-भागूं करेगी, तो मुझे दुःख होगा। तुझे कैसे मालूम हुआ कि १०,००० रुपये तेरे लिए अलग रख दिये-जाने वाले हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/३) से

२६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२२ जुलाई, १९४५

भाई वल्लभभाई,

चि० सुशीला [नैयर] आज रवाना हो रही है। आपरेशन जरूरी हो तो करा लो। दो-तीन महीने तुम्हारे स्वास्थ्यको परखना हो तो मैं चाहूँगा कि तुम दिनशाके यहाँ रहो। वहाँ जाना हो तो मैं साथ आने के लिए तैयार रहूँगा। और कुछ लिखना हो तो लिखो या लिखाओ।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
६८, मैरिन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८०

२७. पत्र : पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको

२२ जुलाई, १९४५

भाई काकुभाई,

तुम्हारे सारे पत्र मुझे मिल गये हैं। उत्तर ठीक दिया है। अन्तमें तो जो काते उसे कपासकी कताईसे पहलेकी सारी क्रियाएँ करनी ही हैं, यह याद रखना। उसके बिना काम अधूरा ही रहेगा। इसमें धुनाई तो आश्चर्यजनक काम करती है। चरखे के बदले लोग भले तकली चलायें।

कनु गांधीके साथ क्या तय हुआ, यह मैं ठीकसे नहीं समझा। नारणदासका सुझाव बहुत स्वागत योग्य लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०८५५) से। सौजन्य : पुरुषोत्तम का० जेराजाणी

२८. पत्र : सुशीला नैयरको

सेवाग्राम

२२ जुलाई, १९४५

चि० सुशीला,

मैंने तुझे जाने को कह तो जरूर दिया, लेकिन तेरी तबीयतके[1] बारेमें चिन्तामें पड़ गया। इसलिए मैंने सरदारसे तेरी तबीयतके बारेमें तारसे खबर देने को कहा है।[2] तू बिलकुल अच्छी हो जाना। यदि डॉ० गिल्डर[3]को दिखाना चाहे तो दिखा लेना। मुझे विस्तारसे लिखना। क्या भीड़ थी? यदि डॉ० गिल्डर प्रभावती[4]का चरखा न चलाते हों तो उसे वापस ले आना। यदि वे उसका प्रयोग करते हों तो उन्हें दूसरा खरीदकर दे देना अथवा यहाँसे भेज दिया जायेगा। प्रभावती वाला चरखा विशेष रूप से मेरे लिए बनाया गया है, इसलिए यदि वह मिल सके तो उसकी मुझे आवश्यकता है। आशा है, तू मथुरादास[5]से तो मिलेगी ही।

१. सुशीला नैयरको पेचिश हो गई थी।
२. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।
३. डॉ० एम० डी० डी० गिल्डर, १९३७-३९ में बम्बईके प्रथम कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलमें मन्त्री
४. जयप्रकाश नारायणकी पत्नी
५. मथुरादास त्रिकमजी, बम्बईके भूतपूर्व मेयर जो उस समय तपेदिकसे पीड़ित थे।

आज मैंने एक घंटा सात मिनट कताई की। इसी समयमें 'गीता'-पारायण पूरा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९. तार : मृदुला साराभाईको

एक्सप्रेस

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

मृदुला[1]
मार्फत सरला
बम्बई

मैं चाहता हूँ जो भी शिविरकी मेजबानी करे वह मकान और बर्तनकी व्यवस्था मुफ्त करे। एक स्थानसे अस्वीकृति आ गई है। दो अन्य स्थानोंमें कोशिश कर रहा हूँ। जैसा कहा है, उसके मुताबिक तुम जाकर लौट सकती हो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०. तार : राजेन्द्रप्रसादको

एक्सप्रेस

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद
बिड़ला हाउस
नई दिल्ली

दुःखके साथ सूचित करता हूँ कि महेन्द्रको[2] फाँसी ही होगी।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अम्बालाल साराभाईकी पुत्री, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टकी ट्रस्टी और संयुक्त मन्त्री
२. महेन्द्र चौधरी; देखिए अगला शीर्षक।

२१. पत्र : लॉर्ड वेवलको

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

महेन्द्र चौधरीके बारेमें आपका १८ तारीखका पत्र[1] मिला, जिसके लिए धन्यवाद।

अगर मामलेके गुण-दोषको छोड़ दिया जाये — हालाँकि उसके सम्बन्धमें भी दलील की गुंजाइश हो तो मैं बहुत-कुछ कह सकता हूँ — तो भी मुझे इस बातके औचित्य में शंका है कि कोई एक व्यक्ति, चाहे वह जितना अधिक प्रतिष्ठित हो, किसी निष्पक्ष न्यायाधिकरणकी सलाह लिये बिना किसी ऐसे व्यक्तिके, जिसे दोषी सिद्ध किया जा चुका हो, प्राण लेने का फैसला करे। इसके अतिरिक्त, इस मामलेने, सही हो या गलत, एक राजनीतिक रूप ले लिया था। काश, आपको ठीक मार्ग-दर्शन मिला होता।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

वाइसराय महोदय
वाइसराय हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]
गांधीज़ कॉरस्पोण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ३९

१. जिसमें वाइसरायने गांधीजी को सूचित किया था कि यह मामला डकैती और हत्या का था, और प्रिवी कौंसिलने प्रार्थनापत्र अस्वीकार कर दिया है तथा कानूनको तो अपना काम करना ही है; देखिए खण्ड ८०, पृ० ४५१-५२।

३२. पत्र : अमृतकौरको

२३ जुलाई, १९४५

चि० अमृत[1],

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले। दोनों एक ही डाकमें आये थे।

तुमने जो कतरनें भेजी हैं, दिलचस्प हैं। मैंने सब पढ़ ली हैं।

आशा है तुम नोकाकी मृत्युपर और शोक नहीं कर रही होगी। यदि तुम अपनेको रोक सको तो और पशु मत पालो।

तुम्हें हम सबकी कमी खलती तो जरूर होगी, पर मुझे खुशी है कि तुम्हें अब थोड़ी फुर्सत मिलती होगी। तुम अपने बूतेसे ज्यादा काम कर रही थीं।

तुमने अपने पत्रमें जिस दौरेका उल्लेख किया है उसके विवरणका मुझे इंतजार है।

सुशीलाको पेचिश हो गई थी। कल तक उसका वजन ४ पौंड घट चुका था। कल वह सरदारके लिए बम्बई चली गई। फोन आया था कि उसे अब भी कष्ट है। बेशक, मेरा यह दृढ़ मत है कि चिकित्सकोंको ऐसे रोग नहीं होने चाहिए जिनसे बचा जा सकता है। ऐसे दोषोंको जो बरदाश्त करती है उस पद्धतिमें कुछ खोट है।

हाँ, आज वाइसरायके पत्रसे मालूम हुआ है कि बिहारके उस नवयुवक[2]को फाँसी दी जायेगी। यह एक अपशकुन है। जैसा कि तुम्हें मालूम है, मुझे शंका तो पहलेसे ही थी, लेकिन आशा कुछ और कर रहा था। देखें, क्या होता है।

तुम सबको प्यार।

बापूके आशीर्वाद

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६९७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६५०६ से भी

१. इस पत्रमें सम्बोधन और हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

२. महेन्द्र चौधरी

३३. पत्र : मदालसाको

२३ जुलाई, १९४५

चि० मदालसा,

"जीवन-कुटीर"[1] नाम तो तभी सार्थक होगा जब तू बाहरसे मरणासन्न अवस्था में वहाँ पहुँचकर मधुर जीवन प्राप्त कर सके। तू अच्छी है, यह जानकर मैं बहुत खुश हुआ हूँ। और अब तो विनोबा है और राम[2], फिर क्या चाहिए? खबरदार, अब फिर निराशा-कूपमें पड़ी तो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२५

३४. पत्र : अन्नपूर्णा मेहताको

२३ जुलाई, १९४५

चि० अन्नपूर्णा,

तेरी प्रसादीके रूपमें लंगोट मिला है। लेकिन अगर सभी लड़कियाँ इस तरह भेजने लगें तो मैं बिगड़ जाऊँगा ना। मुझे नया और अच्छा लंगोट पहनने की आदत पड़ जायेगी। अच्छी और सही बात तो यह है कि जो भी अच्छेसे-अच्छा तू बनाये या बनवाये वह तुझे अपनी अच्छीसे-अच्छी शिष्याको देना चाहिए। यह सचमुच मुझे देने जैसा ही होगा।

अब तुझे हाथसे बुनना भी सीख लेना चाहिए।

तेरी तबीयत ठीक होगी और तेरा काम सुचारु रूपसे चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३८) से

१. मदालसाके घरका नाम
२. मदालसाके छोटे भाई रामकृष्ण

३५. पत्र : मंचरशा अवारीको

२३ जुलाई, १९४५

भाई मंचरशा अवारी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम रचनात्मक काममें डूब गये हो और तुम्हारी पत्नी भी साथ है, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है। प्रत्येकके लिए समय देना तो मुश्किल है, फिर और भी बहुत-सी बातें हैं जिनकी ओर ध्यान देना पड़ता है। जो काम हो चुका है उसे तुम जितना आगे बढ़ा सको उतना ही अच्छा है। फाँसीकी सजा पाये हुए लोगोंका जो हो सो ठीक है।[1] मुझसे जितना हो सकता है, मैं कर रहा हूँ।

तुम दोनोंको –

बापूके आशीर्वाद

जनरल मंचरशा अवारी
सिरस पेठ
नागपुर सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६. पत्र : अमतुस्सलामको

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

चि० बेटी,

तेरा खत सीमला जाकर यहां कल आया।

तेरी तबीयत जानकर बिगाडती है और शिकायत करती है। जब छूट सकती है तब आ जा। अपनी मरजीसे पहले तो गई ना, कि मैंने भेजी थी? कुछ भी हो प्रफुल्लबाबु[2] छोडे तब आ जा। शांति[3] मुझे सीमलामें कहती थी कि उसे तेरेसे बहुत काम है। वह तुझे बंगालसे निकलने देना नहीं चाहती। लेकिन मैं तो सब चीज तेरेपर ही छोड़ना चाहता हूं।

१. चिमूर और अष्टीमें ब्रिटिश दमनका प्रतिकार करने वाले असंख्य स्वतन्त्रता सेनानियोंको मृत्यु-दण्ड दे दिया गया था; देखिए खण्ड ७९, पृ० ३६० भी।

२. प्रफुल्लचन्द्र घोष, पश्चिम बंगालके मुख्य मन्त्री, १९४७-४८; पश्चिम बंगाल विधान-सभाके सदस्य, १९४७-६२, १९६७-६८

३. शिक्षा-शास्त्री और भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षामन्त्री, हुमायूँ कबीरकी पत्नी

न्यामतका खत देख। मैंने तो बहुत समजाया कि इसलामको थोड़े दिनोंके लिये बुलाकर क्या करेगी। वह थोडी मेरी बात मानने वाली है?

प्रभावती दूसरा सब लिखेगी।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९९) से

३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

२३ जुलाई, १९४५

चि० कृ० च०,

तुमारा मलेरीयावश होना सोचने की बात है। सभव है कि मछरी के शास्त्रीय उपयोग से बच जाने। कुछ उपचार न करने का तरीका सर्वग्राह्य नहीं है ऐसा मेरा तो अभिप्राय है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५१९) से

३८. पत्र : ए० कालेश्वर रावको

२३ जुलाई, १९४५

भाई कालेश्वर राव,

तुम्हारा तार मिला। विनोबाको बताया। वे यहाके काममे इतना पड़ गये हैं कि उनको थोड़ी फुरसत चाहिए। इसलिए प्रदर्शनी में तो काम नही दे सकेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सेवाग्रामकी एक मुसल्मान महिला, जो बादमें कस्तूरबा विद्यालय, मधानमें काम करने लगी थी।

२. मच्छरदानी

३. ग्रामोद्योग प्रदर्शनी

३९. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

भाई राजेन्द्र बाबू,

महेन्द्रके बारेमें तार[1] दिया है। साथमें वाइसरायका खत है और जवाब[1] रखता हूँ। महेन्द्र तो गया होगा लेकिन अब क्या? वह केसकी पूरी हकीकत बाहर आनी चाहिए।[3]

बुखार गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०. पत्र : महेश चरणको

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

भाई महेश चरण,

तुम जिस बारेमें लिखते हो श्री जाजूजीने[4] मुझे कहा है। जो हो रहा है उससे मुझे सन्तोष है।

बापुके आशीर्वाद

गांधी आश्रम
खादी भण्डार
३२ लाटूश रोड
लखनऊ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. देखिए पृ० १९-२०।

३. देखिए "तार : राजेन्द्रप्रसादको", ३०-७-१९४५ और "पत्र : राजेन्द्रप्रसादको", १५-८-१९४५ भी।

४. श्रीकृष्णदास जाजू, अखिल भारतीय चरखा संघके मन्त्री

४१. पत्र : श्यामलालको

सेवाग्राम
२३ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल[1],

हरिजनोकी सेवा दो प्रकारसे होती है। हरिजनोको शिक्षा आदिके मार्फत ऊँचे चढाकर और दूसरा 'सवर्णों'में से अस्पृश्यताकी जड़ निकालकर। पहला प्रकार हमेशा सफल रहता है और उसका यत्किंचित पालन भी इष्ट है। केवल 'अस्पृश्यता निवारण'से हमारा अर्थ नही सरता है। इस कारण 'हरिजन से० स०' बेहतर प्रयोग है। सवर्णोंमें काम बहुत कम हुआ है, यह सही बात है, उसका कारण स्पष्ट है। हमारी तपश्चर्या कम है। हरेक आदमी शिक्षाका काम कर सकता है। थोड़ा या बहुत हर एक आदमी सवर्णोंमे से अस्पृश्यता दूर करने का काम नही कर सकता। व्याख्यानसे अस्पृश्यता दूर नही होगी। तपोबलसे ही हो सकेगी, इसमे उपवास रूपी तपका बडा स्थान है। उपवासमें ज्ञान होना चाहिए। अच्छे शास्त्रियो का निवेदन निकलने से भी कुछ काम हो सकता है। बर्वेजी[2] ठीक नही कहते। हरिजनोका अलग गाव नही बन सकता, क्योंकि वे समाजमें ओतप्रोत हैं और बाहर भी।

कुए, पाठशाला इत्यादि उनकी हाजत है जो अगर अच्छे बने और उसपर सवर्णोंको आने दें तो अस्पृश्यता निवारणका एक कदम उठता है। अस्पृश्यता निवारणके राजप्रकरणी फल आते हैं लेकिन निवारण केवल धार्मिक भावसे ही होना आवश्यक है। हिन्दू-धर्मकी यह आवश्यकता है। तुम्हारे खास प्रश्नोका उत्तर नीचे है.

१ जातपात टूटनी ही चाहिए, अगर हम अस्पृश्यताकी जड़ निकालना चाहते हैं। देखो 'वर्णव्यवस्था'[3] पुस्तकमें मेरी प्रस्तावना।

२. मुझे लगता है कि आवश्यकता होने पर खास पाठशाला, कुएं इत्यादि जारी रखना हमारा धर्म है।

३ सवर्ण हिन्दुओमें प्रचार कार्य आवश्यक है। उसकी मर्यादा ऊपर ही है।

४ हरिजनोको हक दिलाने मे सवर्णोंसे संघर्ष हो तो उसे सहन करना लेकिन अधिकार दिलाना।

१. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके मन्त्री
२. वी० एन० बर्वे, हरिजन सेवक संघ (धूलिया) के अध्यक्ष
३. देखिए खण्ड ५९, पृ० ६५-७० और खण्ड ८०, पृ० २३१-३२

५. सूचना [सुझाव] ठीक है, इसमें विवेक शक्तिका काम पड़ेगा।
६. मंदिर प्रवेशका आन्दोलन आवश्यक मानता हूं।
७. हिन्दू नेताओंकी बैठक कहां तक संभव है, नहीं जानता। होनी चाहिए।
८. अलग कुएंकी बात आ गई।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२. पत्र : ईषकुमारको

२३ जुलाई, १९४५

भाई ईषकुमार,

मेरे पास आकर क्या करोगे? मेरे पास बैठना मुश्किल है। जब आओगे तब कहां हूंगा सो भी अनिश्चित है। यहां तो दिन भर मजदूरी ही है। मेरी सलाह है कि इस वक्त यहां आने का मोह छोड़ना। हवा भी अच्छी नहीं है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री अरविन्द आश्रम
पाण्डिचेरी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३. पत्र : श्यामलालको

२३ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल,

प्रो० जगदीशन[1] पुरुष डाक्टरको फिलहाल रखें, उसमें कोई आपत्ति नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

कस्तूरबा स्मारक मन्त्री
बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. टी० एन० जगदीशन मई, १९४५ से कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके कुष्ठ रोग राहत-कार्यकी देखरेखमें लगे हुए थे।

४४. पत्र : बेन्द्रेको

सेवाग्राम
२४ जुलाई, १९४५

भाई बेन्द्रे,

तुम्हारा पत्र मिला। अब मैं तुम्हें कैसे सान्त्वना दूं? तुम्हारी बच्ची[1] की आत्माके साथ तुम्हारा सम्बन्ध था। उसका शरीर दफनाया गया या जलाया गया, इससे क्या फर्क पड़ता है? आत्मा मरती नहीं, इतना तो तुम जानते हो, फिर शोक क्यों करते हो? लेकिन यह तो हुआ पाण्डित्य। दुनियादारी भी इतना तो कहती ही है कि खुदके अपने बच्चे नहीं रहें तो उनके पीछे कोई पागल नहीं हो जाता। इसलिए तुम्हें शोककी इस अतिशयताके लिए लज्जित होना चाहिए, और नलिनी-पर अपना प्रेम बरसाना चाहिए। शान्त हो जाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२४६) से

४५. पत्र : रामदास गांधीको

२४ जुलाई, १९४५

चि० रामदास,

यह पहला तो तू उषा[2] के लिए समझ। यदि तू अब भी बीमार है तो दिनशा के पास जाकर अच्छा क्यों नहीं हो जाता? इस मामलेमें ढिलाई क्यों? कानम[3] भी सूख गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बेन्द्रेकी कन्या

२. रामदास गांधीकी कन्या

३. कनु, रामदास गांधीका पुत्र

४६. पत्र : सैयद अब्दुल्ला ब्रेल्वीको[1]

२४ जुलाई, १९४५

भाईश्री ब्रेल्वी[2],

हिन्दुस्तानकी दुनिया जानती है कि सर फिरोजशाह[3]के लिये राजकारणमें मेरे दिलमें बहुत ऊंचा स्थान है।

आपका,

मो० क० गांधी

महात्मा, जिल्द ७, पृ० १६-१७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

४७. पत्र : श्रीमन्नारायणको

जुलाई, १९४५

चि० श्रीमन,

खत भेज दिया लगता है। मैंने सोचा था कि मस्विदा बताओगे। कैसा भी हो, मेरा मत है कि पद छोड़ने का[4] एक ही कारण बताना था। हिंदुस्तानी शब्द प्रयोग गौण वस्तु है। राष्ट्रभाषाका अर्थ बड़ी बात है। सुधारणा करके भी भेजना ठीक होगा। ऐसा करना है तो मस्विदा बताकर ही बादमें भेजें।

बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २०७

१. यह पत्र उर्दू लिपिमें भी प्रकाशित हुआ है।

२. (१८९१-१९४९); बम्बईके प्रमुख कांग्रेसी नेता; १९२९ में गठित अखिल भारतीय राष्ट्रवादी मुस्लिम पार्टीकी बम्बई शाखाके अध्यक्ष; बॉम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक

३. फिरोजशाह मेहता (१८४५-१९१५); भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके एक संस्थापक और १८९० तथा १९०९ में उसके अध्यक्ष

४. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) का मन्त्रिपद छोड़ने का

४८. पत्र : श्यामलालको

सेवाग्राम
२४ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुमने अपने आप सौ रुपये छोड़ दिये हैं उस बारेमें धन्यवाद। और भी आराममे छोड़ सकते हो तो छोड़ो। उसमें कल्याण ही है लेकिन मेरे कहने से कुछ न किया जाय। त्याग मात्र स्वेच्छा [से] ही होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
२५ जुलाई, १९४५

चि० अमृत,

मुझे रोज पत्र लिखने के लिए क्षमा मत माँगो। अपनेपर दबाव डाले बगैर और रोज एक जवाबी पत्रकी आशा किये बिना लिखना जारी रखो।

तुमने अपने दौरेके बारेमें कुछ नहीं बताया।

तुमने जे० को लिखकर ठीक किया। आलोचना मैत्रीपूर्ण नहीं है। लेकिन संयम हमेशा अच्छी चीज है।

आशा है, तुम ठीक होगी। बेरिलसे कहो कि मुझे पत्र लिखे। क्या शम्मी[1] बेहतर है ?

सुशीला अभी भी सरदारके साथ है।

तुम सबको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६१) से; सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ७७९७ से भी

१. शमशेर सिंह, अमृतकौरके भाई

५०. पत्र : मीराबहनको

२५ जुलाई, १९४५

चि० मीरा,

अगर मुझे लिखना है तो संक्षेपमें लिखना पड़ेगा। अगर तबीयत अच्छी न रहे, तो तुम्हें किसी ठंडी जगह चले जाना चाहिए। यात्रामें मेरी तबीयत ठीक रही। जब यह पत्र तुम्हें मिलेगा, तब तक बलवन्तसिंह तुम्हारे पास पहुँच जायेगा। यदि चाहो तो उसे रख लो। उसे बता दो कि उसका पत्र पाकर मैंने होशियारी[1] को उसके पिताके पास भेज दिया। वह अपने लड़केके साथ या उसके बिना ही लौट आयेगी। यहां मौसम अच्छा है। यदा-कदा वर्षा हो जाती है। लेकिन कीड़े-मकोड़े पहलेसे ज्यादा हो गये हैं। सुशीलाको पेचिश हो गई और ४ पौंड वजन कम हो गया। वह अब बम्बईमें सरदारके साथ है।

स्नेह।

बापू

श्री मीराबहन
किसान आश्रम
डाकखाना बहादराबाद, बरास्ता ज्वालापुर
हरिद्वारके निकट, संयुक्त प्रान्त

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५०९) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९९०४ से भी

५१. पत्र : सीता गांधीको

२५ जुलाई, १९४५

चि० सीता,

तेरा पत्र पढ़ा। तेरा पाठ्यक्रम अच्छा है। तू मेहनत भी करती है। पास होने की चिन्ता मत करना। जो करना हो तबीयत सँभालकर ही करना। अक्षर छोटे नहीं लिखने चाहिए। इस कार्डमें जो लिखा है, उसे सावधानीसे जांचना।

बापूके आशीर्वाद

कुमारी सीता गांधी
मशरूवाला बंगला
अकोला, बरार

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५४) से

१. बलवन्तसिंहकी भतीजी

५२. पत्र : पुष्पा देसाईको

२५ जुलाई, १९४५

चि० पुष्पा[1],

तेरा पत्र मिला। यदि तुझे वास्तवमें प्रभुके दर्शन हुए होंगे तो तू उन्हें सर्वत्र और इस प्रकार अपने पितामें भी उन्हींको देखेगी। इसके बावजूद यदि तू यहाँ आना ही चाहती है तो चली आ। किन्तु तुझे अनेकान्तके बीच एकान्त खोजना पड़ेगा। तुझे पाखाना सफाईसे लेकर सभी काम करने पड़ेंगे और उसमें प्रभुके दर्शन प्राप्त करने होंगे। सिर्फ भजन गाने से भक्ति थोड़े होती है। इसलिए यह तो तेरे लिए एक दुःखमें से निकलकर दूसरे दुःखमें फँसने-जैसी बात होगी। तुझे मेरी सलाह है कि मणिबहन[2]से मिलने के बाद कोई फैसला करना। पेंसिलसे लिखने को पाप मान।

बापूके आशीर्वाद

चि० पुष्पाबहन
मार्फत श्री मणिलाल पोपटलाल दोशी
शारदाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा न० १२
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३. पत्र : मणिबहन पटेलको

२५ जुलाई, १९४५

चि० मणि,

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिए।

यह तो तुझे पुष्पाके बारेमें लिख रहा हूँ। वह बहुत दुःख पा रही है। मैंने उसे तुझसे मिलने को लिखा है। लेकिन तू उससे मिलने जायेगी तो ठीक है।

१. बम्बईके कानजी जेठाभाई देसाईकी कन्या। वह घरसे भागकर आश्रम आ गई थी। गांधीजी ने समझा-बुझाकर उसे फिर घर भेज दिया था, लेकिन बाद में वह फिर आश्रम लौट आई और कुछ समय तक उसकी ज० प्र० भणसालीके साथ ठहरने की व्यवस्था कर दी गई।

२. वल्लभभाई पटेलकी कन्या

वह अपने घर तो होगी ही। पता है: नई हनुमान गली, शारदाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा नं० १२, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मार्फत।

तेरा स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
मार्फत श्री डाह्याभाई पटेल
६८ मैरिन ड्राइव
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३६-३७

५४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२५ जुलाई, १९४५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। अगर इलाज अभी कराना हो तो मेरी जोरदार सिफारिश है कि पूनामें दिनशाके यहाँ जाओ और वहाँ इलाज कराओ। मैं वहाँ आने को तैयार हो जाऊँगा, इसलिए मेरी नीमहकीमी भी चलेगी। जो हालत है उससे ज्यादा तो हरगिज नहीं बिगड़ेगी और दिनशाको यश भी मिल सकता है।

पारडीवाला[1] से बात हुई है। मैं आज ही पत्र लिखूँगा।[2] यह डाक तो सवेरे निकलती है। इसके साथ नकल नहीं जा सकती। ऐसी बातें तो होती ही रहेंगी। पर तुम घबराने वाले नहीं हो।

अधिक लिखने का समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८१

१. बम्बईके एक वकील
२. लॉर्ड वेवलको; देखिए पृ० ३६-३७।

५५. पत्र : आप्टेको

२५ जुलाई, १९४५

भाई आप्टे,

तुम्हें शम्भुको जिसने दिया था उसने ले लिया। हम सबकी भी यही गति होने वाली है। तो फिर शोक किस बातका? शारजाको विलाप क्यों करना चाहिए? जितने भी बालक हैं वे सब तुम दोनोंके ही हैं। यह सब खादीकी भावनामें भरा हुआ है। इस भावनाको व्यवहारमें लाओ और अपना कर्त्तव्य किये जाओ। यदि तुम संयमका पालन करोगे तो सब ठीक ही होगा। इसके अतिरिक्त जितनी सेवा तुम कर सकते थे उतनी कर चुके।

बापूके आशीर्वाद

आप्टे
२७९–२, सदाशिव पेठ
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६. पत्र : जमशेदजी मेहताको

२५ जुलाई, १९४५

भाई जमशेद,

तुम्हारा पत्र और उसके साथ टाइप की हुई सामग्री मिली। आश्चर्य है कि यही चीज 'गीता'में जगह-जगह मिलती है, किन्तु उससे तुम्हें कोई सान्त्वना नहीं मिल सकी। क्योंकि तुम्हें अंग्रेजीकी टेव पड़ गई है इसलिए वह तुम्हारे लिए ग्राह्य सिद्ध हुआ। चाहे जो हो, किन्तु तुम्हारी निराशा भाग गई, यह ठीक हुआ। बाकी शिमलामें जो-कुछ हुआ, उसे ठीक ही हुआ मानो।

बापूके आशीर्वाद

सेठ नसरवानजी
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७. पत्र : कृष्ण वर्माको

२५ जुलाई, १९४५

भाई (डॉ०) कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० शैलेन यहाँ पहुँच गया है। वह अच्छा है। अब उसके बारेमें बादमें। मामाके लिए तुम जो-कुछ कर सको करना। परिणाम भगवानके हाथमें है। मामासे कहना अच्छा यह होगा कि वे जहाँ रहें, वहाँके नियमोंका पालन करें।

बापूके आशीर्वाद

मलाड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको

सेवाग्राम
२५ जुलाई, १९४५

भाई टंडनजी[1],

आपका ता० ११-७-४५ का पत्र मिला। मैंने दो बार पढ़ा। बादमें किशोरलाल भाईको दिया। वे स्वतन्त्र विचारक हैं आप जानते होंगे। उन्होंने लिखा है सो भी भेजता हूं। मैं तो इतना ही कहूंगा, जहां तक हो सका मैं आपके प्रेम के अधीन रहा हूं। अब समय आया है कि वही प्रेम मुझे आपसे वियोग करायेगा। मैं मेरी बात नहीं समझा सका हूं। यही पत्र आप सम्मेलनकी[2] स्थायी समिति के पास रखें। मेरा खयाल है कि सम्मेलनने मेरी हिन्दीकी व्याख्या अपनायी नहीं है। अब तो मेरे विचार इसी दिशामें आगे बढ़े हैं। राष्ट्रभाषाकी मेरी व्याख्यामें हिन्दी और उर्दू लिपि और दोनों शैलीका ज्ञान आता है। ऐसा होने से ही दोनोंका समन्वय होने का है तो हो जायेगा। मुझे डर है कि मेरी यह बात सम्मेलनको चुभेगी। इसलिए मेरा इस्तीफा कबूल किया जाय। हिन्दुस्तानी प्रचारका कठिन काम करते हुए मैं हिन्दीकी सेवा करूंगा और उर्दूकी भी।

आपका,
मो० क० गांधी

राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गांधीजी और टंडनजीका महत्वपूर्ण पत्र-व्यवहार, पृ० १०

१. (१८८२-१९६२); संयुक्त प्रान्त विधान-सभाके अध्यक्ष, १९३७-३९ और १९४६-५०; १९५० में कांग्रेसके अध्यक्ष, लेकिन कुछ ही दिन बाद दलसे त्यागपत्र दे दिया; अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके उप-सभापति

२. अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन

५९. पत्र : सुखदेवको

२५ जुलाई, १९४५

भाई सुखदेवजी,

आपको बुलाकर क्या करूं? मुझे सब कागजात भेजो। उसके साथ संक्षिप्त विवरण भेजो। पढ़कर जो हो सकेगा करूंगा। मेरे उत्तर आने तक ठहरना।

श्रीयुत सुखदेव
दैनिक 'तेज'
दिल्ली[1]

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६०. पत्र : लॉर्ड वेवलको

सेवाग्राम
२५ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

मुझे अभी-अभी सरदार वल्लभभाई पटेलसे मालूम हुआ है कि कई हजार भारतीय सैनिक, जो बर्मामें या अन्यत्र सुभाष बाबू[2]से मिल गये थे और जो हाल में जापानियोंके खिलाफ की गई सैनिक कार्रवाईमें बन्दी बना लिये गये थे, दिल्लीके किलेमें बन्द कर दिये गये हैं और उनके (तथाकथित) सरगना सैनिक न्यायालयके एक आदेशके अधीन गोलीसे उड़ा दिये गये हैं। मैं यह मानना चाहूंगा कि यह सब बाजारू अफवाह है। फिर भी, मेरा निवेदन है कि जनताको सच्ची स्थितिसे अवगत कराया जाना चाहिए और यदि सैनिकोंके किलेमें बन्द किये जाने और मुकदमा चलाये जाने की बातमें कुछ सच्चाई है तो जिनपर मुकदमा चलाया जा सकता है उन लोगोंको उनके मन-मुताबिक कानूनी मदद दी जाये।

यह पत्र डाकघर बन्द होने के बाद डाकमें डाला जा रहा है। इसलिए जब

१. पता अंग्रेजीमें है।
२. सुभाषचन्द्र बोस

कल डाकघर खुलेगा तब डाकमें डालने के प्रमाणपत्रके अन्तर्गत इसकी एक नकल बादमें भेजी जायेगी।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

वाइसराय महोदय
वाइसराय हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]

गांधीज़ कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४–४७, पृ० ३९-४०

६१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
२६ जुलाई, १९४५

प्रिय कु०,

पत्रवाहकका नाम श्री श्यामलाल है। ये कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्टके मन्त्री हैं। ये तुमसे भावी महिला शिविरके लिए जगहकी व्यवस्था करने का निवेदन करेंगे। जगह बरसातके बादसे, अर्थात् ज्यादासे-ज्यादा २ अक्तूबरसे चार महीनेके लिए चाहिए। इनके निवेदनका मैं अनुमोदन करता हूँ, बशर्ते कि उसे मानना व्यवहार्य हो। और बातें पत्रवाहकसे मालूम होंगी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७५) से

१. पत्रके उत्तरमें २९ जुलाईको वाइसरायके निजी सचिव ई० एम० जेन्किन्सने गांधीजी को लिखा कि वाइसराय इस मामलेपर गौर करेंगे।

६२. पत्र : पट्टाभि सीतारामैयाको

२६ जुलाई, १९४५

प्रिय पट्टाभि[1],

प्यारेलालने तुमसे तुम्हारे उस भाषणकी[2] सच्चाईके बारेमें पूछा है जिसकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। अब उस क्रुद्ध कार्यकर्ताका पत्र आया है, जो साथमें भेज रहा हूँ। उसने पनई ताड़ोके बारेमें मुझे फटकारा है। क्या मैंने पनई ताड़ोके बारेमें कभी कोई ऐसी बात कही है जैसी कि खबरमें बताई गई है? दूसरे हिस्सो के बारेमे भी मुझे बहुत-कुछ कहना है। लेकिन तुम्हारा उत्तर आने तक मैं धीरज रखे हुए हूँ। आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

तुम्हारा,

बापू

मछलीपट्टम

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६३. पुर्जा : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२६ जुलाई, १९४५

दूधके बारेमें जब मैंने तय किया था, तब आसपास और संस्थाएँ नहीं थी। अब और संस्थाएँ भी हो गई हैं, अत. अब तो उन्हींके साथ मरना या तरना हमारा कर्तव्य हो जाता है। वे जो मनमानी कर सकते हैं, वह हम यहाँ नही कर सकते। लेकिन वे जिन बन्धनोको स्वीकार करते हैं, उन्हे यहाँ हमे अवश्य स्वीकार करना चाहिए। इस समय डॉक्टर लोग एक मापदण्डका निश्चय कर रहे हैं। कुछ समयमें वह प्रकाशित हो जायेगा। अभी आसानीसे जितना कमसे-कम किया जा सके, वह करना चाहिए। अन्तिम निर्णय सुशीलाबहनके आने के बाद लिया जायेगा। बिलकुल बिना घीके चलाया जाये, यह मुझे पसन्द है। लेकिन निरामिष भोजियोके लिए यह उचित नही मालूम होता। इसमे अनुभव ज्यादा उपयोगी होगा। दाल दूधकी कमी पूरी कर सकती है, ऐसा नही लगता, लेकिन

१. (१८८०-१९५९), कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य; अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्के अध्यक्ष, १९३६; कांग्रेसके अध्यक्ष, १९४८; मध्य प्रदेशके राज्यपाल, १९५२-५७

२. देखिए पृ० ४३-४४।

दाल अपने-आपमें जरूरी है, ऐसी डॉक्टरोंकी मान्यता है। दाल जरूरी नहीं है, यह जोरसे ऐलान करने वाला मैं अकेला ही हूँ। लेकिन हम दालोंको शामिल कर सकते हैं। मसालोंके बारेमें भी यही बात है। आश्रममें जो व्रतधारी हैं, वे स्वादके लिए मसालोंका उपयोग नहीं कर सकते, लेकिन अगर मसाले अन्नको पचाने में सहायक हों, तो उनका उपयोग किया जा सकता है। फिर यह भी याद रखना चाहिए कि आश्रममें व्रतधारी कम ही हैं। मुझे नहीं लगता कि कुछ लोगोंके लिए मसालेका भोजन और दूसरे कुछ लोगोंके लिए बिना मसालेका भोजन तैयार करने में कोई विशेष कठिनाई होगी। अस्वाद-व्रतका पालन किसीसे जबरदस्ती नहीं कराया जा सकता।

इस विषयपर विचार करते हुए हमें यह याद रखना चाहिए कि आश्रममें दूध, घी और फलोंका इतना अधिक उपयोग होते हुए भी बीमारी बनी ही रहती है। इसके कारणकी खोज करनी चाहिए।

इतनेसे अगर मार्ग-दर्शन न मिले तो मुझसे पूछना। बीमारोंकी समस्या तो अलग ही विषय है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९०८) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

६४. पत्र : कृष्ण वर्माको

२६ जुलाई, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

इसके साथ मैं चि० शैलेनका पत्र भेज रहा हूँ। इसके अतिरिक्त उसने मुझे पत्रक भी दिया है। उसमें भी कुछ चौंकाने वाली बात है। उक्त अंश और चि० शैलेनका पत्र मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। इसमें जो लिखा गया है यदि वह सच हो तो उसे हमें सुधारना चाहिए। आलोचकपर क्रुद्ध न होकर उसका सार ग्रहण करना हमारा कर्त्तव्य है। बहुत-सी चीजोंमें प्राकृतिक उपचार तो सामान्य डॉक्टर और सामान्य मनुष्यके तरीकोंकी अपेक्षा बेहतर होना चाहिए। और अधिक तुम्हारा पत्र मिलने के बाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५. पत्र : गोसीबहन कैप्टेनको

२७ जुलाई, १९४५

चि० गोसीबहन[1],

इस बातसे मैं कितना खुश हूँ कि तुम कलमदान उलट सकती हो और सो भी गलत जगहपर।

तुम इतनी आसानीसे मरने वाली नही हो। बाला साहब खेर[2]से मिलकर सारे तथ्य उनके सामने रख दो। हमें सभी काम सही ढगसे करने चाहिए, भले ही इसमे कुछ ज्यादा समय ही क्यों न लगे। इसमें जो समय लगाया जायेगा वह बर्बाद नही होगा। वह नया काम सिखाने का अग होगा। दूसरोंसे भी बात करो। जब भी जरूरी हो, मेरी मदद लो। पे०[3] अपने दाँतोकी देखभाल कर सकती है। उसे बैठक तक इन्तजार करने की जरूरत नही है। मुझसे जो भी बन सकता है, कर रहा हूँ। तुम्हे स्वस्थ हो जाना है।

स्नेह।

बापू

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६६. पत्र : बलवन्तसिंहको

सेवाग्राम
२७ जुलाई, १९४५

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारे खत मिले। वहा पर झगडा तुम्हारी हाजरीसे मिटे तो बहुत अच्छा है। होशियारी बहादुर है। उसे सफलता मिलेगी। अच्छा है तुम भी वही हो।

मुझे अच्छा रहता है। मीराबहिन तुमारे लिये तडप रही है।

१. दादाभाई नौरोजीकी पौत्री
२. बम्बईके भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बाल गंगाधर खेर
३. गोसीबहन कैप्टेनकी बहन पेरिनबहन कैप्टेन

डा० शर्माने जो बनाया है[1] उसे देखना अच्छा होगा। उसकी प्रवृत्ति भी देख लो।

यहांका काम ठीक चलता है। तुमने जो रास्ता बनाया है वहांसे वा० छू० के वहां जा नहीं सकते।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६५) से

६७. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

२७ जुलाई, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

सिन्ध गवर्नरका खत प्रसिद्ध करने में कोई विनय-भंग नहीं है। दोनों मसविदे में मैंने सुधारणा की है। समझमें आ जायगी।

मैंने आज पूरा तो किया लेकिन आजकी डाकमें रजिस्टर नहीं हो सकता था। कल जायगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८. पत्र : होशियारीको

२७ जुलाई, १९४५

चि० होशियारी,

तेरा खत मिला। पितासे विनय नहीं छोड़ेगी, साथ साथ दृढ़ता रखेगी। पिताको समझाने में थोड़े दिन लगे तो हरज नहीं है। तेरी दृढ़तासे पिता नाराज होवे [तो] तू लाचार होगी। शरीर अच्छा रखना। हो सके तो डा० शर्मासे मिलना।

बापुके आशीर्वाद

मार्फत लालचन्दसिंहजी
रामनपुर
खुर्जा, यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. बलवन्तसिंहकी पुस्तक बापूकी छायामें के अनुसार तात्पर्य हीरालाल शर्मा द्वारा खुर्जामें स्थापित प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रसे है।

६९. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

सेवाग्राम
२७ जुलाई, १९४५

भाई राजेन्द्र बाबू,

मैंने महेन्द्रके बारेमें तुमको खत[1] तो भेजा है। शायद वह तो फासी चढा होगा। हमारा प्रयत्न व्यर्थ गया लगता है। कुछ बाकी हाल है तो इसके साथ मिलेंगे। अपने सब विचार लिखो। तुम्हारी तबीयत दिल्लीमें बिगडी सो आश्चर्य। ठीक होने पर पिलानी जाना ही अच्छा है।

दूसरे महेन्द्र[2] के बारेमें कागजात आने पर देखूंगा। पहले महेन्द्रका भी कागजात मिले तो अच्छा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०. पत्र : सुचेता कृपालानीको

२७ जुलाई, १९४५

चि० सुचेता[3],

तेरा उर्दू खत मैंने पढा। मुझे प्रिय लगता है। उसका अर्थ न किया जाय कि तू हिंदीमें लिखना छोड देगी। दोनोंमें यथाप्रसंग लिखना। तू बीमार क्यों पडी? अच्छा ही है कि पहले तो गुलमर्ग जाना और अच्छा हो जाना। शर्त यह कि जवाहरलालके वहा होते हुए जाना, उनकी एकान्तकी रक्षा होनी चाहिए।

१. देखिए पृ० २५।

२. राजा महेन्द्र प्रताप (१८८६-१९७९), १९१५ में काबुलमें स्थापित अस्थायी हिन्द सरकारके अध्यक्ष। वे योकोहामा जेलमें थे और उनकी स्वदेश वापसीके लिए सरकारी सहायताकी जरूरत थी।

३. (१९०८-७४); अ० भा० काग्रेस कमेटीके महिला विभागकी प्रधान; काग्रेस कार्य-समितिकी सदस्या, १९५०-५२; लोक सभाकी सदस्या, १९५२-६२, उत्तर प्रदेशकी मुख्यमन्त्री, अक्तूबर १९६३ से मार्च १९६७ तक

प्रोफेसर'को अब नहीं लिखता हूं। उनके लिए इतना कि मुझे हिन्दीमें, उर्दू या सिंधीमें लिखें, अंग्रेजीमें क्यों? 'प्रोफेसर' है इसलिए क्या?

बापूके आशीर्वाद

स्वराज्य भवन
अल्लाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१. भेंट : 'हिन्दू' के संवाददाताको

वर्धागंज
२८ जुलाई, १९४५

प्रश्न : डॉ० पट्टाभिके अनुसार देसाई-लियाकत फार्मूलेमें इस बातकी तजवीज थी कि पहले नई सरकार बनाई जाये और उसके बाद कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंकी रिहाई हो। फार्मूलेके इस पहलूका अर्थ कुछ लोगोंने "कांग्रेसकी उपेक्षा" और कुछने "कांग्रेसकी पीठमें छुरा भोंकना" लगाया है।

आपने पंचगनीसे जारी किये गये अपने वक्तव्यमें कहा है कि फार्मूलेको आपका आशीर्वाद प्राप्त है, क्योंकि आपके विचारसे वह साम्प्रदायिक समझौतेका एक आधार प्रस्तुत करता है। आम तौरपर ऐसा माना जाता है कि समझौता-वार्ताकी हर अवस्थामें आपकी सलाह ली गई। समझौतेका जो यह अर्थ लगाया जाता है कि उसमें कांग्रेसकी उपेक्षा की गई है, वह क्या सही है?

उत्तर : मैं समझता हूँ कि यह प्रश्न गलत आदमीसे पूछा गया है। इस फार्मूलेका क्या अर्थ है, यह तो सबसे अच्छी तरह इसमें शरीक पक्ष ही बता सकते हैं। फिर आपने डॉ० पट्टाभि द्वारा जो-कुछ कहा गया बताया है, उसका शायद वे खण्डन करें। इसलिए मैं सभी रिपोर्टरोंसे हमेशा, और खासकर इस समय, कहता हूँ कि वे जो-कुछ कहें बिलकुल स्पष्ट और यथार्थ कहें। मैं तो केवल वकील भूलाभाई देसाईकी ओरसे ही कुछ कह सकता हूँ। और मेरा कहना यह है कि कांग्रेसकी "पीठमें छुरा भोंकने" या उसकी "उपेक्षा करने" का प्रयत्न करने का उनका कभी कोई इरादा नहीं था। राजनीतिक दृष्टिसे वे खुद कांग्रेसके बनाये हुए हैं, इसलिए वे कभी ऐसा इरादा रखने का अपराध नहीं कर सकते। और जहाँ तक

१. सुचेता कृपालानीके पति जे० बी० कृपालानी; कांग्रेसके महामन्त्री, १९३४-४६ और अध्यक्ष, १९४६ में। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये। कांग्रेस जनवादी मोर्चे और बादमें प्रजा सोशलिस्ट पार्टीके संस्थापक

मेरा सवाल है, यदि मैं ऐसे प्रयत्नमें साझेदार होऊँ तो उसका मतलब आत्महत्या करना होगा। मैं वकील भूलाभाई देसाईके विषयमें यही कह सकता हूँ कि उनका इरादा सिर्फ यह था कि गतिरोधको सम्मानजनक ढंगसे दूर करके कांग्रेसकी सेवा करें। यह कहना गलत होगा कि "हर अवस्थामें" मेरी सलाह ली गई। लेकिन यह कहना बिलकुल सही होगा कि वकील भूलाभाई देसाई "समझौते" के सम्बन्धमें मुझसे कई बार मिले थे।

यह पूछे जाने पर कि क्या कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंकी रिहाई समझौतेका अंग है, क्या दोनों पक्षोंमें यह तय हुआ है कि नई सरकारके मुसलमान सदस्योंको केवल मुस्लिम लीग ही नामजद करे, और कई वक्तव्यों और जवाबी वक्तव्योंको देखते हुए क्या यह वांछनीय नहीं होगा कि फार्मूला प्रकाशनके लिए दे दिया जाये, गांधीजी ने कहा :

मेरा खयाल है, इस तथ्यको ध्यानमें रखते हुए कि "समझौता" अभी प्रकाशित नहीं हुआ है, ऊपर मैंने जितना कहा है उससे ज्यादा अभी कुछ नहीं कह सकता। कितना अच्छा होता कि सम्बन्धित पक्ष उसे प्रकाशनके लिए जारी करने पर राजी हो जाते !

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३०-७-१९४५

७२. पत्र : सुधीर घोषको

२८ जुलाई, १९४५

प्रिय सुधीर,

तुम्हारा बहुत अच्छा-सा पत्र मिला।[1]

आदमी ईमानदार इस अर्थमें होता है कि वह जानते-समझते बेईमानी नहीं करता। लेकिन यदि वह जल्दबाजीमें कुछ तय कर लेता है और हर मामलेसे सम्बन्धित तथ्योंका सही अध्ययन करने की तकलीफ उठाना उचित नहीं समझता, तो बिना यह जाने कि वह असत्याचरण कर रहा है, वास्तवमें वह असत्याचरण करता है। लाखों हिन्दुओंका यही हाल है। वे हृदयसे यह मानते हैं कि अस्पृश्यता दैवी योजनाका एक अंग है। लेकिन वे एक ऐसे असत्यसे चिपके हुए हैं जो असत्य साबित किया जा सकता है।

निश्चय ही यदि मैं बंगाल आने में सफल हुआ, तो पहले श्री केसी[2] से

१. **गांधीजीज एमिसरी** में सुधीर घोष लिखते हैं : "मैंने गांधीजी को उनकी बंगाल यात्राके बारेमें लॉर्ड वेवलके विरोधकी बात बताई थी। साथ ही उन्हें एक पत्र लिखकर यह निवेदन भी किया था कि वाइसराय सख्त होते हुए भी एक ईमानदार व्यक्ति हैं।"

२. आर० जी० केसी, बंगालके गवर्नर

मिलूंगा। मैं जितनी जल्दी बरसातने आने दिया, आना चाहता हूँ। मुझे पुस्तिकाएँ मिल गई हैं।

तुम दोनोंको[1] आशीर्वाद।

बापू

[अंग्रेजीसे]
सुधीर घोष पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

७३. पत्र : वी० एस० मूर्तिको

२८ जुलाई, १९४५

प्रिय मूर्ति[2],

आपका पत्र मिला। क्या ७ अगस्तको साढ़े तीन बजे आधे घंटेके लिए मुझसे मिलने आ सकते हैं?

आपका,
बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७४. पत्र : सी० सी० गांगुलीको

सेवाग्राम
२८ जुलाई, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके पत्रने मेरे हृदयको छू लिया। आपकी पत्नीकी बहादुरी और तत्काल बुद्धिपर उन्हें बधाई देता हूँ। लेकिन ऐसे कार्योंको विज्ञापनकी जरूरत नहीं होती। वे मूक रूपसे ही अपना प्रभाव दिखलाते हैं; विज्ञापित किये जाने से उनका प्रभाव खत्म हो जाता है। जो भी हो, युद्ध समाप्त होने तक इस समाचारको दबाकर

1. सुधीर घोष तथा उनकी पत्नी शान्ति
2. मद्रास विधान-सभाके सदस्य

क्यों रखा जाये? आपको और आपकी पत्नीको मेरा आशीर्वाद तो है ही। ईश्वर करे आप दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक आध्यात्मिक प्रगति करें।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

श्री सी० सी० गागुली
सहायक सत्र-न्यायाधीश
खुलना

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य . प्यारेलाल

७५. पत्र : दिनशा मेहताको

२८ जुलाई, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे वहाँ पहुँचने के बाद अपने इलाजके बारेमें हम विचार कर लेंगे। बालकृष्णके तैयार हो जाने पर मैं उसे भेज दूंगा। मुझे तो सिर्फ मुस्लिम स्कूल और टाटावाली जमीन देखनी थी। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस सम्बन्धमें मुझे कुछ करना नहीं था। और मैं कर भी क्या सकता हूँ? मैं तो यह मानता हूँ कि यह जमीन गाँवके कामकी नहीं है। वहाँ तो सेनेटोरियम बनाया जा सकता है; अर्थात् सिंहगढ़की जमीनके बदले यह जमीन काममें आ सकती है। लेकिन यदि तुम इसके अतिरिक्त कुछ और सोचते हो तो मुझे लिखना। प्रेस्टन शायद महँगा माना जायेगा। गाँवका ट्रस्ट चल रहा है। मैंने सुझाव दिया है कि इसका गुजरातीमें अनुवाद किया जाये। गुलबाईकी प्रसूति कब होगी? तुम वनु और मनुसे जो काम ले सको सो लेना।

बापूके आशीर्वाद

नैसर्गिक गृह
ताड़ीवाला रोड
स्टेशनके सामने
पूना सिटी

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६. पत्र : सम्पूर्णानन्दको

२८ जुलाई, १९४५

भाई सम्पूर्णानन्द[1],

भाई मैथिलीशरणजी[2] को तो मैं खूब पहचानता हूं। लेकिन जयंतीमें मैं हिस्सा नहीं ले सकता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०९) से। सौजन्य : भारत कला भवन, वाराणसी

७७. पत्र : अब्दुल गफ्फार खांको

२८ जुलाई, १९४५

भाई बादशाह खान[3],

आपके बारेमें जो नाटकका खेल हुआ सो पढ़ा। ठीक हकीकत लिखो। अच्छे होंगे। डाक्टर साहबने मेरा पैगाम दिया होगा।

बापु

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. (१८८९-१९६९); अ० भा० कांग्रेस कमेटीके सदस्य; उत्तर प्रदेशके मुख्यमन्त्री, १९५५-६०; राजस्थानके गवर्नर, १९६२-६७

२. प्रसिद्ध हिन्दी कवि मैथिलीशरण गुप्त

३. (१८९०-१९८८); फ्रन्टियर गांधीके नामसे विख्यात गांधीजी के निकटके सहयोगी

७८. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेवाग्राम
२८ जुलाई, १९४५

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। भाई विचित्र[1] ने मुझे लिखा था। मैं तुम्हारा चिकित्सालय नहीं खोल सकता हूं। मैंने तुमसे सब कहा है। तुम्हारी शक्ति मैं जानता हूं। तुम्हारे दोषोंको भी जानता हूं। अपनी शक्तिसे जो कर सकते हो करो। मेरे से जो हो सकता था मैंने किया। तुम्हारा कार्य अच्छा चलेगा अर्थात् गरीबोंकी सेवा होगी तो मुझे अच्छा लगेगा। और लिखने की इच्छा नहीं होती।

बापुके आशीर्वाद

डा० हीरालाल शर्मा
नगला नवाबाद
खुर्जा, यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९. पत्र : श्यामलालको

२८ जुलाई, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा खत बर्नदेव शास्त्रीके बारेमें मिला। ठीक है। सी० पी० बिरारकी आठ समितियोंके लिए तुमने रु० २५ के हिसाबसे २०० के लिए सम्मति मांगी है, लेकिन आरम्भमें तुमने प्रत्येकके लिए ५० का लिखा है। अब तो २०० भेजो, बादमें देखा जायेगा।

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. विचित्र नारायण शर्मा, गांधी आश्रम (मेरठ) के प्रबन्धक और हीरालाल शर्माके प्राकृतिक चिकित्सालयके ट्रस्टी

८०. पत्र : सरला देवीको

२९ जुलाई, १९४५

प्रिय सरला[1],

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई। बेशक, जब भी तुम्हारा मन हो तुम पत्र लिखो और जितनी जल्दी सम्भव हो, मेरे पास आ जाओ। अभी इतना ही।

स्नेह।

बापू
(मो० क० गांधी)

श्री सरला देवी
राजनैतिक बन्दी
जिला जेल
अल्मोड़ा

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८९) से

८१. पत्र : छतारीके नवाबको

सेवाग्राम
२९ जुलाई, १९४५

प्रिय नवाब साहब[2],

आपका २४ जूनका पत्र बम्बईमें, मेरे शिमलाके लिए रवाना होने के ठीक बाद, प्राप्त किया गया। शिमलामें मुझपर कामका बहुत ज्यादा बोझ न रहे, इस खयालसे अन्य पत्रोंके साथ उसे भी रोक रखा गया। मेरे लौटने पर ही वह मुझे दिया गया।

मैंने आपके पत्रको बार-बार पढ़ा है। मुझे खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इससे मुझे कोई सन्तोष नहीं मिला है। इस तरहके मामलोंपर स्व० सर अकबर हैदरीके साथ मेरा लम्बा पत्र-व्यवहार चलता था। वे मुझे सन्तुष्ट करने की भरसक कोशिश करते थे, लेकिन मेरी रायमें उसमें विफल रह जाते थे। आप यद्यपि इस क्षेत्रमें नये हैं,

१. कैथेरीन हेल्मीन; ये १९३२ में भारत आई थीं और १९३६ में वर्धा चली गई थीं; इन्होंने अल्मोड़ामें पहाड़ी लोगोंके उत्थानके लिए काम किया।

२. कैप्टेन सर मुहम्मद अहमद सईद खाँ, १९४१ से हैदराबादके निजामकी कार्यकारिणी परिषद्के अध्यक्ष

फिर भी मुझे लगता है कि अगर आपने तटस्थ भावसे स्थितिसे निवटने की कोशिश नही की, तो आप भी सर अकबरकी ही तरह विफल रहेंगे। मैं इस विषयमें दलील नहीं करना चाहता हूँ। मेरे पास पर्याप्त सामग्री नही है। लेकिन मैं एक मित्रकी तरह आपको अपनी राय, चाहे वह जिस लायक भी है, दे रहा हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाइनेस नवाबसाहब छतारी
हैदराबाद (दकन)

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम, वर्धा
२९ जुलाई, १९४५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हें आपरेशन कराना ही न हो तो दिनशाके यहाँ जाना तय रखो। मैं साथ चलूँगा। मैंने उससे पुछवा लिया है। उसे आशा है और मुझे भी है कि तुम्हारी तबीयत सुधर जायेगी। उसके यहाँ जाने से हानि तो हो ही नही सकती। अहमदाबाद जाना जरूरी ही हो, तो निर्धारित कार्यक्रमके अनुसार और थोड़े ही दिन वहाँ रहो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८२

८३. पत्र : नायडूको

२९ जुलाई, १९४५

भाई नायडु,

आप कहते हैं उस तरह अगर धर्मांतर होता है तो कौन रोकेंगे? मैंने लिखा है सो पढ़ लो। सब हिंदुको अतिशूद्र बनना है अगर शुद्धि करनी है तो। आशा है मेरी हिंदुस्तानी आप पढ लेते हैं।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९४) से

८४. पत्र : अबुल कलाम आजादको — अंश

[२९ जुलाई, १९४५ के पश्चात्][1]

मैंने वेवलको पत्र लिखा था और उनका जवाब मिल गया है। मैंने बचावका सवाल भी उठाया है और कहा है कि सबको बचावके लिए वकील रखने की अनुमति मिलनी चाहिए। मैंने पं० जवाहरलालका वक्तव्य पढ़ा था और आज सरदारने आपका पढ़कर सुनाया।[2] यह काफी है।

अंग्रेजीकी नकलसे : पुलिस आयुक्तका कार्यालय, बम्बई : फाइल सं० ३००१/एच०/पी० ३४१

८५. तार : राजेन्द्रप्रसादको

एक्सप्रेस
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद
बिड़ला हाउस
नई दिल्ली

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४५

तुम्हारा तार मिला। बेहतर होगा कि महेन्द्रके बारेमें वाइसरायके सचिवसे मिलो।[3]

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. लॉर्ड वेवलको लिखे पत्रके उत्तरके उल्लेखसे; देखिए पृ० ३७ की पा० टि० १।

२. अबुल कलाम आजादने यह सुझाव दिया था कि कांग्रेसको आई० एन० ए० अफसरोंका बचाव करना चाहिए।

३. देखिए "पत्र : राजेन्द्रप्रसादको", १५-८-१९४५ भी।

८६. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

सेवाग्राम, वर्धा
३० जुलाई, १९४५

भाई राजेन बाबू,

मैंने महेन्द्रके बारेमें तार दिया था. "तुम्हारा तार मिला। बेहतर होगा कि महेन्द्रके बारेमें वाइसरायके सचिवसे मिलो।" नई सरकार[1] सहसा वाइसरायके निर्णय में दखल नहीं दे सकती, लेकिन जेन्किन्ससे कुछ आशा हैं। क्या हमारे लोगोंने कोई अपील लन्दन नहीं भेजी? क्या उस व्यक्तिको अभी फाँसी नहीं दी गई है? यदि वह जीवित है तो तुम्हें उसके बारेमें जो-कुछ करना है, यही करो। लन्दन शिष्ट-मण्डल भेजना बेकार है।

आशा है, अब तुम बेहतर होगे।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५९१) से

८७. पत्र : अमृतकौरको

३० जुलाई, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र अभी-अभी मिला है।

मुझे खुशी है कि तुम वाइसरायकी पत्नीसे मिली। जो-कुछ मुझे मिल सकेगा, मैं तुम्हे बुकपोस्टसे भेज दूँगा।

सरदारकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। शायद उन्हें पहले प्राकृतिक चिकित्सा करानी होगी और फिर, जरूरी हुआ तो, आपरेशन। अगर वे पूना गये तो मुझे वहाँ जाना पड़ेगा। ऐसा शायद अगस्तके पहले हफ्तेमें हो।

हरिजनोंको पूरा हक है कि हमें बददुआ और गाली दें। वे थोड़े-से प्रायश्चित्त

१. लेबर सरकार, जो २७ जुलाई, १९४५ को प्रधानमन्त्री एटलीके नेतृत्वमें बनी थी।

करने वाले लोगोंको कट्टर लोगोंसे अलग कैसे कर सकते हैं? हाँ, हमें अपना काम जारी रखना चाहिए।

सुशीला सरदारके साथ है। वहाँ उसकी तन्दुरुस्ती जितनी सुधरी थी, मैं समझता हूँ, अब वह सब खो बैठी है।

तुम्हें स्वस्थ रहना है। उसका गुर तुम्हारे पास है। भोजनके अतिरिक्त बीच बीचमें कुछ नहीं खाना है। सैर करते समय फल या कुछ भी नहीं चबाना है। निर्धारित समयपर जो भोजन जरूरी हो वह यह मानकर लो कि यह जीने के लिए आवश्यक है।

इस सप्ताहके मध्य तक सुशीलाके लौट आने की सम्भावना है।

मैं ठीक हूँ। आम तौरपर जितना करता था उससे ज्यादा सैर करता हूँ। आज ठीक दो मील चला। आम तौरपर डेढ़ मील चलता हूँ।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९८ से भी

८८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

३० जुलाई, १९४५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। कहा जा सकता है कि यहाँ सब ठीक चल रहा है। तुमने पूनामें ठीक काम किया। मनमें यह इच्छा जरूर रहती है कि तुम बीमार न पड़ो। बनु और मनुकी बात समझा। दोनोंकी तबीयतमें कुछ अधिक सुधार हो, तो वे आरोग्य भवनको कुछ तो चन्दा दे ही सकती हैं। बाकी तो जो होता है सो ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३५) से

८९. पत्र : मृदुला साराभाईको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४५

चि० मृदुला,

तेरा पत्र अभी मिला। तू इतनी कर्मठ है कि मेरा तुझसे अपने अक्षर सुधारने के लिए कहना, अपने-आपसे वैसा करने को कहने जैसा है। यदि मैं अपने अक्षर सुधारूँ तभी तो मुझे तुझसे वैसा कहने का अधिकार होगा न? इसके बावजूद इतना कहता हूँ कि तेरा पत्र अक्षरश: पढ़े बिना मैं यह लिख रहा हूँ, क्योंकि प्रत्येक अक्षरको पढ़ने में तो समय लगेगा। अहमदाबादके बारेमें तो ठीक ही लगता है। मैं कानजीभाईको[1] लिखूंगा। जो लोग जहाँ रहते हैं उन्हें वही काम करना चाहिए, यह नियम बहुत कठोर जान पड़ता है। क्या यह हमारी कंगालीका द्योतक है? जब तुझे इस्तीफा देना पड़ेगा उस समय हम उसके मसौदेके बारेमें विचार कर लेंगे। मैं समझता हूँ कि तेरे वापस लौटने से पहले हमारे लिए निर्णय करने को कुछ नहीं होगा।

अब यदि तू एक भी कामका पत्र वहाँ न मँगवाये तो अच्छा हो। तू लौट आ, फिर हम बात करेंगे। अच्छी हो जा। पाठ्यक्रमके बारेमें मैं देखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

मृदुलाबहन साराभाई
हट नं० ४६
गुलमर्ग, कश्मीर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९०. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

३० जुलाई, १९४५

चि० अमृतलाल,

मैं तुम्हारी रिपोर्ट पढ़ गया। मुझे लगता है कि पुस्तकोंकी कीमत बहुत अधिक है। प्रवेश लेने वालेके लिए बहुत कठिन और महँगी जान पड़ती है। यदि [उसके पास] पूरी सामग्री न हो तो तदनुसार व्यवस्था की जा सकती है। इस सम्बन्धमें काका साहबसे विचार-विमर्श करना।

बापूके आशीर्वाद

अमृतलाल नानावटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कन्हैयालाल देसाई

९१. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको

३० जुलाई, १९४५

भाई धर्मदेव शास्त्री,

आपका खत मिला है। श्यामलालजीको कह दिया है[1] कि आपको रु० २००) भेजा जाय। इतना उन्होंने मांगा था। आपके पत्रमें ज्यादाका है। बाकी तो बापाके ऊपर रहेगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री धर्मदेव शास्त्री
अशोक आश्रम
कालसी
देहरादून

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९२. पत्र : देवराजको

३० जुलाई, १९४५

भाई देवराज,

तुम्हारे भाईके बारेमें वे कुछ भी अरजी भेजें तब ही मैं कुछ कर सकूं। उसके पहले असम्भव है। मेरा यहां रहना अस्थिर है, इसलिए मैं स्थिर हो जाऊं, पीछे यहां आने के बारेमें लिखो।

बापुके आशीर्वाद

लाजपत भवन
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४८।

९३. पत्र : देवराज बोराको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४५

भाई देवराजजी,

आपका खत मिला। इंग्रेजीमें क्यो? मैं हिन्दुस्तानी समझ सकता हू। आपका अनुभव मुझे कड़वा लगा है। आपमें मैंने सत्य-निष्ठा नही पाई है। आडम्बर ठीक मात्रामें पाया है। इसलिए यहा आप कुछ नही पायेंगे, न यहाके लोग आपसे पायेंगे। इसलिए आपका यहां आना उचित नही लगता है।

आपका,
मो० क०

श्री देवराज बोरा
मार्फत सेठ एन० एल० सहगल
इंडियन टिंबर वर्क्स
पो० आ० गुलजार बाग
पटना, बिहार

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

९४. पत्र : गालिब साहबको

सेवाग्राम
३० जुलाई, १९४५

भाई साहेब,

आपका खत वापसीमें ही आया। मैं अहसान मानता हू। बहन जोहरा एक-दो दिनमें आवेगी तब खत बताऊंगा, और लिखना होगा तो लिखूंगा।

गालिब साहेब

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

९५. पत्र : रामनारायण चौधरीको

३० जुलाई, १९४५

भाई रामनारायण,

लिखने का ही काम करना और गायको भूल जाना मुझे नहीं जंचता है। लेकिन मुझे जंचे न जंचेका प्रश्न नहीं है।

तुम्हारे रहने की समस्या कठिन है। ऐसे लोग यहां रहते हैं जो अलग पकाते हैं इ०। इसमें वृद्धि नहीं करना है। तुम्हारा जीवन अगर आश्रम जीवन न बन सके तो आश्रममें क्या रहना? खादी विद्यालयमें जाजूजी रखें तो वहां रहो। हिन्दुस्तानी प्रचारका काम करो तो काकाजी[1]से पूछो, कस्तुरबा स्मारकमें काम करना है तो श्यामलालसे बात करो। तुम्हारेमें शक्ति काफी भरी है। कहींसे भी १५० रु० पैदा करोगे। मैं तो एक ही काममें तुम्हारा उपयोग सोच सकता हूं। जमनालालजीकी आत्मा भी मुझे दूसरा नहीं सोचने देगी। देखो क्या करना है। मुझे लिखो या कहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९६. पत्र : ज्योतिलाल मेहताको

सेवाग्राम
३१ जुलाई, १९४५

चि० ज्योति,

तुम्हारे पत्रकी बात मैं समझ गया। चम्पाने लम्बा पत्र लिखा है, किन्तु वह अपना पता-ठिकाना नहीं लिखती। मुझे पता नहीं कि वह वहाँ है या कहीं और। तुम्हीं उसे यह समाचार दे देना कि उसे जब आना हो तब आ जाये। उसे मेरा समय नहीं लेना चाहिए और न अलग रसोई बनानी चाहिए। यहां सब-कुछ बदल गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दत्तात्रेय बा० कालेलकर

९७. पत्र : चन्द्रकला और कृष्णकुमारको

३१ जुलाई, १९४५

चि० चन्द्रकला-और चि० कृष्णकुमार,

माताजीके देहान्तसे तुम दोनो भाई-बहन दु ख मानते हो, यह स्वाभाविक है। तुम्हारे जैसा मैं छोटा था तब कोई रिश्तेदार चले जाते थे तो दु ख मानता था। लेकिन अब समझा हू मृत्युका दु ख मानना व्यर्थ है। जन्मके साथ ही मृत्यु तो है ही, कोई आज तो कोई कल। इसमें दु ख क्या? तुम्हारे होशियार हो जाना है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

पिताजीको मेरे आशीर्वाद देना।

श्री सीतारामजी खेमका
जे० बी० मिल्स
ग्वालियर

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स'। सौजन्य प्यारेलाल

९८. सूतके बदले खादी क्यों और पैसेके बदले क्यों नहीं ?[1]

जुलाई, १९४५

श्रीयुत भारतन कुमारप्पाने अपने दौरेपर से मुझे लिखा है.

लोग पूछ रहे हैं कि यह गाधीजी ने क्या किया है। खादीके बदले सूत देने का आग्रह रखकर तो वे खादीको मार डालेंगे। हम लोग क्या करे? हमने तो उनकी शिक्षाके कारण खादी ही पहनने का व्रत लिया है। हमें कातना नही आता और न हम सीखना चाहते हैं। क्या हम खादीके बिना ही रहें? सूत-सम्बन्धी यह नियम तो गाधीजी का दुराग्रह ही प्रकट करता है।

श्रीयुत भारतन कुमारप्पाका पत्र अग्रेजीमें है। यहां मैंने उसका सार दे दिया है।

१. पत्रिकाके जुलाईके अंकमें प्रकाशित इस लेखके अंग्रेजी रूपान्तरकी मूल हिन्दी सुलभ नहीं हो सकी।

यदि लोग यह समझ लें कि अहिंसक स्वराज्य सूतके एक-एक तारके निकाले जाने पर निर्भर है, तो मेरी माँगमें उन्हें कोई दुराग्रह नहीं दिखाई देगा। इसके विपरीत, उनमें उसके प्रति ऐसी दिलचस्पी जग जायेगी जो उन्हें पूरी तरह रमा लेगी। जिन्हें इसमें सिर्फ दुराग्रह दिखाई देता है वे नहीं जानते कि अहिंसा कैसे काम करती है। भारत लौटने के बादसे ही मैं चीख-चीखकर कहता रहा हूँ कि अगर हम अहिंसाके बलपर स्वराज्य पाना चाहते हैं, तो कताईको हमारी प्रवृत्तिका आवश्यक अंग होना चाहिए। स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली कहा करते थे कि चरखा हमारी बन्दूक है और सूतकी गुंडियाँ गोलियाँ हैं; हम इन गोलियोंकी ही मददसे स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। यह बात जितनी ठीक तब थी, जब कही गई थी; उतनी ही आज भी है।

मेरा अनुभव यह है कि अगर खादीको नगरों और गाँवों दोनों स्थानोंमें सर्वव्यापी होना है तो उसे सूतके बदलेमें ही सुलभ होना चाहिए। आज रुपयेकी खादी के लिए आने-भर कीमतका सूत माँगा जाता है। लेकिन यह तो सिर्फ शुरुआत है। जब लोग कताईका महत्त्व समझ लेंगे और उसे सीख लेंगे तब खादी पूरी कीमतके सूतके एवजमें ही दी जायेगी। मुझे आशा है कि ज्यों-ज्यों दिन बीतते जायेंगे, हर आदमी खुद ही सिर्फ सूतके ही बदले खादी खरीदने पर आग्रह रखने लगेगा। अगर ऐसा नहीं होगा और वे सूत आनाकानी करते हुए ही देंगे तो अहिंसाके बल पर स्वराज्य प्राप्त करना असम्भव है। स्वराज्यके लिए कुछ-न-कुछ कोशिश तो करनी ही पड़ेगी। माँगने से वह मिल नहीं सकता। बन्दूकके जोरपर किसी प्रकारकी स्वतन्त्रता हासिल की जा सकती है, लेकिन वह सच्चा स्वराज्य नहीं होगा, और कमसे-कम मेरी तो उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।

बन्दूकके जोरपर स्वराज्य प्राप्त करने के विचार-मात्रसे मेरा सिर चकराने लगता है और मेरी आँखोंके सामने कठिनाइयोंका पहाड़ उपस्थित हो जाता है। यह लेख उन लोगोंके लिए नहीं है जो बन्दूकके जोरपर स्वराज्य पाने के पक्षमें हैं। वे खादी पहने ही क्यों? उनके दृष्टिकोणसे खादीको बिलकुल बेकार चीज साबित किया जा सकता है। इस लेखके पाठकोंको समझना चाहिए कि यदि ग्रामीण लोगोंको अपने इस्तेमालके लिए नहीं, बल्कि नगरोंमें बिक्रीके लिए खादी तैयार करनी है और यदि खुद करोड़ों ग्रामवासियोंको सिर्फ मिलके कपड़ेका ही उपयोग करना है तो फिर खादी किसी खास कामकी नहीं होगी। यदि खादीकी बदौलत गरीबोंकी जेबोंमें सिर्फ चन्द पैसे ही पहुँचते हैं, तो इतनेसे हम कैसे सन्तुष्ट रह सकते हैं?

ऐसी शंका उठाई गई है कि नया नियम उस खादीको मार डालेगा जिसका उत्पादन आज गरीब लोग कर रहे हैं और खुद अपने काते सूतसे बुनी खादी पहनने को चन्द शहरी लोगों तक सीमित एक फैशन बना देगा। लेकिन इस विचारमें अज्ञान झलकता है।

आम लोग फैशनके लिए नही, जीने के लिए खाते हैं। इसी प्रकार वे कपड़े भी फैशनके लिए नही वल्कि शरीरके बचावके लिए पहनते हैं। इसलिए चूल्हेकी तरह चरखेको भी हर घरमे स्थान मिलना चाहिए और शरीरसे सक्षम हर व्यक्तिको कातना चाहिए। फिर सभी खादी पहन सकते हैं और स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। शरीरसे सक्षम लोगोंको अपगो तथा कमजोरोंके बदले भी कातना चाहिए। यदि शक्ति और पैसा दोनोकी अपेक्षा रखने वाले क्रीड़ा-क्लब चल सकते हैं, तो स्वराज्य-क्लब या ऐसे चरखा-क्लब क्यों नही चल सकते जहाँ लोग पूनियाँ बनाये, सूत कातें और सूतके एवजमे खादी प्राप्त करें? सच्चाई यह है कि जहाँ इच्छा नही होती वहाँ प्रतिकूल दलीले स्वत. ही उपस्थित हो जाती हैं, लेकिन जहाँ इच्छा होती है वहाँ वह स्वयं ही अनुकूल दलीले ढूंढ़ लेती है। यदि इच्छा प्रबल है तो जैसे कोई खेल-कूद नही छोड देता है उसी प्रकार कोई चरखेको भी नही छोड़ेगा। और अगर खेलोके लिए इच्छा उत्पन्न की जा सकती है, तो क्या स्वराज्यके लिए नही उत्पन्न की जा सकती?

खादी और सूतकी अदला-बदलीके खिलाफ एक जोरदार दलील यह दी जाती है कि अगर नगरवासी अपनी जरूरतका सूत खुद कातने लगेंगे, तो गरीबोंके द्वारा तैयार की गई खादीका लोप हो जायेगा और उन्हे अब तक जो थोड़ी बहुत राहत मिलती रही है वह बन्द हो जायेगी-तथा ग्रामवासियोंको खुद अपनी तैयार की हुई खादी पहने देखने की आशा सपना बनकर रह जायेगी। मान लीजिए, नगरवासी आलस्यवश अथवा क्रोधके कारण खादी पहनना छोड़ दे और ग्रामवासी माँगके अभावमें कताई और बुनाईका त्याग कर दें, तो इससे देशका कितना भारी नुकसान होगा? गरीब लोग खादीके बदले कुछ और धन्धे अपनायेंगे और किसी तरह अपनी जीविका कमायेंगे। लेकिन ऐसे लोगोंकी संख्या करोडोंमें नही होगी, बल्कि आजकी तरह लाखो ही रहेगी। जो लोग बीड़ी बनाने का काम करते हैं वे कताईसे जितना सम्भव है उसकी अपेक्षा चौगुनी या उससे भी ज्यादा कमाई करते हैं। बहुत-से मिल-मजदूर अमीर बन गये हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो लोग आज भूखे हैं वे और भी भूखे रहेंगे तथा मृत्युपर्यन्त भूखे रहेंगे। और जो चन्द लोग अच्छी कमाई करेंगे वे बाकी लोगोंका शोषण करेंगे। अगर और भी मिले खोली जाती हैं तथा नगरोंकी संख्यामें वृद्धि होती है तो उससे भारत खुशहाल नही हो जायेगा। इसके विपरीत उससे करोड़ो लोग भूख तथा भूखसे उत्पन्न होने वाले रोगोंके कारण मृत्युके ग्रास बनेंगे। अगर नगरवासियोको इस स्थितिसे खुशी होगी तो मुझे कुछ नही कहना है। उस हालतमे तो यहाँ सत्य और अहिंसाका नही, वल्कि हिंसाका राज्य होगा तथा मैं यह स्वीकार करूँगा कि तब खादीके लिए कोई स्थान नही होगा, बल्कि हो नही सकता। फिर तो सैनिक प्रशिक्षण, चाहे उसे हम पसन्द करे या न करे, अनिवार्य होगा। लेकिन मैं तो करोड़ों भूखे लोगोंकी बात कर रहा हूँ। अगर उन्हें जीना है और अच्छी तरह जीना है तो चरखेको केन्द्रीय स्थान देना होगा और उन लोगोको भी यज्ञ भावसे

कातना होगा जिन्हें कातने की जरूरत नहीं। अहिंसाके अस्त्रोंको लोग इसलिए न अपनायें कि उनका कोई विकल्प नहीं है। इसलिए मेरी समझमें तो सूतके बदले खादीका जो नियम शुरू किया गया है उसे कायम रहना है तथा उसके प्रयोगकी वृद्धि होनी है। ठीक यही वजह है कि अगर सभी खादी भण्डार बन्द कर देने पड़ें और खादीधारी लोग खादीका त्याग कर दें तो इसे मैं सत्यकी विजय मानूँगा, क्योंकि तब मैं यह समझ जाऊँगा कि लोगोंको अहिंसामें विश्वास नहीं था और अगर वे खादी पहनते थे तो अज्ञानवश ही तथा इस प्रकार वे अपने-आपको सिर्फ इस भ्रममें रखते थे कि खादी पहनने से स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा। जब मैं यह जानता हूँ कि ऐसी खादीसे स्वराज्य मिलने वाला नहीं है और स्वराज्य मिलते ही उसका त्याग कर दिया जायेगा तब मैं लोगोंको अपने-आपको इस प्रकार भ्रममें रखने का अवसर क्यों दूँ? उस हालतमें स्वर्गीय चिन्तामणि[1] की यह भविष्यवाणी सही सिद्ध होगी कि गांधीकी मृत्युके बाद लोग खादीपर और खुद गांधीपर भी हँसेंगे तथा उनके घरोंमें जो चरखे होंगे उन्हींसे उसका दाह-संस्कार कर देंगे। अगर हाथ-कता सूत अहिंसाका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता तो मैं जीते-जी अपनी भूल सुधारकर चरखे बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली लकड़ीको क्यों न बचा लूँ? लेकिन मैं उस भविष्यवाणीको सही नहीं मानता। लोग यह समझ गये हैं कि भारतके करोड़ों लोग हिंसाके बलपर स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकते। विश्वमें भारतको एक महान् स्थान प्राप्त है या वह उसे शीघ्र प्राप्त कर लेगा। यह अहिंसासे ही सम्भव होगा। अगर हमारे करोड़ों देशभाई अहिंसाकी व्यवहार्यताका परिचय देना चाहते हैं, तो वे चरखेको केन्द्रीय वस्तु बनाकर ही उसका परिचय दे सकते हैं। और चूंकि स्वतन्त्रताकी इच्छा नगरवासियोंमें सबसे प्रबल है इसलिए इस बातको समझना और अहिंसक स्वराज्य प्राप्त करने के लिए कताई और खादीको अपनाना उनका कर्त्तव्य है।

[अंग्रेजीसे]

ग्राम उद्योग पत्रिका, जिल्द १, पृ० ३५२-५४

१. सी० वाई० चिन्तामणि; नेशनल लिबरल फेडरेशनके अध्यक्ष, १९२० और १९३१; **लीडर** के सम्पादक (१९०९-२०) और प्रधान सम्पादक (१९२७-४१); संयुक्त प्रान्तके शिक्षा-मन्त्री (१९२१-२३)

९९. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
१ अगस्त, १९४५

चि० दिनशा,

फिलहाल भी [दो] बहनें तैयार हैं जिन्हें मैं वहाँ भेजना चाहूँगा। क्या उन्हें वहाँ रखने की जगह है? दोनोंमें से कोई भी अपंग नहीं है, किन्तु उन्हें उपचारकी आवश्यकता है। उनमें से एक तो है—मणिलाल[1] की पत्नी सुशीला। उसके दो बालक हैं, जिन्हें वह कहीं अन्यत्र छोड़ना नहीं चाहेगी। यदि स्थान न हो अथवा रोगी तुम्हें हाथमें लेने जैसा न लगे तो इनकार करने में संकोच मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१००. पत्र : कृष्ण वर्माको

१ अगस्त, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारे पत्रका पूरी तरह जवाब मैं बादमें दूंगा। मामाको यह पढ़वा देना। फिलहाल तो उन्हें वहीं रहना चाहिए। इस सम्बन्धमें मणिलाल विचार कर रहा है। मेरा यह स्पष्ट विचार है कि तुम जो कहो वही करना मामाका कर्त्तव्य है।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृ० वर्मा
नैसर्गिक उपचार गृह
मलाड—बी० बी० ऐण्ड सी० आई०

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मणिलाल गांधी

१०१. पत्र : पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणीको

सेवाग्राम
१ अगस्त, १९४५

भाई काकुभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० कनुने मुझे ब्योरेवार लिख भेजा है, लेकिन मैं उसमें नहीं पड़ूँगा। क्योंकि मैं अपनी बात पूरी तरहसे नहीं समझा सका इसलिए यह दुविधा उठ खड़ी हुई है।

"सुतरने तांतणे मने हरजी ए बांधी, जेम ताणे तेम तेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी"[1], ये मीराबाईके प्रसिद्ध भजनकी पंक्तियाँ हैं। इसी सूतके धागेमें स्वराज लटका हुआ है; फिर भी वह धागा टूटता नहीं क्योंकि उसमें प्रेमका बल है। भारत की भाषाएँ सूतकी उपमासे भरी हुई हैं। सूतके इस बैंकके पीछे चि० नारणदासकी कल्पना है। यदि ऐसे बैंकका ठीकसे गठन किया जाये तो वह पैसेका लेन-देन करने वाले चालू बैंकोंको पीछे छोड़ देगा। नारणदास खादीके अनन्य भक्त हैं। हममें से कोई भी उन्हें तपश्चर्यामें हरा नहीं सकता। उन्हें और कोई काम नहीं है। उन्होंने चरखेके लिए जो काम किया है उसका मैं साक्षी हूँ। मैं उनके कामपर मुग्ध हूँ। उन्होंने 'चरखा द्वादशी' का[2] महत्व बहुत अधिक बढ़ा दिया है। यह काम सिर्फ काठियावाड़ियोंका नहीं है और इस बार तो इसे अकेले काठियावाड़ियोंको ही नहीं करना है। इस बारकी योजनामें चरखा संघको बहुत काम करना था, जिससे उसे बहुत लाभ होने वाला था। चि० कनुको बम्बईका काम पूरा करके आगे बढ़ना था। चन्दा इकट्ठा करना गौण बात थी। सूत ही मुख्य वस्तु थी। चरखा संघका काम तो सिर्फ घर बैठे जो सूत मिले सो ले लेना था और उसकी प्राप्तिकी सूचना-भर नारणदासके बैंकको भेजनी थी। उस सूतपर स्वामित्व तो चरखा संघका ही रहने वाला था। मान लो यदि करोड़ रुपयेका सूत तैयार होता तो संघको वह घर बैठे मिल जाता। चि० कनु बालक है, हुक्मका बन्दा है। वह नेता नहीं है। वह अपनी बात समझा नहीं सका। उसके कथनानुसार तुम्हारी अवज्ञा करने के लिए वह गैरहाजिर नहीं रहा। यह चीज ऐसी थी जिसमें समझाने जैसा कुछ था ही नहीं। घर बैठे लक्ष्मीको टीका

१. हरिजी ने मुझे सूतके धागेसे बाँध लिया है। वह जैसे भी खींचेगा वैसे मैं उसकी हूँ। मुझे प्रेमकी कटारी लगी है।

२. गुजराती संवत्के अनुसार भाद्रपद १२, गांधीजी का जन्म-दिवस, चरखा द्वादशीके रूप में मनाया जाता था।

करना था। पर जो हुआ सो हुआ। अब मुझे ऐसा नही लगता कि उसे सुधारा जा सकता है। अब तो जो हो सके सो करना। मेरा खयाल था कि कनु घर-घर भटकेगा, चरखे चालू करवायेगा, चरखोकी मरम्मत करेगा, स्वयसेवक बनायेगा, सूत इकट्ठा करेगा और तुम्हारे यहाँ सूतकी गाँठोंका ढेर लग जायेगा।

यदि मैं तुम्हें योजनाके बारेमें समझा पाया होऊँ तो तुमने मुझे जो इतना लम्बा पत्र लिखा उसका बदला मैंने चुका दिया।

रुईकी क्रियाओके बारेमें मै समझ गया। जब जागे तभी सवेरा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०८५६) से। सौजन्य . पुरुषोत्तम का० जेराजाणी

१०२. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

सेवाग्राम
९ अगस्त, १९४५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला। अब नही आना अच्छा है। पुना मै जाऊं तो मुझे पूछना। मेरी सेवा करने वाले तो इतने हैं कि तुमको हिस्सा नही मिलेगा ऐसी धारणा है। ज्यादा आज नही लिख सकता हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४९०) से

१०३. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

सेवाग्राम
२ अगस्त, १९४५

चि० जैरामदास,

मैं तो तुमको लिखता ही नहीं हूं। समय कहां है। लखनऊ जाने का हुआ तो मैं चौंक उठा और प्रातःकालमें प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूं। प्रेमी[1] अच्छी हो जावे। ईश्वरकी गति न्यारी है। उसीका आधार हम लें और दुःखमें सुख मानें। अनासक्त होकर कर्त्तव्यपालन करें।

तुम तीनोंको.

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

प्रेमीको देना योग्य लगे तो यह दो।[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०४. पत्र : प्रेमी जयरामदासको

२ अगस्त, १९४५

चि० प्रेमी,

तू अच्छी होना और कुछ भी सेवा काममें ईश्वर दर्शन कर, रामनामको रामबाण दवा समझ। सुशीला सरदारके लिए मुम्बई गई है। शायद अब आवेगी।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जयरामदास दौलतरामकी पुत्री
२. तात्पर्य प्रेमी जयरामदासके नाम लिखे पत्रसे है; देखिए अगला शीर्षक।

१०५. पत्र : बंगालके गवर्नरको

सेवाग्राम
२ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

श्री सुधीर घोषने मुझे कृपापूर्वक आपके दो भाषणोंकी प्रतियाँ दीं, जिनमें से एकको मैंने कल अपने रोजमर्राके कामोंमें से कुछ क्षण निकालकर पढ़ डाला।

मैं यह पत्र फिलहाल दो चीजोंकी ओर ध्यान दिलाने के लिए लिख रहा हूँ। कपड़ेकी कमी आप उस नीतिका अनुसरण करके तुरन्त दूर कर सकते हैं जो अखिल भारतीय चरखा संघने, जिसकी शाखा बंगालमें भी है, निर्धारित की है। एक वाक्य में कहें तो योजना यह है कि हर घरसे अपनी कपाससे सूत कातने और हर गाँवसे अपनी जरूरतका कपड़ा बुनने को कहा जाये। विश्वमें इससे बड़े सहकारी प्रयत्नकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

दूसरा सवाल पशुओंका है। उसके लिए आपको खादी प्रतिष्ठानके श्री सतीशचन्द्र दासगुप्तसे मिलना चाहिए। वे बीमार चल रहे हैं, और शायद अभी न मिल सकें। अभी-अभी इस प्रश्नपर उनकी एक स्थायी महत्वकी कृति[1] प्रकाशित हुई है।

श्री सुधीर घोषने मेरे बंगालका दौरा करने के बारेमें मुझे आपका सन्देश दिया है। उसके लिए आपको धन्यवाद। बंगालमें बरसातका दौर खत्म होते ही वहाँ आने को मैं उत्सुक हूँ। आने पर मेरा पहला काम आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त करना होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामहिम बंगालके गवर्नर
कलकत्ता

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १०३

१. दि काउ इन इंडिया

१०६. पत्र : सुशीला गांधीको

२ अगस्त, १९४५

चि० सुशीला,

मैंने तुझे तार दिया है। बच्चेका ऑपरेशन होने तक तू वहाँ रह जा। तेरा स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ गया है। तेज दवाके कारण क्या तू हुक-वर्मसे मुक्त हो जायेगी? या कीटाणु फिर भी नहीं जायेंगे? मेरे मनमें बहुत-से प्रश्न उठते हैं। जोहरा के बारेमें मैं समझ गया। प्यारेलाल वहाँ गया हुआ है। वह सब सुनेगा। अब मेरे आने तक तू वहाँ रुकी रहना। सरदार जिस बंगलेके बारेमें कहते हैं उसका कब्जा ले लेना। बादमें जो करना होगा सो करेंगे। यदि तू वहाँ ७ को पहुँचे तो १० को तुझे पूना जाना चाहिए। क्या मैं ८ तारीखको यहाँसे निकलूँ?

बापूके आशीर्वाद

मार्फत डाह्याभाई पटेल
मेरिन ड्राइव
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०७. पत्र : अब्दुल हकको

२ अगस्त, १९४५

मौलाना (अब्दुल हक) साहब,

भाई गालिब साहब हैदराबादसे कल आ गये, उनको आपका खत बताया। उन्होंने कहा, "बात यह है कि दोनों कहते[1] थे जोहराबहनका मन उठ गया था। अब जोहराबहनके लिए हम दारस्सलाम चाहते हैं। उनका लड़का गया तबसे वह परेशान हैं और राजपुर रोडका मकान उनको खा जाता है। अब्दुल हक साहबकी तकलीफ हम समझते हैं, वे राजपुर रोडके मकानमें जावें। किराया वहां कम है, जगह थोड़ी छोटी होगी इसलिए दूसरी तजवीज होने तक भले उर्दू अंजुमन[2] का भंडार दारस्सलामके नीचेमें रहे। उसका किराया अब्दुल हक साहब ही मुकर्रर करें।" मेरा खयाल है कि यह दरख्वास्त अच्छी है। आप सब एक कबीले जैसे हैं। आप इतना कर सकते हैं तो सब अच्छा हो जायेगा। गालिब साहब तो कल यहांसे रवाना होते हैं। बहन जोहरा अबतक हैदराबादमें है। आपके जवाबकी इन्तजारीमें रहूंगा।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह शब्द ठीक पढ़ा नहीं जा सका है। इसलिए सन्दर्भ देखकर अनुमान से यहाँ दिया गया है।

२. अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू

१०८. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

सेवाग्राम
२ अगस्त, १९४५

चि० आनद,

तुमारे खत मिले। जेरामदास बाहर है इसलिए मैं तुमको लिखने की दरकार नही करता हू। तुमारे लिये सूतकी एक आटी आभा[1] ने रख ली है।

विद्या[2] अच्छी थी लेकिन परमेश्वरका स्थान नही ले सकती है। मैं तो मूर्ति-भजक हूं। इसलिये विद्याको भूलाना चाहता हू। लेकिन हम परमेश्वरको दिल चाहे इतने रूप देते हैं। तुमने परमेश्वरको विद्याका रूप दिया है तो जहा लगी [तक] यह भ्रम कायम रहेगा तुमको कौन समजा सकता है? आरामसे भूल सकते हो तो भूलो। तब विद्या उचे चढ़ेगी और तुम भी।

आजकल मेरा स्थान बहुत अनिश्चित है। इसलिये मत आओ। वही रहकर अच्छे हो जाओ और जो सेवा बने सो करो।

जेरामदास प्रेमीको लेकर लखनौ[3] गया है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

गोखलेजी भीमावरम्‌में मर गये।

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. कनु गाधीकी पत्नी
२. आनन्द हिंगोरानीकी दिवंगत पत्नी
३. लखनऊ

१०९. पत्र : अबुल कलाम आजादको

२ अगस्त, १९४५

आपका खत मिला। डा० पट्टाभिसे मैंने पूछा था।[1] अखबार देखते ही कुछ कहना अच्छा न लगा। अब खत आया है, मैं कुछ लिखूंगा। राजाजी[2] ने आपको तार दिया है सो मैंने देखा। उसके साथ मैं मिलता [सहमत] हूं। मैंने अखबारोंमें [देखा] आपने एक हिदायतनामा देने के लिए कुछ लिख दिया है। यह जो १९४२ में और उसके बाद मर गये उनके रिश्तेदारोंको देने का है। हम जो रिश्तेदारोंको पैसेकी मदद खाने पढ़ने के लिए देते हैं, अलग बात है। मेरी रायमें जब तक हम सचसे और अमनसे चलने वाले हैं हम नहीं दे सकते हैं। क्योंकि हम कैसे कह सकते हैं कि सब शहीद हुए? और उन सबने स्वराजके लिए कुरबानी की? मेरा खयाल है कि किसी हालतमें आप ऐसा नहीं कर सकते हैं। मैं अगर आपको सलाह दे सकता हूं तो कहूंगा कि आप उसे खींच लें। मैं नहीं जानता हूं कि अब वक्त है या नहीं। मैं आज आपको तार भेजता हूं।

दूसरी बात है बेगम आजादकी। डा० खान साहेबने लाहौरमें बात निकाली, मुझे चुभी। बेगम आजादने कुछ भी जाहेरकी सेवा की, मैं नहीं जानता हूं। अगर मेरा मानना सही है तो जाहिर यादगार नहीं होना चाहिए। मेरे पास थोड़े तुलवा[3] आ गये। मैंने तो कहा दिल चाहे सो करो।[4] इससे ज्यादा कहने की हिम्मत मेरेमें नहीं थी लेकिन आपको तो मैं कहूं। मेरी सलाह है कि आप ही एक अच्छा निवेदन निकालें और ऐसा कहकर कि बेगमने कुछ जाहिर सेवा नहीं की इसलिए आप जाहिर यादगार पसन्द नहीं करते हैं। जो सलाह मैंने दी है उसे मुनासिब न समझें तो आप फेंक देंगे, यही आप और मेरे बीचकी मोहब्बत मांगती।

मौलाना अबुल कलाम आजाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३८।
२. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
३. विद्यार्थी
४. देखिए पृ० ९।

११०. पत्र : पट्टाभि सीतारामैयाको

सेवाग्राम
२ अगस्त, १९४५

प्रिय पट्टाभि,

तुम्हारा आचरण[1] विचारशून्य था। तुम बहुत जिम्मेदार आदमी हो। गोपाल रेड्डीके चाहे जितना भी कोंचने पर तुम्हें तो चुप रहना चाहिए था या बस एकाध शब्द कह देना चाहिए था। और अवसर भी कैसा था! अध्यक्ष होते हुए भी इस प्रयोजनके लिए खादी प्रदर्शनीका उपयोग करना गोपाल रेड्डीके लिए अनुचित था। और कार्य-समितिकी चेतावनी [के बारेमें] मौलाना साहबने मुझे एक कड़ा पत्र लिखा है।[2] अब मैं एक छोटा-सा वक्तव्य[3] जारी कर रहा हूँ, सो देखना। अब दुःखी मत हो, बल्कि चुपचाप अपना काम करते जाओ।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ऐसी खबर प्रकाशित हुई थी कि २० जुलाई, १९४५ को पट्टाभि सीतारामैयाने कहा कि १९४२ में जारी किये गये आन्ध्र परिपत्रका "जनक अकेला मैं हूँ" और "परिपत्रमें जो हिदायतें थीं वे मुझे गांधीजी के साथ विस्तारसे चर्चा करने के बाद उन्हींसे मिली थीं।" लेकिन आन्ध्र परिपत्रके सम्बन्धमें १५ जुलाई, १९४३ को गांधीजी द्वारा सरकारको दिये गये उत्तरको ध्यानमें रखते हुए (देखिए खण्ड ७७, पृ० १०३-२१३) २२ जुलाई, १९४५ को पट्टाभि सीतारामैयाने अपने पहले के कथनमें संशोधन करते हुए कहा कि गांधीजी को "ऐसे किसी परिपत्रकी कोई जानकारी नहीं थी। परिपत्र उनकी जानकारी में या उनके कहने पर तैयार नहीं किया गया।"

२ देखिए पिछला शीर्षक।

३. देखिए अगला शीर्षक।

१११. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
३ अगस्त, १९४५

डॉ० पट्टाभिके मछलीपट्टममें दिये गये तेलुगु भाषणकी रिपोर्ट और बादमें उनका दिया हुआ उसका सही पाठ मैंने अब पढ़ लिया है।[1] मैंने उनके साथ पत्र-व्यवहार भी किया है और जिन रिपोर्टरोंने कुछ दिन पहले मुझसे इसके बारेमें प्रश्न किये थे उनको मैं अब जवाब दे सकता हूँ।

सरकारी प्रकाशन 'कांग्रेस रिस्पॉन्सिबिलिटी फॉर डिस्टरबेन्सेज इन १९४२-४३' के अपने उत्तरका प्रासंगिक अंश मैंने फिरसे पढ़ा है।[2] आन्ध्र परिपत्रके सम्बन्धमें कही गई अपनी बातोंमें मुझे कोई संशोधन-परिवर्तन नहीं करना है। डॉ० पट्टाभि और अन्य लोगोंने मित्र और सहयोगी कार्यकर्ताओंके नाते मुझसे इस बहुचर्चित विषयपर बातचीत अवश्य की थी। स्वाभाविक है कि उस बातचीतका कोई रेकॉर्ड मेरे पास नहीं है और न मैंने उसके प्रकाशनका अधिकार ही किसीको दिया था। फिर भी, इसका समसामयिक साक्ष्य मेरे पास है कि ७ अगस्त, १९४२ को मेरे दिमागमें क्या बात थी।

मेरे निर्देशोंका मसौदा[3] ८ अगस्तको कार्य-समितिके सदस्योंके बीच वितरित किया गया। उनपर ९ अगस्तको विचार होना था। लेकिन उनपर विचार होने से पूर्व ही मैं और कार्य-समितिके सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। इसलिए कोई अधिकृत निर्देश नहीं जारी किये गये और न जारी किये जा सकते थे।

अ० भा० कां० कमेटीके ८ अगस्तके प्रस्तावके अनुसार काम करने का मुझे कोई मौका ही नहीं मिला।[4] इसलिए आन्ध्र परिपत्र न कांग्रेस द्वारा अधिकृत था, न मेरे द्वारा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-८-१९४५

१. देखिए पृ० ७० पर पा० टि० १।

२. जो इस प्रकार था : "इसके पश्चात् आता है आन्ध्र परिपत्र। परन्तु चूँकि अपनी गिरफ्तारी से पूर्व मैं इसके विषयमें कुछ नहीं जानता था, अतः मुझे इसको अपने लिए निषिद्ध विषय मानना चाहिए। इस कारण इसपर मैं संकोचके साथ ही कोई राय दे सकता हूँ। यह सावधानी बरतते हुए मैं इस दस्तावेजको कुल मिलाकर अहानिकर समझता हूँ।" देखिए खण्ड ७७, पृ० १५४-५५।

३. देखिए खण्ड ७६, पृ० ४०६-९।

४. देखिए खण्ड ७९, परिशिष्ट १०।

११२. पत्र : ई० एम० जेंन्किन्सको

सेवाग्राम
३ अगस्त, १९४५

प्रिय सर एवन,

वाइसराय महोदयके नाम मेरे २५ जुलाईके पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करते हुए आपने २९ जुलाईको जो पत्र लिखा है उसकी प्राप्ति मैं सधन्यवाद स्वीकार करता हूँ। मैं इस विषयमें आपके अगले पत्रकी प्रतीक्षा करूँगा।

म० प्रा० विधान-सभाकी सदस्या श्रीमती अनसूयाबाई काले मेरे पास यह बताने आई थी कि प्रिवी कौंसिलने अष्टी और चिमूरके कैदियोंकी वह याचिका रद्द कर दी है जिसमें नागपुर उच्च न्यायालयके फैसलेके खिलाफ अपील की गई थी। इसलिए यदि वाइसराय महोदय क्षमाका अपना विशेषाधिकार प्रयोगमें नहीं लाये, तो कैदी फाँसी पर चढ़ा दिये जायेंगे। उन्होंने मुझसे यह कहने की कृपा की थी कि वे इन और ऐसे अन्य मामलोंपर समय आने पर विचार करेंगे। अब वह समय आ गया है। क्या मैं आशा करूँ कि मौतकी सजाएँ घटा दी जायेंगी?[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर ई० एम० जेन्किन्स
वाइसराय महोदयके निजी सचिव
वाइसरायका कैम्प

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ३६-३७

१. अष्टी और चिमूरके कैदियोंकी मौतकी सजाएँ १६ अगस्तको आजीवन कारावासमें बदल दी गई थीं।

११३. पत्र : नारणदास गांधीको

३ अगस्त, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र आज ही पढ़ सका। तुमने जो-कुछ लिखा है उसमें आजकी प्रचलित दृष्टिसे देखूं तो सार है किन्तु शुद्ध दृष्टिसे नहीं। तुम्हारी दलील गरीबकी खादीके लिए है। मेरी स्वराज्यकी खादीके विषयमें है। काठियावाड़में खादीका जो काम हो रहा है वह बहुत आकर्षक है। किन्तु वह स्वराज्यके मार्गमें बाधक है और अन्तमें विफल हो जाने वाला है। जो लोग खादी पहनते हैं वे उसे खादीकी भावनासे नहीं पहनते, राजनीतिक आवश्यकता मानकर ही पहनते हैं। अपनी अथक और अपार शक्ति ऐसी खादीके लिए क्यों लगाओ? चरखा संघकी शर्तके कारण[1] यदि यह खादी जाती हो तो उसे जाने दो। जो लोग इस शर्तका पालन करें उन्हींको खादी दो, फिर भले वह बाहर जाती हो तो जाये। यदि ऐसा अचल विश्वास तुम्हें न हो तो तुम चरखा संघके बाहर रहकर खादीका काम करते रहो। उसमें से जिन्हें सीखने की इच्छा होगी वे सीखेंगे। किन्तु मेरी बात समझने का प्रयत्न अवश्य करना। अपना स्वास्थ्य सुधारना।

कनैयासे मैंने बातचीत की है। वहां आवेगा तब तुम्हें सब बतायेगा। फिर तुम उसके विषयमें उसका और मेरा मार्गदर्शन करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२७ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

११४. सन्देश : भगवानजी पु० पण्ड्याको[2]

३ अगस्त, १९४५

तुम्हारे कामके सम्बन्धमें मैं यहांसे तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं कर सकता। जैसा तुम्हें सूझे वैसा हल खोज निकालना।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८०१) से। सौजन्य : छगनलाल गांधी

१. शायद शर्तके बदले

२. यह सन्देश भगवानजी पण्ड्याके ३१ जुलाई, १९४५ के पत्रके उत्तरमें छगनलाल गांधीने एक पत्रमें भेजा था।

११५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

३ अगस्त, १९४५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी इच्छा तो ८ तारीखको चलकर १० को तुम्हे पूना ले जाने की थी। अब देखता हूँ कि १९ तारीख तक बैठकोमे बँध गया हूँ। इसलिए जल्दीसे-जल्दी १९ तारीखको निकल सकता हूँ। मुझे यह पसन्द नही। तुम्हे अवकाश मिलते ही मुझे रवाना हो जाना था। अब दस दिन किसी तरह चला लो। अहमदाबादमें कुछ अधिक रहना हो तो भले रहो। अच्छा तो यह होगा कि बचा हुआ समय आश्रममे आकर बिताओ और हम यहीसे साथ-साथ पूना चले। पूनाका मकान रोक लो। हमें तो क्लिनिकमें ही रहना है। दूसरोको बगलेमें रखेंगे — जरूरत होगी तो।

अब महादेवकी बात। महादेवके बारेमे मेरा सार्वजनिक रूपमें कोई अपील जारी करना ठीक नही।[1] दो-चार व्यक्तियोंको लिख सकता हूँ। बम्बईका निर्धारित चन्दा न हो, तो कोई बात नही। अपनी योजना मैंने बताई है। उसे तुम देख लो। अधिक बादमें या जब मिलेगे तब।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

मणि बेखबर रहे, यह ठीक नही . . .[2] के पिताको तार दिया है।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८२-८३

१. महादेव स्मारक कोषके बारेमें
२. साधन-सूत्रमें यहाँ छूटा हुआ है।

११६. पत्र : लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्सको

सेवाग्राम
४ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

अगर इजाजत हो तो आपकी नियुक्तिपर[1] आपको बधाई देता हूँ। यदि इंडिया आफिसका ठीकसे अन्तिम संस्कार होना है और यदि उसकी भस्म-राशिपर एक भव्यतर स्मारक खड़ा होना है तो इस कामके लिए आपसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति और कौन हो सकता है?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

परम माननीय लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्स
[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १७३

११७. पत्र : अमृतकौरको

४ अगस्त, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारे पत्रका कल जवाब दे दिया गया था। तुम्हें अपना बिस्तर लाने की जरूरत नहीं है। केवल वे ही चीजें लाओ जो जरूरी समझो। मच्छरदानीको ऐसी ही चीजोंमें समझना। और मेरे झागेको भी। वह गलतीसे वहीं छूट गया। सेप्टिक टैंक कमोड साफ करने के लिए तुम्हें पाउडर कहाँ मिला?

तुम सबको स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६३) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७७९९ से भी

1. नवनिर्वाचित लेबर सरकारके भारत मन्त्रीके रूपमें

११८. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

४ अगस्त, १९४५

चि० बबुडी,

तू कितनी नटखट है! बीमार पडती रहती है और सबको चिन्तामें डाला करती है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५८) से। सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

११९. पत्र : माधवदास गोपालदास कापड़ियाको

४ अगस्त, १९४५

चि० माधवदास,

डॉ० कृष्ण वर्माने तुम्हारे बारेमें सारी रिपोर्ट भेजी है। कुँवरजी[1] ने भी कार्ड लिखा है। तुम्हें रखने में डॉ० कृष्ण वर्माका अपना कोई भी स्वार्थ नहीं है। उन्होंने केवल मेरी खातिर तुम्हें रखा है। ऐसे ही शैलेनको रखा था। तुम्हारा हित केवल डॉ० कृष्ण वर्मा के अधीन रहने और जो वे कहें वह करने में है। मुझे लगता है, डॉ० कृष्ण वर्माके गुण-दोष मैं जानता हूँ। अपने दोषके लिए वे ईश्वरके आगे उत्तरदायी होंगे। उनमें जो गुण हैं, उसको मैं ग्रहण करता हूँ और उसका आलिंगन करता हूँ। उनपर तोहमतें लगाई जाती हैं। किसपर नहीं लगाई जातीं? मैं उनका विचार नहीं करता। बा की सेवा उन्होंने की है, यह तो मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। मैं मानता हूँ कि बा के गुण वे देख सके थे और उसके भक्त हो गये थे। तुम बा के भाई हो, यह ज्ञान डॉक्टरको तुम्हें रखने और तुम्हारी सेवा-सँभाल करने में प्रेरित करता है। डॉक्टरको पैसे कितने देने पडेंगे, इसकी फिक्र तुम्हें नहीं करनी है। डॉक्टरने तो मुझसे कह दिया है कि उन्हें एक भी पैसा नहीं चाहिए, लेकिन मैंने सोच लिया है कि तुम्हारी ही सम्पत्तिमें से, अगर तुम्हारी समझमें आ जाये तो, मेरी मर्जीके मुताबिक पैसे उन्हें देने चाहिए। मणिलालसे भी मैंने इस सम्बन्धमें बात की है। लेकिन अगर तुम एक कौडी भी देने को राजी न हो,

१ कुँवरजी पारेख, हरिलाल गांधीके दामाद

तो जब तुमपर इतना पैसा न्योछावर हुआ है, उसमें इतना और सही। मैं तो यह मानता हूँ कि तुम अच्छे हो सको और ढंगसे रह सको, तो अच्छा हो। वैसे, बा ने अन्तमें मुझसे यह कहा था: "माधवदासके लिए तुमने जो हो सकता था, किया। मैंने भी उसकी बहन होने के नाते जो हो सकता था किया और तुमसे कराया। अब तुम कुछ मत करना।" ये शब्द बा के तुम्हारे लिए और हरिलालके लिए थे। मैं जानता हूँ कि इन शब्दोंमें उसका रोष था। प्रेम तो था ही। इसलिए मैंने शब्दार्थके अनुसार इन शब्दोंका पालन नहीं किया। अब तुम, जिस ईश्वरको तुम समझते हो कि तुम उसकी रोज पूजा करते हो, उस ईश्वरको साक्षी रखकर, जो तुम्हारी इच्छा हो करना। इतना जान लेना कि आश्रममें मैं तुम्हें नहीं रख सकूँगा; न तुम्हें अच्छा हो कर सकूँगा। और यह भी याद रखना कि कोई सगे-सम्बन्धी भी तुम्हें नहीं रख सकेंगे। हमारा समाज कुछ इस प्रकार गठित है कि व्यक्ति इच्छा होते हुए भी अपनी इच्छाकी पूर्ति नहीं कर सकता, और न कर सकेगा। अन्तमें सबको केवल ईश्वर की ही शरण लेनी पड़ती है, और जो वह करे या कराये, वही सम्भव रह जाता है। विचार करने की शक्ति तुममें हो, तो यह पत्र पढ़कर वहीं पड़े रहना। और विचार करने की शक्ति न रहे, तब भी जल्दबाजीमें कुछ न करके वहीं रहना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२७) से

१२०. पत्र : कुँवरजी पारेखको

४ अगस्त, १९४५

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा कार्ड मिला। तुम लिखते हो कि मामाको उसकी इच्छाके अनुसार वहाँसे चले जाने देना चाहिए। यह बात मैं समझ नहीं सका। मणिलाल भी समझ नहीं सका। मामा कहाँ जायेगा? कहाँ रहेगा? क्या तुम उसे रखोगे? अगर तुम समझते हो कि वह आश्रममें रहेगा, तो यह असम्भव है। अगर मामा जाकर अपने खुदके घरमें रहे, तो क्या होगा, इसका विचार क्या तुमने किया है? मामा अपनी इच्छासे मलाड गया है। मुझसे जब उसने माँग की थी कि मुझे "मलाड भेज दो", तब मैं सहमत नहीं हुआ था। आखिर जब मणिलाल बीचमें पड़ा, तो मैंने डॉ० कृष्ण वर्मासे कहा। अब उसे वहाँसे हटा देना तो एक पलका काम है, लेकिन मेरी मान्यता है कि उससे मामाका अहित ही होगा। यह सब होते हुए भी अगर तुम सब कहोगे तो मैं उसपर अमल करूँगा। लेकिन इतना याद रखो कि उसके बाद मैं खुद कुछ

भी नहीं कर सकूँगा। मेरा विश्वास है कि जो-कुछ मैं कर रहा हूँ, वह तटस्थ भाव से और अपना धर्म समझकर ही कर रहा हूँ। मणिलाल अभी अकोलामें है। उसने लिखा है कि अपनी पत्नी और बच्चोंको लेकर सोमवारको यहाँ आ जायेगा। तब उसके साथ भी विचार करूँगा।

तुम सब कुशल होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७५३) से

१२१. पत्र : कृष्ण वर्माको

४ अगस्त, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

साथका पत्र पढकर मामाको दे देना। मैं कल तुम्हारा पूरा पत्र पढ गया, तब तक मैं उसे पूरी तरह पढ़ नही सका था। तुम जो कहते हो उससे मैं सहमत हूँ। मैंने मामाको लिखे पत्रमें तुम्हारा कुछ चित्रण किया है। मैंने तो यही देख लिया था कि अपनी जीभपर तुम्हारा नियन्त्रण नही है। तुम स्वच्छताके नियमोका पूरी तरह पालन नही करते। शायद तुम्हे उनकी जानकारी भी नही है, यह भी मैंने यही देख लिया था। मै समझता हूँ कि वहाँ भी तुम उसी तरह चल रहे हो। कान्ति मशरूवाला तुम्हारा भक्त है। मणिलाल वहाँ गया था। वह तुम्हारा भक्त तो नही है, किन्तु बुद्धिमान है। उसने दुनिया देखी है, उसे जाना है। वह तुम्हारे गुणो को जानता है। वह मानता है कि तुम भलेमानस तो हो ही, किन्तु वह यह भी मानता है कि न तो तुम स्वच्छताके नियमोका पालन करते हो, और न करवाते हो। मैं तो तुम्हारी भलमनसाहतका कायल हूँ और इसलिए कामना करता हूँ कि तुम्हारे में जो दोष हैं वे दूर हो जायें। मैं जानता हूँ कि मामाको तुम्हारे पास भेजकर मैंने अपना स्वार्थ ही साधा है और अब भी उसे वही रखना चाहता हूँ। यदि वह वहाँसे चला जाता है तो उसका बुरा हाल ही होगा। मैं उसे आश्रममे तो ले ही नही सकता, क्योंकि यह आश्रमके धर्मके विरुद्ध है। और मैं यह नही मानता कि अन्यत्र वह कही रह सकता है। जो-कुछ हो सकता है सो तुम्ही कर सकते हो। तुम तो अस्पताल खोलकर बैठे हो इसलिए यह तो तुम्हारा ही कर्त्तव्य है। अस्पतालमें प्राकृतिक पद्धतिका पालन करना। तुम्हे बारीकीसे स्वच्छताके नियमोको जानना और उनका पालन करना चाहिए। वहाँ मच्छर बहुत हैं। चूंकि तुम गरीब स्त्रियोसे काम लेते हो इसलिए जैसे-तैसे काम नही चलाया जा सकता। एक डॉक्टरके रूपमे और गृहस्थके

रूपमें भी इन लोगोंको स्वच्छताकी शिक्षा देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। आसपासके मच्छरों आदिको नष्ट करना तुम्हारा काम होना चाहिए। और यह सब करना तुम्हें आना चाहिए। यदि तुम यह सब नहीं करोगे तो प्राकृतिक चिकित्सक कैसे माने जाओगे? इस तरहकी बहुत-सी बातें लिख सकता हूँ, लेकिन मैं यह मानता हूँ कि तुम उन लोगोंमें से हो जो थोड़े लिखेसे बहुत समझते हैं। इस कारण और चूँकि मेरे पास समय नहीं है इसलिए भी मैं पत्रको लम्बा नहीं करना चाहता।

डैलेनकी बाबत मैं समझ गया हूँ। उसने जो चेक भेजा है उसे भुनवा लेना। मैं ऐसा नहीं मानूँगा कि यह किसी भी तरीकेसे तुम्हारी फीस है। मैं जानता हूँ कि फीसकी वजहसे तुमने डैलेनको न रखा होगा। किन्तु यह सोचकर कि उसे स्वयं ही अपनी सामर्थ्यके अनुसार तुम्हारे दानपात्रमें कुछ अवश्य डालना चाहिए, मैंने उससे चेक भेजने को कहा था। उक्त चेकका भुगतान ले लेना और धर्मार्थ उसका उपयोग करना। मैं तुम्हें यहाँ आने की सलाह नहीं देता। उसका मुख्य कारण तो यही है कि मेरे पास समय नहीं है। अन्यथा मैं तुम्हें यहाँ रख सकूँ और स्वच्छता आदिके सम्बन्धमें थोड़ी बहुत शिक्षा दे सकूँ तो मुझे अच्छा लगेगा, किन्तु फिलहाल ऐसा करना सम्भव नहीं। यदि ऐसा समय आया तो मैं तुम्हें बुला लूँगा। हाँ, तुम स्वेच्छासे ही आना चाहो, तुम्हें आश्वासन लेना हो और तुम आ सको तो बात अलग है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
४ अगस्त, १९४५

कई कांग्रेसियोंने मुझसे कांग्रेसके कार्यक्रमके सम्बन्धमें प्रश्न किये हैं। लन्दन और अन्य स्थानोंसे तार भी आये हैं। मुझे खेद है कि मैं उनकी प्राप्ति स्वीकार नहीं कर सका हूँ। परन्तु इसका कारण साफ है और होना चाहिए। यह सच है कि मौलाना साहब तथा कार्य-समितिके अन्य सदस्योंकी अनुपस्थितिमें मैंने अपने ऊपर यह जिम्मेदारी ले ली थी कि कांग्रेसके मामलोंमें जैसी भी सलाह मैं दे सकूँ, दूँ।

अब चूँकि कार्य-समिति जेलसे बाहर है, मैं अपनी सलाह मौलाना साहब और कार्य-समितिके जरिये ही दे सकता हूँ। यदि मैंने स्वतन्त्र रूपसे सलाह दी तो हो सकता है, वह उनकी रायके विरुद्ध हो और उनके लिए परेशानी पैदा कर दे, बल्कि उन्हें या मुझे शायद गलत स्थितिमें भी डाल दे।' जो बात और भी बुरी है वह यह कि हो सकता है, उससे जन-मानस भ्रान्तिमें पड़ जाये। इसलिए मुझे यहाँके

और भारतसे बाहरके सब लोगोको यह चेतावनी देनी है कि ऐसे प्रश्नोके बारेमे, जिनके सम्बन्धमें उचित रूपसे अध्यक्ष और कार्य-समिति ही सलाह दे सकते है, वे मुझसे कुछ न पूछें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ६-८-१९४५

१२३. भेंट : 'हिन्दू' के संवाददाताको

४ अगस्त, १९४५

मैंने तब भी कहा था और आज फिर कहता हूँ कि श्री जिन्नाके सामने मैंने जो प्रस्ताव रखा था वह सौदेबाजीके रूपमें नही था।[1] उसके पीछे मेरा सुनिश्चित विश्वास था, यद्यपि वह विश्वास मैंने मूलत राजाजीसे प्राप्त किया था।[2] यह मेरी आदत नही है कि किसीसे, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यो न हो, तब तक कुछ ग्रहण करूँ जब तक कि खुद उसे अपना और पचा न सकूँ। इसलिए यदि राजाजी भी उस फार्मूलेसे हट जायें तो भी जब तक मेरा दिमाग सही है, मैं उसपर दृढ रहूँगा। मैं उसे सारयुक्त समझता हूँ और साथ ही कांग्रेसके प्रस्तावोंसे और उसके ८ अगस्त, १९४२ के प्रस्तावसे तो प्रत्यक्षतः उद्भूत मानता हूँ। मैंने केवल उसे एक मूर्त रूप दिया है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ६-८-१९४५

१. संवाददाताने गांधीजी से पूछा था कि जो प्रस्ताव आपने जिन्नाके समक्ष सितम्बर, १९४४ में रखा था क्या वह अभी भी कायम है। प्रस्तावके लिए देखिए खण्ड ७८, पृ० १३८-३९।
२. राजाजी फार्मूलेके लिए देखिए खण्ड ७७, परिशिष्ट ८।

१२४. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको

५ अगस्त, १९४५

प्रिय भारतानन्द,

तुम्हारा अच्छा-सा पत्र मिला। मुझे खुशी है कि तुमने शाकाहार छोड़ दिया है। यदि उसे फिर अपनाओ तो वह स्वाभाविक होना चाहिए। तुम्हारे शरीरको जिस चीजकी जरूरत हो वह अवश्य लो और ठीक हो जाओ। धारण किया हुआ नाम चाहो तो छोड़ सकते हो। फ्रिडमैन रहकर भी तुम इतने ही प्यारे रहोगे।

ठीक हो जाओ।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५) से

१२५. पत्र : गोसीबहन कैप्टेनको

सेवाग्राम
५ अगस्त, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा जल्दीमें लिखा पत्र मिला। स्वस्थ तो हो? 'चिड़चिड़ी' बहन आई और एक दृष्टिमें हृदय हरकर चली गई। मैंने श्यामलालके साथ तुम्हारी योजना की चर्चा की है। लेकिन जो तुम्हें करना है वह तो तुम करो ही। रस्सीके जल जाने पर भी उसकी ऐंठन नहीं जाती।

स्नेह।

बापू

गोसीबहन कैप्टेन
गांधी सेवा संघ
चौपाटी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२६. पत्र : हसुमति धीरजलाल देसाईको

५ अगस्त, १९४५

चि० हसुमति,

तुम्हारा कविता-सग्रह मैं आज ही देख पाया। उक्त सग्रह दो दिन पहले ही मेरे हाथमें आया था। मेरा सुझाव है कि तुम इसे प्रकाशित मत करवाना। इसके द्वारा पैसा कमाना गलत है। उसके साथ दो व्यक्तियोंका नाम जोड़ देने से कविताकी कद्र नहीं हो सकती। ऐसे साहसके तो मैं विरुद्ध ही रहा हूँ। तुम्हें मोतीके दानों-जैसे अक्षर लिखने चाहिए। मैं यह जानता हूँ कि मेरी लिखावट खराब है। इस उम्रमें मैं अपनी लिखावट सुधार नही सकता, इसलिए तुम्हारे-जैसे लोगोंको इसे चेतावनीके रूपमें लेना चाहिए।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

सौ० हसुमति धीरजलाल देसाई
वालवैद्यका खाँचा
संवाड़ीआवाड
गोपीपुरा
सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२७. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

५ अगस्त, १९४५

चि० कान्ति[1],

हरिलालकी सेवासे तुम दोनों अनासक्तिका पाठ सीख लेना। किसीकी भी अनन्य भक्ति करके हम अनासक्तिके मार्गसे ईश्वर-भक्तिमें सीधे प्रवेश कर सकते हैं। लेकिन अगर इस अनन्य भक्तिका सम्बन्ध ईश्वर-भक्तिके साथ नहीं जुड़ जाता, तो यह भक्ति मोहका रूप लेती है और भयंकर रूप धारण करती है। तुम दोनोंने हरिलालकी सेवा करने में कोई कसर नहीं की। मुझे तो डर था ही कि हरिलाल अन्तमें वही करेगा जो उसने कर दिखाया। लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। उसकी अन्त्येष्टिमें भी अगर तेरे हाथ लग जायें, तो ठीक; न लगें, तो भी ठीक। तूने अनेक प्रकारकी भक्ति की है। अब इनसे तू ईश्वरकी भक्तिकी ओर मुड़ जाये, तो समझूं कि तेरी सभी भक्तियां सफल हो गई। और ईश्वरभक्तिका सच्चा रूप जो मैं इस समय देख पाता हूं, वह तो सूत्रनारायणकी भक्ति है। विवेकानन्दने दरिद्रनारायण शब्दकी योजना की थी (अगर मैं भूल नहीं कर रहा तो। क्योंकि मुझे ठीक याद नहीं आ रहा कि दरिद्रनारायण शब्दकी योजना विवेकानन्दने की थी या और किसी साधु पुरुषने)। सत्यनारायण [शब्द] तो प्रसिद्ध है ही। लेकिन क्रिया के रूपमें मेरे सामने तो सूत्रनारायण प्रकट होते हैं। तूने उनकी पूजाका प्रारम्भ किया है। इस पूजाका सच्चा स्वरूप समझ लेना। वहांके अथवा कहींके भी बखेड़ोंसे बचना। अगर तू हरिलालको कुछ न दे, तो वह मैसूर छोड़ देगा। मैसूरके महाराजसे वह २००) रुपये कैसे ले सका, इस बातका पता लगाया जा सके तो लगाना।

और भी कुछ तेरे मनमें हो, तो मिलने पर बताना। न बता सके, तो भी कोई फिक्र नहीं। लिखना हो, तो लिखने में संकोच मत करना। तुम और सरस्वती[2] दोनों अध्ययनमें लीन होकर उसे पूरा करना।

दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७६) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. हरिलाल गांधीके पुत्र

२. कान्तिलाल गांधीकी पत्नी

१२८. पत्र : रामदास गांधीको

५ अगस्त, १९४५

चि० रामदास,

तूने अपने पत्रमें बुद्धिका प्रयोग किया है, किन्तु यह मुझे रुचा नही। दिनशाके यहाँ जाने का तुझे अधिकार है, क्योकि दिनशाने तुझे अपना बना लिया है। दिनशा परोपकारकी वृत्तिसे ओत-प्रोत है, यहाँ तक कि गरीबोके प्रति भी। उसकी सस्था न तो गरीबोके लिए है और न साहूकारोके लिए। हालाँकि वहाँ दोनो ही वर्गोके लोग जा सकते है। इसी प्रकार मध्यम वर्गके लोगोका वहाँ जाना भी दिनशाके अच्छे स्वभावके कारण ही सम्भव है। फिर भी, तूने बुद्धिका प्रयोग किया है जब कि तुझे वैसा करने का अधिकार ही नही था, क्योकि तूने मुझे ऐसा जताया था कि तू लम्बी छुट्टी लेने वाला है या ले चुका है और एक वर्ष अपने स्वास्थ्यको सुधारने में ही लगाने वाला है। वहाँ तू स्वय अपना इलाज करवायेगा और अपने स्वास्थ्य को बिलकुल चौपट करके ही दिनशाके पास जाने की सोचेगा। तू स्वय ही यह स्वीकार करेगा कि ऐसा करके तू अपने प्रति दिनशाके प्रेमको नही पहचान सका। इसलिए मेरी तो अब भी यही सलाह है कि तू एक वर्षकी छुट्टी लेकर दिनशाके पास चला जा। और जैसा कि मैंने तुझसे कहा है तेरा एक वर्षका खर्च मैं कहीसे भी निकाल लूँगा। आश्रमके पैसेमें से तो मैं नही दूँगा, लेकिन तेरे निमित्त और कही से माँग लूँगा। यह तो मैं भूल गया हूँ कि खर्चके सम्बन्धमें क्या व्यवस्था की गई थी, लेकिन तू उसके बारेमे मुझे फिर समझा देना और मैं तदनुसार करने को तैयार हूँ। तुझमे वयस्क लोगोको अपनी ओर आकर्षित करने की कोई खूबी है। इसका कारण तो मैं स्वय भी नही जान सका, परन्तु ऐसी खूबी है, यह मैंने अनुभव किया है। मेरे बहुत-से आदमियोको दिनशा जानता है, पर वह उनकी ओर आकर्षित नही होता। किन्तु वह तेरी ओर आकर्षित हुआ है। कदाचित तू भी यह नही जानता होगा कि वह किस कारणसे तेरी ओर आकर्षित हुआ है। यह तो एक ही उदाहरण है। अन्य बहुत-से मेरे ध्यानमें है। इसलिए अब बुद्धिका प्रयोग न करते हुए यदि तू दिनशाके यहाँ चला जाये तो अच्छा होगा। यदि तुम दोनो ही जाना चाहते हो तो दोनो चले जाओ। यदि तुम वहाँसे एक वर्षके लिए अपना घर समेट लो तो भी कोई बात नही। पूनामें तो अनेक प्रशिक्षण सस्थान है। यदि वहाँ मराठी सीखनी भी पड़ी तो यह कानम और उषाके लिए कुछ मुश्किल नही होगा।

मणिलाल और सुशीला कल पहुँच रहे है। सीता तो अकोलामे ही रहेगी। वह अपनी पढ़ाईमें जुट गई है।

मेरा अब भी यही मत है कि नीमु[1] ने दिल्ली या शिमला न जाकर ठीक ही किया था। सुमी[2] को परावलम्बी बनाने में कोई तुक नहीं है। माता-पिताके मोहको मैं समझता हूँ। किन्तु इस बार तो मैं स्वयं अपनी आँखोंसे यह देख पाया हूँ कि तू या नीमु सुमीके लिए देवदास और लक्ष्मीकी अपेक्षा ज्यादा कुछ न कर पाते। वे अपने बच्चोंकी जितनी देखभाल करते हैं उतनी ही सुमीकी भी करते हैं। सुमीने स्वयं ऐसी छाप मेरे मनपर डाली और वह स्वयं भी ऐसा ही समझती है। वह बच्चोंके साथ भी अच्छी तरह घुल-मिल गई है। अन्ततः ईश्वर ही तो सबका रक्षक है न? गोपालराव और नलिनीका बालक उनके देखते-देखते एक क्षणमें चला गया।[3] नलिनी उसे बचा न सकी। ऐसे तो बहुत-से उदाहरण हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री रामदास गांधी
खलासी लाइन्स
किंग्सवे, नागपुर

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२९. पत्र : सुमित्रा गांधीको

सेवाग्राम
५ अगस्त, १९४५

चि० सुमी,

मैं देखता हूँ कि तू अब भी शुद्ध सत्यकी आराधना नहीं करती। मुझे दिये हुए वचनका भी पूरी तरह पालन नहीं करती। हालांकि तूने देवदास और लक्ष्मीको अपने माता-पिताके समान ही मान लिया है—और वे तो तेरे प्रति वैसा ही व्यवहार करते भी हैं—इसके बावजूद तू नीमुके लिए तड़पती रहती है, इसका क्या मतलब है? हम स्वयंको जिस स्थितिमें रखें अथवा हमें रखा जाये उसमें हमें परम सन्तोष मानना चाहिए। देवदास और लक्ष्मीके प्रेमकी खातिर भी तुझे अपने स्वास्थ्य और अपनी आँखोंकी रक्षा करनी है। फिर परीक्षाका बोझ कैसा? अमुक पढ़ाई अमुक समयमें पूरी करने का बोझ भी कैसा? तुझे अपनी आँख, अपना मस्तिष्क और पूरे शरीरको बचाते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखनी है। यह इतना बड़ा सुस्पष्ट सत्य

१. निर्मला, रामदास गांधीकी पत्नी
२. सुमित्रा, रामदास गांधीकी कन्या
३. गोपालराव कुलकर्णीके पुत्रकी मृत्यु बिच्छूके काटने से हुई थी।

है कि इसमें समझाने जैसी कोई बात ही नहीं है। यह स्वयंसिद्ध है। और इसीलिए गुजरातीमें कहावत है कि 'पहला सुख नीरोगी काया'। अतः बिना किसी अधीरताके पढाई करते हुए, शरीरको अच्छा बनाते हुए रामदास और नीमुको चिन्ता-मुक्त कर देना। देवदास और लक्ष्मीके प्रेमको सुशोभित करना और उसके योग्य बनना। मुझे पत्र लिखने की प्रतिज्ञासे मैं तुझे मुक्त करता हूँ। तू सहज ही लिख सके और जब तुझमें लिखने का उत्साह हो, तभी लिखना। अपनी आँखें खराब करके या पढाई रोक-कर मुझे मत लिखना। मेरी यही अभिलाषा है कि तन और मनसे तू अधिकाधिक शुद्ध होती जाये और मैं जो तेरे पत्रकी आशा करता हूँ उसके पीछे भी यही कारण है।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा रा० गांधी
बिड़ला गर्ल्स स्कूल
पिलानी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३०. पत्र : सी० सी० गांगुलीको

५ अगस्त, १९४५

भाई गांगूली,

आपका खत मिला। चि० मालतिको और चि० रूपलेखाको आशीर्वाद। मुझे प्रस्तावना लिखने का उत्साह नहीं है।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

सी० सी० गांगुली
असिस्टेन्ट सेशन्स जज
खुलना (बंगाल)[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

१३१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

५ अगस्त, १९४५

चि० कृ० चं०,

आश्रमवासीके लिए भंगी बनना व्यवस्थापक बनना एक ही चीज है। भंगीपनमें शायद ज्यादा जिम्मेवारी है। व्यवस्थापकता अधिकार नहीं है, सेवा है। दोनों जगहके लिये तैयार रहें। अगर भंगीपन मीठा लगे और व्यवस्थापकता कड़वा लगे तो अज्ञानकी निशानी है। अगर व्यवस्थापकतामें अधिकारकी बू आवे तो हमारेमें अहंकार भरा है। व्यवस्थापकताके लिये तैयार रहना। आवे या नहीं उसका ख्याल भी नहीं करना है। कब उसका पता मुझे भी नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९०१) से। सौजन्य : कृष्णचन्द्र

१३२. पत्र : एम० एस० केलकरको

५ अगस्त, १९४५

भाई केलकर,

मुझे ख्याल रहा है कि मैंने उत्तर दिया था। यहांसे बाइसिकल लेना बन्द करो।

नालवाड़ीमें अवश्य रहो। वहांसे दत्तपुर पैदल जाना। यहां कभी-कभी आना होगा।

तुमको प्रतिमास कितना दूं? कम से कम मांगो।

मैं १९ तारीख तक तो यहां हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३३. पत्र : रामेश्वरदास बिड़लाको

सेवाग्राम
५ अगस्त, १९४५

भाई रामेश्वरदास,

तुम्हारा खत मिला। चि० वसन्तने काफी सहन किया। मेरी उम्मीद है कि अब बुखार बिलकुल चला गया होगा। टाइफाइडकी उत्तर क्रिया और भी सावधानीसे करनी पड़ती है, क्योंकि होजरी [उदर] बहुत नाजुक हो जाती है। इसलिए खाना खानेमें सावधान रहना पड़ता है। अगर डाक्टर लोग रजा[1] दे दें तो कटिस्नानसे बडी मदद मिल सकती है।

चि० आशा तो बिलकुल दुरुस्त होगी, वैसे ही भाई जुगल किशोरका होगा। . . .[2] पिलानीकी धूलकी बरदाश्त राजेन्द्र बाबू कर सकेंगे क्या? . . .[3] भाई घनश्यामदासका मैं समझा।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३४. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

६ अगस्त, १९४५

चि० काका,

मुझे जो चाहिए, वह यह है। संस्कृतके श्लोकों और मन्त्रों आदिका त्याग करके हिन्दुस्तानी भाषामें सादीसे-सादी विधि[4] निर्धारित करनी है। विधि ऐसी होनी चाहिए कि उसे कोई भी करा सके। जो इस बार होगा, वही सबके लिए लागू होगा। मैं समझता हूँ, इसमें सब आ जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६४) से

१. अनुमति
२ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँ छूटा हुआ है।
४. इन्दुमती गुणाजी और गणपत नारायण महादेव तेन्दुलकरके विवाहकी; देखिए परिशिष्ट २।

१३५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

६ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

१. संक्षेपमें लिखना चाहिए। प्रत्येक विषयका अलग पैराग्राफ बनाकर उसे क्रमांक देना चाहिए, ताकि जवाब देने वालेसे कोई बात छूट न जाये।

अभी तो जो याद रहा या जो बातें नजरमें आ जाती हैं, उन्हींका जवाब दिया है।

२. तुम व्यवस्थापक हो, इसलिए किसी भी बातको खानगी मत समझना।

३. इस पत्रको सबके लिए समझना। तुम अपने पत्रको खानगी समझना चाहो, तो समझना।

४. स्त्रियोंके प्रार्थनामें आने को अनिवार्य नहीं बना देना चाहिए। उन्हें उनका धर्म समझाना चाहिए, और फिर उनकी मर्जीपर छोड़ देना चाहिए। अन्य स्त्रियोंकी अपेक्षा कंचनपर तुम्हारा विशेष अधिकार अथवा दबाव नहीं होना चाहिए। यदि कंचनको तुम अपनी पत्नी मानते हो तथा उसके द्वारा सन्तान उत्पन्न करना चाहते हो, अथवा सूक्ष्म या स्थूल कोई भी विषय-सुख भोगने की इच्छा करते हो, तो तुम्हें व्यवस्थापकका पद छोड़ देना चाहिए — फिर चाहे तुममें अन्य गुण तथा शक्ति कितनी ही हो। तात्पर्य यह कि कंचनको तुम्हें पूर्ण स्वतन्त्र समझना चाहिए।

५. पुष्पासे पूरा लाभ उठाना चाहिए। उसे 'गीता' का उच्चारण ठीक-ठीक करना आना चाहिए। वह गाती भी है, तो उसे प्रार्थनामें भजन गाना चाहिए। उसे रसोई बनाना आता है। घरका सब काम-काज करना जानती है। उसे उसकी शक्तिके अनुसार काम देना। उसकी मदद...[1] उसका उद्धार हो जायेगा, और वह भक्त बन जायेगी।

६. होशियारी निरक्षर है; लेकिन दृढ़ है, बहादुर है और कामचोर नहीं है।

७. कांबलेमें दोष होंगे, लेकिन गुण तो अवश्य हैं। वह हरिजन है। उसकी सेवा करना हमारा धर्म है। सेवा करने का अर्थ यह नहीं कि उसे सिर चढ़ा लेना चाहिए। अगर तुम यह समझ पाते कि बिना सिर चढ़ाये भी उसे ऊँचे उठाया जा सकता है, तो वह बहुत कुछ करेगा।

८. ओमप्रकाशमें उन्नति करने के लक्षण हैं। भला आदमी मालूम होता है। उसे समझने की जरूरत है। मैं उसे सिखा रहा हूँ। अगर तुम उसे विषयासक्त न

१. यहाँ कुछ शब्द अस्पष्ट हैं।

समझो, तो उसे स्त्रियोंको पढ़ाने देना — एकान्तमें नहीं, किसी बड़े कमरेमें, या मेरे बरामदेमें, या सुशीला गांधी अनुमति दे तो बा की कोठरीमें। कोई पुरुष, चाहे वह पूर्ण ब्रह्मचारी ही क्यों न हो, एकान्तमें किसी स्त्रीके साथ अकेला न रहे।

९. रामनारायण[1] को अपना पूरा खर्च उठाना है। चूँकि उसे लड़कियोंको बाहर की आधुनिक शिक्षा देनी है, इसलिए उसकी गिनती आश्रमवासियोंमें नहीं हो सकती। लेकिन अगर वह, जब तक उसे घर नहीं मिलता, वहाँ रहना चाहे, तो नाममात्रका किराया देकर रहे। लेकिन अपनी रसोई अलग न बनाये। लालटेन भी उसे अलगसे कमसे-कम ही दिये जा सकते हैं। अगर वह कीमत दे, तब भी अभी तो नहीं ही दिये जा सकते। हम रास्तोंमें प्रकाशकी कोई व्यवस्था करें, यह आवश्यक है। इसके सम्बन्धमें कनैया और मोहनसिंहसे चर्चा करना। पढ़ने वाले सब एक या दो बत्तियोंके आसपास पढ़ें। लिखने वाले भी। मिट्टीके तेलकी बचत हमें जरूर करनी चाहिए। रामनारायणके लिए टिकट काटो। उसपर खर्चका बोझ बहुत नहीं पड़ने देना चाहिए। १५० रुपयोंमें सब खर्च चलाना है। यहाँके फल सबको दिये जायें, बम्बईके केवल बीमारोंको। मैं कोई प्रबन्ध करने की सोचता हूँ। बम्बईके फलोंकी कीमत आँकनी चाहिए। इस विषयमें विवेक, मर्यादा और मिठाससे काम लेना चाहिए।

१०. मनुष्योंके स्वभावको पहचानने के लिए उनके दोषोंके प्रति सहनशील होना अवश्य सीखना चाहिए — वैसे ही जैसे हम दुनियासे अपने दोषोंके प्रति उदार बने रहने की इच्छा करते हैं। यदि दुनिया ऐसा न करे, तो हमें मार ही डाले। यह बात सभीपर लागू होती है; तब, जिसने अहिंसाका वरण किया है, उस व्यवस्थापकपर तो अधिक ही लागू होती है।

११. तुम जब सन्तोषपूर्वक सारी व्यवस्था कर लो, तब उसे किसी औरको सौंप देना जिससे कि वह निर्धारित योजनाके अनुसार व्यवस्था चलाये। जिसे व्यवस्था सौंपनी हो, उसे अभीसे तैयार करने लगना — अधिकार बरतने के लिए नहीं, बल्कि सेवा करने के लिए। मेरी मान्यता है कि ऐसा व्यवस्थापक कोई स्त्री ही हो सकती है, और स्त्री ही होनी चाहिए। कोई भी ईमानदार तथा परिश्रमी स्त्री अथवा पुरुष किसी भी सुव्यवस्थित तन्त्रको चला सकता है। जो ऐसा तन्त्र भी नहीं चला सकता, तो समझना चाहिए कि उसमें कहीं कोई दोष है।

१२. पेड़ोंके बारेमें पारनेरकर[2] का कहना है कि असावधानी कोई नहीं हुई। गिनती करने में कुछ भूल जरूर हुई है। मतलब यह कि गर्मीके मारे हमारी अपेक्षासे चार-पाँच पेड़ोंका नुकसान ज्यादा हो गया है। बाकी पेड़ोंमें तो कोंपलें फूट रही हैं। पेड़ोंको गर्मीमें सुखाया तो जानबूझकर गया था, जिससे उनमें उमदा और मीठे फल लगें। यह बात उससे धीरजसे समझ लेनी चाहिए। वह कहता है कि उसने किसीसे

१. रामनारायण चौधरी
२. यशवन्त महादेव पारनेरकर

सलाह ली है। खादके बारेमें अधिक समझना। मुझे समय मिला, तो मैं भी समझने की कोशिश करूँगा।

१३. डॉ० केलकरका प्रबन्ध कर रहा हूँ। औरोंके बारेमें जैसे-जैसे अवकाश मिलेगा, देखूँगा।

अब भी कुछ बचा हो, तो लिखना। मैंने इसे दोहराया नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९१०) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१३६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

६ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

१. व्यवस्था ठीक हो गई हो, तभी रद्दोबदल करना। दोनोंके साथ बात करके जो उचित मालूम हो सो करना।

२. कंचनकी इच्छा जान लेना। क्या उसे विषय-सुख चाहिए?

३. दूध, गुड़ आदिके बारेमें सुशीलाबहनके साथ तय कर लेना।

४. सबके लिए सामान्य कमरेके बारेमें धीरे-धीरे जो हो सके सो करना।

५. बुनाईका समावेश करना।

६. अंग्रेजीके बारेमें मेरे विचार स्पष्ट हैं। जो बहनें अंग्रेजी सीखना चाहती हों, उन्हें सिखाना उचित मालूम होता है; लेकिन इससे पहले उन्हें मातृभाषा तथा हिन्दी और उर्दूका ज्ञान होना चाहिए। पुरुषोंको प्रोत्साहन बिलकुल नहीं देना चाहिए। हरिजनोंने अन्य भाषाएँ सीख ली हों और तब अंग्रेजी सीखना चाहें, तो उन्हें सिखाई जाये। लेकिन किसी को भी अंग्रेजी सीखने के लिए ललचाना तो बिलकुल नहीं चाहिए। इतना काफी है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९१२) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१३७. पत्र : बलवन्तसिंहको

सेवाग्राम, वर्धा
६ अगस्त, १९४५

चि० ब०,

तुम्हारा खत मिला। दा० शर्माके जगहपर हो आये अच्छा किया। मेरा संबंध (आर्थिक) टूट गया है। चि० हो०[1] कल आ गईं। बच्चा भी साथ है। दोनों खुश हैं। मीराबहनके पास जाओ।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६६) से

१३८. पत्र : अल्फ्रेड फ्रेंशको

सेवाग्राम
७ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं मास्टर नहीं हूँ। मैं आपके बच्चोंकी जिम्मेदारी लेने में असमर्थ हूँ। इस स्थानका प्रयोजन, जैसा आप सोचते हैं, उससे भिन्न है। आपको अपने बच्चोंको फ्रांसमें ही रखना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. होशियारी

१३९. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको

सेवाग्राम
७ अगस्त, १९४५

प्रिय अतुलानन्द,

रा[ज] कु[मारी] ने उसके नाम लिखा तुम्हारा पत्र मुझे भेजा है। मेरे बारेमें तुम्हारा कहना ठीक है। तुम्हारा रास्ता मेरे रास्तेसे भिन्न है। लेकिन मैंने तुम्हें शह इसलिए दी है कि तुममें मुझे अपने उद्देश्यके प्रति ईमानदारी दिखाई दी। जिन प्रमाण-पत्रोंका तुमने अक्सर उल्लेख किया है उनके बावजूद तुमने प्रगति नहीं की है — इसलिए नहीं कि कांग्रेसियोंने तुम्हारे परिश्रमकी कद्र नहीं की, वरन् इसलिए कि तुम्हारी एकताकी योजना जन-मानसको नहीं जँची। लेकिन यह तो लम्बा किस्सा है। मेरा कहना यह है कि अपनी असफलताके लिए अपने भीतर देखो, बाहर नहीं। कुछ ठोस काम क्यों नहीं करते, भले ही वह कितना ही कम हो? तब कोई असफलता नहीं होगी। क्योंकि ठोस काम आप अपनी सफलता है। मैंने यह तर्कके लिए नहीं लिखा है, बल्कि यदि हो सके तो तुम्हें रोशनी दिखाने के लिए लिखा है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १४८४) से। सौजन्य : अतुलानन्द चक्रवर्ती

१४०. पत्र : दलजीतसिंहको

सेवाग्राम
७ अगस्त, १९४५

भाई दलजीत सिंघजी,

आपके दोनों पुस्तक मैंने पढ़े हैं। पुस्तक भेजने के लिये आभार मानता हुं। राजकुमारीजी ने मुझे दिये।

दोनोंमें आपने चमत्कारकी बात की है। चमत्कारकी किमत मैं तो कुछ मानता नहीं हूं। हमारा धार्मिक साहित्य चमत्कारसे भरा है। आपने जिसका अंग्रेजी तरजुमा किया है उसका असल हिंदी या गुरुमुखी देना आवश्यक मानता हूं। सिवाय उसके असल कैसे पढ़ा जाय?

मो० क० गांधी

स्ट्रॉबेरी हिल्ज
शिमला[1]

पत्रकी नकल (जी० एन० ७९०५) से। सी० डब्ल्यू० ४२७३ से भी; सौजन्य : अमृतकौर

१. पता प्यारेलाल पेपर्ससे लिया गया है।

१४१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

७ अगस्त, १९४५

चि० कृ० च०,

यहाँसे छुट्टी मिले तो अवश्य विनोबाके पास जाओ। उनकी भी आज्ञा मिलनी चाहीये। खत वापिस।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२१) से

१४२. पत्र : अमृतकौरको

[७ अगस्त, १९४५ या उसके पश्चात्][1]

चि० अमृत,

तुम्हें जल्दी स्वस्थ हो जाना चाहिए और अगर मेरे साथ रहकर और जल्दी स्वस्थ हो सकती हो तो तुम मेरे पीछे पूना आ जाओ। कह नहीं सकता कि वहाँ कब तक रहूँगा। मैंने अतुलानन्दको पत्र लिखा है—विस्तारसे लिखा है। शायद तुम्हें उसके नाम मेरे पत्रकी एक नकल भी मिलेगी।

स्नेह।

बापू

श्रीमती राजकुमारी
शिमला

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ७ अगस्त, १९४५ को अतुलानन्द चक्रवर्तीको लिखे पत्रके उल्लेखसे; देखिए पृ० ९३।

१४३. छूटी हुई कड़ी

[८ अगस्त, १९४५ के पूर्व][1]

'ग्राम उद्योग पत्रिका' के सम्पादकने मुझसे कहा है:

> मुझे रंज है कि लोगोंको खादीके बदले सूत क्यों देना चाहिए, इस विषयपर लिखा आपका पिछला लेख[2] कायल नहीं करता। आपकी पूरी दलीलका आधार लेखमें बार-बार दोहराया गया यह विचार है कि जब तक हर आदमी नहीं कातता तब तक अहिंसक स्वराज्य असम्भव है। किन्तु इस अत्यन्त महत्वपूर्ण मुद्देको समझाया नहीं गया है, बल्कि उसे स्वयं-सिद्ध मानकर बार-बार उसपर जोर दिया गया है। जब तक आप यह स्पष्ट नहीं कर देते कि स्वराज्य और अपनी जरूरत के कपड़ेके लिए सभी वर्गोंके लोगों द्वारा -- अधिक लाभदायक धन्धेमें लगे लोगों द्वारा भी -- कताईके अपनाये जाने के बीच आपसमें क्या सम्बन्ध है तब तक आपकी दलील ऐसे लोगोंको कायल नहीं कर सकती जो ईमानदारीके साथ मानते हैं कि उनसे आपका यह कहना कुछ अनुचित है कि अगर वे खादीका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो चाहे वे अपने समयका उपयोग अधिक लाभकर रीतिसे ही क्यों न कर रहे हों, किन्तु उन्हें कातना चाहिए। इसलिए क्या आप अगले अंकमें प्रकाशनार्थ अपनी दलीलकी यह छूटी हुई कड़ी पेश कर सकते हैं और बता सकते हैं कि कताईके जरिये हम अहिंसक स्वराज्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

इस बार तो उत्तर अंग्रेजीमें देना ही बेहतर रहेगा। जो पाठक अंग्रेजी नहीं जानते उनमें ऐसे लोग होंगे भी तो बहुत कम जो यह "छूटी हुई कड़ी" पेश करने को कहेंगे। इसका सीधा-सा कारण यह है कि वे हाथ-कताई और अहिंसाके जरिये प्राप्त स्वराज्यके आपसी सम्बन्धको स्पष्ट करने वाली मेरी दलीलसे परिचित हैं। स्वराज्य तो केवल कामके बलपर हासिल किया जा सकता है -- चाहे वह काम हिंसक हो अथवा अहिंसक। हिंसक कामको हम जानते हैं। उसमें विनाशके अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रोंके प्रयोगका प्रशिक्षण और उसके जो भी फलितार्थ हो सकते हैं, अनिवार्यतः

१. यह लेख ११-८-१९४५ के हिन्दू में दिनांक "बम्बई, ८ अगस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२. देखिए पृ० ५८-६१।

शामिल है। इसे तो आम सहमतिसे असम्भव माना गया है। सवैधानिक तरीके यद्यपि अहिंसक हैं, लेकिन केवल इन्हींका सहारा लेने का जमाना कबका लद चुका। सशस्त्र विरोधीके मुकाबले ऐसे उपायोसे स्वतन्त्रता मिल सकती है, ऐसा मानना अन्धविश्वास है। तो स्वराज्य प्राप्त करने का एकमात्र उपाय अहिंसक कार्य ही रह जाता है। अपनेको अहिंसक प्रयत्नोंके अनुरूप ढालने के लिए भारतीयोको कैसा प्रशिक्षण लेना चाहिए या क्या कार्य करना चाहिए? यह दिखाया जा चुका है कि भारतने अपनी आजादी तब गँवाई जब उसके अपने कुटीरो मे बने कपड़ेका उसका मुख्य व्यापार नष्ट कर दिया गया और उसके साथ ही उस व्यापारको कायम रखने के लिए भारतीयो द्वारा किये जाने वाले बहुत-से धन्धे बर्बाद कर दिये गये। स्पष्ट है कि या तो उस व्यापार और उससे सम्बन्वित धन्वोको पुनरुज्जीवित किया जाये या अहिंसासे संगत कुछ अन्य धन्धोको अपनाया जाये। केवल पुनरुज्जीवनकी बात ही सोची गई। मानव-श्रमके स्थानपर शक्ति-चालित यन्त्रोसे काम लेने के अंग्रेजी या कह लीजिए आधुनिक तरीकेसे उस पुनरुज्जीवनका प्रयत्न किया जा रहा था। मैंने इसे हिंसाका मार्ग मानकर सहज ही अस्वीकार कर दिया और मानव-श्रमको अहिंसाका मार्ग मानकर उसे उसके स्थानपर प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। दोनोके बीचका संघर्ष जारी है। मेरी रायमें, इस समाप्तप्राय युद्धने हिंसाकी सम्पूर्ण अक्षमता दिखा दी है। अहिंसा की क्षमता सिद्ध करना अभी शेष है। शक्ति-चालित यन्त्रो द्वारा भारतके केन्द्रीय व्यापारका पुनरुज्जीवन तभी सम्भव है जब हम पश्चिमकी उपाय-कुशलताका पश्चिमकी अपेक्षा अधिक अच्छा परिचय दें। और अगर वह सम्भव हो गया तो भी उससे भारतके आम लोगोंकी स्थितिमें कोई सुधार नही होगा। इस मान्यताके समर्थनमें मैं कोई दलील नहीं दे रहा हूँ। कारण, इसे तो पुस्तक[1] के रूपमें प्रकाशित मेरे पहलेके लेखोंको पढ़कर समझा जा सकता है।

इस प्रकार खोये हुए व्यापारको उसकी सहवर्ती प्रवृत्तियोके साथ पुनः प्राप्त करने के लिए देशके अधिकसे-अधिक पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे मात्र एक ही प्रकारका जो अहिंसक कार्य कर सकते हैं वह है चरखेका कार्य। इस तरह सोचने पर चरखा सहज ही अहिंसाका सर्वोत्कृष्ट प्रतीक बन जाता है। और यदि इसे स्वराज्यका उप-करण बनना है, तो स्वभावतः इसे सरकारी या किसी अन्य संरक्षणके अधीन नही पनपना चाहिए, बल्कि जरूरत पड़े तो सरकार और अपनी कताई तथा बुनाई मिलोमें ही दिलचस्पी रखने वाले पूंजीपतिके विरोधके बावजूद इसे पनपना चाहिए। जहाँ मिल-मालिक आदि विशिष्ट वर्गोंका प्रतिनिधित्व करते हैं, चरखा लाखों गाँवोंका प्रति-निधित्व करता है।

सम्पादक महोदयने पूछा है, "यदि यह मान लें कि चरखा अहिंसक रीतिसे स्वराज्य लाने के लिए उपयुक्त साधन है तो भी जो व्यक्ति कोई अधिक लाभदायक

१. चरखे और खादीके अर्थशास्त्रपर गांधीजी के लेखोंका १९४२ में प्रकाशित संग्रह **इकोनॉमिक्स ऑफ खादी**

धन्धा कर रहा है उसे, बल्कि वस्तुतः अनिच्छुक व्यक्तिको भी, कातना क्यों चाहिए?" इसके कारणका जितना सम्बन्ध उपयोगितासे है उससे अधिक मनोविज्ञानसे है। ग्रामीण लोग शहरी लोगोंकी नकल करने के इतने अधिक अभ्यस्त हो गये हैं कि आज गाँवों में रहकर वहीं अपनी स्थिति सुधारने के बजाय उनमें शहरोंकी गन्दी बस्तियोंमें जा बसने की प्रवृत्ति चल पड़ी है। यदि अहिंसक रीतिसे स्वराज्य प्राप्त करने के निमित्त हर व्यक्ति हाथ-कताईके लिए थोड़ा-सा समय निश्चित कर ले, तो उससे कताईका वातावरण तैयार होगा और अगर खादी, आज वह जिस तरह बहुत हद तक एक व्यापारकी वस्तु है उसके बजाय व्यक्तिगत उपयोगकी वस्तु बन जाये, तो मिलके बने कपड़े या किसी भी अन्य कपड़ेसे उसकी स्पर्धाका प्रश्न स्वतः ही तिरोहित हो जायेगा और बिना किसी कठिनाईके अमीरसे-अमीर और गरीबसे-गरीब लोग खादी पहनने तथा बरतने में समर्थ हो जायेंगे। फिर आश्चर्य नहीं यदि जवाहरलाल नेहरूने इसे "स्वतन्त्रताकी पोशाक" कहा है।[1]

[अंग्रेजीसे]
ग्राम उद्योग पत्रिका, जिल्द १

१४४. तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

वर्धागंज
८ अगस्त, १९४५

परम माननीय शास्त्रीयर
स्वागतम्
मद्रास

आशा है आपकी बीमारी अस्थायी है और आप देशकी स्थितिको लेकर अनावश्यक रूपसे चिन्ता नहीं कर रहे हैं।[2]

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए खण्ड ६५, पृ० ४८२ और ५१४।

२. इसके उत्तरमें श्रीनिवास शास्त्रीने गांधीजी को इस आशयका तार भेजा : "धन्यवाद। मेरी अवस्थामें सुधार हो रहा है। समझदार नेतागण देश-कार्यमें लगे हुए हैं, मेरा चिन्ता करना निरर्थक है, फिर भी जीवनके साथ चिन्ता तो लगी ही रहती है।" उससे पूर्व ४ अगस्तके एक पत्रमें उन्होंने राजाजी फार्मूलेपर अपना असन्तोष व्यक्त किया था।

१४५. तार : पुरुषोत्तमदास टंडनको

वर्धा
८ अगस्त, १९४५

बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन
क्रॉस्थवेट रोड
इलाहाबाद

मैं सोचता हूँ हमारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित कर दिया जाना चाहिए। कृपया तारसे सहमति भेजें।

बापू

मूल अंग्रेजीसे . पी० डी० टंडन कलेक्शन। सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार

१४६. प्रशस्ति : जगलुल पाशाको[1]

वर्धा
८ अगस्त, १९४५

मुझे जगलुल पाशासे मिलने का सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन उनकी देशभक्ति और बहादुरीके लिए मेरे मनमें हमेशा बड़ा आदर रहा है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ९-८-१९४५

१. मिस्रके एक प्रसिद्ध नेता (१८६०-१९२७)। यह जगलुल पाशाकी पुण्य-तिथिपर भेजा गया था।

१४७. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम
८ अगस्त, १९४५

चि० राजकुमारी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी बीमारीसे मुझे चिन्ता होती है। लेकिन जो अवश्यम्भावी है, चाहे उसका जो भी कारण हो, उसपर मेरे चिन्तित होने से क्या लाभ?

तुम्हारे तार भेजने और प्रस्तावित फाँसीका[1] उल्लेख करने में कोई हर्ज नहीं था।

मुझे खुशी है कि शम्मी अब बेहतर है।

कतरन निःसन्देह दुष्टतापूर्ण और झूठी है। लेकिन तुम्हारी बात ठीक है। इसपर ध्यान नहीं देना चाहिए। इसका जवाब तथ्य पेश करके भी नहीं दिया जा सकता। इसका जवाब केवल सही कामसे दिया जा सकता है।

मैंने कल राजा दलजीतसिंहको पत्र[2] लिखा है। उसकी एक नकल इस पत्रके साथ जायेगी।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ८२७४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७९०६ से भी

१. तात्पर्य महेन्द्र चौधरीको दी जाने वाली फाँसीसे है। उन्हें ७ अगस्तको फाँसी दी गई थी; देखिए पृ० ११३-१४।

२. देखिए पृ० ९३।

१४८. पत्र : रिचर्ड साइमण्ड्सको

[८ अगस्त, १९४५][1]

प्रिय साइमण्ड्स,

तुम नाहक उत्तेजित हो। मुझे नहीं मालूम था कि उस चीजसे तुम्हारा कोई सरोकार है। मुझे सारी बातें सुधीरसे मालूम हुई। मेरे खयालमें मैंने तुमसे कहा था कि हम नकली और अस्वाभाविक वातावरणमें जी रहे हैं और इसलिए अगर हमें अपना कर्त्तव्य करना है तो हमारी खाल मोटी होनी चाहिए।

अगर बंगाल आ सका तो वहाँ तुमसे मिलने की आशा करता हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री रिचर्ड साइमण्ड्स
फ्रेंड्स एम्बुलेंस यूनिट
१, अपर वुड स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४९. पत्र : वी० के० कृष्ण मेननको

सेवाग्राम
वरास्ता वर्धा (म० प्रा०)
भारत
८ अगस्त, १९४५

प्रिय मेनन,[2]

पंडितजी[3] ने अपने नाम तुम्हारा पत्र मुझे भेजा है।

मशीन शब्दसे मैं बिदकता नहीं हूँ। इसलिए अगर भारतमें कोई जीवनदायी मशीन बनाई जा सके और वह चरखेका काम ज्यादा तेजीसे और बेहतर ढंगसे कर

१. इस पत्रको ८ अगस्त, १९४५ के पत्रोंके साथ रखा गया है।
२. उन दिनों वे इंडिया लीग (लन्दन) के मन्त्री थे।
३. जवाहरलाल नेहरू

सके, तो मैं उसे सहर्ष अपनाऊँगा तथा उसकी ईजाद करने वालेको भरपूर पुरस्कार दूँगा।

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ऐसी मशीनके आविष्कारकके निमित्त एक बड़े पुरस्कारकी घोषणा की गई थी। उसकी शर्तें यहाँ और विदेशोंमें भी विज्ञापित की गई थीं।[1] केवल एक भारतीय आविष्कारक सामने आया। मैंने उसकी मशीनको आजमाकर देखा तो मुझे उसमें कमी नजर आई। लेकिन मैंने पहलेसे नियुक्त निर्णायक मंडलको अपना निर्णय देने दिया। मुझे अफसोस हुआ कि उनका निर्णय भी आविष्कारकके विरुद्ध था।

मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि मैनचेस्टरके एक प्रसिद्ध इंजीनियर और एक अमेरिकीने भी मुझे बताया कि जिस तरहकी मशीनकी कल्पना मेरे मनमें है वह असम्भव है और हमारा चरखा घरमें इस्तेमाल करने के लिए सबसे अच्छा है। जितना काम हमारे चरखेपर होता है उससे ज्यादा काम तकुआ नहीं दे सकता।

सूचनार्थ यह भी बता दूँ कि हमने गतिको बढ़ाकर एकसे पाँच कर दिया है तथा हममें से अधिकांश ८० अंक और अपवाद स्वरूप कुछएक तो १५० अंक तकका सूत भी कात पा रहे हैं।

लगता है तुम्हारे विशेषज्ञ अपना काम नहीं जानते, अन्यथा वे यहाँसे इस तरह की चीजें नहीं चाहते। २०से अधिक सूत्रांक देने वाली रुईकी जरूरत नहीं है। बहुत अधिक अंकोंके सूतके लिए अत्यन्त जटिल यन्त्रकी जरूरत होती है। तुम्हारे विशेषज्ञ उनकी उपेक्षा कर दें तो कोई हर्ज नहीं। मैनचेस्टरसे सभी किस्मोंकी रुई प्राप्त की जा सकती है। लेकिन १०से अधिक अंकके सूतके लिए सूरती कपासको ठीक माना जाता है और कम अंकोंके लिए रोजियो कपासको।

अब मैं तुम्हें अपनी राय देता हूँ। मुझे लगता है कि तुम्हारे विशेषज्ञोंका श्रम निष्फल रहेगा। वे मैनचेस्टर जाकर वहाँ कताई-यन्त्रोंका अध्ययन करें। उन्हें शीघ्र ही पता चल जायेगा कि वे जो दे सकते हैं वह पुराने किस्मकी चरखी (स्पिनिंग जेनी)की जैसी-तैसी नकल ही होगी, जिसका उपयोग गाँवोंमें निष्प्रयोजन ही होगा। हम शहरी कारखानेको छोड़कर देहाती कारखानेकी शरण नहीं जाना चाहते।

तुम्हारा यह सन्देह करना गलत होगा कि मैं तुम्हें हतोत्साह करना चाहता हूँ। मैं तो सिर्फ तुम्हें अपनी राय बता रहा हूँ, जो व्यापक अनुभवपर आधारित है। कारण, अगर कोई सिंगर सिलाई मशीन-जैसी किसी मशीनकी ईजाद कर सके तो मैं खुशीसे नाच उठूँगा। कहते हैं, अपनी पत्नीके प्रति उसका प्रेम इतना प्रबल था कि वह उसे हाथसे सिलाई करने के उबाऊ कामसे छुटकारा दिलाने के लिए व्याकुल था। उसने अपना मानवोचित यन्त्र उसे भेंटमें दिया। ऐसे किसी दूसरे सिंगर यन्त्रका मैं

1. देखिए खण्ड २०, पृ० २६८।

स्वागत करूँगा, बशर्ते कि वह किसी एक स्त्रीके लिए नही, बल्कि भारतके करोडो भूखे लोगोके लिए हो।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री वी० के० कृष्ण मेनन
१६५, द स्ट्रैन्ड
लन्दन, डब्ल्यू० सी० २

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१५०. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेवाग्राम
८ अगस्त, १९४५

चि० जवाहरलाल,

तुम्हारा खत सुन्दर है, अच्छे होकर आओ। इन्दुने ठीक साहस किया। मेननको मैंने खत[1] लिखा है। उसकी नकल इसके साथ है। इतना ही समय मेरे पास है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५१. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

८ अगस्त, १९४५

चि० काका,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम तिलक विद्यापीठ जाओ और न जाओ, इस प्रकार मेरे मनमें दो मत हैं। इसलिए अच्छा यही है कि मैं निश्चयपूर्वक कुछ न कहूँ। लेकिन अगर इस समय तुम्हारा मन उस ओर झुक रहा है, तो मजेमें जाओ। लेकिन अगर ऐसा हुआ, तो मेरा मत यह होगा कि तब तुम्हें अपना निवास मुख्यतः पूनामें रखना चाहिए। वर्धामें रहकर तुम यह काम सांगोपांग सुचारू रूपसे कर सकोगे, इसमें मुझे पूरा सन्देह है। अगर तुम्हे लगे कि और भी चर्चा करना जरूरी है, तो करना। या फिर इसीमें से सब समझ लेना।

विवाहकी विधि[2] के सम्बन्धमें मेरे मनमें खूब उथल-पुथल होती रहती है। मेरे विचार दृढ होते जा रहे हैं। लोग मेरी आलोचना तो करेंगे ही। लेकिन अगर हम उनकी

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. देखिए पृ० ८८ भी।

आलोचनासे डरते रहें, या फिर उनकी आलोचनाका सम्मान करने के लिए पुरानी रूढ़िसे चिपके रहें, तब तो हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे। मैंने अपने किसी लेखमें कहा है, सच्चे वेद अव्यक्त हैं, वे तो सागर हैं। वेद-वादमें हमें पड़ना नहीं है। इस समय जो पुस्तकें वेद कहकर स्वीकार की जाती हैं, उनमें भी अव्यवस्था है। सब-कुछ तो हम तक आया नहीं है। जितना आया है, उसमें क्या मान्य है और क्या अमान्य, यह कोई नहीं जानता। अर्थकी अन्धाधुन्धी तो है ही। अतः अच्छे और बुरेका निर्णय तो किसी शुद्ध अन्तःकरणमें से ही उद्भूत हो सकता है। इसलिए मैंने तो, आनन्दशंकर भाई[1] ने अपनी पुस्तकमें जो श्लोक उद्धृत किया है, वही याद कर रखा है :

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः ।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत ॥[2]

यह श्लोक उन्होंने कहांसे लिया है, यह भी मुझे नहीं मालूम। लेकिन यह मेरे कंठसे चिपक गया और मेरे हृदयमें उतर गया, इसलिए मैंने इसे स्त्रियोंकी प्रार्थनामें गवाया। यह भी याद रखो कि हरिजन लड़की लक्ष्मी और हरिजन वेलायुधन-का विवाह भी हमने अपनी स्वीकृत विधिके अनुसार ही कराया था। और हरिजनों की मुझे याद नहीं है। लेकिन यह बात अप्रासंगिक है। अगर मेरी यह बात सही है कि हिन्दू धर्मका उद्धार हम सबके हरिजन हो जाने में ही है, तो मुझे यह साफ समझमें आता है कि आश्रममें अथवा मेरे समर्थनसे होने वाले विवाहोंकी विधिमें परिवर्तन होना अत्यन्त आवश्यक है। मैं वचनबद्ध हूं, इसलिए इन्दु और तेन्दुलकरका विवाह आश्रममें कर देना चाहिए। विधिके सम्बन्धमें प्रतिबद्ध नहीं हूं, इसलिए नवीन विधि इसी विवाहसे प्रारम्भ करनी चाहिए। यह अतिरिक्त प्रस्तावना मैं तुम्हें यों ही पृष्ठभूमिके रूपमें दे रहा हूं। कल परचुरे शास्त्री[3] मेरे साथ बातचीत कर रहे थे, उसमें उन्होंने मुझसे बहुत-कुछ कहा। लेकिन मैं अधिक समय नहीं दे सका, सो सब अधूरा रह गया। इस सम्बन्धमें उनके साथ चर्चा करनी हो तो करना। विनोबाजी के साथ भी चर्चा करना। और फिर अत्यन्त संक्षिप्त विधि तैयार कर लेना। यह याद रखना कि मेरे जाने से पहले यह काम पूरा हो जाना चाहिए। तुम भी मेरे साथ चलने वाले हो, यह मैं मान लेता हूं। बाल[4] की दूसरी तसवीर देखी, और उसे पहचान सका। अब देखें, हम लोग किस घाट लगते हैं।

तुम्हारा पत्र कि० को पढ़ने को दिया था। उनका सख्त विरोध है, ऐसा मेरी समझमें आया है। उनके साथ भी चर्चा करनी हो तो करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६५) से

१. आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव

२. "जिनका हृदय द्वेष और रागसे मुक्त है, ऐसे विद्वान और साधु पुरुष जिसका सेवन करते हैं, तथा हृदय जिसका अनुमोदन करता है, उसे तुम धर्म जानो।"

३. आश्रममें कुष्ठ रोगसे पीड़ित संस्कृतके विद्वान

४. द० बा० कालेलकरके पुत्र

१५२. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

८ अगस्त, १९४५

चि० गुरबक्सानी,

तुम गलती करते हो। दुनिया लोगोका धन ही देखती है ऐसा नही, धन देखती है उससे दिल अधिक देखती है।

पैसे मिले होंगे। सब पैसे दे देने का इरादा अच्छा है।

दोनोंको,

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३१८) से

१५३. पत्र : कुसुम नायरको

८ अगस्त, १९४५

चि० कुसुम,

तेरा खत मिला। सवाल भेजने में भी कला चाहिए। सो तेरे पास नही है। अब तो तू ऊंचे गई है तो मेरे उत्तरकी क्या दरकार? मेरी इच्छा भी कुछ कम है, समय और भी कम है। मेरे जवाब मेरे रहन-सहनमें से मिलने चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

श्री कुसुम नायर
२, रिवियेरा
मैरिन ड्राइव
बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५४. वक्तव्य : चन्देकी अपीलके सम्बन्धमें[1]

८ अगस्त, १९४५

संरक्षकोंका यह निवेदन[2] मैं पढ़ चुका हूं। मुझे पसन्द है। मेरी आशा है कि जितने रुपयेकी मांग इसमें की गई है वह सबके सब लोगोंके तरफसे मिल जायेंगे। दक्षिण प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषाके लिए बहुत काम हुआ है ऐसा मेरा विश्वास है और भविष्यमें उससे भी अधिक होगा ऐसी मेरी उम्मीद है। लेकिन जो पैसे मिलने वाले हैं उसका उपयोग, राष्ट्रभाषाका जो अर्थ मैंने बताया है, उस अर्थकी सिद्धिके लिए होगा ऐसा समझकर लोग पैसे दें। राष्ट्रभाषाका अर्थ जैसे निवेदनमें बताया है वैसे हिन्दी और उर्दू शैली, नागरी या उर्दू लिपिमें लिखी जाने वाली भाषा। इसका अर्थ यह होता है कि सिर्फ हिन्दी, जो देवनागरीमें लिखी जाय, उसे राष्ट्रभाषा नहीं कह सकते, न सिर्फ फारसी या उर्दू लिपिमें लिखी जाय उसको। जब हम राष्ट्रभाषा जानने वाले उसे दोनों लिपिमें लिख सकेंगे और दोनों शैलीमें बोल सकेंगे तब ही उसमें से सच्ची हिन्दुस्तानी भाषा होगी। आज भी ऐसी भाषा, ऐसी हिन्दुस्तानी लाखों हिन्दू मुसलमान उत्तरमें बोलते हैं इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन वह हिन्दुस्तानी आज लिखे पढ़े उत्तरके लोग बोलते हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता है। हमारी कमनसीबीसे ऐसे ही चलता रहेगा तो चलेगा, लेकिन हमारी इच्छा तो होनी चाहिए कि यह कमनसीबी चली जायगी और जल्दीसे मिट जायगी। हिन्दुस्तानी प्रचारका यही मतलब हो सकता है। इसलिए दक्षिण भारतमें जो प्रचार कार्य चल रहा है उसका झुकाव दोनों शैलियोंके प्रचार के तरफ होगा। यही मतलब सन् १९२५में[3] जो प्रस्ताव कांग्रेसने किया उसका है। वह प्रस्ताव यह था :

> कांग्रेसकी यह सभा प्रस्ताव पास करती है कि कांग्रेस, अखिल भारत कांग्रेस कमिटी और वर्किंग कमेटीकी कारवाई आम तौरपर हिन्दुस्तानीमें चलेगी। अगर कोई वक्ता हिन्दुस्तानी न जानता हो या दूसरी आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेजी या प्रान्तीय भाषा इस्तेमाल की जा सकती है। प्रान्तीय कमेटियोंकी कारवाई आम तौरपर प्रान्तीय भाषाओंमें चलेगी। हिन्दुस्तानी भी इस्तेमाल की जा सकती है।

मो० क० गांधी

वक्तव्यकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह वक्तव्य दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके महामन्त्री म० सत्यनारायणके पास भेजा गया था।

२. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके निमित्त ५ लाखके कोषके लिए

३. कानपुरमें दिसम्बरमें

१५५. पत्र : एम० एस० केलकरको

८ अगस्त, १९४५

भाइ केलकर,

तुम्हारा खत मिला। क्विनाइन लेना पड़ा इसमे तुम्हारी चिकित्सामें कुछ न कुछ गलती नही होगी?

२५) रु० तो प्रतिमास अवश्य ले लो और प्रकृति खूब अच्छी कर लो। मेरी इतनी मान्यता रहेगी कि अगर पूरे २५ रुपये खाने मे लगे तो लगा दोगे और प्रकृति अच्छी कर लोगे लेकिन अच्छी होने के बाद भी बिगड़ सकेगी और क्विनाइन लेना पड़े तो तुम्हारे उपचारके बारेमें क्या कहा जायगा? तुम्हारे भलापनके बारेमे मुझको शका नही है। लेकिन तुम्हारे उपचारमें मुझको बहुत शका पैदा हो गई है। उसमे मेरी गलती हो सकती है वह दूसरी बात है।

बापुके आशीर्वाद

श्री केलकर (नालवाडी)

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१५६. पत्र : रामनारायण चौधरीको

सेवाग्राम

८ अगस्त, १९४५

चि० रामनारायण,

तुम्हारा खत मिला। मैं तीनोंको साथ बुलाकर क्या करू? अनावश्यक है। तुम्हारा कहना मैं नही समझा ऐसा मुझे कबुल करना चाहिए। मेरी समझ यह थी कि सीता[1] और सुभद्रा[2] को आधुनिक शिक्षण देने का अंजनादेवी[3] का इरादा है ही। इसमें मैं कोई दोष नही पाता हू। नई तालीममें जाते हूए जब उनका इरादा हो जाय तब लडकियोंको दूसरी जगह वह भेज सकती है। अगर वही आज तो शिक्षा लेनी है तो तुम्हारे इर्दगिर्दमें कही रहना तो चाहिए। गोशालामें ४-६ महिनेमें मकान बनने के बाद वहा जाओगे। कही भी मकान न मिलने के कारण अगर आश्रमका मकान, जैसे

१ और २. रामनारायण चौधरीकी पुत्रियाँ

३. रामनारायण चौधरीकी पत्नी

प्रभाकरको मिला था वैसा, मिल सके तो अच्छा होगा। इस तरह मैंने मुन्नालालको लिखा।[1] प्रभाकर अलग पकाता था वह बात तुम्हारे लिए भी मैंने लागु नहीं की, क्योंकि तुम और अंजनादेवी दोनों, सीता और सुभद्राकी शिक्षा अलग करके, आश्रम जीवन पसंद करते हैं ऐसा मैंने माना। इसलिए खानापीना अलग नहिं करोगे ऐसा समझा। लेकिन मैं तुम्हारे खतसे पाता हूं कि आश्रम व्यवस्था तुमको अच्छी नहीं लगती है। अगर ऐसा हो तो आश्रम जीवन कोई अलग वस्तु होनी चाहिए। मेरी दृष्टिमें ऐसा नहीं है। इतना समझो कि अगर आश्रमका रहनसहन और व्यवस्था चुभते हैं तो तुम दोनों या कमसे-कम अंजनादेवी स्वस्थतासे यहां रह नहीं सकेगी। तुम्हारा अलग पकाना मुझे चुभेगा और व्यवस्थापकोंको परेशान करेगा। यह बात तुमको समझाने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। इसलिए सब तरहसे सोच विचार कर जो करना चाहते हो सो करो। आश्रमको चलाने वालोंकी मर्यादा अच्छी तरहसे समझना तुम्हारा धर्म है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९०२) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१५७. तार : वाइसरायके निजी सचिवको

एक्सप्रेस

सेवाग्राम
९ अगस्त, १९४५

पी० एस० वी०
वाइसरायका कैम्प

चिमूरके कैदियोंके बारेमें चार तारीखको पत्र[2] भेजा था। कल उसकी प्राप्ति स्वीकृति आयी थी। यह जानने को उत्सुक हूँ कि वह समयसे मिल गया या नहीं।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ३७

१. देखिए पृ० ८९-९१।
२. देखिए पृ० ७२।

१५८. पत्र : शिवाभाई पटेलको

९ अगस्त, १९४५

चि० शिवाभाई,

क्या तुम्हे भी आशीर्वादका मोह है? अगर तुम ठीक-ठीक काम करते रहो, तो आशीर्वादकी क्या जरूरत है? और अगर तुमने ठीक-ठीक काम नही किया, तो आर्शीर्वाद वह घाटा थोडे ही पूरा कर सकेंगे? यह तुम्हें याद रखना चाहिए।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

शिवाभाई पटेल
वल्लभ विद्यालय
बोचासण
खेड़ा

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५२०) से। सी० डब्ल्यू० ४३९ से भी, सौजन्य शिवाभाई पटेल

१५९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
९ अगस्त, १९४५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हें सफरमें नींद नही आती, यह दुःखकी बात है। पूना समय पर पहुँच जायेंगे। देखें, वहाँ क्या हाल रहता है। मैं १९ तारीखको रवाना होकर वहाँ[1] २० तारीखको पहुँचूँगा। उस दिन ठहरकर २१ तारीखको पूना पहली गाडीसे चलेंगे—यह मानकर कि वे पहलेकी तरह तीसरे दर्जेकी सहूलियत देंगे। इस बीच कुछ आराम कर सको तो कर लो। तुम आराम करोगे तो मणि भी कर लेगी। मैं समझता हूँ कि यह स्थितिमें वह लम्बे समय तक नही झेल सकेगी। अब भी उसकी अगाध भक्ति ही

१. बम्बईमें

उसे टिकाये हुए हैं। परन्तु कुदरतके सामने भक्ति भी लाचार हो जाती है। अहमदाबाद[की घटनाओं] का अखबारोंमें हूबहू वर्णन था।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८३

१६०. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

९ अगस्त, १९४५

प्यारी बहन,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हारे यहाँ रहना तो मुझे अच्छा लगता, लेकिन मैं वहाँ वायु-परिवर्तनके लिए थोड़े ही आ रहा हूँ? मुझे तो सरदारको दिनशाके यहाँ उपचारके लिए ले जाना है। लेकिन तुम्हें यही समझना चाहिए कि मैं तुम्हारे यहाँ ही ठहरा हूँ। कमसे-कम मैं तो यही समझूँगा। १९ को यहाँसे रवाना होने की आशा है। सब-कुछ सरदारके पत्रपर निर्भर करेगा।

समाधि[1] तुमने उत्तम बनवाई। यह अच्छा हुआ। लोगोंके जाने की व्यवस्था भी हो गई है।

वहाँ तुम सब मजेमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८३६) से। सौजन्य : प्रेमलीला ठाकरसी

१. पूनाके आगाखाँ महलमें कस्तूरबाकी समाधि

१६१. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

९ अगस्त, १९४५

भाई शैलेन,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे प्रश्नके उत्तर देने में मैं कुछ लाभ नही पाता। इस वखत मैं कम से कम बोलू या कहू यही अच्छा है। प्रश्न पूछने मे भी कला रहती है, विचार रहता है, इसलिए [जो] ऐसा प्रश्न नही होगा कि जिसका उत्तर देना आवश्यक बन जाय, उसका जवाब मैं नही दूगा। तुमको कुछ न कुछ देना अच्छा लगता है लेकिन क्या किया जाय? तुम्हारे ही प्रयत्न करना है।

बापुके आशीर्वाद

युनाइटेड प्रेस
मुम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स]। सौजन्य : प्यारेलाल

१६२. पत्र : वेंकटाकृष्णैयाको

९ अगस्त, १९४५

भाई वेंकटाकृष्णैया,

आपका खत मैं पढ़ गया। मुझको उसमे दी हुई दलील जची नही है। विचारकी अव्यवस्था लगती है। हो सकता है कि वृद्धावस्थाके कारण आपकी बात नही जचती है। मुझे लगता ऐसा है कि मेरी बुद्धि खूब नई बात ग्रहण करती है। लेकिन आप अपनी बात चलाईये।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२४४) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१६३. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

९ अगस्त, १९४५

चि० पारनेरकर,

तुम्हारा खत मुझे असंगत लगा। मुन्नालालने जो उत्तर दिया है सो साथमे रखता हूं। खाद इतने महीनों तक रखने से सुधरता है ऐसा मैं न जानता हूं। वृक्षोंके लिए भी अब भी शिकायत जारी है। दोनों बातोंमें सोचने का स्थान है तो सोचो।

भाई पाटील क्या पूछते हैं पूरा नहीं समझा हूं। मुझे बताओ तो मैं कहूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६४. पत्र : इन्दुमती गुणाजीको

१० अगस्त, १९४५

चि० इदु,

यह खत तुम दोनोंके लिये है।

तुमारा विवाह मैं १९ तारीखको करना चाहता हूं। [विवाह] क्रिया शायद प्रभाकर करेगा। वह हरिजन मा-बापका लड़का है। मा-बाप ख्रीस्ति बन गये थे।

क्रियाकांड काकासाहेब बना रहे हैं।[1]

तुमको यह सब पसंद है ऐसा मैं मान लेता हूं। मेरा ख्याल है कि तुमारे बडी-लोंको भी लिखना चाहीये और उनकी इजाजत मांगनी चाहीये।

मैं यह भी मान लेता हूं कि यह विवाह भोगके लिये नहीं होगा लेकिन सेवा-दृष्टिसे ही। मैं यह भी मान लूं कि जब तक सच्ची आझादी नहीं मिली है तब तक तुम संभोग कार्यमें नहीं पड़ेंगे। मैं यह तो मानता ही हूं कि तुम संततीको रोकने के उपायोंमें कभी नहीं फसेंगे।

इतना कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सब चीज सख्त लगे तो यहीं विवाह करने की आवश्यकता न मानना।

अगर इस तरहका विवाह पसंद करते हैं तो रोज कातो, रोज गीता १२ वा अध्याय रसपूर्वक और ज्ञानपूर्वक करो और आश्रम-कार्यमें लगे रहो और पारमार्थिक विचार ही करो।

इतना याद रखो कि यह विधिमें मैंने कानूनका कुछ भी ख्याल नहीं किया है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९४६) से। सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर

१. देखिए परिशिष्ट २।

१६५. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको

सेवाग्राम
१० अगस्त, १९४५

भाई कैलासनाथ[1],

यह खत पढ़ो और मुझे लिखो क्या है? खत वापिस करो।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१६६. पत्र : महेशदत्त मिश्रको

१० अगस्त, १९४५

चि० महेश,

तुमारे प्रयाग जाना ही है। कब जाना होगा[?] अस्थायी तो है। लेकिन कहा तक[?] नौकरी होगी[?]

छुटीमें जरूर आना। अच्छी तबीयत होते हुए भी हर चीज मत [खाना]। जो खाना वह औषध समज कर। जीने के लिये खाना है, खाने [के लिए] जीना नहिं है।

जो अनुभव हुए हैं संक्षेपमें लिख डालो।

यहा रहने खाने का बराबर है ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७१२) से। सी० डब्ल्यू० ४४५६ से भी; सौजन्य : महेशदत्त मिश्र

१. (१८८७-१९६८); संयुक्त प्रान्तमें मन्त्री, १९३७-३९ और १९४६-४७; उड़ीसाके गवर्नर, १९४७; पश्चिम बंगालके गवर्नर, १९४८-५१; भारत सरकारके गृह एवं विधि मन्त्री; बाद में मध्य प्रदेशके मुख्य मन्त्री

१६७. पुर्जा : इन्दुमती गुणाजीको

[१० अगस्त, १९४५ के पश्चात्][1]

अगर तुम दोनों कानूनकी रक्षा चाहते हैं तो रजिस्टर करवा लो। ऐसा देवदासने कीया। कनूने किया। मैं नहीं चाहता था लेकिन दोनों लडकीके पिता चाहते थे।

मैंने तो अभिप्राय दिया। मैं जो करता हूं उसमें कानूनका ख्याल रहता ही नहीं। हम प्रभाकरको ब्राह्मणसे अधिक माने लेकिन समाज न माने, कानून न माने तो क्या किया जाय?

पुर्जेकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९५१) से। सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर

१६८. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम

११ अगस्त, १९४५

मैं जानता हूँ कि मुझ-जैसे लोगोंको, जो महेन्द्र चौधरीको फांसीसे बचाना चाहते थे, इस बातसे गहरा धक्का लगा है कि उन्हें ७ अगस्तको भागलपुर केन्द्रीय जेलमें फांसी दे दी गई। जो जीवित हैं उन्हें ऐसे और भी बहुत-से दुष्काण्ड होते देखने पड़ेंगे। अलबत्ता हमें ऐसे हर काण्डसे शिक्षा अवश्य लेनी चाहिए। तो अब हम निरुद्विग्न भावसे हालमें निष्पन्न इस मृत्युदण्डसे शिक्षा लें।

पहले सरकारकी बात लें। वह इसे राजनीतिक डकैती नहीं कहती। प्रत्येक डकैती राजनीतिक कार्रवाई नहीं होती। बहुत-से पेशेवर डाकुओंने राजनीतिक विक्षोभ का उपयोग अपने लाभके लिए किया। सरकार, चाहे वह वस्तुतः राष्ट्रीय हो या विदेशी, ऐसे अपराधोंको अदण्डित नहीं छोड़ेगी। इस मामलेमें अधिकारियोंने महेन्द्र चौधरीको ऐसी ही डकैतीका दोषी माना और इसलिए उन्होंने कठोरतम दण्डको सम्पन्न होने दिया।

अब जनताके पक्षको लें। ये कहते हैं कि महेन्द्र चौधरी पचीस सालका नवयुवक था। उसे पेशेवर या तथाकथित राजनीतिक किसी भी तरहकी डकैतीमें

१. इस पुर्जेके मजमूनसे लगता है कि यह इन्दुमती गुणाजीके नाम १० अगस्त, १९४५ के पत्रके पश्चात् लिखा गया; देखिए पृ० १११।

हिस्सा लेने का कोई भान नहीं था। वह छिप रहा था। घटनाके बाद उसपर मुकदमा चलाया गया और सन्देहपूर्ण गवाहीपर उसे सजा दे दी गई। गवाहियोंको सही मानना और फैसला देना न्यायाधीश या न्यायाधीशोकी मर्जीकी बात थी और अधिकाशत. उस समय न्यायाधीशोके मनमें पक्षपात था।

यदि यह आम विश्वास तथ्यपर आधारित है तो यह मृत्यु हत्या थी, बल्कि न्यायिक होने के कारण उससे भी बुरी और निन्दनीय थी। पूर्णतया निष्पक्ष वकीलोंकी एक समितिके सिवा सत्यका पता कौन लगा सकता है? अदालतमें ली गई गवाहियो और प्रारम्भिक तथा अपीलवाले न्यायालयोके फैसलोसे उन्हे इसका पता लगाना है। महेन्द्र चौधरी, अब नहीं रहे, इसलिए हमें न तो भावनामे बह जाना चाहिए और न आलस्यवश इस घटनाको भुला देना चाहिए। यदि सरकार जनमतकी जरा भी परवाह करती है, और उसके पास जो अतुल शक्ति है उसीपर आधारित नही है, तो इस काममें वह भी दिलचस्पी लेगी और जनताका साथ देगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १३-८-१९४५

१६९. पत्र : अमृतकौरको

११ अगस्त, १९४५

चि० अमृत,

मैं उम्मीद कर रहा था कि तुम के० को जवाब दोगी और मैंने उसे स्वय भी कुछ करने को कहा था।

मैं नाम जानना चाहता था। 'साफ करो' अपने साथ मत लाना। हाँ, यदि तुम्हारे आने तक मैं यहाँ न रहूँ, तो तुम पूना आ सकती हो। अपनी तकलीफोके बारेमें शिकायत न करो। चमत्कारोंको यदि छोड़ दें तो 'नानक' एक अच्छी पुस्तक है।[1] काश, तुम राजाको हिन्दुस्तानीमें; यानी नागरी और उर्दू लिपियोमें, कोई बेहतर चीज लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकती! उन्होने इसपर काफी श्रम किया है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२७५) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७९०७ से भी।

१. देखिए पृ० ९३।

१७०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

११ अगस्त, १९४५

प्रिय कु०,

तुम कल दिनके ११ बजे यहाँ आ सकते हो और १२ बजे भोजन कर सकते हो। जब मैं खाना खाता होऊँगा, तुम बात करना।

मैं १९ को पूना भाग रहा हूँ। नियत तिथिको वापस आ जाऊँगा या नहीं, कह नहीं सकता। क्या पूनामें बैठक हो सकती है? यदि नहीं तो मुझे उसके लिए लौटना होगा और फिर वापस जाना होगा। लेकिन यह बात कल होगी।

मैंने अभी तक पाण्डुलिपि[1] समाप्त नहीं की है। लेकिन शायद कल तक कर लूँगा।

लेखके बारेमें भी जब मिलेंगे तब बात होगी।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७६) से

१७१. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

११ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

यह पत्र पढ़ा। मुझे यह पसन्द है। कंचनके मनमें जो है, वही कह रही है। उसे सन्तुष्ट करना आवश्यक है। उसपर जोर-जबरदस्ती कैसे की जा सकती है? लेकिन तुम दोनों आश्रमें रहकर आश्रममें रह सकोगे, उस सम्बन्धमें मुझे पूरा सन्देह है। आश्रममें घर बसाओ और विषय-भोग न करो, यह मैं तुम दोनोंके लिए असम्भव मानता हूँ। कंचन तो रह ही नहीं सकती। और तुम भी नहीं रह सकते, यह तुम्हें जानने वाला मैं कहता हूँ। रामप्रसाद आश्रमवासी बिलकुल नहीं है। वह वेतनभोगी है। अपनी रसोई अलग बनाता है। फिर भी मुझे उसका कामोपभोग खटकता है। लेकिन उसे रख लेने के बाद अब क्या करूँ? न्यामतकी तरह उसका उदाहरण भी नहीं दिया जा सकता। इस सबपर शान्तिपूर्वक विचार करना और मुझे लिखना। हीरामणिकी बात समझा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४४३) से। सी० डब्ल्यू० ५५८९ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. जे० सी० कुमारप्पाकी लिखी ए इकॉनमी ऑफ परमानेन्स की पाण्डुलिपि

१७२. सन्देश : अखिल भारतीय चरखा संघ, लाहौरको

[१२ अगस्त, १९४५ या उसके पूर्व][1]

मैं कहता हूँ "कातो"। सूतके हर तारमें स्वराज्य है। यदि सभी भारतीय काते और मेरे पास आये तो मैं उन्हें स्वराज्य दे दूंगा। भारतमें चालीस करोड़ लोग रहते हैं। बच्चोंको छोड़कर बाकी सभी अगर कातें तो वह बड़ी उपलब्धि होगी। इसीलिए मैं कताईपर जोर देता रहा हूँ। कताई छोटी चीज नहीं है। "स्वतन्त्रता सप्ताह" के लिए यही मेरा सन्देश है। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। कताईमें बड़ी ताकत छिपी पड़ी है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-८-१९४५

१७३. पत्र : अरुणा आसफ अलीको

सेवाग्राम
१२ अगस्त, १९४५

प्रिय अरुणा[2],

तुम्हारी व्यथा तुम्हारी कल्पनाकी उपज है।[3] कहना होगा कि मौलानाका पत्र मेरी करतूत थी। तुम्हें बाकी लोगोंसे अलग कर देने या तुमसे किसी चीजपर परदा डालने की अपेक्षा करने का तो कोई सवाल ही नहीं था। तुम्हारे बारेमें बताया गया कि तुम बहुत बीमार हो, और इसलिए तुम्हारी बीमारी और तुम्हारी रिहाईकी खास जरूरतका जिक्र किया गया। उसमें आसफ अली[4] का कोई हाथ नहीं था। जहाँ तक मुझे मालूम है, उसे तो पत्र भेज दिये जाने के बाद उसके बारेमें मालूम हुआ। क्या

१. जिस समाचारमें यह सन्देश दिया गया था, वह दिनांक "लाहौर, १२ अगस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीकी सदस्या, उन्हें "भारत छोड़ो" आन्दोलनके सिलसिलेमें कारावास मिला था।

३. अरुणा आसफ अलीने अपने ८ अगस्तके पत्रमें इस बातपर अपनी गहरी व्यथा व्यक्त की थी कि मौलाना आजादने उनकी रिहाईके लिए वाइसरायको विशेष प्रार्थनापत्र भेजा।

४. अरुणा आसफ अलीके पति

तुम उसे और बाकी सब लोगोंको भी स्वतन्त्र विचारकी वह आजादी नहीं दोगी जिसकी माँग अपने लिए करती हो? आशा है, तुम स्वस्थ-प्रसन्न हो।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजीसे: अरुणा आसफ अली पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१७४. पत्र : प्रभावतीको[1]

१३ अगस्त, १९४५

चि० प्रभा,

तुझे पत्र लिखवाया या नहीं, याद नहीं है। यदि न लिखवाया हो तो [तेरा पत्र आये] चार दिन हो गये हैं।

वहाँसे छुट्टी मिलने पर तुझे मेरे पास आना है। मैं ऐसा मानता हूँ कि यदि इसी समय तेरी सेवाकी आवश्यकता हो तो वह सेवा तुझे करनी चाहिए। तू गाँवमें रहकर ही सेवा करे, तेरी यह बात मुझे तो अच्छी लगती है।

वहाँ रहते हुए भी धुनाई, रुईसे बिनौले निकालना आदि क्रियाएँ सीख लेना और उनका ठीक अभ्यास कर लेना। वहाँ पढ़ने के लिए जो मिले वह पढ़ना।

मैं यह पत्र तेरा पत्र सामने रखे बिना लिख रहा हूँ। इसलिए किसी बातका जवाब देना रह गया हो तो मुझे बताना।

मैं यहाँसे १९ तारीखको निकलकर, एक दिन बम्बईमें रहकर, सरदारको अपने साथ लेकर २१ को पूना पहुँचूँगा।

अपनी तबीयत ठीक रखना।

मैं स्वस्थ हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५७८) से

1. पत्र देवनागरी लिपिमें है।

१७५. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम
१२ अगस्त, १९४५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। भगवान मिलायेगा तो पूनामें और बात करेंगे।

मौलाना साहबको तो मैंने लिखा भी है, परन्तु तुम्हारे ढंगसे नही। काम कठिन है। इस बारेमे दो मत नही हो सकते कि कोई खास कदम उठाने से पहले उन्हें तुम सबसे पूछना चाहिए।

जिन्ना साहबको मैंने जो-कुछ लिखा था वह स्थायी ही था। अत. मैं और कुछ कर ही नही सकता। परन्तु तुम सबको उससे असहमत होनेका अधिकार है। और अगर वह हृदयसे स्वीकार न हो, तो ऐसा स्पष्ट कहना चाहिए। मैंने किसीकी तरफसे नही कहा। अपनी ही राय बताई है। इसमे मुझे भूल मालूम हो जाये, तो तुरन्त स्वीकार कर लूँगा। तुम तो जानते ही हो कि उन्हें मेरी चीज पसन्द ही नही आती। पर इसकी चिन्ता न करो।

नया चुनाव तो होना ही चाहिए। मगर यह कहाँ तय है कि होगा ही? होगा तो विचार कर लेगें। ज्यादा पूनामें।

मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम यहाँ नही आ सकते। तुम्हारे लिए रेल का सफर ठीक नही होगा। बम्बईसे पूना विमानसे जाने मे क्या कम कष्ट होगा?

तुम्हारा आखिरी भाषण[1] सबको अच्छा लगा है। पर मुझे वह जरूरतसे ज्यादा लगता है। परन्तु उसकी कोई बात नही। जो तुम्हारे मनमें भरा है, उसे तुम मनमें रख ही नही सकते।

मणि बूतेसे अधिक काम करके बीमार न पड़ जाये तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८४-८५

१. १५ जून, १९४५ को अहमदनगरके किलेसे छूटकर आने के बाद बम्बईकी सार्वजनिक सभामें ९ अगस्तको दिया गया भाषण

१७६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१२ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

गजराज[1] के अध्ययनका कार्यक्रम बनाओ और मुझे खबर दो। उसका अध्ययन ठीक ढंगसे चलना चाहिए। इस सम्बन्धमें मुझसे कुछ पूछना हो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३९) से। सी० डब्ल्यू० ५५९० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१७७. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

१२ अगस्त, १९४५

भाई जाजुजी,

इसे[2] पढ़कर जवाब लिखो। नकल मुझे भेजो और यह पत्र भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. होशियारी बहनका पुत्र
२. हरेकृष्ण मेहतावके पत्रको; देखिए अगला शीर्षक; देखिए पृ० १३४ भी।

१७८. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको

१२ अगस्त, १९४५

भाई महताब[1],

तुम कैसे हो? कहांसे लिखा है इतना भी खतमें नही दिया है। ओरिसाकी खादी बाहर नहीज[2] जा सकती है ऐसा तो नही है लेकिन सच्चा है कि कम जायगी। इसीमें ओरिसाका सच्चा श्रेय है ऐसा समझो। जो मैंने लिखा है वह सब लिखकर बताने की आवश्यकता नही होनी चाहिए। नयी बात समझकर चलाओ।

बापुके आशीर्वाद

श्री ह० मेहताब, एम० एल० ए०
कटक (उड़ीसा)

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१७९. पत्र : निशीथ नाथको

१२ अगस्त, १९४५

भाई निशिथनाथ,

आपका पत्र मिला। मैं नही जानता हू मैं क्या कर सकुंगा। आपका खत मनमें तो रखुगा।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०२२) से

१ उत्कल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष, १९३० और १९३७; कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य, १९३८-४६; उड़ीसाके मुख्यमन्त्री, १९४६-५० और १९५७-६०; केन्द्र सरकारमें मन्त्री, १९५०-५२; बम्बईके राज्यपाल, १९५५-५६

२ नहीं ही

१८०. पत्र : परचुरे शास्त्रीको

१२ अगस्त, १९४५

भाई परचुरे शास्त्री,

खत मिला। गीत प्रभाकरको दो। चक्र शब्द वेदादिमें है सो तो प्रसिद्ध बात है। ऐसे ही चरखाका व्युत्पत्ति चक्र है। दूसरी बात समझ गया हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८१. पत्र : रत्नमयी देवीको

१२ अगस्त, १९४५

चि० रत्नमयी,

तुम्हारा पत्र जब मुझे मिला तो मेरी शंका पैदा हुई। मैंने माना था कि तुम त्यागी और बहादुर हो, देहाती जीवनसे डरती नहीं हो। मेरे हुकमकी इन्तजारी होनी नहीं चाहिए थी। लेकिन इसका अर्थ ऐसा नहीं है कि तुम्हारा हितचिन्तक मिट जाता हूं। अब वहां स्थिर हो गई है तो मेरा काम क्या?

बापुके आशीर्वाद

श्री रत्नमयी देवी
महिलाश्रम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८२. पत्र : समरफोर्ड ऑर्चर्डके व्यवस्थापकको

१३ अगस्त, १९४५

श्री व्यवस्थापक,

श्री पद्मपतजीके तरफ़ से आपने जो सेव भेजे हैं मिल गये हैं, अच्छे हैं। आभार।

मो० क० गांधी

मन्त्रीजी, समरफर्ड ऑरचर्ड
रामगढ़ पो० ओ०
जिला नैनीताल, यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८३. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्‌को

१३ अगस्त, १९४५

प्रिय सुन्दरम्[1],

तुमने मुझे बहुत सुन्दर उद्धरण भेजा है। तुम असीसीके यहाँ गये थे, इसका जिक्र तो तुमने किया था। मेरे पास पूना मत आओ। जब मैं सेवाग्राममें होऊँ, तो वहीं आना।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१९१) से

१ मदनमोहन मालवीयके निजी सहायक। सम्बोधन तमिलमें है।

१८४. पत्र : वी० लक्ष्मीको

१३ अगस्त, १९४५

प्रिय लक्ष्मी,

सूतका नमूना अच्छा है। आशा है, तुम अपना सत्कार्य जारी रखोगी।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री वी० लक्ष्मी
४३, कार्णेश्वरकोइल
सैंतोमे, मयलापुर, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८५. पत्र : हरजीवन कोटकको

१३ अगस्त, १९४५

चि० हरजीवन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुममें उत्साह है इसलिए तुम्हें काम अवश्य मिल जायेगा। इस समय मेरा मन एक अलग दिशामें ही काम कर रहा है, इसलिए मैं कोई सुझाव नहीं दे सकूंगा। तुम्हें पूनामें रखना बहुत मुश्किल है। इसलिए मेरे सेवाग्राम लौट आने के बाद ही तुम मुझसे मिलना।

बापूके आशीर्वाद

हरजीवन कोटक
ग्रामोद्योग गांधी हाट
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८६. पत्र : रामप्रसादको

सेवाग्राम
१३ अगस्त, १९४५

चि० रामप्रसाद,

मैंने अभी इस बातपर विचार नहीं किया है कि मेरी गैरहाजिरीमें तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम्हें पूना तो नहीं आना है। मेरी कामना है कि बालक अच्छा हो जाये। पुष्पाके बारेमें मैं समझ गया।

बापूके आशीर्वाद

मार्फत सुलोचना भट्ट
१४५ अ, वीगास शेरी
कालबादेवी रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८७. पत्र : इन्दुमती गुणाजीको

१३ अगस्त, १९४५

चि० इन्दु,

डाक्टर[1] कहते है तू कुछ बात करना चाहती है तो अगर खानगी है तो चार बजे आज आ सकती हो। खानगी नहीं है तो ११ बजे।

बापुके आ[शीर्वाद]

[पुनश्च]

बाहरसे सिवा तेरे भाईको किसीको नहीं बुलायगी।

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९४७) से। सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर

१. ग० ना० म० तेन्दुलकर

१८८. पत्र : जसवन्तसिंहको

१३ अगस्त, १९४५

सरदारजी,

आपका खत मिला है। आपका लेख रसिक है।

आपका,
मो० क० गांधी

सरदार जसवन्त सिंघ
बसन्त प्रेस
देहरादून, यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१३ अगस्त, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुमारे खतमें खानगी क्या है? मेरी बात तुम नहीं समझे, लेकिन फायदा ही हुआ है। मेरी सलाह है कि तुम्हारा खत मुन्नालालको बताओ। अगर ऐसा ही है तो उनको हट जाना चाहीये। मेरे ही खातर कुछ किया जाय वह निकम्मा समजा जाय। जो किया जाय वह ठीक है तभी फायदा पहोंच सकता है।

व्यवस्थाके बारेमें मेरा कहना यह था। क्योंकि मैं सब बात नहीं जानता हूं, आखरी निर्णय जाणने वाले ही करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२२) से

१९०. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

१३ अगस्त, १९४५

चि० पारनेरकर,

१. अगर मजदूरकी अछत[कमी] के लिए खाद पड़ा रहा तो आश्रमवासियोकी मदद लेना चाहिए था। ऐसी मदद तुमने पूर्वमे भी ली थी। याद होगा। एक जगहसे दूसरी जगह रखने की बात असगत थी। शाकभाजीके लिए उपयोग तो हो सकता है, सवाल यह कि फल झाड़ोके लिए बेहतर कि शाकभाजीके लिए। तुम्हारा उत्तर मुझे सीधा नही लगा। हमारा तो धर्म है कि अगर हमारी गफलत हुई है तो हम पूरी कबूल कर ले।

२. वृक्षोके बारेमें मैं खुद देखूगा।

३. श्री पाटिल और उनकी साली आश्रममें रहें और गोशालामे काम करे, मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन बात मुन्नालालजीसे कर लो और पाटिलको लिखो।

४. रामनारायणजी गोशालेमें रह सके तो मुझे तो अच्छा ही लगेगा। रहना चाहते या नही, उसे पूछ लो। मेरी समझ थी कि किसी हालतमें आज जगह नही मिल सकती।

५ हिन्दुस्तानी तालीमी सघको तैयार जमीन चाहिए क्या? मेरा ख्याल उल्टा रहा है। जमीन देना चाहिए। लिखा-पढी करके मुझे बता दो, नामके किरायेसे देना। अमुक मुद्दत तक देना, उनको वापिस करने का अधिकार देना।

मेरा खयाल है अब मैंने सब सवालका उत्तर दिया।

बापुके आशीर्वाद

श्री पारनेरकर
गोशाला, सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१९१. पुर्जा : इन्दुमती गुणाजीको

[१३ अगस्त, १९४५ के पश्चात्][1]

अब बोल सकती है। जवाब देना होगा तो मैं बोलूंगा। वर्षासे. . .[2] बात नहीं है। तुमारी शोभाकी बात है। मैंने शर्त नहीं रखी है। नयी बातके बात करेगी तो छोड़ दे।

तू छोटी लडकी नहीं है। मामूली स्त्री नहीं है। तू बड़ी सेविका है। टेंडुलकर अनुभवी आदमी है। मैं लग्न करा दूं और नतीजा यह कि संसारमें लुप्त हो जाओगे। मेरा खत[3] तू दोबारा पढ़। उसमें शर्त नहीं पायगी। मेरी तीव्र अभिलाषा पायगी। आगेसे निश्चय किया है कि संसारमें पड़ना है तो यहां विवाह करने से लाभ क्या? तू नहीं जानती है कि मैं कितनी महेनत कर रहा हूं और विचार कर रहा हूं। मेरी दृष्टिमें यह छोटी बात नहीं है। इतना समज मैंने यही इच्छा सब विवाहमें बताई है लेकिन वे सब छोटी लड़कीयां थी। सौंदरम्‌को छोड़कर। लेकिन तुझे तो महत्वके प्रश्न पूछने चाहिये। अगर स्वतंत्रता न मिले और तुं प्रजात्पत्ति चाहेगी तो कैसी बात लगेगी?

उन लोगोंको बुलाना चाहती है तो मैं मनाई नहीं करुंगा। उनको खाना यहां खिलाना होगा क्या? सोचकर मुझे कहे।

मेरा खत मुझे बताना। मेरी भाषामें शर्त है क्या?

xxx xxx xxx

यह तो दूसरी बात हुई। तू जब कहती है कि पहले नहीं थी वह शर्त मैंने रखी तो मैंने कहा ऐसी शर्त मैंने नहीं की है। इसलिये मैंने पूछा। दोनोंमें से एक भी दंभ तो नहीं करोगे ऐसा तो मानकर ही काम हो सकता है। आखरमें दंभ होगा तो मैं कुछ नहीं गमाऊंगा, तुम ही गमाओगे। मेरा आज तकका यह अनुभव है। जिन्होंने मुझे धोका दिया है वे आखरमें गिरे है।

पुर्जेकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९५०) से। सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर

१. विषय-वस्तुसे लगता है कि यह इन्दुमती गुणाजीके नाम १३ अगस्त, १९४५ के पत्रके बाद लिखा गया था; देखिए पृ० १२४।

२. एक शब्द अस्पष्ट है।

३. १० अगस्तका; देखिए पृ० १११।

१९२. पत्र : हमीदुल्लाको

१३/१४ अगस्त, १९४५

हमीद उला साहेब,

आपका खत मिला है। मैं हरेक खतका जवाब नही देता हू। मैं आपका कहना समझा हू।

आपका,
मो० क० गांधी

हमीद उला अफसर साहेब
५९, नयागांव
लखनऊ

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९३. बातचीत : बी० एस० मूर्तिके साथ[1]

[१४ अगस्त, १९४५ के पूर्व][2]

मैं तो आपको उसी तरह सलाह दे सकता हूँ जिस तरह एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिको देता है। मैं हरिजन सेवक सघको कोई सलाह नही दे रहा हूँ। वह तो एक सस्था है। हरिजन सेवक संघ आखिर तो उसी हद तक अच्छा है जिस हद तक उसमें अच्छेसे-अच्छे लोग हैं, और मै जानता हूँ कि ऐसे लोग कितने कम है। सघने काफी काम किया है, हालाँकि हरिजनो या रूढ़िवादी हिन्दुओं की दृष्टिमे नही। भले हरिजन सवर्ण हिन्दुओको कुचल देना चाहे और सवर्ण हिन्दू लकीरके फकीर बने रहना चाहे; संघको तो दोनोका मुकाबला करना है।

आपने पूछा है कि सघमें नवजीवनका संचार कैसे किया जा सकता है। मुझे मालूम है कि इसका राजमार्ग यह है कि मैं उपवास करूँ। हो सकता है, मैं फिर

१. बी० एस० मूर्तिने हरिजनोंकी विभिन्न समस्याओंके सम्बन्धमें गाधीजी की सलाह माँगी थी।

२. हरिजन सेवक संघके कार्यकर्ताओंकी सभाके उल्लेखसे; यह सभा १४ अगस्त, १९४५ को हुई थी। देखिए पृ० ४५ भी।

उपवास करूँ, और किसी अन्य प्रयोजनकी अपेक्षा हरिजनोंकी खातिर अधिक तत्परता से करूँ। लेकिन जब तक ईश्वर उसका आदेश नहीं देता, मुझे प्रतीक्षा करनी है। जबर्दस्ती उपवास करने जैसी तो कोई बात ही नहीं है। उसे सहज रूपसे होना है, लेकिन अभी मैं यह नहीं बता सकता कि वह कब होगा। तुम्हें यह भी बता दूँ कि और भी लोग हरिजनोंके लिए उपवास करना चाहते हैं। लेकिन उनसे मैंने कह दिया है कि मेरे जीते-जी उन्हें उपवास नहीं करना है। मेरे मनमें उपवासोंकी शृंखलाका भी विचार है। उस शृंखलामें सबसे पहले मैं उपवास करूँगा और जब मेरा शरीर नष्ट हो जायेगा तब दूसरेका उपवास आरम्भ होगा, और यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक अस्पृश्यता मिट नहीं जायेगी। ऐसे उपवासकी कल्पना की जा सकती है, लेकिन इसे सहसा आरम्भ नहीं किया जा सकता, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, उसे तो सहज रूपसे होना है। मगर ऐसी बात भी तभी हो सकती है जब उसके लिए पहले काफी प्रारम्भिक कार्य कर लिया जाये। यही कारण है कि शीघ्र ही यहाँ हरिजन सेवक संघके कार्यकर्ताओंकी सभा होने जा रही है। उनकी सभाका उद्देश्य ही संघके कार्यमें नवजीवनका संचार करना है।

हरिजन सेवक संघके कार्यकर्ताओंमें मौजूदा भावना यह है कि सवर्ण हिन्दुओंके बीच लगभग कुछ भी काम नहीं किया गया है। हरिजनोंका शिक्षण एक बात है, सवर्णोंका शिक्षित करना बिलकुल दूसरी; और मेरे जानते ज्यादा कठिन बात है। हम छात्रवृत्तियाँ, छात्रावास आदि देकर हरिजनोंका शिक्षण तो कर सकते हैं, लेकिन सवर्ण हिन्दुओंके बीच ऐसे उपाय सम्भव नहीं हैं। इसलिए असली काम सवर्णोंको शिक्षित करने का है। लेकिन यह काम वही लोग कर सकते हैं जो मेरी समझमें हिन्दू-धर्मके प्रति जीवन्त आस्थासे अनुप्राणित हैं। यह चमत्कार वही लोग कर सकते हैं जो हिन्दू-धर्मको मेरी तरह ही अच्छी तरह पहचानते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अस्पृश्यताको मिटाना अत्यन्त दुष्कर है और हमारा काम बहुत बड़ा है। लेकिन मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि ईश्वर या तो अस्पृश्यताको मिटायेगा या हिन्दू-धर्मको ही मिटा देगा।

अब हरिजनोंके राजनीतिक भविष्यके सम्बन्धमें आपके प्रश्नके बारेमें मेरी स्पष्ट राय है कि जो हरिजन राजनीतिक रूपसे जागरूक हो गये हैं उन्हें सीधे ही राजनीतिमें अपनी भूमिका निभाने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। आपने मुझसे मेरे इस कथनका अर्थ पूछा है कि मैं चाहता हूँ कि ऐसे हरिजनोंको अन्य सभी राजनीतिक स्पर्धियोंसे अधिक सक्षम होना चाहिए। बहुत-से लोग हरिजनोंकी सामर्थ्यको हरिजनोंसे सम्बद्ध किसी-न-किसी विशिष्ट प्रकारकी तुलामें तोलते हैं। लेकिन मैं हरिजनोंको उसी तुलामें तोलना चाहता हूँ जिसमें श्रेष्ठतम लोगोंको तोलता हूँ। हरिजनोंको दूसरोंसे भारी पड़ना है, क्योंकि जिस दूरी तक वे पिछड़ चुके हैं उसे भी उन्हें पूरा करना है। इसीलिए मैं हरिजनोंसे दूसरोंकी अपेक्षा अधिक प्रयत्नकी अपेक्षा रखता हूँ।

आपने पूछा है कि मेरी रायमें क्या डॉ० अम्बेडकरने अपने-आपको इस तरह दूसरोंकी तुलनामें भारी सिद्ध किया है। मेरा उत्तर 'हाँ' भी है और 'नहीं' भी। डॉ० अम्बेडकर एक प्रचण्ड और निर्भीक व्यक्ति हैं। उनके हाथमें चाहे जो हथियार आ जाये, उससे हिन्दू-धर्मपर प्रहार करने में वे उचित-अनुचितका कोई विचार नहीं करते। वे हिन्दू-धर्मको नष्ट करना चाहते हैं। उन्हें ऐसा करने का अधिकार है। यदि हरिजन ऐसा करना चाहते हैं तो खुशीसे कर सकते हैं। तब उन्हें हिन्दू-धर्मका विनाशक बन जाना होगा। मैं चाहता हूँ कि वे डॉ० अम्बेडकरके ही समान सुयोग्य और लगनशील बनें, लेकिन दूसरी तरहसे। मैं चाहता हूँ, आप इससे भी बेहतर काम करें। मैं चाहता हूँ आप ऐसे खरे लोग तैयार करें जो पूरे समाजको बदल देंगे। शिक्षित होना काफी नहीं है। सुसंस्कृत और निर्भीक होना आवश्यक है। समाजको बदलने वाले ऐसे व्यक्तियोंको अपने-आपको जनतासे काटकर अलग कर लेने के बजाय उनके बीच काम करना होगा। उन्हें दृढ़, भ्रष्टाचारकी सम्भावनासे परे और स्वावलम्बी होना चाहिए। कोई कारण नहीं कि ऐसे लोग ईमानदार लोगोंसे सहायता न लें। लेकिन मेरा कहना यह है कि आप ऐसी सहायतापर जितना अधिक निर्भर करेंगे, हरिजनोत्थानका कार्य उतना ही अधिक कठिन होगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-८-१९४५ और ३१-८-१९४५

१९४. तार : हनुमानप्रसाद पोद्दारको

सेवाग्राम
१४ अगस्त, १९४५

हनुमानप्रसाद पोद्दार
'कल्याण'
गोरखपुर

भारतकी खुशहाली गाय और गोवंशकी खुशहालीसे जुड़ी हुई है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९५. पत्र : बंगालके गवर्नरको

सेवाग्राम
१४-अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका ८ तारीखका पत्र कल तीसरे पहर मिला। तदर्थ बहुत धन्यवाद।

आपने कृपापूर्वक सहायताका जो प्रस्ताव किया है, उसका जरूरत होने पर सहर्ष लाभ उठाऊँगा। हाँ, श्री माइमण्ड्सको तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामहिम बंगालके गवर्नर
कलकत्ता

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १०४

१९६. पत्र : लाला मेघराजको

सेवाग्राम
१४ अगस्त, १९४५

प्रिय लाला मेघराज,

आपका पत्र मिला। आपको इस सम्बन्धमें मौलाना साहबसे पूछना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

लाला मेघराज, एम० एल० ए०
रोहरी, सिन्ध

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९७. पत्र : जे० पॉपलटनको

१४ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आगामी २२ तारीखके बाद आप मुझसे पूनामें मिल सकते हैं।

आपका सच्चा,
मो० क० गांधी

श्री जे० पॉपलटन
मार्फत एस० एस० 'राँची',
डाकघर–स्टीम नेवीगेशन कम्पनी
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९८. पत्र : कनु गांधीको

[१४ अगस्त, १९४५][1]

चि० कानम,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार क्यों पड़ जाता है? बीमार न पड़ने की कला, और बीमार पड़ ही जाये तो अच्छे हो जाने का उपाय, यह सब हम सबके पाठ्यक्रमका अंग होना चाहिए। ठीक है न?

बापूके आशीर्वाद

चि० कनु गांधी
मार्फत श्री रामदास गांधी
खलासी लाइन
नागपुर

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१९) से। सौजन्य : कनु गांधी

१. डाककी मुहरसे

१९९. पत्र : कृष्ण वर्माको

१४ अगस्त, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम (और मामा, यदि उसे लाने लायक मानो और ला सको तो) सोमवारको बम्बई आ जाओ। उस दिन मेरा मौन तो होगा, लेकिन उसकी कोई चिन्ता नहीं। जैसे भी होगा कुछ मिनट निकाल लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२००. पत्र : वसुमती पण्डितको

१४ अगस्त, १९४५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। मैं १९ तारीख़को निकलूँगा। इसके बाद मेरा सारा कार्यक्रम अनिश्चित होगा। सरदारकी इच्छानुसार तीन महीने उनके साथ बिताने के बाद बंगाल, फिर सरहदी सूबा और फिर मद्रास जाऊँगा। इसलिए शायद मुझे दिसम्बर तक बाहर रहना पड़ेगा। ऐसी स्थितिमें यदि तू दिसम्बरके अन्तमें आये तो मेरे साथ रह सकती है, किन्तु उस समय तो तुझे वहाँ रहना होगा।

अकबर[1] को आशीर्वाद। मैं अच्छा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अकबर चावडा

२०१. पत्र : देवराजको

१४ अगस्त, १९४५

भाई देवराज,

तुम्हारा खत मिला। तुमको दुःख हुआ उसका मुझे दुःख है। लेकिन इससे अधिक दुःख यह है कि जो प्रत्यक्ष है उसे तुम देख नहीं सकते हो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री देवराजजी
यौगिक फिजिकल कल्चर इन्स्टिट्यूट
प्लीडर्स स्ट्रीट
लायलपुर, पंजाब

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०२. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको

सेवाग्राम
१४ अगस्त, १९४५

भाई महताब,

तुम्हारा खत मैंने श्री जाजूजीको भेजा था। उन्होंने तुमको लिखा है। उससे पता चल जायगा कि नयी . . .[1] सब तरहसे अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री हरेकृष्ण मेहताब
कांग्रेस हाउस
कटक, उड़ीसा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यहाँ एक शब्द पढ़ा नहीं जा सका।

२०३. पत्र : शरद कुमारीको

१४ अगस्त, १९४५

चि० शरद कुमारी,

तेरा खत मिला। वहां गई पीछे घबराना क्या? दूसरी लड़कियां कुछ भी करें तू तेरी सादगी रख। कात और दूसरे उद्योग सीख। ऐश-आराममें हिस्सा नहीं लेना लेकिन किसीका द्वेष नहीं करना, सबसे मोहब्बत करना। आखिर तो तेरा असर पड़ेगा।

बापुके आशीर्वाद

मारफत
हेड मिस्ट्रेस
सेंट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल
काशी, यू० पी०

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०४. पत्र : वी० भाष्यम अय्यंगारको[1]

१४ अगस्त, १९४५

भाईश्री,

आपका खत मिला है। नींव[2] डालने की कोशीश करूंगा, लेकिन मेरे पहूंचने के पहले कुछ निर्णय नहीं हो सकता है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६१) से। सौजन्य : वी० जगन्नाथदास

१. मद्रास उच्च न्यायालयके भूतपूर्व न्यायाधीश
२. कोदम्बक्कम (मद्रास) की हरिजन उद्योगशालाकी

२०५. पत्र : अमृतकौरको

१४ अगस्त, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारे दो लिफाफे मिले हैं। वहाँके सब कामोंसे आरामसे निबट लेने के बाद तुम पूना तो आओगी ही।

क्या वैद्य नानकचन्द सेवाग्राममे काम कर सकते है? उन्हे क्या-कुछ चाहिए? क्या उनका परिवार है? यदि वे सचमुच अपने काममें सिद्धहस्त न होंगे तो उनके लिए आयुर्वेदिक कार्य बहुत कम होगा।

सुशीला नागपुरमें है।

हरिजन [सेवक संघकी] बैठक चल रही है।[1] रामेश्वरी[2] यहाँ है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६४) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ७८०० से भी

२०६. भाषण : हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय मण्डलकी बैठकमें

वर्धा

१४ अगस्त, १९४५

गांधीजी ने कहा कि संघकी कार्यकारिणीमें केवल सवर्ण हिन्दू ही लिये जायें, कोई हरिजन नहीं; क्योंकि इतने कालसे कायम अस्पृश्यताके लिए प्रायश्चित्त सवर्ण हिन्दुओंको करना है। हरिजन उस निगरानी समितिके सदस्य हो सकते हैं जो कामको ठीकसे चलाने के लिए गठित की जा सकती है।

एक सवालका जवाब देते हुए गांधीजी ने कहा कि तालाबों, कुओं, मन्दिरों आदि सार्वजनिक स्थानोंमें हरिजनोंके नागरिक अधिकारोंपर अमल कराने के लिए मैं सत्याग्रहका सिद्धान्त पसन्द करूँगा। फिर भी, उन्होंने इस

१. देखिए अगला शीर्षक।

२. रामेश्वरी नेहरू, हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय मण्डलकी अध्यक्षा

बातपर जोर दिया कि हरिजन सेवक संघको संस्थाके रूपमें ऐसे सत्याग्रहमें नहीं पड़ना चाहिए। व्यक्तिगत रूपसे हरिजन कार्यकर्ता औरोंकी मददसे उस उपायका प्रयोग कर सकते हैं।

गांधीजी ने सदस्योंको समझाया कि हरिजन-कार्य किस तरह चलाना है। उन्होंने कहा कि रूढ़िवादी और सवर्ण हिन्दुओंके हृदय-परिवर्तनके लिए लगातार प्रचार करने से अस्पृश्यताकी समस्याको, जो हिन्दू-धर्मपर कलंक है, सुलझाने में बड़ी मदद मिलेगी।

महात्मा गांधीने आगे कहा कि हरिजनोंमें विश्वास पैदा करने के लिए हरिजन कार्यकर्ताओंको हरिजनोंके बीच रहना होगा, उनसे मिलना-जुलना होगा, उनकी स्थानीय तथा अन्य समस्याओंका अध्ययन करना होगा और उन्हें हरिजनोंके लिए सन्तोषजनक रीतिसे हल करना होगा। कार्यकर्ताओंको हरिजनोंकी तरह रहना चाहिए "ताकि उन्हें लगे कि आप उनमें से ही एक हैं।"

गांधीजी ने हरिजन-उद्धारके लिए अधिक जमकर काम करने की जरूरत पर जोर दिया तथा और कार्यकर्ताओंकी आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ा काम है और इसमें बहुत धैर्य, शक्ति, समय और पैसेकी जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १६-८-१९४५

२०७. पत्र : अबुल कलाम आजादको

सेवाग्राम, वर्धा
१५ अगस्त, १९४५[1]

आज आपका पत्र मिलने पर मैंने निम्नलिखित तार भेजा है: "आपका पत्र मिला। मेरा खयाल है, यह प्रकाशित नहीं होना चाहिए। विस्तारसे लिख रहा हूँ।"

आपके पत्रसे मैं यह निष्कर्ष नहीं निकालता कि आप मेरे 'हिन्दुओं'के बारेमें लिख रहे हैं। जो-कुछ आपके हृदयमें है, वह आपके लेखनमें नहीं आ पाया है। लेकिन चिन्ता न करें। मिलने पर आप चाहेंगे तो इस विषयमें हम बात करेंगे। साम्प्रदायिक समस्याके बारेमें आप जो-कुछ कहना चाहते हैं, वह कार्य-समितिकी सलाह लिये बिना नहीं कहा जाना चाहिए। मेरी राय यह भी है कि चुप रहना बेहतर होगा। दल आपसे मशविरा करने के बाद अपनी राय दे सकता है। उसे ऐसा करने का हक है। इसके अलावा, उसका यह कर्त्तव्य है। मैं आपकी रायसे असहमत हूँ। मैं नहीं कह सकता

१. ट्रान्सफर ऑफ पॉवर में तिथि १३ अगस्त है।

कि मैं "हिन्दू" और "मुसलमान" शब्दोको महत्व देता हूँ। कांग्रेस जो-कुछ करती है वह और बात है। एक बार हिन्दू और एक बार मुसलमानका विचार मुझे नही जँचता। इसका अर्थ है कि दूसरे सम्प्रदायके लोगोको बाहर रखा जायेगा।[1] इस सबपर सोचने की जरूरत है। जल्दी कुछ करने की आवश्यकता मुझे महसूस नही हो रही है।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५१) से; सौजन्य : मध्य प्रदेश सरकार। **ट्रान्स्फर ऑफ पॉवर**, जिल्द ६, पृ० १७२ भी

२०८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१५ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। मैंने तुम्हारी जानकारीके लिए तथा तुम्हे कुछ कहना हो तो वह सुनने के लिए रामनारायणका पत्र तुम्हे भेजा था। तुमने ठीक ही लिखा है। नई आई हुई लडकियोको छोडकर जाना अच्छा नही लगता, लेकिन क्या करूँ, मजबूर हूँ। उन लड़कियोसे काम लेना आना चाहिए। देवके साथ बात करने का प्रयत्न करूँगा।

रामनारायण १८ को यहाँसे जायेगा। कृष्णचन्द्रके पत्रपर तुम्हे विचार करना है। उसके मनपर अथवा और दूसरोके मनपर ऐसी छाप क्यो पडती है? हमारे साथी जो कहे, वह सुनना हमारा कर्त्तव्य है। उनके लिए बहुत-कुछ त्याग भी करना चाहिए।

लेकिन तुम यह सब नही जानते, ऐसा नही है। जल्दीमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३८) से। सी० डब्ल्यू० ५५९१ से भी, सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

१. यह वाक्य **ट्रान्स्फर ऑफ पॉवर** से अनूदित है। सी० डब्ल्यू० साधन-सूत्रमें इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है।

२०९. पत्र : विनोबा भावेको

१५ अगस्त, १९४५

चि० विनोबा,

मैं नहीं मानता कि केवल खेतीसे स्वावलम्बन आ सकता है। जो हस्त उद्योग हम अपनायें उनके माध्यमसे हमें स्वावलम्बी होना ही है। यह भी मानता हूँ कि पहले वर्ष ऐसा न हो पाये। लेकिन सारा क्रम पूरा होने पर खर्चके लायक तो आमदनी होनी ही चाहिए। खेतीको मैं हस्त उद्योग नहीं मानता। लेकिन वह करोड़ोंका धन्धा तो है ही; और इसलिए वह हस्तकलाको भले ही विकसित न करे, किन्तु शारीरिक श्रमका पूरा अवसर तो देता ही है। खेतीको सात वर्ष बाद उचित स्थान दिया गया है।

आज हमारे बीच दो सम्प्रदाय हो गये हैं, यह दुःखकी बात है, लेकिन अनिवार्य है। हम रचनात्मक कार्यको अहिंसाका प्रतीक मानते हैं, लेकिन दूसरे लोग उसे अपना-अपना काम करने का साधन मानते हैं—सो भी इसी हद तक कि अगर उसके बिना चल सके तो चला लें। मैं मानता हूँ कि भले ही इसका हेतु अच्छा हो, लेकिन इसमें बुद्धिभ्रंश है।

तुम्हारा स्वास्थ्य तो चिन्ता उत्पन्न करता है। पैरके कष्टसे तुम्हें छुटकारा पाना है। एक इलाज तो भाप है। मालिश आजमाकर देखने लायक है। मैं मानता हूँ कि जो शरीरकी अवहेलना करता है वह आत्माके साथ द्रोह करता है। शरीर आत्माका निवास स्थान है न? इसलिए वह यथाशक्ति अधिकसे-अधिक सावधानीकी अपेक्षा रखता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : विनोबा भावे पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२१०. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

वर्धा
१५ अगस्त, १९४५

भाई राजेन्द्र बाबू,

आपका खत मिला है। एगेथा हेरिसन और कृष्ण मेननको हवाई जहाजसे आपके खत भेज रहा हूं। खतमें पाता हू कि सब फासीवालोको पोलिटिकल माना गया है। इस चीजका समर्थन हो सकता है क्या? जब लोगोमें धूम मच रही थी तब थोड़े बदमाशोने अपना काम कर लिया, उसे भी पोलिटिकल कह सकते हैं? अगर कह सकते हैं तो सिन्धमे हूर [हूर] लोगोने किया उसे भी पोलिटिकल माना जाय। यह सब चीजें मेरे मनमें भरी पडी हुई है तब भी मैं आपके खतको नही रोकता हू क्योंकि पसन्दगीका मौका मुझे नही दिया गया है और खत भी तो है एगेथा हेरिसनको। दूसरे खतमें दस्तखत करने का भूल गये हैं तब भी कृष्ण मेननको भेज तो देता हू। सच्ची बात तो यह है कि फांसीकी सजा ही बुरी चीज है इसलिए फांसी ही निकल जानी चाहिए।

अच्छे नतीजे की मैं किसी प्रकारसे आशा नही करता हूं। तन्त्रको हम समझ ले। वाइसरायको सर्वोपरि सत्ता दी गई है इसलिए यहा कुछ न हो सके तो हाथ धो डालना चाहिए। दूसरी तरहसे वे लोग तन्त्र चला भी नही सकते हैं। इसलिए जो कुछ भी शक्य है वह यही किया जाय। आखिरकी बात हमारे हाथमे लोगमत ही हैं। इस बारेमें लोगमत जाहिरमें कुछ कर नही पाता है और जब कर पाता है तब उसका प्रभाव भी उतना नही पडता जितना पडना चाहिए। महेन्द्र चौधरीके बारेमें फांसीके बाद क्या हो सकता है वह मैंने बताया है।[1] मेरी उम्मीद है कि आपने मेरा वक्तव्य पढ लिया होगा और जिस तरहसे हो सकता है अमल करवायेंगे। अच्छे वकील कुछ करेंगे तो फायदा होगा। शायद जिन लोगको हम बचाना चाहते हैं उनको न बचा सकें, लेकिन भविष्यमें उसका फायदा मिल सकता है।

आपकी तबीयत अच्छी है पढकर मुझे बडा आनन्द होता है। वहासे जल्दी न लौटियेगा। वहा बैठे-बैठे जो कुछ हो सकता है वही कीजिए।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ११३-१४।

२११. पत्र : मुहम्मद सलीमको

१५/१६ अगस्त, १९४५

महमद सलीम साहेब,

आपका खत मिला है। आपको पहले लिखा था वह मैंने देखा था। आपको समझना चाहिए कि मेरे पास निजी पैसे नहीं रहते हैं इसलिए आप मुझे माफ करेंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

महमद सलीम दुकानदार
वेलबाग,
जबलपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१२. सलाह : इंजीनियरोंको[1]

[१६ अगस्त, १९४५ या उसके पूर्व][2]

यदि भारतके इंजीनियर देहाती औजारों और मशीनोंको अधिकसे-अधिक कामका बनाने में अपनी योग्यताका इस्तेमाल करें, तो यह कितना उपयोगी कार्य होगा! यह काम उनकी प्रतिष्ठाके विरुद्ध नहीं होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-८-१९४५

१ और २. यह सलाह लावण्यकुमार चौधरी नामक सिलहटके एक इंजीनियरको, जब वे सेवाग्राम आये थे, दी गई थी। उन्होंने १९४२ के आन्दोलनके दौरान सरकारी नौकरी छोड़ दी थी; देखिए पृ० १४५-४६।

२१३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम
१६ अगस्त, १९४५

प्रिय कु०,

तुम्हारे दो पत्र मिले।

आसवन-यन्त्र (स्टिल) को नुकसान पहुँचा, यह बड़े दुःखकी बात है, लेकिन इसकी पूरी जिम्मेदारी मेरी मानी जानी चाहिए। यन्त्र डॉ० 'आइस'[1] के लिए मँगवाया गया था। लेकिन उसका किसीने खयाल ही नही किया, हालाँकि डॉ० 'आइस' के रोगियोंके लिए आसवित-जल (डिस्टिल्ड वाटर) तैयार किया गया। मैं बाहर था और यन्त्रकी सँभाल नही की गई। जो थोड़ी-सी भरपाई मैं कर सकता हूँ, वह यह कि पूरा दाम यानी १०० रुपये या यदि नया आसवन-यन्त्र सुलभ हो तो उसके लिए तुम्हे जो भी रकम देनी पड़े वह मैं दे दूं। तय तुम्हींको करना है।

बातचीतके लिए तुम शनिवारकी रात ८-३० पर प्रार्थनाके बाद या अगर यह पत्र तुम्हें समयपर मिल गया तो आज रात आ सकते हो।

स्नेह।

बापू

प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा
मगनवाडी
वर्धा

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एम० एस० केलकर

२१४. पत्र : नारणदास गांधीको

१६ अगस्त, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हें आज ऐसा तार किया है: "सब लोग सहमत हैं कि कपास वाली शर्त अन्ततः लाभकारी है। पत्र लिख रहा हूँ—बापू"[1]। तुम्हारा पत्र जिस दिन आया, यदि मैं तुम्हें उसी दिन उत्तर लिख सका होता तो यह तार और वह पत्र तुम्हें एक ही समय मिलते। किन्तु तुम्हारे पत्रका जवाब मैं दूसरोंको दिखाये बिना नहीं देना चाहता था। कारण, यद्यपि मैंने तुम्हें लम्बा पत्र लिखा था तथापि तुम्हारे मनमें तुम जो चाहते हो उसका आग्रह कायम ही रहा। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि मेरा मात्र अपनी ओरसे कुछ भी लिखना ठीक नहीं होगा। अब तुम्हारा पत्र जाजूजी, छगनलाल[2], कृष्णदास[3] और कनैया पढ़ चुके हैं। ये सब मेरी रायसे सहमत हैं। जाजूजीने तो अपनी राय लिखकर भी दे दी है। उसे मैं इसके साथ रख रहा हूँ। उन्होंने अपना अनुभव बताया है। मेरा विश्वास है कि तुम्हारे जैसे व्यक्तिको भी ऐसा अनुभव हुए बिना नहीं रहेगा। "स्वराज्य सूतके धागेमें है", यह मैंने अन्तःप्रेरणासे कह दिया था। किन्तु मैं देख रहा हूँ कि अन्तःप्रेरणा एक चीज है और अनुभवके द्वारा उसकी पुष्टि दूसरी चीज है। और इस समय मैं जो-कुछ कह रहा हूँ वह दूसरी चीज है। इसका विशेष अनुभव दूसरोंको हो रहा है। काठियावाड़में दो लाखके बदले चार लाखकी खादी बनने और बिकने लगे, तो मेरे मनपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। क्योंकि यह बात सिद्ध की जा सकती है कि जो खादी इस तरह पैदा की जायेगी और बेची जायेगी वह केवल गरीबोंके लिए ही होगी। लेकिन इसके लिए चरखा संघ जैसी व्यापक संस्था खड़ी करने की कोई आवश्यकता नहीं है। गरीबोंकी ऐसी खादीका उत्पादन करने के लिए कोई सहकारी संस्था खड़ी की जाये तो और भी कम पैसेमें आजसे कहीं ज्यादा खादी पैदा की जा सकती है। किन्तु उसकी कीमत गरीबकी खादीकी तरह ही हो सकती है। स्वराज्यकी प्राप्तिमें उसका कोई योग नहीं होगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम सम्पूर्ण आत्मविश्वासके साथ खादीकी इस नई रीति और नीतिको अपनाओ और यह अनुभव करो कि यह स्वराज्यकी खादी है। यह सम्भव है कि काठियावाड़ इस नई खादीको स्वीकार न कर सके। ऐसा हो तो

१. साधन-सूत्रमें यह तार अंग्रेजीमें ही उद्धृत किया गया है।

२. छगनलाल जोशी

३. कृष्णदास गांधी, छगनलाल गांधीके पुत्र

भले काठियावाड़में खादीका काम बन्द हो जाये। तुम्हे पता होना चाहिए कि कई देशी राज्योमे खादी चलती ही नही। इसी तरह काठियावाड़मे भी न चले तो उससे स्वराज्यकी खादीको कोई नुकसान नही होगा। मै तो यहाँ तक कहता हूँ कि स्वराज्यकी खादीको चलाने की कोशिश करते हुए यदि गरीबकी खादी मिट जाती है तो उससे गरीब कुछ खोयेगा नही, क्योकि गरीब अपनी आजीविका किसी और तरह कमा सकेगा। किन्तु स्वराज्यकी खादीके चलते गरीबोंकी खादीका पोषण भी हो, तो यह खादीके लिए श्रेयस्कर है और गरीबोके लिए भी। इस प्रकार गरीबोका भी स्वराज्यमें सहज योगदान होगा। इसमे यदि अभी कुछ बाकी रह गया हो तो कनैया वहाँ आ ही रहा है, वह समझायेगा।

तुम्हारी तबीयत बिलकुल ठीक होगी। यदि तुम वहाँसे निकल सकते हो, तो अच्छा यह होगा कि एक बार मुझे मिल जाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

२१५. पत्र : लक्ष्मीनारायण अग्रवालको

सेवाग्राम
१६ अगस्त, १९४५

भाई लक्ष्मीबाबू,

तीनमें से एक भी शर्तका हम स्वीकार नही कर सकते।[1] यद्यपी हम मानते है कि उत्तेजक व्याख्यान है यह, रचनात्मक कार्यका कोई संबध १९४२ जैसे आदोलनके साथ नही है। श्री जयप्रकाशके हिंसात्मक कार्यका विरोध भी करे, लेकिन इन तीनों चीजके बारेमे हम किसी शर्तका स्वीकार नही कर सकते हैं। अर्थात इन चीजोको हम जबरदस्तीसे नही करवायेंगे। अगर हिंदकी स्वतन्त्रता हमारे और सलतन[त]के बीच

१. लक्ष्मीनारायण अग्रवालने लिखा था कि अनुग्रह नारायण सिंहसे अपनी बातचीतमें बिहारके गवर्नरने कहा था :

(क) सरकार रचनात्मक कार्यकर्ताओंको भड़काने वाले भाषण देने की छूट नहीं देगी।

(ख) सरकार उन्हें १९४२ के आन्दोलन-जैसा कोई जन-आन्दोलन छेड़ने का अवसर नहीं देगी।

(ग) सरकार कांग्रेसकी गतिविधिपर कड़ी निगरानी रखेगी, क्योंकि न गांधीजी ने और न किसी और कांग्रेसीने जयप्रकाश नारायणकी हिंसात्मक कार्रवाइयोंकी निन्दा की थी।

एक ही चीज है तो यह सब भेदका मतलब क्या? सीधी बात यह है कि पकड़ने में गलती बिहार सल्तन[त]की है और गलती कबूल करने के बदले हमपर बोज डालना चाहते हैं। हम उस बोज [को] न उठाय भले हमको मलीयामेठ[1] कर दें। हमारा शांत कामको रोक दें। फिर भी हम तो आगे ही बढेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१६. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

१६ अगस्त, १९४५

भाई प्रफुल्ल बाबू,

तुम्हारे दो खत मिले। एक तो लावण्यकुमारके बारेमें, दूसरा मेरे आने के बारेमें।

लावण्यकुमारको मिला हूं और इंजीनियरके[2] बारेमें लिख दिया है। उन्होंने यहांका देख भी लिया है।

अब मेरे आने के बारेमें। आना है इतना मैंने कह दिया है। और अभी मेरे लिए रास्ता खुला है वह भी मैंने गवर्नरसे जान लिया है। कब आना वह प्रश्न है। अक्टोबरके पहले तो आ ही नहीं सकता हूं लेकिन अक्टोबरसे तुम डराते हो। मुझे इतना डर नहीं है, लेकिन अक्टोबरमें नहीं ही आना है तो बहुत दूर हो जायेगा। इसलिए देखभाल करके लिखो। तुमको पता होगा कि मैं अक्टोबरमें कलकत्ता रहा हूं और मुसाफिरी भी की है और जिस जगहपर तुम लोग रह सकते हैं वहां मैं क्यों नहीं रह सकता हूं, वह भी मेरे सामने प्रश्न है। मेरी यह राय है कि इस बारेमें तुमारे सतीश बाबूको भी मिल लेना। मैं जानता हूं कि यह कुछ कठिन बात है। लेकिन बननी चाहिए।

कलकत्तामें मेरा इरादा सोदपुरमें रहने का रहेगा। शरत बाबू[3] के वहां जाने का आग्रह रह सकता है यह मैं जानता हूं। इस बारेमें तुम दोनों मिलकर मुझे कहो। मैं निश्चित मुद्दतके लिए नहीं आ रहा हूं। बंगालके दुःखमें ओतप्रोत हो जाना है। मिदनापुर जाना है। चटगांव भी जाना है। मेरा शरीर कहां तक काम देगा उसका पता नहीं है और लोगोंकी भीड़ जिसपर कुछ नियमन (डिसिप्लिन) न हो और आवाज होती रहे वह मुझसे बर्दाश्त न हो सकेगी।

१. मटियामेट
२. देखिए पृ० १४१।
३. शरतचन्द्र बोस

हा-हा मत करो, जिनको मिलना ही चाहिए उनसे मिल लो और बता दो। भाई सुधीर घोषको भी मिलो। उनका परिचय मुझको काफी हुआ है और मेरे आने में उनका हाथ है। ताताकी कम्पनीमें वे काम करते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१७. पत्र : सुशीला गांधीको

[१८ अगस्त, १९४५ के पूर्व][1]

बिलकुल है।[2] लेकिन मुझे तो आज ही मालूम हुआ। जर्मनीमें उसका विवाह हुआ था, यह तो मुझे मालूम था। लेकिन विवाहित होकर भी वह अब अविवाहित जैसा हो गया था। लेकिन यह उसकी तीसरी शादी होगी, इस बातका पता तो अभी चला और तेरे जरिये। तूने आभासे बात की और आभाने मुझसे कहा। ऐसा होते हुए भी, मैं दिये हुए वचनको मान्यता देता हूँ, इसलिए अपने वचनका पालन करने के लिए—यह उसका तीसरा विवाह है यह जानकर भी—मैं यह विवाह करा दूंगा। लेकिन इस उदाहरणसे मुझे यह सीख अवश्य लेनी चाहिए कि जहाँ तक बने वचन दिया ही न जाये। लेकिन यह तो पानी पीने के बाद जात पूछने जैसी बात हुई। लेकिन फिर "जब जागे, तभी सबेरा," यह भी तो एक कहावत है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५५) से

१. पत्रसे जाहिर है कि यह १८ अगस्त, १९४५ को ग० ना० म० तेन्दुलकरके नाम लिखे पत्रके पूर्व लिखा गया था; देखिए अगला शीर्षक भी।

२. सुशीला गांधीने गांधीजीसे पूछा था कि क्या इन्दुमतीका विवाह एक ऐसे व्यक्तिसे करना, जिसके दो विवाह पहले ही हो चुके हैं, उनके आदर्शके विरुद्ध नहीं है।

२१८. पत्र : ग० ना० म० तेन्दुलकरको

१८ अगस्त, १९४५

प्रिय तेन्दुलकर,

बहुत-से लोग इस बातका विरोध कर रहे हैं कि कल मैं तुम्हारा विवाह सम्पन्न करा रहा हूँ। उनमें मणिलाल और अब सुशीला भी है। सुशीलाका कहना है कि यह तुम्हारा तीसरा विवाह होगा, हालाँकि मैं हमेशाके लिए एक पुरुष एक पत्नी और एक स्त्री एक पतिके नियममें विश्वास करता हूँ। मैं तुम्हारी नई जर्मन पत्नीके बारेमें तो जानता हूँ, लेकिन पहली पत्नीके बारेमें कुछ नहीं जानता। मेरा लड़का कहता है कि इस विवाहसे मेरा कोई आदर्श साकार नहीं होगा तथा न तुम और न इन्दु ही मेरी इस इच्छाका पालन करोगे कि तुम लोग देशके पराधीन रहते प्रजोत्पत्ति न करो। मैंने उन्हें बता दिया है कि मैं अपना वचन भंग नहीं कर सकता, और मेरा यह वचन न अपने-आपमें अनैतिक है और न वह स्पष्ट रूपसे किसी अनैतिक प्रयोजनके निमित्त है। इसलिए वचन पूरा किया जायेगा (यानी प्रभुकी इच्छा हुई तो)। लेकिन तुम जैसा उचित समझो वैसा उत्तर अवश्य दो।

अब तुम्हारी कलकी तैयारीके बारेमें :

(१) दोनोंको परिणय-सूत्रमें बँधने तक उपवास करना चाहिए। फल लिये जा सकते हैं।

(२) तुम दोनों 'गीता' का बारहवाँ अध्याय पढ़ोगे और उसके अर्थका मनन करोगे।

(३) दोनोंमें से प्रत्येक नापकर जमीनके अलग-अलग टुकड़ोंकी सफाई करोगे।

(४) दोनों गोशालामें गायोंकी देखरेख करोगे।

(५) दोनों कुएँकी जगह साफ करोगे।

(६) दोनों एक-एक संडास साफ करोगे।

(७) दोनों प्रतिदिन कातोगे और ये सारे काम इस इरादेसे करोगे कि यथासम्भव ये यज्ञ प्रतिदिन सम्पन्न करोगे।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९५४) से। सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर

२१९. सूतदान

हम जानते हैं कि श्री नारणदास गांधी खादीके अनन्य भक्त हैं, और उनकी निष्ठा यहाँ तक गई है कि वे खादीमें दरिद्रनारायणका दर्शन करते हैं। इसलिए वे खुद रोजमर्रा कई घंटा कातते हैं। राजकोटमें राष्ट्रीय शाला चलाते हैं, तो उसमें भी उन्होंने चरखेको बड़ा स्थान दे रखा है। कई सालोंसे चरखा द्वादशीके निमित्त सूत इकट्ठा करते हैं और साथ-साथ रुपये भी। इस मरतवा सूत्रयज्ञको वे बहुत दूर तक ले गये हैं और सारे हिन्दुस्तानके सामने उन्होंने न केवल कातने की बल्कि सूतको दानमें दे देने की प्रवृत्ति बढ़े ऐसी चाह जाहिर की है। इसमें सब कोई हिस्सा ले सकते हैं। खयाल रहे कि सूतका दान उन्हें ही मिलना चाहिए, ऐसी उनकी माँग नहीं है। वह चरखा सघको भले दिया जाये। उनकी ख्वाहिश तो यह है कि लोग दिलसे ऐसा दान देने लगें व कुल मिलाकर देश-भरमें कताई कितनी हुई व सूतका दान कितना दिया गया इसके आँकड़े उनके पास पहुँचायें। सबकी जानकारीकी गरजसे तो ये आँकडे केवल चरखा सघके दफ्तरमें पहुँचना पर्याप्त है। मगर जिस शख्सने इस कल्पनाको जन्म दिया है, उसके लिए साधना की है, उसे पोसा है, उनके पास आँकडे पहुँचाने से उनका उत्साह व श्रद्धा बढेगी और इस कामको अधिक बल मिलेगा। ये आँकड़े उनके पास जाने से इसकी तरक्की कहाँ तक हुई, इसका पूरा चित्र उनके सामने खडा होगा व ज्यादा तरक्कीके लिए उनका चिन्तन व उनकी सूझ सभीके लिए कामदेह सावित होगी।

हर साल वे जो करते हैं उसमें मेरी सम्मति लेते हैं। इस साल मैंने सूत ही का दान लेना ठीक समझा है और वैसी सूचना [सुझाव] उनकी ही है। मैंने तो सूत चलन [विनिमय-साधन]की कल्पना की है व चि० नारणदासको उसका सर्राफ कहा है। उसके लिए उनमें योग्यता और पवित्रता दोनोका सन्तुलन है, ऐसी मेरी मान्यता है। चलनके प्रचलित अर्थमें सूत [का] शायद सम्पूर्ण चलन आज न हो सके। आज तो अहिंसक स्वराज्यकी दृष्टिसे कातने वालोकी सख्या बढाना है।

सूतको चलन बनाने के स्थानिक प्रयत्न नालवाडीमें हुए हैं। वेझवाड़ामें जारी हैं। दोनो जगह कल्पना भिन्न थी। यह प्रयोग सारे हिन्दुस्तानके लिए व्यापक हो सकता है। ऐसे चलनके लिए एक सालकी आवश्यकता रहती है। हर घर टकसाल है। आज यह कल्पना मात्र है। फिलहाल जितने कातने वाले हैं वे सूत्र रूप सिक्के निकालेंगे और उसका दान करेंगे। यह दान चरखा सघकी हरेक शाखा इकट्ठा करेगी।

वह सूत चरखा संघका रहेगा। उसका केवल हिसाव ही चि० नारणदासको भेजा जायेगा। मालिकी चरखा संघकी रहेगी। जो सूत चि० नारणदासको सीधा भेजा जायेगा या जो वे खुद इकट्ठा करेंगे उसकी मालिकी संरक्षककी हैसियतसे नारणदासकी रहेगी। उसका खर्च एवं विनियोग मुझे पूछकर किया जायेगा। चि० नारणदास हर साल पैसे व सूत इकट्ठा करते हैं, उसका विनियोग मेरी सम्मतिसे होता है। इसी तरह इस वर्ष भी होगा।

इस वर्ष पैसे लेने की वात छोड़ दी गई है। इसलिए जो पैसा देना चाहते हैं उनके पैसेका स्वीकार तो किया जायेगा; लेकिन चरखा संघ वह माँगने का प्रवन्ध नहीं करेगा। यही नियम चि० नारणदासको भी लागू होगा। लक्ष्य तो सूतका ही दान लेने का होगा।

चरखा संघमें जो सूत इकट्ठा होगा वही उसकी पूंजी होगी। और आइंदा तो चरखा संघ अपनी प्रवृत्तिके लिए पैसे इकट्ठे नहीं करेगा। लेकिन सूतसे ही अपनी प्रवृत्ति चलायेगा।

जो सूत इकट्ठा होगा वह वेचा नहीं जायेगा। लेकिन उसकी खादी वनेगी और वह वेची जायेगी। सूत लिया जायेगा, दिया नहीं जायेगा। उसका जो सामान वनवाया जायेगा वही दिया जायेगा एवं वेचा जायेगा।

अगरचे खादी विक्रीमें अंशत: सूत लेने का नियम तो है ही व पूरे सूतके वदलेमें खादी देने का सिलसिला भी कहीं-कहीं जारी हुआ है, फिर भी चरखा जयन्तीके निमित्त तो सूतका दान ही लेने की कोशिश की जायेगी। मेरी ख्वाहिश तो यह है कि सूतके वदलेमें खादीके अलावा दूसरी ग्रामोद्योगकी चीजें भी मिल सकें। मगर ऐसा समय आखिरी कदम उठाने पर ही आ सकता है। इस वक्त तो मैंने सूत चलन की आरम्भिक कल्पना ही रखी है। इसमें हिसावकी सरलता है और सूत-रूपी पैसे की वृद्धि व्याज देने से नहीं, लेकिन कातने वालोंकी मेहनतसे होती है। अगर इस योजना को लोग समझ जायें तो सूत करोड़ोंका माल आसानीसे पैदा करने का जरिया वन सकता है। शारीरिक मेहनत द्रव्य वन जायेगी और आसानीसे पूंजीदारोंका मुकावला करेगी।

सेवाग्राम, १८ अगस्त, १९४५

खादी-जगत्, सितम्वर, १९४५

२२०. पत्र : विनोबा भावेको[1]

सेवाग्राम
१८ अगस्त, १९४५

चि० विनोबा,

. नई तालीमके मामलेपर मै गौर करूँगा। अभी आशादेवी[2] यहाँ नही है।

'रामायण' का जो सक्षिप्त रूप मैने बनाया है उसकी पूरी प्रति मेरे पास नही है। पर मै तुम्हे उसकी चिह्नित प्रति भेज रहा हूँ, जिससे तुम यह जान सकोगे कि मैने किन सिद्धान्तोपर काम किया है। जहाँ तक हो सका, मैने ऐतिहासिक या वर्णनात्मक अश अखण्डित रखने की कोशिश की है। कुछ क्षेपक अपने-आपमें उपयोगी हैं, फिर भी मैने उन्हे बिलकुल छोड दिया है। जो विषय ज्यादा लम्बे खिच गये है तथा जो अश कथाके लिए गैर-जरूरी लगे वे भी मैने छोड दिये हैं। मैंने सामान्यतया वे अश भी छोड़ दिये है जहाँ नारीका उल्लेख अपमानजनक शब्दोमे किया गया है। लेकिन तुलसीदासके विचारोका पता लग सके, इसलिए कुछ ऐसे अश भी रहने दिये हैं। जहाँ तक मैं अभी याद कर सकता हूँ, मैने इन्ही सिद्धान्तोपर काम किया है। लेकिन तुम इतने कुशाग्रबुद्धि हो कि पुस्तकमें लगे चिह्नोंसे और भी सिद्धान्त, जिनका उल्लेख यहाँ न हुआ हो, जान जाओगे।

जो काम मैं किसीके समझाने-बुझाने से करने को तैयार न था वह असफलताने मुझे करने को मजबूर कर दिया। मेरा मतलब है कि कलसे मैंने सस्कृत 'गीता' के स्थानपर 'गीताई'[3] का पाठ करना शुरू कर दिया है। मैने देखा कि संस्कृत किसीने नही सीखी। वही पुराने सदस्य है, लेकिन वे भी सस्कृत या तो पढते नही या पढ नही सकते—इतनी भी नही कि 'गीता' समझ सकें। और फिर वे 'गीता' समवेत रूपसे गा नही सकते थे। और इससे ज्यादा दु.ख मुझे इस बातका हुआ कि यद्यपि पूरी 'गीता' का पाठ सुबहकी प्रार्थनामें ही होता था, फिर भी कुछ सदस्य जैसे ही पाठ शुरू होता था, उठकर बाहर चले जाते थे। पूछने पर मुझे पता चला कि कारण बहुत छोटा है। मैं उसे पहले नही जानता था। परसो ही मुझे इसका पता चला,

१. किशोरलाल मशरूवालाने, जिन्होंने यह पत्र हरिजन में दिया, इसका पहला अंश रोक लिया था, क्योंकि वह "वर्तमान चर्चाके लिए बिलकुल उपयोगी नहीं" था। पत्र मूलतः गुजराती में था, जो उपलब्ध नहीं है।

२. एडवर्ड डब्ल्यू० आर्यनायकम् की पत्नी

३. विनोबा भावे द्वारा मराठी में किया गया गीता का पद्यानुवाद

और मैं तुरन्त इस नतीजेपर पहुँचा कि यदि 'गीता' का पाठ हिन्दी, मराठी या गुजरातीमें किया जाये तो शायद 'गीता' में दिलचस्पी जल्दी पैदा की जा सके, क्योंकि तब लोग उसका अर्थ अधिक आसानीसे समझ सकेंगे। मैंने 'गीताई'[1] से शुरू इसलिए किया है कि इस हिस्सेमें मराठीका स्थान प्रमुख है। जहाँ तक सुबहकी प्रार्थना में शरीक होने वाले सदस्योंका सम्बन्ध है, वे इतने कम हैं कि मैं कौन-सी भाषा चुनता हूँ, इसका अधिक असर नहीं पड़ेगा। लेकिन 'गीताई' का संगीत मुझे बड़ा मधुर लगा है। हो सकता है कि ऐसा इसलिए हो कि मैंने शिवाजी[1] को इसे गाते कई बार सुना है और वह मुझे अच्छा लगा है। किशोरलालका (गुजराती) अनुवाद तो है, लेकिन मैं उसके संगीतको अभी तक आत्मसात् नहीं कर सका हूँ। मैंने किसीको उसे मधुर स्वरमें गाते नहीं सुना है। बारडोलीमें उसे सुनने का एक मौका मिला था, लेकिन वह अपर्याप्त था और मेरे कान उसमें रम नहीं पाये। हरिभाऊने[2] हालमें ही हिन्दी 'गीता' प्रकाशित की है। लेकिन मैं अभी तक उसे जाँच भी नहीं सका हूँ, इसलिए उसे छूना पसन्द नहीं किया। इसलिए मैंने 'गीताई' से शुरू किया है।

यह सब लिखने का तात्कालिक कारण यह है कि कल शिवाजी दिख गया। यदि वह यहाँ कुछ समय रुकने वाला हो और 'गीताई' के पाठके इन आरम्भिक दिनोंमें उसे आश्रमको कमसे-कम एक सप्ताहका समय देने को राजी किया जा सके तो मुझे बड़ी खुशी होगी। जो लोग चाहें उन्हें वह ऐसा प्रशिक्षण दे सकता है जिससे वे उसके ढंगसे पाठ कर सकें और उसके संगीतको ग्रहण कर सकें।

बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १६-५-१९४८

२२१. पत्र : श्रीमन्नारायणको

१८ अगस्त, १९४५

चि० श्रीमन,

मैंने पढ़ने का[3] शुरू तो किया लेकिन पूरा न कर सका। तुम्हारे तो कल सवेरे जाना है उसके पहले नहीं भेज सकुंगा। पुना या मुम्बईसे भेजुंगा। तुम तुरतमें पुना आ जाओगे तो ठीक ही है।

[बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०७

१. विनोबा भावेके अनुज
२. हरिभाऊ उपाध्याय
३. श्रीमन्नारायणकी लिखी पुस्तक गांधीयन कांस्टिट्यूशन

२२२. पुर्जा : कृष्णनाथ शर्माको

१९ अगस्त, १९४५

आपको मेरे साथ चलने की या मेरे पास कहीं और आने की जरूरत नहीं। मैं आपकी बात[1] समझ गया हूँ। वह कार्य-समितिके सामने जरूर रखी जानी चाहिए।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२३५) से

२२३. पत्र : सरला देवी चौधरानीको

१९ अगस्त, १९४५

प्रिय सरला,

दीपक[2]ने मुझे तुम्हारे सम्बन्धमें बहुत करुणाजनक विवरण दिया है। जन्म और मृत्युकी तरह रोग भी हमारा अभिन्न हिस्सा है। जो-कुछ तुमपर गुजरे प्रभु तुम्हें सब सहन करने की शक्ति दे।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. असमकी स्थितिसे सम्बन्धित। इस विषयमें कृष्णनाथ शर्माने गांधीजी की सलाह माँगी थी।

२. सरला देवी चौधरानीके पुत्र दीपक दत्त चौधरी। देखिए पृ० १५५ भी।

२२४. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको

१९ अगस्त, १९४५

भाई कानजी,

तुम्हारा पुष्पाको लिखा पत्र मुझे अच्छा लगा। पुष्पा ठीक चल रही है। मैं तो उसे चेताता रहता हूँ कि यदि उसका मन तनिक भी व्रजलालकी ओर झुकता है तो उसे उससे विवाह कर लेना चाहिए और तुम्हें शान्ति देनी चाहिए। किन्तु वह अपनी बातपर अड़ी हुई है। तुम्हारे प्रति उसके मनमें आदर तो है ही। मुझे लगता है कि वह तुम्हारे नामको बट्टा नहीं लगायेगी। यदि वह अपने निश्चयपर अटल बनी रहे और साथ-साथ भगवानमय बन जाये, तो तुम्हारे नामको उज्ज्वल करेगी। मेरा तो यह सुझाव है कि तुम उसे अपने निश्चयपर दृढ़ रहने के लिए बढ़ावा दो। मैं चाहता हूँ कि तुम दुःखी न हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१९ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

१. कंचनको रति-सुख चाहिए। तुममें भी आसक्ति तो है ही। तुम्हारा उसके साथ रहना और रति-सुख भोगना कोई अजीब बात नहीं होगी। आत्म-दमनसे काम नहीं बनेगा। अतः जो तुम्हारे लिए स्वाभाविक हो, वह करना। कंचनकी इच्छाकी उपेक्षा करने से उसे हानि पहुँचेगी। वह भली स्त्री है। सेवाभावी है। अन्तमें उसे इन दोनों गुणोंसे हाथ धोना पड़ेगा।

२. हीरामणिका मामला आशादेवीके आने तक जैसा चल रहा है वैसा ही चलने दो।

३. पारनेरकरका पत्र पढ़ना और उसके साथ बात कर लेना। खेतके बारेमें भी, जो उचित समझो, करना। किशोरलालसे मदद लेना।

४. कृष्णचन्द्रका मामला तुम्हारे लिए विचारणीय है। उसके खाने की आदतके बारेमें तथा और बातोंके बारेमें भी उससे प्रेमपूर्वक तथा मुक्त मनसे बात करना। तुम दोनोके स्वभाव एक-दूसरेसे मिलते नही हैं, यह बात समझ लेना उचित होगा।

५. यह ठीक है कि मैं जो सूत कातता हूँ वह आश्रमके खातेमें जाये। मेरे आने पर मुझसे सूत कतवा लेना। और लोग जो आश्रमकी रूईसे सूत कातें, वह कता हुआ सूत भी आश्रमके खातेमें जाना चाहिए। जो कातता है, वह आश्रमके लिए ही कातता है।

६ बहनोके बारेमें जब मुझसे पूछना हो, पूछना।

७ अपने स्वरको तुम प्रयत्नसे सुधार सकोगे। अगर सीखने का समय न मिलता हो, तो तुम्हे गाना ही नही चाहिए।

८. कक्षा केवल 'गीताई' के लिए ही चलाओ।

९ यहाँके खर्चके विषयमें, टिकट खरीद लिया, अच्छा किया। इस मामलेमें अधिक कुछ मेरी समझमें नही आयेगा।

१०. शंकरनजी अगर और किसी तरह अपनी तबीयत ठीक नही रख सकते और अपना भोजन अलग बनाना चाहे तो बनाये।

११. रामचन्द्रन कुछ समयके लिए ही है।

१२ लाइब्रेरीकी पुस्तकें एक जगह एकत्र की जा सकती हैं। जिसे चाहिए, वह माँग ले और अच्छी स्थितिमे लौटाये।

१३. रमणभाईके बारेमें जैसा किशोरलालभाई कहे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९१४) से। सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

२२६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१९ अगस्त, १९४५

चि० मु[न्नालाल],

'गीताई' न चलाना चाहो तो मेरा आग्रह नहीं है, किन्तु मैं ऐसा मानता हूँ कि भूल कर रहे हो।

[२] . . . [1]का पत्र भेज रहा हूँ। बगीचेमें खादके सवालकी बात अभी रह जाती है।

३. कंचनके विषयमें मैं जो कहता हूँ वह यदि ठीक न हो, तो जो ठीक हो सो करना। लेकिन इस सवालको अधरमें लटकता हुआ मत छोड़ो।

४. रमणभाईके बारेमें जो उचित जान पड़े।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९१६) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२२७. पत्र : दीपक दत्त चौधरीको

१९ अगस्त, १९४५

चि० दीपक,

तेरा खत मिला। तूने ठीक खबर दी। जो इलाज ले सकते हैं सो तो लिया ही होगा। हम दूसरा कर भी क्या सकते हैं? ईश्वरके ही आधीन परिणाम रहता है ना? तू क्या करता है?

बापुका आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

२२८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

बम्बई जाते हुए
१९ अगस्त, १९४५

चि० जवाहरलाल,

तुमारा खत मिला है। चर्खा सघकी काश्मीर शाखाकी थोडी बात तो मै जानता हू। दवाखाना क्यो बध हुआ मै नही जानता हू। तुमने मुझको लिखा सो तो अच्छा हुआ। मैने खतकी नकल जाजूको भेज दी है। मै तो मुबई जा रहा हू। वहासे सरदारको लेकर पुना जाऊगा। वहा कितना रहना होगा मुझे पता नही है। जाजूजी का जवाब आने पर फिर लिखुगा।

तुमको काश्मीरकी मुसाफरीसे फायदा होना ही था।

मौलाना साहबपर क्या हमला हुआ था?

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे गाधी-नेहरू पेपर्स। सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

२२९. कैसे करें?

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ जैसे परिणाम दिखा सकता था वैसे नही दिखा पाया है। मैंने अपने मनमे अक्सर यह प्रश्न पूछा है। अब इस सम्बन्धमे क्या-कुछ किया जा सकता है यह मालूम करने के लिए मै यहाँ सघके कार्यकर्ताओसे अपने मनकी बात कहने व परामर्श करने का प्रयास करता हूँ।

हम जैसे-तैसे काग्रेसकी नकल करते है और कमेटियाँ बनाकर सोचते है कि इस तरह हम गाँवकी दस्तकारियोको लोकप्रिय बनायेंगे और आगे बढायेंगे। हम भूल जाते है कि काग्रेस एक लोकतान्त्रिक सस्था है, इसलिए उसे तो लोकतान्त्रिक पद्धतिसे और अपने ही बीचसे चुने व्यक्तियोकी कमेटियोके माध्यमसे ही काम करना है। दूसरी ओर, अ० भा० ग्रा० सघ और इसी तरहकी दूसरी सस्थाएँ कुछ खास प्रयोजनोको सिद्ध करने के लिए स्वगठित हुई है और ये प्रयोजन बहुधा ऊँचे दर्जेके तकनीकी कौशलकी अपेक्षा रखते है। जो लोग उस प्रयोजन विशेष के मर्मको समझते हैं उनसे वे पैसे लेती हैं और उस प्रयोजनके लिए प्रयुक्त होने वाले उस पैसेका न्यासी बन जाती हैं। हम इस विषयसे सम्बन्धित साहित्य इकट्ठा

करते हैं और उनका अध्ययन करते हैं। हम विशेषज्ञोंकी तलाश करते हैं और उन्हें अपने यहाँ नियुक्त करते हैं, और यदि ऐसे विशेषज्ञ नहीं मिलते, तो हम खुद विशेषज्ञ बन जाते हैं। यह काम हमारे ज्ञान, लगन और परिश्रमके ही अनुपातमें प्रगति करेगा। खुद यह काम अलोकप्रिय या अपरिचित हो सकता है। ऐसा हो तो हमें उसे लोकप्रिय और परिचित बनाना है। चाहे लोकतान्त्रिक ढंगसे शासित देश हों या निरंकुश रीतिसे शासित, ऐसी संस्थाओंको दुनिया-भरमें काम करना ही है। दोनों स्थितियोंमें उन्हें या तो सरकारी संरक्षणमें या सरकारी विरोधके बावजूद काम करना है। कार्यपद्धति निरंकुशतन्त्र और लोकतन्त्र दोनोंमें समान होगी। जहाँ तक हमारी बात है, अ० भा० चरखा संघ, अ० भा० ग्रा० संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ आदि यद्यपि स्वायत्त संस्थाएँ हैं तथापि वे कांग्रेसकी सृष्टियाँ हैं और इसलिए उन्हें सभी कांग्रेसजनोंकी और जिस हद तक वे सम्पूर्ण भारतका प्रतिनिधित्व करते हैं उस हद तक देश-भरमें रहने वाले भारतीयोंके उत्साहमय समर्थनकी जरूरत है। लेकिन इसके लिए यह जरूरी है कि पहले हम अपेक्षित किस्मके विशेषज्ञोंसे भारतको भर दें। इसलिए सबसे जरूरी बात यह है कि ईमानदार विशेषज्ञोंकी एक केन्द्रीय समिति हो। सफलताका और कोई सुगम मार्ग नहीं है। कमेटियाँ और एजेंट भी तब तक कुछ करके नहीं दिखा सकते जब तक कि वे अपना काम जानने वाले विशेषज्ञ न हों। क्या कोई तेजस्वीसे-तेजस्वी एम० ए० भी गाँवमें — उदाहरणार्थ मान लीजिए — चरखा शुरू कर सकता है या ताड़से गुड़ बनाने या गाँवमें मिलने वाले कूड़े-कचरे, मल तथा गोबरसे खाद बनाने के कामका चलन आरम्भ करवा सकता है? हमें इन विषयों तथा ऐसे ही दूसरे विषयोंके विशेषज्ञ चाहिए। अगर हमारी अपनी सरकार होती तो वह चाहे जितनी ढीली होती, हमारे यहाँ ऐसे तकनीकी संस्थान होते जहाँ सात लाख गाँवोंमें आज चलने वाली, बल्कि पहले भी चलने वाली, सभी उपयोगी प्रवृत्तियोंका अध्ययन किया जा सकता। दुर्भाग्यवश हमारी अपनी सरकार नहीं है। इसलिए हमारी संस्थाओंको प्रचारकके साथ-साथ ऐसे संस्थान भी बन जाना है। लेकिन प्रचारक वे तभी बनेंगी जब वे विशेषज्ञ संस्थान बन जायेंगी। यदि मैंने यहाँ सही तस्वीर पेश की है, तो भले ही उसके अनुरूप सुधार करना कठिन और हमारे अभिमानको ठेस पहुँचाने वाला भी हो, हम उसे करें अवश्य।

बम्बई जाते हुए ट्रेनमें, २० अगस्त, १९४५

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल। ग्राम उद्योग पत्रिका, जिल्द १, पृ० ३६८-६९ भी

२३०. प्रस्तावना : 'द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स'की

'प्रैक्टिस एंड प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' पुस्तिकाकी तरह 'द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स' भी डॉ० कुमारप्पाकी जेलमें लिखी पुस्तक है। यह समझने में उतनी आसान नहीं है जितनी कि पहली है। इसे पूरी तरह समझने के लिए दो-तीन बार सावधानीसे पढ़ने की जरूरत है। जब मैंने पाण्डुलिपि उठाई थी तब मुझे बड़ी जिज्ञासा थी कि इसमें क्या हो सकता है। पहले अध्यायसे मेरी जिज्ञासा शान्त हो गई और फिर मैं इसे बिना थके अन्त तक पढ़ता चला गया और साथ ही लाभान्वित भी हुआ। हमारे ग्रामोद्योगोंके इस डॉक्टरने दिखाया है कि ग्रामोद्योगोंके बलपर हम, आज हमारे चारों और दिखाई देने वाली, इस अस्थिर अर्थव्यवस्थाके बदले स्थायी अर्थव्यवस्थाको प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने इस प्रश्नका समाधान प्रस्तुत किया है — क्या शरीर आत्माको पराभूत कर उसका हनन करेगा या आत्मा शरीरपर विजयी होकर उस नश्वर शरीरके माध्यमसे अपनेको व्यक्त करेगा जिसे अपनी चन्द आवश्यकताओंकी शुभ सन्तुष्टिके उपरान्त अनश्वर आत्माके उद्देश्यकी पूर्तिमें सहायता देने का पूरा अवकाश रहेगा? यह है 'सादा जीवन उच्च विचार'।

मो० क० गांधी

बम्बई जाते हुए ट्रेनमें, २० अगस्त, १९४५

[अंग्रेजीसे]
द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स

२३१. तार : दीपक दत्त चौधरीको

बम्बई
२० अगस्त, १९४५

दीपक चौधरी
८/१, न्यू रोड
अलीपुर, कलकत्ता

खुशीकी बात है कि तुम्हारी माता तुमपर देशके प्रति अपने दायित्वका भार उठाने को मुक्त छोड़कर स्वयं कष्टसे मुक्ति पाकर शान्ति-लोकमें सिधार गई। कल पत्र[1] लिखा है। स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

बिड़ला हाउस
बम्बई
२० अगस्त, १९४५

चि० कु०,

साथमें तुम्हारी पाण्डुलिपि, मेरी प्रस्तावना[2] और मेरा लेख[3] है। यदि हो सका तो ये सब रजिस्टर्ड डाकसे भेजे जायेंगे। लेख और प्रस्तावना सावधानीसे लिखी गई हैं। यदि तुम्हें लेख ठीक न लगे, तो तुम मुझसे कुछ भी लिये बिना काम चला सकते हो। तुम्हें कमसे-कम एक दस्तकारीमें पूरी महारत हासिल करनी है और हिन्दुस्तानीका कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त करना है। तुम इन दोनोंके लिए आसानीसे

१. देखिए पृ० १५५।
२. देखिए पृ० १५८।
३. देखिए पृ० १५६-५७।

समय निकाल सकते हो। अपना लेटर-हेड नागरी और उर्दू लिपिमें छपवाओ और चाहो तो उसमें रोमन लिपि भी रखो। जो अभी हैं उनपर उर्दू और नागरीकी रबर की मुहर लगाकर काम लो।

स्नेह।

जल्दीमें,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७८) से

२३३. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

बम्बई
२० अगस्त, १९४५

चि० चिमनलाल,

सफरके दौरान तुम्हारा खयाल आता रहा। तुम मन मारकर कुछ मत करना। हृदयपूर्वक किया गया काम सन्तोष और शान्ति देता है। भले शारदा[1] रहे या चली जाये, किन्तु यदि हम अपने धर्मका पालन कर सके तो इतना काफी है। प्रसन्न-चित्त रहना और अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२३४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२० अगस्त, १९४५

चि० किशोरलाल,

मैं खूब सोया, और मुझे अच्छा लगा। रास्तेमें लोगोंने जरा भी नहीं सताया। सभी लोग जैसे-तैसे सो लिये।

यहाँ रिमझिम वर्षा तो हो ही रही है। यह अच्छा हुआ कि तुम नहीं आये। अब यदि पूनामें हवा खुश्क होगी तो मैं तुम्हे आने के बारेमें सूचित करूँगा। फिलहाल तो वहाँ जो मदद दे सको, सो देना। बहुत-सी समस्याएँ हैं जो छोटी मगर बहुत नाजुक हैं। आश्रमकी बुआईकी जमीनका प्रश्न तो है ही। मुन्नालालकी मान्यता है कि पारनेरकर उसे सँभाल नहीं सकते। इसपर ठीकसे सोचना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे· प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. चिमनलाल शाहकी कन्या शारदा गो० चोखावाला, जिसका विवाह गोरधनदास चोखावालासे हुआ था।

२३५. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२० अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

हम लोग यहाँ अच्छी तरह पहुँच गये। तुम्हें परेशान नहीं होना चाहिए। कृष्णचन्द्रके साथ निःसंकोच मनसे पूरी बात करना। आश्रमकी वाड़ीके बारेमें पारनेरकरसे मिलना। किशोरलालभाईसे बात करना। बाड़ीकी देखभाल किसे करनी है? उसे ठीक हालतमें रहना चाहिए। खादकी व्यवस्था करना। पारनेरकरको मजदूरोंकी कमी हो तो इस कमीको आश्रमवासी पूरा करें — जैसा कि उन्होंने एक बार पहले भी किया था। होशियारीके बच्चेका खयाल रखना, होशियारीका भी। वहाँ इन दोनोंका विकास होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३२) से। सी० डब्ल्यू० ५५९२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२३६. पत्र : पुष्पा देसाईको

२० अगस्त, १९४५

चि० पुष्पा,

तू वहाँके काममें पूरी तरह लीन हो जाना। अपने शरीरका खयाल रखना। अगर तू उसे भगवानका मन्दिर समझेगी, तो तुझे सच्चे अर्थमें भगवानके दर्शन होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६१) से.

२३७. पत्र : शारदाबहन और गोरधनदास चोखावालाको

२० अगस्त, १९४५

चि० बबुडी,

तू बीमार पडती है और सबको चिन्तामें डालती है। रामनामकी रट लगा, अच्छी हो जा, और रामनामकी महिमाका गान कर। चिमनलाल तेरे पास आनेकी रट लगाये रहता है, लेकिन आश्रम-धर्म उसे रोकता है। अगर तू सच्चे दिलसे लिख सके तो लिख देना कि तेरा मन शान्त है और तेरी कोई विशेष इच्छा नहीं है कि वह वहाँ आये। शकरीबहन[1] वहाँ है, यह तेरे लिए काफी है। शकरीबहन मजेमें होगी।

चि० गोरधनदास,

मुझे पूना लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००५९) से। सौजन्य शारदाबहन गो० चोखावाला

२३८. पत्र : होशियारीको

२० अगस्त, १९४५

चि० होशियारी,

तू स्वस्थ हो गई होगी। दोनों स्वच्छ पानी खूब पीना, खूब पढो। रोज अच्छे हरफोंमें स्याहीसे लिखो। मुझे मेरे आने पर बताना। सब रखो। लडका भी लिखे। मजदूरी भी करे, काते।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. शारदा चोखावालाकी माँ

२३९. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

२० अगस्त, १९४५

चि० पारनेरकर,

आश्रमकी वाड़ीके बारेमें किशोरलालजीसे बात करो। आश्रमके आदमी अब काम तुमको न दें सो मैं नहीं समझता हूं। गोशाला भी अपनी ही मानना चाहिए। आश्रमकी वाड़ी संभालने में तुमको मुश्किली है क्या? तरास-वुल्फ[1] है क्या? उसे ढूंढना चाहिए। किसीको जागना चाहिए। ऐसे जानवरोंका नाश करना अब तो मैं धर्म मानता हूं। जब हम दूसरा कुछ ढूंढें तो दूसरी बात होगी।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४०. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको

बिड़ला हाउस
माउन्ट प्लेजेन्ट रोड
बम्बई
२१ अगस्त, १९४५

प्रिय जोशी,

वकील भूलाभाई देसाईने मुझे कल अपनी राय लिखकर दी। वह साथमें भेज रहा हूं। तुम देखोगे कि यह उन कागजोंपर आधारित है जो मैंने कुछ समय पूर्व तुम्हारे कहने पर उन्हें दिये थे।[2]

अब यह राय मिल जाने पर तुम्हें इसे, यह जिस लायक भी हो, प्रकाशित करने का अधिकार है। कांग्रेसजन लगभग रोज ही मुझे इस आशयकी खबर सुनाते रहते हैं कि तुम्हारी पार्टीके तरीके सिद्धान्तहीन हैं और वह हिंसा तकका सहारा लेती है। इसलिए मेरे लिए इस रायको स्वीकार करना कठिन हो रहा है, क्योंकि यह उन्हीं कागजोंपर तो आधारित है जो मेरे पास उस दिन तक आ पाये थे जिस

१. भेड़िया
२. देखिए पृ० ४, पा० टि० १।

दिन मैंने वे वकील साहबको दिये। लेकिन एक तरफा साक्ष्यके आधारपर मैं पार्टीके बारेमें कोई राय नही दे सकता। साथ ही मेरे पास इतना समय भी नही है कि कोई राय बनाने के लिए जिस ढगसे साक्ष्योका अध्ययन करना जरूरी है उस ढगसे अध्ययन करने की जिम्मेदारी अपने सिरपर ले सकूँ।

जहाँ तक मुझे मालूम है तुम्हारी पार्टी और काग्रेसजनोके बीच कटुता बढ़ती जा रही है। शायद सबसे अच्छा उपाय यह है कि तुम अपनी पार्टीके बारेमें काग्रेस-जनोंकी रायको ध्यानमें रखकर विचार करो और तब जो ठीक लगे वह करो।

अगर तुम्हारा इरादा सहपत्रको प्रकाशित करने का हो तो साथमें यह पत्र भी प्रकाशित कर देना।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

सहपत्र . १

श्री पूरणचन्द्र जोशी
राजभवन
सैन्डहर्स्ट रोड
बम्बई–४

अंग्रेजोकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२४१. पत्र : चाँद रानीको

मुम्बई
२१ अगस्त, १९४५

चि० चाद,

तेरा खत मिला। मैं तुझे कैसे खत लिखा करू? चाहता हू लेकिन काम बहुत है।

तेरी तबीयत अच्छी रखकर ही सब कुछ करेगी।

नर्सका पूरा क्रम लेना या नही सो तो सुशीलाबहन ही कह सकती है और तेरा मन। तेरा मन सबसे बड़ी बात है। जल्दीसे निर्णय भी नही करना और किया तो उसे पूरा करना।

हम आज पूना जाते हैं।

बापुके आशीर्वाद

चाद
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४२. पत्र : रामचन्द्र रावको

२१ अगस्त, १९४५

भाई रामचन्द्र राव,

आपका खत मिला। चर्खा कहींसे मंगाना ठीक नहीं है। वहीं बनाना चाहिए। दरम्यान तकली चलाओ। कातने का पूरा अर्थ समझ लो।

बापूके आशीर्वाद

रामचन्द्र राव
मदुरा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४३. पत्र : प्रयागदत्त शुक्लको

२१ अगस्त, १९४५

भाई प्रयाग दत्त,

पं० हृषीकेशजी तो नहीं आये या मिले। उनकी धर्मपत्नी मिली थी। आप मुझे लिखें। मैं आज पूना जाता हूं। डा० दिनशा मेहताके आरोग्य भवनमें ठहरूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

प्रयागदत्त शुक्ल
सीताबरडी
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२१/२२ अगस्त, १९४५

बापा[1],

तुम्हारा पत्र तो मेरे कागजोंमें गुम हो गया लगता है। मुझे तो एकदम याद आ गया कि तुम्हारे पत्रमें क्या है, हालाँकि पूरा तो याद नही रह सकता। तुम्हे क्लर्की का काम, बिलकुल नही करना है। इसीलिए मैंने वालजीभाईके लडकेको भिजवाने की बात तुम्हें कहलवाई थी। लेकिन यह तो पुरानी बात हो गई। तुम अपनी पसन्दके क्लर्कको अवश्य रख लो और इससे जो समय बचे उसमे कोई अधिक महत्वका काम करो। कार्यालय और बहीखातोंमें हिन्दुस्तानीका प्रयोग-आरम्भ करने की बात मुझे तो बहुत अच्छी लगती है। अंग्रेजीके समर्थक भले उसकी माँग किया करे। यदि हम ऐसे सुधार नही कर सकेंगे या नही करेगे, तो न केवल अपने देश बल्कि हरिजनो के प्रति भी विश्वासघात करेगे।

एक बात मेरे मनमें थी जो मैं भूल गया था। श्यामलालने स्वेच्छासे अपने वेतनमें सौ रुपयेकी कमी कर दी। यह निश्चय मुझे तो बहुत अच्छा लगा, लेकिन इसमें आश्चर्यकी क्या बात है? मैंने उन्हे धन्यवाद तो दे दिया है।[2] लेकिन मेरा इरादा था कि मैं सभाको यह सूचना दूंगा और वही धन्यवाद दूंगा। मैं ऐसा नही कर सका, किन्तु तुम मन्त्रीके रूपमें मण्डलके सदस्योंको यह खबर दो और उसमें इतना जोड़ दो कि उक्त समाचार मिलते ही सभापतिने उन्हें धन्यवाद दे दिया है तथा उनका विचार सभामें ही उक्त घोषणा करने का था, किन्तु वे भूल गये। इसलिए उन्होने सभीको सूचित कर देने के लिए मुझे लिखा है। इसी तरहका कुछ लिखना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मन्त्री, हरिजन सेवक संघ

२. देखिए पृ० ३०।

२४५. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

मेहता आरोग्य भवन
पूना
२२ अगस्त, १९४५

चि० अमृतलाल,

चि० आभा परीक्षामें बैठने वाली है। यदि उसे बम्बई जाना है तो वह वहाँसे परीक्षा दे सकती है। यदि तुम डॉ० सुशीला नैयरको परीक्षक नियुक्त कर दो तो वह यहीं परीक्षा दे सकती है और ऐसा करने से खर्च भी बचेगा। प्रश्नपत्र तुम्हें भेजना पड़ेगा और उसके साथ आवश्यक निर्देश भी। आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल नानावटी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४६. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

पूना
२२ अगस्त, १९४५

चि० नरहरि,

वह लेख तो मैं बम्बईमें ही पढ़ गया था। उसमें कोई विशेष सुधार या इजाफा नहीं करना था, इसलिए नहीं लिखा।

वनमाला प्रसन्न है। मनुको भी मैं ठीक ही मानता हूँ। उसके कानमें बात पड़ गई है। अब देखें, उसका असर क्या होता है। मथुरादाससे मिला था। वह मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ।

मणिभाईसे तुम्हें ठीक मदद मिलती होगी।

वीणाके बारेमें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३६) से

२४७. पत्र : त्रिभुवनदास शाहको

२२ अगस्त, १९४५

भाई त्रिभुवनदास,

तुम्हारी पुस्तकें मिली। मैं तुम्हारे निर्देश पढ गया हूँ। किन्तु सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि मैं इन पुस्तकोंको कब पढ पाऊँगा। मेरी बहुत इच्छा है, किन्तु मनुष्य अपनी सभी इच्छाओंको पूरा कहाँ कर पाता है! क्या यही आश्चर्यकी बात नही है?

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

डॉ० त्रिभुवनदास शाह
'प्राचीन हिन्दुस्तान' के प्रणेता
बड़ौदा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४८. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

२२ अगस्त, १९४५

चि० पारनेरकर,

मैं मानता हूँ कि तुम गुजराती भी समझते हो और आसानीसे पढ़ भी सकते हो। यदि ऐसा न हो तो मुझे सूचित करना। इसे पढ़वा लेना। लकड़बग्घेको ठिकाने लगाना। खादका ढेर हटना चाहिए। गोशाला आदर्श बननी चाहिए। स्वच्छता शत-प्रतिशत होनी चाहिए। हमारा पानी सर्वथा पीने योग्य होना चाहिए। मच्छर-मक्खियाँ आसानीसे जाने चाहिए। चलने-फिरने के रास्ते अच्छे रहने चाहिए। टीला हमारे अधिकारमें है। घूमने जाने वाले लोग वहाँसे पत्थर लायें। तुम तो जानते ही हो कि महिला-आश्रममें मैंने इसी प्रकार पत्थरोका पहाड़ खड़ा कर दिया था। वे सब पत्थर वहाँ उपयोगमें आये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे· प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२४९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२२ अगस्त, १९४५

चि० किशोरलाल,

यह अच्छा ही हुआ कि मैं तुम्हें नहीं लाया और तुम स्वयं नहीं आये। हम लोग बूंदावांदीमें यहां पहुंचे। ठण्ड है और नमी भी है। बादल छाये हुए हैं और भीड़ भी है। सरदारने तुम्हारे लिए पास की मिलमें कोठरियां तो ली हैं, लेकिन वे किस कामकी? यदि मौसम खुश्क हुआ तो मैं तुम्हें लिखूंगा। मेरे कामके बारेमें चिन्ता मत करना। सुशीला, मणिलाल और नारायण आदि मेरी सहायताके लिए हैं ही। वे कुछ हद तक तुम्हारी कमी पूरी कर देंगे।

इसके साथ रामनारायणके लिए पत्र है। यह उनके पतेपर भेज देना। उन्होंने अपना पता-ठिकाना आश्रममें किसीको दिया होगा।

आशा है, तुम और गोमती[1] आनन्दपूर्वक होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५०. पत्र : रामनारायण चौधरीको

पूना
२२ अगस्त, १९४५

चि० रामनारायण,

तुम्हारी चीजका इंग्रेजी हिस्सा पढ़ लिया। इंग्रेजी [में] क्यों लिखा? हिन्दुस्तानी काफी है। इंग्रेजी भाषामें दुरस्ती चाहिए। इसे दूसरोंपर छोड़ना चाहिए। हिन्दुस्तानी भी पढ़ने की कोशिश करूंगा। गोसेवा संघकी योजना भी पढूंगा छपवाने के पहले। पारनेरकरको, सतीशबाबूको बताना, हो सके तो किसी डाक्टरको भी। थोड़े पन्ने सु[शीला] बहनसे सुना। उन्होंने शास्त्रीय गलती बताई है। विषयरचना अच्छी है। संक्षेपमें कहने जैसा सब कहा है। वापिस करूं तो अहमदाबाद ही भेजूं ना? तुम्हारे पास नकल नहीं है ऐसा समझा हूं।

तुमने भैंसका बहिष्कार बताया है। मेरे लेखोंमें तो ऐसा नहीं होगा। मेरा

१. किशोरलालकी पत्नी

मानना है कि हमारी पसन्दगी गायकी होनी चाहिए। ऐसा करने से दोनो बचते हैं। आज तो दूध कम है इसलिए दोनोंकी दरकार है। गायकी पसन्दगी करने से दोनो बचते हैं, भैंसकी पसन्दगीसे दोनों मरते हैं।

सब अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामनारायणजी
अहमदाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२५१. पत्र : वीणा चटर्जीको

पूना
२२ अगस्त, १९४५

चि० वीणा,

तेरे विचार मुझे आया करते हैं। तू वहां अच्छी रहती होगी। अब तो तेरा खास धर्म है कि अच्छी हो जाना और [ठीक] रहना। मन भी प्रफुल्लित रहता होगा। शैलेन ठीक होगा। आभा मेरे साथ है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५२. तार : दीपक दत्त चौधरीको

२३ अगस्त, १९४५

दीपक चौधरी
८/१, न्यू रोड
अलीपुर, कलकत्ता

मेरी उपस्थिति असम्भव। तुमसे जो करते बने करो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२५३. पत्र : एन मारी पीटरसनको

पूना

२३ अगस्त, १९४५

प्रिय मारिया[1],

तुम्हारा गुस्से और प्यारसे भरा पत्र मिला। तुम इतनी मूर्ख क्यों हो कि कोई तीसरा आदमी जो-कुछ कहता है उसका विश्वास कर लेती हो? कस्तूरबा [ट्रस्ट] बिलकुल असाम्प्रदायिक संस्था है। यह कौन था जिसने तुम्हें बताया कि उसमें केवल हिन्दू ही अर्जी दे सकते हैं? अर्जी मेरे पास आयेगी ही। अभी तक आई नहीं है। अगर तुमने अर्जी दी है तो उसकी एक नकल मुझे भी भेज दो। तुम्हें मालूम है न कि आर्यनायकम् ईसाई हैं? रेहाना तैयबजी एक ट्रस्टी है। इतना तो हुआ ट्रस्टके बारेमें।

स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर तुम्हें बहुमतका डर क्यों होना चाहिए? अगर ईश्वर तुम्हारे साथ हो और बहुमतके साथ नहीं हो तब भी क्या तुम्हें डरना चाहिए? और अगर ईश्वर दोनोंके बीच हो तब बताओ कि किसको किससे डरना चाहिए? तब क्या बहुमत और अल्पमतका कोई सवाल रह जाता है?

हम प्रभुसे प्रार्थना करें।

स्नेह।

बापू

कुमारी एन मारिया पीटरसन
सेवा मन्दिर
पोर्टो नोवो (द० भा०)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एन मारी पीटरसन पहले डेनिश मिशनकी सदस्या थीं और बादमें उन्होंने पोर्टो नोवोमें एक आश्रमकी स्थापना की थी जहाँ बालिकाओंको शिक्षा दी जाती थी।

२५४. पत्र : श्यामलालको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

भाई श्यामलाल,

साथमें मिस पीटरसन [के] साथका पत्र-व्यवहार है। उसके कुछ कागजात हैं तो खबर दो।

बापूके आशीर्वाद

श्री श्यामलाल
बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५५. पत्र : राधा गांधीको

२३ अगस्त, १९४५

चि० राधिका[1],

तेरा पत्र मिला। तूने तार भेजकर अच्छा किया। यह सुनकर दुःख हुआ कि नन्तोक[2]की तबीयत खराब है। मैं तुम सबके आने की आशा कर रहा था।

बापूके आशीर्वाद

श्री राधाबहन गांधी
प्लॉट ६०१ ई
विन्सेन्ट रोड
माटुंगा
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मगनलाल गांधीकी कन्या, जिसका विवाह दीपक दत्त चौधरीसे हुआ था।
२. राधा गांधीकी माँ

२५६. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

चि० आनंद,

तुमारा खत मिला है। तुमारे दिलके भीतर जाकर ही शांत होना है। मेरे पास आकर जो शांति मिले और पीछे गुम हो जाय वह शांति क्या कामकी? वहीं बैठकर जो हो सके सो करो और शांत रहो।

बहन सुशीला आज तो मुंबई है। आज या कल आवेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

२५७. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

भाई घनश्यामसिंह,

आपका पत्र यहां मिला है। मैं सब पढ़ गया हूं। मैं गलती बताता रहूं सो कहां तक चल सकता है? मेरा अभिप्राय है कि अब जो बन सके वही करो। अब देशबन्धु और ब्रिजलाल गये हैं सो क्या करते हैं सो देखो। बादमें मेरे पास आना है तो आ सकोगे। मेरी सलाह यह है कि अब जो उचित लगे सो स्वतन्त्र रूपसे करो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

उपरोक्तके बाद आपका खत आया। मैंने थोड़ा सुधार किया है। उचित लगे तो करें और भेज दें।

बापु

श्री घनश्यामसिंह गुप्त
स्पीकर, दुर्ग (म० प्रा०)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५८. पत्र : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

भाई गोपीचन्द,

इसे पढ़ो और कहो इसमें क्या सत्य है।
मैंने लालचन्दजी को कुछ जवाब नहीं दिया है।

बापुके आशीर्वाद

डॉ० गोपीचन्द भार्गव
लाहौर

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२५९. पत्र : माधवी कुट्टि अम्मा नयनारको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

प्रिय भगिनि,

नाणावाटीजीने तुम्हारे बारेमें कहा है। अगर तुम्हारे आना ही चाहिए तो मैं जब सेवाग्राम जाऊं तब आना, लेकिन मुझे पहले लिखना।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री माधवि कुट्टि अम्मा नयनार
मीनाक्षी विलास
ओट्टपालम्, मलाबार

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६०. पत्र : सुशीला पुरीको

पूना
२३ अगस्त, १९४५

चि० सुशीला पुरी,

तुम्हारा खत मिला। खूब पढ़ो, लोक सेवा करो और माताजी कहे वह करो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री सुशीला पुरी
दीप निवास
४०, निसवत रोड
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६१. पत्र : अमृतकौरको

पूना
२४ अगस्त, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले।

कितना दुःखद समाचार तुमने सुनाया है!!!

सुभाष बोस अच्छे उद्देश्यके लिए मरे।[1] वे निस्सन्देह एक देशभक्त थे, भले ही वे गुमराह थे।

तुम्हारे मसूढ़ेने काफी परेशानी दी है। मैं दन्तचिकित्सकको दोष देता हूँ। बताना कि किस ट्रेनसे आओगी।

प्यारेलाल बम्बईमें है। सुशीला तुम्हें उसके बारेमें सब बतायेगी।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६९८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ६५०७ से भी

१. सुभाष बोसके बारेमें खबर दी गई थी कि २३ अगस्त, १९४५ को एक विमान-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी।

२६२. पत्र : सी० पी० रामस्वामी अय्यरको

२४ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए धन्यवाद। "सकलन" अब तक मिला नही है। यथासमय मिल जायेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर
दीवान साहब
सखी विलास
त्रिवेन्द्रम्

अंग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

२६३. पत्र : लॉरेन्स मैक्केनरको

सेवाग्राम
वर्धा (भारत)
२४ अगस्त, १९४५

प्रिय मित्र,

"ईश्वरका साम्राज्य तेरे अन्दर है"—यह वचन सभी प्रयोजनोके लिए पर्याप्त है। इसे व्यवहारमें उतारने पर और किसी चीजकी जरूरत नही रह जाती। लेकिन अगर आप हिन्दू-धर्मपर कुछ पढना चाहे तो स्वामी विवेकानन्दकी कृतियाँ पढ़ें, जो वहाँ उपलब्ध होंगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

लॉरेन्स मैक्केनर, जूनियर
२१३२, हाई स्ट्रीट
ओकलैण्ड १, कैलिफोर्निया

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६४. पत्र : ग्रोवरको

२४ अगस्त, १९४५

प्रिय ग्रोवर,

तुम्हारे तारका इतने दिनों तक उत्तर नहीं दिया, इसके लिए क्षमा करना। इसका कारण तुम्हें मेरी झिझक और व्यस्तताको मानना चाहिए।

उत्तर मैं जानता हूँ, लेकिन कमसे-कम अभी वह दे नहीं सकता। दुनियाको मेरे विचार जानने की जल्दी नहीं है। इसलिए तुम्हारे जवाबी तारका फार्म, जिसके पैसे तुमने पहले ही चुका दिये हैं, वापस भेज रहा हूँ, ताकि तुम उसके पैसे निकलवा सको।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६५. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

२४ अगस्त, १९४५

चि० अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र कल मिल गया था। मैंने वह काकाको दिखाया और वे तुम्हें लिखेंगे। वनमाला यहीं है और उसका कहना है कि वह भी परीक्षक है। इस बार उम्मीदवारोंकी संख्या अच्छी है।

मेरा बंगाल कब जाना होगा, यह अनिश्चित है। यहाँ मैं लगभग तीन महीने ठहरूँगा। स्वर्गीय नायरकी पत्नीको मैंने लिख दिया है कि मेरे सेवाग्राम पहुँचने पर वह आ सकती है। मुझे दिसम्बरमें मद्रास जाना होगा।

तुम्हें और मगनभाईको

बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल नानावटी
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद (बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे)

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६६. पत्र : मेसर्स बच्छराज ऐंड कम्पनी लिमिटेडको

नैसर्गिक चिकित्सा गृह
६, तोडीवाला रोड
पूना
२४ अगस्त, १९४५

प्रिय महोदय,

साथमें निम्नलिखित दो चैक हैं.

(१) बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड, कालवादेवी शाखाका नं० के० सी० ७२६६६, रु० ५०० (पाँच सौ रुपये)का।

(२) सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेडका नं० एच० ओ० ७८३६२७, रु० १०१ (एक सौ एक रुपये)का।

ये दोनों चैक सेवाग्रामके खातेमें जमा होने हैं। कृपया प्राप्तिकी सूचना दें।

आपका,

स० २ चैक
मेसर्स बच्छराज ऐंड कम्पनी लिमिटेड
५१, महात्मा गांधी रोड, बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२४ अगस्त, १९४५

चि० चिमनलाल,

शारदा ईश्वरकी शरणमें है, उसे जो करना होगा, करेगा। लगता है, टायफायड और मलेरिया दोनों साथ हैं। भाग्यमें होगा, तो बच जायेगी।

केलकर[1] का पत्र इसके साथ है। उसके लिखे अनुसार जितना पैसा मिल रहा है उतना अलग करके जो खर्च आये उसकी व्यवस्था दोनों रोगियोंके लिए करो। दे सके . . . इस प्रकार . . [2] यह तीन महीने तक का है।

डॉ० अकोला जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४०) से

१. एम० एस० केलकर
२. यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ शब्द अस्पष्ट हैं।

२६८. पत्र : कृष्ण वर्माको

२४ अगस्त, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। मामाको सर्वथा मुक्ति दो। उनसे कहना कि "बापूको तुम्हारे बारेमें चिन्ता तो होगी, लेकिन वे अंकुश लगाना नहीं चाहते। तुम अपनी जोखिम पर जा सकते हो। वापस लौट आने की आशा मत रखना। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।" तुमने तो मामाके लिए बहुत किया। अब मैं तुमपर और बोझ डालना नहीं चाहता।

कामरेजवाला प्रतिबन्ध मैंने देखा तो नहीं है, परन्तु जैसा तुम कहते हो यदि वह वैसा ही है तो निश्चय ही मुझे पसन्द नहीं होगा।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नेचर क्योर अस्पताल
मलाड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६९. पत्र : लक्ष्मीको

पूना
२४ अगस्त, १९४५

चि० लक्ष्मी[1],

श्री बालसुन्दरम् बहिन लिखती हैं कि तुझे बालक आया है। तुम दोनों दीर्घायु बनो और देशसेवा करो। कल तो तू एक छोटी लड़की थी। मुझे धोखा देती थी। अब तो माता हुई। यह कैसा चमत्कार?

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती सत्यमूर्ति
कैम्प हरिपाद मैटम
कोट्टायम (द० भा०)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एस० सत्यमूर्तिकी पुत्री

२७०. पत्र : रंगनायकी देवीको

पूना
२४ अगस्त, १९४५

चि० रंगनायकी,

तेरा खत मिला। ईश्वर इच्छा होगी तो मैं डीसेम्बरमें मद्रास आऊंगा। तब तो हम मिलेंगे।

अमतुल सलाम बंगालमें सेवा कर रही है। आजकल मैं तो यहां सरदारके साथ हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री रंगनायकी देवी
फर्स्ट हाउस
श्रीरंगम् (जि० त्रिच्ची)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७१. पत्र : एम० एस० केलकरको

पूना
२४ अगस्त, १९४५

भाई केलकर,

तुम्हारा २२ का खत आज मिला है। बाईसीकलकी कठिनाई है। कोई मित्र भेजे तो ले लो। दो रोगीका खर्च जो बताते हैं आश्रमसे ले सकते हैं। आज तो अकोला जाने का सोचा है सो ठीक है।

बापुका आशीर्वाद

डॉ० केलकर
मार्फत — श्री विनोबा
नालवाड़ी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७२. पत्र : नवाब साहबको

पूना
२५ अगस्त, १९४५

प्रिय नवाब साहब,

खेद है कि हम पहले नहीं मिल पाये। कितना अच्छा होता, अगर हम समान दिलचस्पीकी बातोंकी चर्चा कर पाये होते! आशा करना चाहूँगा कि अब भी यह सम्भव होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

(वाहक द्वारा)
शुएब कुरेशी
पूना

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७३. पत्र : डॉ० बी० एन० सरदेसाईको

पूना
२५ अगस्त, १९४५

भाई सरदेसाई,

आपने पुस्तक भेजे हैं, इसलिए आभार मानता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० बी० एन० सरदेसाई
ऑरिएंटल बुक एजेंसी
पूना–२

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७४. पत्र : रामनारायण चौधरीको

पूना
२५ अगस्त, १९४५

चि० रामनारायण,

मेरा खत मिला होगा। तुम्हारा ठिकाना यहा नही होने के कारण आश्रम भेजा था। यह खत दादा साहेबका पुत्र चि० बालके मार्फत भेज रहा हू। तुम्हारा निवन्ध भी वही ले जाते हैं।

सब पढ गया हू। गोसेवा सघकी योजना मुझे नही जची है। अगर वैसा कुछ करे तो भी वह कागजोपर ही रह जायगी। पूर्ण गोशाला बनाने का है। चर्मालय उसके साथ चलना चाहिए। आज हमारे पास एक भी श्रेणीके कार्यकर्त्ता या सेवक नही हैं। अहमदाबादके नजदीक बहुत बडी गोशाला है। एक समय उसका कबजा हमको मिलने वाला था। शहरमें भी है। पिंजरापोल नामसे प्रसिद्ध है उसे देखो। तबीयत अच्छी हो जाने पर चर्मालयका काम भी सीखो। वहा तो बडा नीम है। मैंने 'ग्राम उद्योग पत्रिका' में एक लेख[1] भेजा है, उसे पढो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलमे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२७५. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको

पूना
२५ अगस्त, १९४५

भाई महमूद,

आपका खत मिला है। आप काम अच्छा कर रहे हैं। महबूब तो खामोशीसे खिदमत ही करता है। सैयद अच्छा क्यो नही होता है? हबीब तो अपनी पार्टीका ही काम कर सकता है। ईमानदार है इसलिए कही भी हो वह अच्छा ही करेगा।

आपके लिए रमजान नही है। बीमारीमे तो रोजा रखने की मनाही है ऐसा समझा हू। कृपलानीने क्या लिखा है मैं नहीं जानता हूं। इस्तीफा देने की बात होगी,

१. देखिए पृ० १५६-५७।

ऐसा मेरा ख़याल है। इस्तीफ़ा भेज दो या ख़त देखकर जो मुनासिब समझो वही करो।

बेगमसाहिबा अच्छी होंगी। आपके नागरी[के] हरफ़ बहुत अच्छे हैं।

बापुकी दुआ

डॉ० सैयद महमूद
छपरा (बिहार)[1]

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९४) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी

२७६. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पूना
२६ अगस्त, १९४५

प्रिय सी० आर०,

इस प्रसंगको लेकर डॉ० अम्बेडकरने कांग्रेसपर जो प्रहार किया है[2] उसका उत्तर देने के लिए आपके जैसा सुविज्ञ और सुयोग्य व्यक्ति कोई नहीं है। इसलिए यथाशीघ्र समय निकालकर उत्तर तैयार करो और बापाको भेज दो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१०९) से

१. पता प्यारेलाल पेपर्ससे लिया गया है।

२. व्हाट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टु द अनटचेबल्स नामकी पुस्तकमें भीमराव अम्बेडकरने कांग्रेसके इस दावेका खण्डन किया था कि वह अस्पृश्योंका प्रतिनिधित्व करती है और लिखा था कि हरिजन सेवक संघ एक राजनीतिक खैरातखाना है, जिसकी योजना "अस्पृश्यों को दयाकी मौत देकर मारने" की है।

२७७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

२६ अगस्त, १९४५

प्रिय कु०,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम "डी० डी० डी० वी० आई०" बखूबी प्राप्त कर सकते हो। और इन दो उपाधियोंकी अपनी योग्यता तो तुमने उन लोगोंकी अपेक्षा बहुत अधिक सीमा तक सिद्ध कर दिखाई है जो इनकी समकक्ष विश्वविद्यालयी उपाधियाँ प्राप्त करते हैं। इन उपाधियोंपर उनका एकाधिकार क्यों हो?

अब तुम जवान नहीं रहे। मेरे लेखसे तुम्हारा व्यवस्था-सम्बन्धी कार्य, जो रक्त-चाप बढ़ाता है, काफी हल्का हो जाना चाहिए। दूसरा लेख रक्तचाप बिलकुल ठीक कर देगा।

तुम्हारा,
बापू

डॉ० जे० सी० कुमारप्पा
"डी० डी० डी० वी० आई०"
मगनवाड़ी
वर्धा

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१७९) से

२७८. पत्र : रामदास गांधीको

पूना
२६ अगस्त, १९४५

चि० रामदास,

तुम्हारा खत मिला। तुम अच्छे हो जानकर खुश होता हूं।

तुम्हारे हिन्दुस्तानीमें लिखना, नागरी और उर्दू लिपि बराबर जान लो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७९. तार : अमियनाथ बोसको[1]

२७ अगस्त, १९४५

मैंने तो इस खबरको सन्देहकी निगाहसे देखा है। अगर तुम्हें भी सन्देह हो तो ऐसी घोषणा कर दो और संस्कार मत करो।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८०. पत्र : भटनागरको

पूना
२७ अगस्त, १९४५

प्रिय भटनागर,

देख ही रहे हो कि मैं पूनामें हूँ और अभी कुछ दिन और रहूँगा। तुम सेवाग्राम जा सकते हो और वहाँ तालीमी संघवाले श्री रामचन्द्रनसे मिलकर उन्हें यह दिखा सकते हो। अगर वहाँका काम तुम्हें अच्छा लगेगा और तुम उनके कामके लायक होंगे, तो वे तुम्हें रख लेंगे। उन्हें यह पत्र दिखा देना।

तुम्हें दुनियासे नफ़रत नहीं करनी चाहिए।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री भटनागर
मार्फत—पोस्ट मास्टर, लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अमियनाथ बोसके जिस तारके उत्तरमें यह भेजा गया था उसमें उन्होंने गांधीजी से सलाह माँगी थी कि अपने चाचा सुभाषचन्द्र बोसका श्राद्ध करें या नहीं। देखिए पृ० १७५ भी।

२८१. पत्र : भगवानजी अनूपचन्द मेहताको

२७ अगस्त, १९४५

भाई भगवानजी,

आपके २० मुद्दे मैं आज सुबह पढ़ गया। आपने तीन बार माफी माँगी है। किन्तु आपके माँगे बिना ही माफी है। वकीलका एक सूत्र याद रखिए जब तक सभी प्रमाणोको पूरी तरह न जाँच लिया जाये तब तक निर्णय देना ही नही चाहिए। किन्तु आपने बिना जाँच-पडताल किये ही छलाँग मारने की आदत डाल ली है इसलिए आपके शब्दोका मुझपर असर नही होता। इस आखिरी पत्रके बारेमे भी ऐसा ही समझिए। इस पोस्ट-कार्डका उत्तर देने की जरूरत नही।

मो० क० गाधीका
भगवान स्मरण

[पुनश्च]

मुझे विश्वास है कि भगवान है ही।

वकील श्री भगवानजी अनूपचन्द
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२८२. पत्र : आदम अलीको

२७ अगस्त, १९४५

भाई आदम अली,

आपका पत्र और चित्र भी मिले। आभार। चरखेका चित्र तो विज्ञापन है, किन्तु बुद्धका अच्छा है।

आपका,
मो० क० गांधी

हसन अली दाऊद भाई
२१, पेरिया मिस्त्री स्ट्रीट
मद्रास (जी० टी०)

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२८३. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको

२७ अगस्त, १९४५

भाई कानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। सोमवारको छोड़कर चाहे जिस दिन आ जाओ। मैं कुछ समय निकाल लूँगा। यदि तुम्हारे लिए बहुत असुविधाजनक न हो, तो पहले तुम अकेले आकर मुझसे मिल जाओ और बादमें यदि आवश्यक हो तो पुष्पाको लाओ।

मो० क० गांधी

कानजी जेठाभाई
राजडाकी चाल, दूसरी मंजिल
पुरानी हनुमान गली
क्रॉस लेन रोड २
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२७ अगस्त, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अब भी हवामें नमी है ही। मकान मिलके निकट है और वहाँ कोई मिल सकता है। किन्तु जब तक खिली हुई धूप न निकले तब तक तुम्हें बुलाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ती। चूल्हेमें से निकलकर भाड़में गिरने-जैसा काम हमें नहीं करना है। फिर भी वर्षा बिलकुल बन्द हो जाने के बाद मैं तुम्हें बुलाऊँगा और सो भी यह मानकर कि कदाचित आबोहवा बदलने से तुम दोनोंको कुछ लाभ हो। मुझे तुमसे यहाँ काम लेने का लोभ नहीं है। बालजी प्रतिदिन आते हैं। उनका कुशल पुत्र भी कुछ सेवा करने को तैयार है, किन्तु मैंने उसे कोई काम नहीं सौंपा है। ऐसा कोई काम है ही नहीं।

पारनेरकरके बारेमें मैं समझ गया।

तुमसे जो हो सका सो तुमने कर डाला। ऐसा लगता है कि फिलहाल तुम्हारे सुझावोंपर अमल नही किया जा सकता। सबके पास अपनी जमीन और मकान हैं, उन्हें कैसे हटाया जाये? इसके बावजूद जो सच्चे सेवक है क्या उन्हें दूर रहना चाहिए? उन्हें नौकर क्यों होना चाहिए? यह शर्म और दुःखकी बात है कि उन्हें नौकरके रूपमें रखा जाता है। परन्तु जिन्हें नौकरके रूपमें रखा जाता है उनकी संख्या नये स्थानपर रखे जाने के कारण कम नही हो सकती। इसलिए सभीका दृष्टि-कोण बदलना चाहिए। यदि दृष्टिकोण बदल जाये, तो अलग अर्थात् अन्यत्र दूर रहने का प्रश्न ही नही उठना चाहिए। हाँ, इतनी बात सही है कि स्वभाव परिवर्तित होने का समय आते-आते काफी समय निकल जायेगा। इस बीच नौकरोंके लिए चीख-पुकार मचती रहेगी और किसीका भी भला नही होगा। लेकिन यदि मैं तुम्हारे सुझावोंको समझ पाया हूँ तो उन्हें भविष्यमें लागू किया जा सकता है, किन्तु उन संस्थाओंपर नही जो आज चल रही हैं। सभी संस्थाओंको विलय कर देने का एक उद्देश्य तो था और है। हालाँकि जो-कुछ हुआ वह प्रवाहसे विच्छिन्न होना था। यदि मेरी इस दलीलमें कोई दोष हो तो मुझे अवश्य बताना। यदि इसे बदला न जा सके, तो भी मैं पूरी चीजको समझ लेना चाहता हूँ।

आशा है, तुम दोनोंका स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च.]

सुशीला आ गई है। मनु भाग गई है। वह बम्बईमें अपनी बहनके साथ है। अब जो हो सो ठीक है। सरदारकी हालतमें अभी तो कोई परिवर्तन नही हुआ है।

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८५. पत्र : ब्रज बिहारी अवस्थीको

पूना
२७ अगस्त, १९४५

भाई अवस्थी,

संदेशा विगैरहके बारेमें मुझे भूल जाइए।

आपका,
मो० क० गांधी

ब्रज बिहारी अवस्थी
गांधी सेवा समिति
जनरलगंज, कानपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८६. पुर्जा : देवप्रकाश नैयरको

२७ अगस्त, १९४५

सारा विवरण[1] पढ़ गया। विवरणकी दृष्टिसे सुन्दर है। क्या हुआ न जानते हुए सुधारना असम्भव है। जब विवरण ही देना है तो सत्य हकीकतके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता। मेरे साथ जो बात हुई विवरणके साथ नहीं है।

विवरण नागरी लिपि हिन्दुस्तानीमें नहीं तो उर्दू लिपिमें देना चाहिए था। अंगरेजीका उपयोग आवश्यक होने पर ही होना चाहिए। यह विवरण अंगरेजीमें होना अनावश्यक था। सब सभ्योंको हिन्दुस्तानी सीखना ही है तो इतना आवश्यक है।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी माइक्रोफिल्मसे : गांधीजी से सम्बन्धित कागजात; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

२८७. पत्र : होशियारीको

पूना

२७ अगस्त, १९४५

चि० होशियारी,

तू और चि० गजराज तबीयत अच्छी रखते हैं पढ़कर आनन्द हुआ। पानी खूब पीने से बंबकोष मिट ही जायेगा।

यहां सब ठीक है।

बापुके दोनोंको आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. प्रौढ़ शिक्षा समितिका

२८८. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पूना

२७ अगस्त, १९४५

भाई जाजूजी,

पजाब शाखाके बारेमे जो आपने लिखा है सो ठीक है। सोहनलालजीको नियत करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२८९. पत्र : लावण्यप्रभा दत्तको

पूना

२७ अगस्त, १९४५

प्रिय भगिनि,

आपका खत मेरे बगाल जाने के बारेमे मिला। देखता हू मुझे क्या करना चाहिए।

आपका,

मो० क० गांधी

श्री लावण्यप्रभा दत्त
ब० प्र० का० कमेटी
१०, सबर्बन स्कूल रोड
भवानीपुर पोस्ट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९०. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको

पूना
२७ अगस्त, १९४५

भाई प्रफुल्ल,

१. इसे पढ़ो। यह बराबर है क्या? करना क्या?

२. क्या मैं कलकत्ता नवेम्बरमें ही आऊं? उसके पहले नहीं?

३. तुम्हारी तबीयत कैसी है?

४. अमतुल सलामका क्या?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

तुम्हारा खत मिला। दिसम्बर ११ को मुझे मद्रास जाना चाहिए। इसलिए अगर नवम्बर १५ बाद आना है तो मैं जानेवरीमें ही आ सकूंगा। देखो, क्या होता है। अक्टूबरमें नहीं आऊंगा।

बापु

डॉ० प्रफुल्लचन्द्र घोष
१४/८, गारियाहाट रोड
बालीगंज, कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९१. पत्र : परसराम ताहिलरामानीको

पूना
२७ अगस्त, १९४५

भाई परसराम,

तुम्हारा खत[1] मिला। हो सके इतनी कोशिश करूंगा।

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री परसराम ताहिलरामानी
सिन्ध प्रदेश कांग्रेस कमेटी
कराची

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जिसमें सत्यार्थ प्रकाश से सम्बन्धित सत्याग्रह आन्दोलनको चुनाव तक टालने के निमित्त गांधीजी से सहायता माँगी गई थी; देखिए अगला शीर्षक।

२९२. पत्र : घनश्यामसिंह गुप्तको

पूना
२७ अगस्त, १९४५

भाई घनश्याम सिंह,

इसे[1] पढो। अगर छ मासमें निकलने की बात है तो सत्याग्रह मोकूफ रखना शायद ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री घनश्यामसिंह गुप्त, स्पीकर
दुर्ग

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९३. पत्र : टी० प्रकाशम्‌को

पूना
२७ अगस्त, १९४५

भाई प्रकाशम्,

तुम्हारा खत मिला। विद्यार्थियोंने अच्छा नाटक किया। हम आशा रखें कि जैसा नाटकमें बताया ऐसा ही जीवनमें कर बतावेंगे। देखें सरदारको कितना फायदा पहुंचता है।

तुम्हारा,
मो० क० गांधी

१९, राजबहादुर मुदालिआर स्ट्रीट
टी० नगर, मद्रास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दक्षिण पित्रका शीर्षक।

२९४. पत्र : विनायक रावको

पूना

२७ अगस्त, १९४५

भाई विनायक राव,

आपका खत मिला है। मैंने जो कुछ किया है या कर रहा हूं वह धर्म समझकर, उसमें आभारको अवकाश ही नहीं है। जो कुछ बने मुझे बताया जाय।

आपका,

मो० क० गांधी

श्री विनायक रावजी
बार-ऐट-लॉ
जामबाग, हैदराबाद (दकन)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९५. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२८ अगस्त, १९४५

चि० चिमनलाल,

मैं तुमपर बहुत काम छोड़ आया हूँ। जो करना वह अपनी तबीयतका खयाल रखकर ही करना। देखना कि शकरीबहनका भी स्वास्थ्य बिगड़े नहीं। अण्णा[1] और कमला[2] का ध्यान रखना। अगर ये दोनों ईमानदारीसे काम करें, तो खूब काम करने वाले हैं।

गोविन्द रेड्डीसे कहना कि मैं समयके अभावके कारण उससे बात नहीं कर सका। अपने आने के बारेमें मैं निश्चित कुछ नहीं कह सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४१) से

१ और २. हरिहर शर्मा और उनकी पत्नी

२९६. पत्र : ए० पार्थसारथीको

पूना
२८ अगस्त, १९४५

भाई पार्थसार्थी,

तुम्हारा खत मिला। अब तो तुमारे सब प्रश्न वर्किंग कमिटीसे पूछने चाहिए।

मो० क० गांधी

श्री ए० पार्थसारथी
कुड्डुरु (कुडप्पा जिला)

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९७. पत्र : गोरधनदास चोखावालाको

२८/२९ अगस्त, १९४५

चि० गोरधनदास,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। बहुत प्रसन्नता हुई। अब बबुडीको खाने-पीने में खूब सावधानी रखनी है। यदि वह गलती नहीं करेगी तो तेजीसे ताकत आ जायेगी। क्योंकि शरीरसे जहर निकल गया है इसलिए अन्य सभी रोग ठीक हो जाने चाहिए। शकरीबहनके आनन्दकी तो सीमा नहीं होगी।

बापूके आशीर्वाद

गोरधनदास चोखावाला
सूरत

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

२९८. सन्देश : अमेरिकाको[1]

[२९ अगस्त, १९४५ या उसके पूर्व][2]

श्री इमैनुअल सेलरने जैसा प्रश्न किया है वैसे प्रश्नका उत्तर देने की अनिच्छाके बावजूद मुझे लगता है कि यदि मैंने श्री सेलरकी इच्छा पूरी नहीं की, तो वह शिष्टता की कमी मानी जायेगी। भारतके स्वतन्त्रता-संघर्षमें अमेरिका सबसे अच्छी मदद इस तरह दे सकता है कि वह इस प्रश्नका अध्ययन करे, ताकि ब्रिटिश एजेंसी बहुत धन खर्च करके भारतके बारेमें जो असत्यका प्रचार कर रही है उससे वह दिग्भ्रमित न हो। अमेरिकियोंको भारतके संघर्षके रास्तेसे हट जाना चाहिए। बाकी, भारतको स्वतन्त्रताकी अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी है, और वह अहिंसात्मक रीतिसे उसे पाने का प्रयत्न कर रहा है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ३०-८-१९४५

२९९. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

पूना

२९ अगस्त, १९४५

प्रिय कु०,

जैसा तुमने सुझाया था, मैंने दोनोंपर हस्ताक्षर कर दिये हैं और उन्हें आगे भेज दिया है।

स्नेह।

बापू

डॉ० जे० सी० कुमारप्पा
मगनवाड़ी
वर्धा
म० प्रा०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१८०) से

१. संयुक्त राज्यकी प्रतिनिधि-सभाके सदस्य इमैनुअल सेलरको यह सन्देश बॉम्बे क्रॉनिकल के न्यूयॉर्क-स्थित संवाददाता टी० एफ० कराकाके जरिये पहुँचाया गया था। इमैनुअल सेलरका प्रश्न था: "भारतको जल्दी स्वतन्त्रता-प्राप्ति हो, इसमें हम अमेरिकी लोग कैसे मदद कर सकते हैं?"

२. समाचारमें तिथिके स्थानपर 'बुधवार' है, और उस सप्ताह बुधवारको २९ तारीख थी।

३००. पत्र : मॉरिस फ्रिडमैनको[1]

कैम्प पूना
[२९ अगस्त, १९४५][2]

तुमसे क्या कहा जाये! तुम स्वयमें एक नियम हो जो बराबर बदलता रहता है। वायदे उतनी ही आसानीसे किये जाते हैं जितनी आसानीसे तोड़े जाते हैं। यह सब बुरा है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६) से

३०१. पत्र : चन्द्रकान्त कोटाईको

२९ अगस्त, १९४५

भाई चन्द्रकान्त,

तुम्हारा पत्र मिला। निश्चय ही विज्ञानकी आवश्यकता है। कांग्रेस उसकी सभी शाखाओंका समर्थन करती है। चरखा संघ उसका भरपूर उपयोग करता है। विज्ञान व्यापक शब्द है। वैज्ञानिक चरखेसे सम्बन्धित विज्ञानकी अवहेलना करते हैं, उसके लिए कोई क्या करे?

बापूके आशीर्वाद

श्री चन्द्रकान्त कोटाई
तुलसी भवन
कमरा नं० ४३, तीसरी मंजिल
चित्तरंजन एवेन्यु
कलकत्ता

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. यह मॉरिस फ्रिडमैनके नाम सुशीला नैयरके २९-८-१९४५ को लिखे पत्रके नीचे लिखा हुआ है।

३०२. पत्र : जयन्त संघवीको

२९ अगस्त, १९४५

भाई जयन्त संघवी,

तुम्हारे और अन्य भाइयोंके हस्ताक्षरोंसे युक्त पत्र मिला। मेरा सब भाइयोंको सुझाव है कि यदि तुम सब मेरे लेख पढ़ोगे तो तुम्हें सहज ही उत्तर मिल जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री हीरालाल मा० पारेख
मार्फत — भारत लाइट हाउस
पायधुनी
बम्बई - ३

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२९ अगस्त, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। ठीक है, कृष्णचन्द्र व्यवस्थापक हो जाये। लेकिन लोगोंको इतना ध्यान रखना चाहिए कि व्यवस्थाका तन्त्र तो वही एक बना रहता है। वाइसराय वगैरह बदलते रहते हैं, लेकिन शासन-तन्त्र ज्योंका-त्यों बना रहता है। यह बात हम समझ सकते हैं। ये तो आसुरी सम्पद्के लोग हैं, फिर भी एकताके साथ काम कर सकते हैं। हम किस सम्पद्के सिद्ध होंगे?

कंचन मजेमें होगी।

खेतपर अधिकार करने से पहले इन बातोंका विचार करना।

बैल कहाँसे खरीदोगे?

खेतकी देख-रेख कौन करेगा?

मजदूरोंको मजदूरी क्या हम ज्यादा देते हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८०) से। सी० डब्ल्यू० ५५९३ से भी। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३०४. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

पूना
२९ अगस्त, १९४५

भाई वैकुण्ठ,

क्या भारत बैंक अच्छा है? नये बैंकसे मुझे डर लगता है। यदि तुम इसे पसन्द करते हो, तो तुम्हे अन्य लोगोके हस्ताक्षर ले लेने चाहिए। तुमपर विश्वास होने के कारण मैं इस पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०५. पत्र : कंचन मु० शाहको

२९ अगस्त, १९४५

चि० कंचन,

तेरा काम-काज कैसा चल रहा है? निराश मत होना। अपना शरीर मजबूत बनाना।

तेरा काम और बहनोसे भिन्न प्रकारका है, इसलिए उसके लिए भिन्न प्रकारकी विचारधारा भी चाहिए।

तू कुछ अध्ययन भी करती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६४) से। सी० डब्ल्यू० ६९८८ से भी, सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

३०६. पत्र : गंगारामको

पूना
२९ अगस्त, १९४५

भाई गंगाराम,

तुम्हारा खत मिला है।

तुमने बहोत लिखा है। सो तो मेरे लेखोंसे जान लो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २३१) से

३०७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
२९ अगस्त, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुम पहली ता० से व्यवस्थापक बनने वाले हो। अच्छा है। तंत्री मरो या जीयो, बदलो या एक रहो, तंत्र एक है ऐसा ख्याल रहे।

तुम्हारे खाने का ढंग कुछ अलग है क्या? अगर है तो सोचो। खाने के ढंगका भी असर होजरीपर, सभ्यतापर पड़ता है। एक मनुष्य खाना निगलता है—जैसे पक्षी, एक पशुके जैसे ओगालता है। हम न पशु हैं, न पक्षी। मनुष्य चबाता है और खाता है। असलमें मनुष्य जैसे वैसे खाता है, अवाज करता है, खाने में देखा नहीं जाता है, इसे सोचो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२३) से

३०८. पत्र : गालिबको

२९ अगस्त, १९४५

भाई गालिब,

जोहराके बारेमें जानकर अफसोस हुआ। साथका खत उसे देना। डाक्टर अब्दुल हकका जवाब तो तुरत मिला था। जोहरा आवेगी यह समझकर मैंने संभाल कर रख छोड़ा। परसों श्वेब कुरेशी मिले थे। उनसे बात की। अगर दादे इस्लाम[दारुस्सलाम]में जो जनाना हिस्सा था उसमें आप सब समा सको तो शायद डाक्टर हकको समझाया जा सकता है, ऐसा उन्होंने कहा। क्या ऐसा हो सकता है? डाक्टर हकके खतकी नकल इसके साथ है।

बापुकी दुआ

जनाब गालिब साहब
१४, राजपुर रोड
देहली

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

३०९. पत्र : जोहरा अन्सारीको

पूना
२९ अगस्त, १९४५

बेटी जोहरा,

तू तो बीमार पड़ी और मुझे बगैर मिले चली गई। तुझे मेरा खत मिला था क्या? तूने इसकी खबर नहीं दी। इतनी घबराती है क्यों? तुम्हें बहादुर बनना चाहिए।

बापुकी दुआ

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३१०. पत्र : कृष्णदास बेगराजको

पूना
२९ अगस्त, १९४५

भाई किशनदास,

आपका पत्र मिला। आप मजाक नहीं समझते हैं। मैं बहुत बार अखबार वालोंको गोलीसे मारने योग्य कहा हूं। खूबी है कि एक भी न मरा, न माना कि मरेगा, हंसीमें लिया। केमेरा वालाने मेरे जैसा बूढ़ाको [केमेरा] दे दिया और बादमें ले भी गया। मैंने जान-बूझकर ले लिया, अच्छा किया था। दोनों कार्य अहिंसक थे।

बापुके आशीर्वाद

श्री कृष्णदास बेगराज
मार्फत—न्यू एशियाटिक इन्श्योरेन्स
१८, हेनम मैन्शन
महात्मा गांधी रोड
कराची[1]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३११. पत्र : परचुरे शास्त्रीको

२९ अगस्त, १९४५

शास्त्रीजी,

आपका पत्र मिला। आप कहीं न जाय। दत्तपुरमें ही रहकर जीवन समाप्त करें। वहां सेवा तो कर रहे हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री परचुरे शास्त्री
दत्तपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

३१२. पत्र : एस० निजलिंगप्पाको

२९ अगस्त, १९४५

भाई निजलिंगप्पा,

आपका खत मिला। अब तो वर्किंग कमिटी और स्टेट्स पीपल कांफरन्स काम कर रहे हैं। मुझे कुछ कहना चाहिए क्या? यह प्रश्न विचारणीय है। दोनोंको लिखो।

बापूके आशीर्वाद

श्री एस० निजलिंगप्पा
कॉटनपेट, बंगलौर सिटी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१३. पत्र : यशवन्त महादेव पारनेरकरको

२९ अगस्त, १९४५

चि० पारनेरकर,

तुम्हारा खत लम्बा नहीं मानता हूं, विषय इतना मांगता था।

आपस-आपसमें बैठकर कुछ तय नहीं कर सकते हैं तो क्या किया जाय? मैं मर गया तो कैसे करोगे? हम बिलकुल अलग हो जायेंगे? गोशाला, तालीमी संघ, चर्खा संघ, आश्रम, एक आदमीकी कल्पना है इसलिए साथ हैं, दो दूसरी अनायास ही अलग हैं। लेकिन एक जगह हो सकती थी। आश्रम और गोशाला जमीनकी दृष्टिसे ओतप्रोत होनी चाहिए। यह बात विचारणीय है। मैंने तुम्हारा खत अच्छा मानकर आश्रमको भेजा है। अगर कुछ विचार हो सकता है तो कीजिए। अशक्य है तो छोड़ दीजिए। बहुत समय देने से निपटारा नहीं होगा। बहुत समय देना पड़ता है तब समझना कि विषय हमारी शक्तिसे पर [परे] है। ऐसा अनुभव अंकगणितमें हमें प्रत्यक्ष होता है।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम आश्रम
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१४. पत्र : पुष्पा देसाईको

२९ अगस्त, १९४५

चि० पुष्पा,

तेरा पत्र मिला। तुझे रजनीको अभी तो पत्र बिलकुल नहीं लिखना है। तेरे पिता और उनके सगे-सम्बन्धी मेरे पाससे अभी-अभी गये हैं, और अब मैं यह पत्र लिखने बैठा हूँ। इस समय रातके नौ बजे हैं। तू चाहे तो मैं रजनीको लिखने को तैयार हूँ। अगर मुझे उसे पत्र लिखना हो, तो उसका पता भेजना। तेरा पत्र मैंने तेरे पिताको पढ़ने को दिया था। वे रजनीका विश्वास नहीं करते। उनका आग्रह है कि तू व्रजलालसे विवाह करे। वे कहते हैं कि जब तक तू स्वयं सहमत न हो जाये, व्रजलाल ब्रह्मचर्यका पालन करने को तत्पर है। वह तेरी इच्छाके विरुद्ध जोर-जबरदस्ती नहीं करेगा। तू जो पूजा-पाठ आदि करती है, उसमें भी बाधा नहीं डालेगा। व्रजलालका इस आशयका पत्र मणिबहनने पढ़ा है। अगर यह ठीक हो, तो तेरा इस प्रकारका विवाह तेरे कृष्णदर्शनमें बाधा उत्पन्न नहीं करेगा। व्रजलालको सन्तोष होगा, और तेरे माता-पिताको तथा अन्य स्नेही-सम्बन्धियोंको बहुत आनन्द होगा। मैं तो अपने अनुभवसे कहता हूँ कि इस विवाहसे तेरे लिए कोई अड़चन नहीं होगी। हाँ, तुझमें सच्ची भक्ति-भर होनी चाहिए। मुझे इस पत्रका उत्तर तुरन्त देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६२) से

३१५. पुर्जा : श्रीकृष्णनाथ शर्माको[1]

[२९ अगस्त, १९४५ या उसके पश्चात्][2]

असामकी सब हालत जानता हूं। आजकल मेरे पास बहुत काम पड़ा है। मैं समय कहांसे दूं? काका साहेबसे सब कह दें।

बापुके आशीर्वाद

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२३६) से

१. श्रीकृष्णनाथने गांधीजी को असमकी परिस्थितियोंसे परिचित कराने के लिए उनसे १५-२० मिनट देने के लिए प्रार्थना की थी।

२. ये पंक्तियाँ श्रीकृष्णनाथ शर्माके २९ अगस्तके पत्रपर लिखी हुई हैं।

३१६. पत्र : लीलावती आसरको

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० लीली,

मुझे तेरे पत्रका जवाब देने की याद नही है। वह तो अभी प्रार्थनाके बाद मैंने पुराने पत्र निकाले हैं। यह पत्र तो बस यह जताने-भरके लिए है कि मैं तेरी याद करता रहता हूँ। अपना अध्ययन करती रहना और पास होना। हिम्मत मत हारना। और अपना स्वास्थ्य मत बिगाड़ लेना। ज्यादा लिखने को समय नही है। सरदारका उपचार जारी है। मैं मजेमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२०६) से। सौजन्य लीलावती आसर

३१७. पत्र : प्रभावतीको[1]

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० प्रभा,

मुझे याद नही कि मैंने तुझे लिखा था या नही। तेरा पहली तारीखका पत्र मेरे सामने है। यह मैं प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद लिख रहा हूँ। तेरी तबीयत ठीक होगी। जब आ सके तब आ जाना। मुझे अभी तो सरदारके साथ पूनामें रुकना है। शायद तीन माह तक रहना पड़े। इसके बाद दौरेपर निकलना होगा। तू आश्रममें रहना। वहाँ तेरे लिए ठीक काम हो, तेरा मन शान्त रहे और शरीर स्वस्थ हो, तो वही जम जाना। जैसा ठीक लगे वैसा करना। पिताजीके क्या समाचार हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५७९) से

१. यह और अगला पत्र देवनागरी लिपिमें है।

३१८. पत्र : प्रभावतीको

३० अगस्त, १९४५

चि० प्रभा,

इसके साथ प्रियंवदाका एक पत्र भेज रहा हूँ। मुझे लगता है कि तुझे इसमें[1] शामिल हो जाना चाहिए। अपना नाम दे देना। कामके बारेमें तू आराम कर चुके, उसके बाद सोचेंगे।

आज प्रातःकाल तुझे जो कार्ड लिखा है उसे लिखने के बाद यह पता लगा कि मैंने तुझे एक पत्र लिखवाया तो था। तथापि तू कहीं भूल न जाये इसलिए कार्ड लिख दिया।

आशा है, तेरी तबीयत ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८०) से

३१९. पत्र : प्रियंवदा नन्दकियोलियारको

पूना

३० अगस्त, १९४५

चि० प्रियंवदा[2],

तुमारा खत मिला। मैंने चि० प्रभाको लिखा है कि तुमारी कमिटिमें रहे लेकिन अच्छी होने तक काम न करे।

बापुके आशीर्वाद

श्री प्रियवदा बहिन
नंद विलास
गया (बिहार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक समितिमें
२. बिहारमें कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टकी एजेंट

३२०. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० लक्ष्मी,

सब लड़कोंको साथके खत[1] देना, तू और बच्चा[2] अच्छे होंगे। तेरा अभ्यास [अध्ययन] चलता है ना? घरमें भीड़ रहती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती देवदास गांधी
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२१. पत्र : तारा गांधीको

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० तारा[3],

तेरी चिट्ठी मैली है। खत भी अच्छा न माना जाय। बहुत अच्छे अक्षरोंमें लिख सकती है। अब कब खेलेंगी?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगले पाँच पत्र।
२. गोपालकृष्ण
३. देवदास गांधीकी पुत्री

३२२. पत्र : राजमोहन गांधीको

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० मोहन[1],

तेरी चिट्ठी मिली। अच्छी है। ऐसे ही लिखा कर। खूब तकड़ा बन।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३२३. पत्र : रामचन्द्र गांधीको

पूना
३० अगस्त, १९४५

चि० रामु[2],

तूने सीसापेन [पेंसिल]से लिखा। वह अच्छा नहीं। हमेशा स्याहीसे लिखना। तेरे दोस्त[3] ने भी सीसापेनसे लिखा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. और २. देवदास गांधीके पुत्र
३. अरुण वाई० पण्ड्या; देखिए अगला शीर्षक।

३२४. पत्र : अरुण वाई० पण्ड्याको

३० अगस्त, १९४५

चि० अरुण,

मेरे अब दो अरुण हो गये। यदि तुम दोनों साथ हो तो मुझे यह कैसे पता चलेगा कि पत्र किसका है? क्या तुम इस समस्याको हल कर सकते हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३२५. पत्र : प्रवीणा वाई० पण्ड्याको

३० अगस्त, १९४५

चि० प्रवीणा,

तेरा पत्र मिला। तू कताई करना और खादी पहनना। खूब पढ़ना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

३२६. पत्र : पी० एच० गद्रेको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

प्रिय गद्रे,

अगर तुमने अपना कर्त्तव्य किया है, तो तुम्हें दुःखी क्यों होना चाहिए? कर्त्तव्य अपना पुरस्कार आप होता है। अगर समितिको तुम्हारी सेवाकी जरूरत नहीं है, तो तुम वहाँ सेवा करो जहाँ तुम्हारी जरूरत हो। सेवाका क्षेत्र तो उतना ही विशाल है जितनी विशाल पृथ्वी है। दाताओंको [स्तरसे][1] हटाये जाने का बुरा नहीं मानना चाहिए। प्रश्न यह है कि क्या तुम स्वयं हरिजन बने हो? अगर बन गये हो तो सब ठीक ही है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री पी० एच० गद्रे, प्लीडर
हिन्दू कालोनी
नासिक[2]

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें शब्द पढ़ा नहीं गया।
२. पता हिन्दीमें है।

३२७. पत्र : डी० परिमालाको

पूना
३१ अगस्त, १९४[५][1]

प्रिय बहन,

अगर परिश्रमपूर्वक ढूंढें तो पता चल जायेगा कि 'गीता' आपकी शकाओका समाधान करती है। यदि आप क्षणिक वर्तमानपर शका नही करती, तो भविष्यपर कैसे कर सकती हैं? वृद्धाको कष्ट झेलने दीजिए। उसके लिए क्या ठीक है, यह तय करना हमारा काम नही।

आपका,
मो० क० गाधी

श्रीमती डी० परिमाला
२६८१, वी० वी० मिनाला
मैसूर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

३२८. पत्र : जयकृष्ण भणसालीको

३१ अगस्त, १९४५

चि० भणसाली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम निमन्त्रण स्वीकार कर लेना और ३-४ दिनके लिए जाना हो तो चले जाना।

आशा है, तुम्हें अपनी खुराकके बारेमें याद होगा।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें पत्रपर वर्ष "१९४१" दिया गया है, लेकिन यह १९४५ के पत्रोंके साथ रखा हुआ है; इसके अलावा, ३१ अगस्त, १९४१ को तो गांधीजी सेवाग्राममें थे।

३२९. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

३१ अगस्त, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। पत्र रोचक है। अब मैं रोचक उत्तर देने लगूं, तो उत्तरमें देर हो जायेगी।

तुम लोगोंका कार्य सुन्दर है। उसमें विजय मिले और कार्य बढ़े। कातनेके पूर्व जो क्रिया होती है, सब सीख ले। सूतर और पैसे वहीं रखो। जितना काता जाय, उसका हिसाब नारणदास गांधीको भेजा जाय।[1]

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

तुम दोनों और बच्चा मजेमें होंगे। हरिलालके दो बेढंगे पत्र मुझे मिले हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती और हिन्दीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७७) से। सौजन्य: कान्तिलाल गांधी

३३०. पत्र : ए० के० चन्दाको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई चंदा,

आजसे आप मेरे सिलचर आने पर कुछ निश्चय न करें। देखा जाय ईश्वर मुझसे क्या कराता है। और कहां ले जाता है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री ए० के० चंदा
सिलचर (आसाम)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह अनुच्छेद हिन्दीमें है।

३३१. पत्र : ए० रहीमको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई साहब,

अगर सच्चे सच्चे रहेंगे तो बाकी भी सच्चे बन जायेंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

ए० रहीम साहेब
मार्फत पोस्ट मास्टर
मद्रास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३२. पत्र : धीरेन्द्रनाथ मुखर्जीको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई धीरेन्द्रनाथजी,

आपका खत मिला। कई चीज आदमी बोलने से करता है, कई मौनसे करता है, कई कार्यसे।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री धीरेन्द्र एन० मूकरजी
सेनहाटी डाकघर, जिला खुलना
बंगाल

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३३. पत्र : पृथ्वीसिंह आजादको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई पृथ्वीसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। मेरे वचन याद दिलाते हैं तो मैंने बहुत दफा कहा है कि मैं कहूं सो लिखा लेना। कैसे भी हो इतना जानता हूं कि जाति [सवर्ण] हिन्दू समाज अपना धर्मका पालन नहीं करता है। इस बारेमें भाई मूर्तिसे जो संवाद[1] हुआ सो पढ़ो। और हरिजनोंको क्या करना चाहिए वह भी।

बापूके आशीर्वाद

श्री पृथ्वीसिंह आजाद
हरिजन से० सं०
लाजपतराय भवन
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३४. पत्र : पन्नालालको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई पन्नालालजी,

आपका खत मैं ध्यानसे पढ़ गया हूं। पॅम्फ्लेट आने से देखूंगा। आप हिन्दुस्तानी प्रचारसे रस लेते रहिये।

पॅम्फ्लेट आ गये हैं।

आपका,
मो० क० गांधी

डॉ० पन्नालाल
१९, थॉर्नहिल रोड
इलाहाबाद[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १२८-३०।
२. पता अंग्रेजीमें है।

३३५. पत्र : रामभाई मामटाणीको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई रामभाई मामटाणी,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो जब मैं सेवाग्राम आऊं तब मिल सकते हैं। तुम्हारे पहले प्रश्नका उत्तर तो वहीं मिलना चाहिए।

बाकीका तो धैर्यसे देखो, क्या होता है।

बापुके आशीर्वाद

तालीमी संघ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३६. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई राजेन्द्र बाबू,

महेन्द्र चौधरीके बारेमें समय खाली जा रहा है। अच्छा नहीं लगता। पटनामें तो काफी अच्छे वकील हैं। केस ला देना आसान है। जो कागजात है उसीपर तो देना है। उसे अल्लाडी,[1] वेंकटरामन शास्त्री, मोतीलाल, सेतलवाड इ० देखें और राय देवें। उसमें कितनी देर लग सके? अगर वहांसे रेकर्ड[2] आ जावे तो सरदार बाकीका काम कर सकते हैं। तुम्हारे विहार जाने की कोई आवश्यकता नहीं पाता हूं।

तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है जानकर खुश होता हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सर अल्लादि कृष्णस्वामी अय्यर
२. यह साधन-सूत्रमें रोमन लिपिमें है।

३३७. पत्र : वामन कृष्ण परांजपेको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

भाई वामन कृष्ण परांजपे,

आपका खत मिला है।

आपके पितामह[1] मुझे बराबर याद हैं। वे बड़े वक्ता थे, बहादुर थे।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री वामन कृष्ण परांजपे, वकील
शुक्रवार पेठ
पूना-२

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३८. पत्र : वीणा चटर्जीको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

चि० वीणा,

बहुत दिनोंके बाद तेरा खत मिला। मेरा अभिप्राय है कि कोरटमें दे देना। मैंने नरहरी भाईको लिखा है। शादी जल्दी ही कर लेना अच्छा है। कोरटका रजिस्टरसे पर्याप्त मानो। इसे भी नरहरी भाईको बताओ।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

खूब अच्छी बन और खूब सेवा कर।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शिवराम महादेव परांजपे

३३९. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

पूना
३१ अगस्त, १९४५

चि० शैलन,

तुमारा खत मिला। तुमने रसोई अलग करने का निश्चय किया सो अच्छा है। पिताजीको नरहरीभाईने लिखा है। काफी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३९३) से। सौजन्य अमृतलाल चटर्जी

३४०. पत्र : धन्नो गिडवानीको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

प्रिय धन्नो[1],

तुम मुझे खराब अंग्रेजीमें पत्र लिखते हो। पता नहीं, तुम गुजराती, हिन्दुस्तानी या सिन्धी जानते हो या नहीं। तुम्हारी माँ हिन्दुस्तानी और सिन्धी जानती हैं। तुम्हारे पिता ये तीनों भाषाएँ अच्छी तरह जानते थे। लेकिन यह मैं उस भाषामें लिख रहा हूँ जो स्पष्टतः तुम सबसे अच्छी तरह जानते हो।

देखते ही हो कि यह हर देशभक्तकी परीक्षाकी घड़ी है। तुम्हें खादी पहननी है, पारिवारिक परम्पराकी खातिर नहीं, जो अच्छी हो भी सकती है और नहीं भी, मेरे लिए भी नहीं (मेरे लिए पहनना तो बेकार होगा), गरीबोंकी खातिर भी नहीं (क्योंकि उनकी सेवा करने के शायद और भी रास्ते हैं), बल्कि अहिंसक रीतिसे स्वराज्य प्राप्त करने के लिए। फिर तो तुम्हे खादी हर कीमतपर पहननी और इस्तेमाल करनी है। उसके उपरान्त अपने विश्वासको पुख्त बनाने के लिए इसमें तुम अन्य सभी कारण जोड़ सकते हो। तुम्हें कमसे-कम इतना तो करना ही चाहिए कि खादीका इस्तेमाल करो और जिस थोड़ी-सी कठिनाईका तुमने जिक्र किया है उसे झेलो। तुम शानशौकतसे रह सको, इसके लिए, मान लो, तुम दस घंटे खटते हो तो प्रतिदिन आधे घंटे कताईका मनोरंजक काम करके तुम उस मशक्कतको कुछ हल्का

१. ए० टी० गिडवानीका पुत्र

क्यों न कर लो? इस कामको करते हुए तुम प्रतिदिन आधे घंटे स्वराज्य-रूपी सूत कातने की दीप्तिसे अनुप्राणित रहोगे। अगर कातने वाले अकेले तुम्हीं होते तो यह बहुत कम होता। लेकिन खुदको हम चालीस करोड़से गुना कर सकते हों फिर तो शायद और कुछ किये बिना स्वराज्य मिल जाता है। लेकिन अगर तुम स्वयंसे ईमानदारीके साथ कह सकते हो कि अहिंसक स्वराज्य प्राप्त करने के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, तो तुम खादीको अपने हालपर छोड़ दो और जो कपड़ा तुम्हें अच्छा लगता है उनका इस्तेमाल करते हुए पारिवारिक परम्पराको, गरीबोंको और मुझे भूल जाओ।

तुम कितना कमा रहे हो? क्या तुम विवाहित हो?

स्नेह।

बापू

चि० धन्नो गिडवानी
मार्फत अम्बिका मिल नं० १
अहमदाबाद

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७५९) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

३४१. पत्र : उत्तिमचन्द गंगारामको

१ सितम्बर, १९४५

प्रिय उत्तिमचन्द,

चैकके साथ आपका पत्र मिला। तदर्थ धन्यवाद। उसका उपयोग आपके निर्देशानुसार, अर्थात् ब्याजकी कमीको पूरा करने और यदि महादेव हमारे बीच सशरीर होते तो उनको जिसमें प्रसन्नता होती ऐसे किसी खादी-सम्बन्धी प्रयोजनके लिए, किया जायेगा। अगर मुझे ठीक याद नहीं हो तो आप इसमें सुधार कर दीजिएगा।

आपका जादुई वर्ग और पहेली मिली। मैं उसपर अपना और अपने मित्रोंके सिर खपाऊँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च:]

सरदारके बारेमें अभी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

श्री उत्तिमचन्द गंगाराम
बम्बई बेकरी
हैदराबाद (सिन्ध)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४२. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

1 सितम्बर, १९४५

चि० नरहरि,

खीमजी[1] तुम्हारा पत्र लाये थे। जवाब मैंने तुरन्त दिया था। अब तक तो तुम्हें मिल भी गया होगा।

खीमजीकी आँखमें कोई दोष हो, तो मुझे पता नहीं। मैं लोगोंको ध्यानसे देखता जो नहीं हूँ। लेकिन जहाँ स्पष्ट दिखाई पडने वाला दोष हो, फिर भी दोनों एक-दूसरेको पसन्द कर ले, वहाँ तीसरेको दखल देने की क्या जरूरत? पिताको भी [दखल देने का] क्या अधिकार है? फिर, मैंने तो अन्धों, लँगड़ोंको भी शादी करते देखा है। मुन्नालालने यदि आपत्ति उठाई हो, तो मुझे बहुत आश्चर्य होगा। और जहाँ तुम सब स्वतन्त्र लोगोंने चुनाव किया हो, वहाँ कहने को रह ही क्या जाता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३७) से

३४३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१ सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

नरहरिभाई लिखता है कि भाई खीमजीकी आँखमे दोष है, इसलिए तुम उसका वीणासे विवाह करना आपत्तिजनक मानते हो, और यह बात वीणाके पिताको लिखने को भी तत्पर हो। इससे मुझे आश्चर्य होता है। इसलिए मैंने तो नरहरिको लिखे अपने पत्रमें 'यदि' अव्ययका प्रयोग किया है।[2]

१. खीमजीभाई पटेल

२ देखिए पिछला शीर्षक।

अगर कि० और न० चुनाव कर लें, तो फिर हमें कहने को रह ही क्या जाता है? और फिर, वीणाके पिताको तो लिया ही कैसे जा सकता है? वीणा किसीकी अवज्ञा करके थोड़े ही विवाह कर रही है, और मैं तो यह भी मानता हूँ कि स्पष्ट दोष होते हुए भी अगर दोनों एक-दूसरेको पसन्द कर लें, तो उनमें से किसीके पिताको भी बीचमें पड़ने का क्या अधिकार है? और क्या अन्धे कुँआरे ही रह जाते हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३७) से। सी० डब्ल्यू० ५५९४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३४४. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

१ सितम्बर, १९४५

चि० चिमनलाल,

शास्त्रीजी[1] की बात खेदजनक है। अगर वे पागल हो ही जायें, तो जैसा कि मनहर[2] कहता है, उन्हें पागलों के अस्पतालमें भरती करने के सिवाय और कोई चारा नहीं है। मेरी सलाह है कि विनोबा उनके पास हो आयें और प्रयत्न कर देखें। मैंने उन्हें एक पत्र लिखा तो है — दो दिन पहले।[3]

शर्मा[4]को पत्र लिखा, अच्छा किया।

कोंढराकी बात मुझे मालूम है। लगता है, हमारे कार्यकर्ता बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

तुम मजेमें होगे।

शारदाके समाचार मिलते रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४२) से

१. परचुरे शास्त्री
२. मनहर दीवान; देखिए "पत्र : मनहर दीवानको", ७-९-१९४५ भी।
३. देखिए पृ० २०१।
४. हीरालाल शर्मा

३४५. पत्र : लीलावती मुन्शीको

१ सितम्बर, १९४५

चि० लीलावती,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा विचार है, जिन शालाओ या सस्थाओंमें धर्म-शिक्षा देने में कोई बाधा न हो उनमें अगर बच्चोंके माता-पिता चाहें तो धर्म-शिक्षाकी व्यवस्था होनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री लीलावतीबहन मुन्शी
२६, रिज रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४६. पत्र : मंगलदास हरिकिशनदासको

१ सितम्बर, १९४५

भाई मगलदास,

हमेशाकी तरह तुम्हारा १०० रुपयेका चैक मिला।

बापूके आशीर्वाद

श्री मंगलदास हरिकिशनदास
मगलदास ऐंड सन्स
पब्लिशर्स ऐंड बुकसेलर्स
भागातालाव
सूरत

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३४७. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१ सितम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

मणिलाल बहुत उतावला है और बिना विचारे लिख देता है। मेरी दृष्टिमें, अब भी तुम्हारे लायक मौसम नहीं हो पाया है। बादल छाये ही रहते हैं। वर्षा होती रहती है और अभी तक शुष्कता नहीं आई है। मेरी हिम्मत तो तुम्हें बुलाने की नहीं होती। अगर हम २२ को बम्बई जायें और वहाँ मौसम अच्छा रहे तब तुम्हारा आना ठीक रहेगा। संस्थाओंके बारेमें तुम्हारी बात समझ गया हूँ। मैंने तो तुम्हारा पत्र वहाँ चिमनलाल [शाह] को भेज दिया है। तुम भी सबके साथ चर्चा करना। अपनी दृष्टिसे तो मुझे बाधाएँ दिखाई ही देती हैं। लेकिन तुमने इसपर पूरा विचार किया है, मैंने नहीं। इसलिए हो सकता है, जो तुम देखते हो उनमें से कुछ चीजें मू न देख पाता हूँ।

तुम अब तक बिलकुल ठीक हो गये होगे। सरदारकी तबीयतके बारेमें अभी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

चि० जवाहरलाल,

तुमारा खत मिला। मेनन[1] ने ठीक खबर दी है। सरदारने वह खत पढ़ा है। देखें क्या होता है। तुमने बहुत काम सरहद वगैरामें किया है।

सरदार १२ तारीखको पुनासे नहीं जा सकेंगे। चार हफ्तामें तो पुना छुट ही नहीं सकता है अगर दीनशाको और उनके उपचारको इन्साफ करना है। यहांकी हवा भी उनके लिये अच्छी है। आराम तो ठीक-ठीक है। उनका दरबार भरा रहता है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे : गांधी-नेहरू पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. वी० के० कृष्ण मेनन

३४९. पत्र : सन्तराम अग्रवालको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

भाई सन्तराम,

आपने दो चीज मिलाई। जो विवाह विधि[1] मैंने प्राकृत[2] मे की उसमे तो मैने तुलसीदास, सूरदास वगैरका अनुकरण किया है। सस्कृत रही क्योंकि प्राकृत बढी। जो मैंने किया है उससे धर्म लाभ ही हुआ है। इससे हिंदू-मुस्लिमकी बात आती ही नही है। यह प्रश्न अलग है। इसमें मैं नहीं पड़ना चाहता हू। दैवी जीवन की संस्था आप चलाते हैं। जरा सोचे।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री सन्तराम अग्रवाल
डिवाइन लाइफ सोसायटी
जरौली, अमृतसर

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७७५) से

३५०. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

चि० आनद,

मेरे खतमे या मेरी हाजरीसे तुमको शाति नही मिल सकती है। मिले उसे क्षणिक समजो। शाति बाहरसे नही आती है। भीतरसे निकले वही शाति कहा जाय। वह शाति ईश्वर देता है। विद्या भी नहीं, मैं भी नहीं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. देखिए परिशिष्ट २।
२. तात्पर्य लोक-भाषासे है।

३५१. पत्र : विद्या देवीको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

चि० विद्या,

तू अच्छा काम कर रही है। जो कातती हैं उन बहनोंके जीवनमें प्रवेश करो। कातना क्यों, सो बताओ, कातने की पूर्वक्रिया और पश्चात् भी बराबर सीखो और सिखाओ। सारा जीवनको स्वराज्य-रामराज्यके योग्य बनाओ। अब मैंने सब बता दिया। राखी अगर शुद्धिका चिह्न है तो ठीक ही है अन्यथा सूतका दुरुपयोग माना जावे।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती विद्या देवी
शान्ति निवास
स्यालकोट (पंजाब)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५२. पत्र : उपेन्द्र चौधरीको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

भाई उपेन्द्र[1],

तुम्हारा खत मिला। मैंने जो सूचना की है उसका अमल होना चाहिए। भाभी को तो मेरे आशीर्वाद हैं ही। खूब सेवा करे, वही सच्चा शोक और श्राद्ध है।

बापुके आशीर्वाद

श्री उपेन्द्र चौधरी
पिपरा
पो० केशवनगर
मुंगेर (बिहार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. महेन्द्र चौधरीके भाई; देखिए पृ० ११३-१४।

३५३. पत्र : श्रीमती जॉर्ज जोजेफको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

प्रिय भगिनि[1],

चि० बावूके बारेमे लग्न-पत्रिका देखी। बावू और उसके पति दीर्घायु रहो और देशसेवा करो।

अंग्रेजी पत्रिका क्यों? मलयालम या हिन्दुस्तानीमे क्यों नहीं? अंग्रेजीका इतना मोह क्यों?

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती जॉर्ज जोजेफ
कल्लोझम
चेंगनूर (त्रावणकोर)[2]

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

३५४. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

आपका खत मिला। मैं पैसेकी भीख मागू या न मागू, बात तो दूसरी ही है। हमारी सब सस्थाके इर्द-गिर्दमे मलेरिया मिटाने का धर्म है। किसका कितना काम पहुचता है सो अप्रस्तुत है। मलेरिया इर्दगिर्दमें मिटने मे लाभ है या नही वही सवाल है। खर्चपर सभी सस्था कावू रखे सो मैं समझूगा। लेकिन हिस्सा तो सबका एकसा होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। गो सेवा संघको समझाना हमारा सबका धर्म है। भाई नरहरि सम्मिलित मन्त्री है, वह क्या कहते हैं? विरुद्ध पक्ष समझना चाहूगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

अमृतलाल वत्राको लिखता[3] हू कि उसका धर्म है कि ट्रस्ट करे या हमारे नीचे आ जाये।

श्रीकृष्णदास जाजू
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. १९२४ में वाइकोम सत्याग्रहमें प्रमुख भूमिका निभाने वाले जॉर्ज जोजेफकी विधवा
२. पता अंग्रेजीमें है।
३. देखिए "पत्र : अमृतलाल वत्राको", पृ० २६०।

३५५. पत्र : शंकरनको

पूना
१ सितम्बर, १९४५

चि० शंकरन्,

प्रभाकरको अंग्रेजीमें क्यों लिखा? इंग्रेजीमें बराबर विचार तुम बता भी नहीं सकते हैं और प्रभाकर सुशीलाबहनको क्यों न लिखे? तुमको कहां उन्होंने सबके ऊपरी बनाया है? तुम्हारा अज्ञान और अभिमान तुमको खाता है। याद रखो कि अधिकार धर्मपालनसे आता है वही सच्चा है। और आज तो तुम सब कालेराके साथ युद्ध कर रहे हो। इसमें अधिकारकी बात ही कहां आती है? कोई रसी[1] न लगावे तो कोई हरज नहीं। ऐसे लोग मरने को तैयार हैं तो मरने दो। हैजा होगा तो उसे जूदा रखना होगा। आश्रममें ऐसे लोग रहेंगे ही।

भंगी काम बढ़ाने में यह भी समझो कि भंगी सबसे नीचे रहता हुआ सबसे अच्छा काम (सफाईका) करता है, उस हकसे सबसे ऊंचा ईश्वरके आगे है।

बापुके आशीर्वाद

श्री शंकरन्
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५६. पत्र : अब्दुल गफ्फार खाँको

१ सितम्बर, १९४५

भाई साहेब,

वर्किंग कमिटीकी मीटिंगमें[2] आपको आना चाहिए।

बापुकी दुआ

बादशाह खान
चरसड्डा पोस्ट
फ्रंटियर प्रोविन्स

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सुई
२. कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठक पूनामें १२ से १८ सितम्बर तक होने वाली थी।

३५७. बातचीत : नरेन्द्र देव[1] तथा सूरजप्रसाद अवस्थीके साथ

पूना
[२ सितम्बर, १९४५ के पूर्व][2]

मुलाकातके दौरान दोनों नेताओंने गांधीजी से पूछा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसकी तरह हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघ अपने संविधानमें "सत्य और अहिंसा" के स्थानपर क्या "शान्तिपूर्ण तथा उचित" शब्दोंको रख सकता है। खबर है, गांधीजी ने उत्तरमें कहा कि मैं उन लोगोंसे सहमत नहीं हूँ जो मानते हैं कि "सत्य और अहिंसा" राजनीतिक शब्द नहीं हैं। राजनीतिक सन्दर्भमें "शान्तिपूर्ण और उचित" शब्द अधिक उपयुक्त माने जाते हैं। लेकिन ये शब्द भी कांग्रेस संविधानमें मैंने ही दाखिल किये थे।[3] चूँकि आप लोगोंको श्रमिक वर्गके सम्बन्धमें काम करना है इसलिए राजनीतिक शब्दावलीके आधारपर उठाई जाने वाली आपत्तिका तो यहाँ कोई महत्व ही नहीं है। मजदूरोंसे स्पष्ट और सीधे कहना चाहिए कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

ट्रस्टीशिपके प्रश्नपर, जिसका संघके संविधानमें कोई उल्लेख नहीं है, गांधीजी ने कहा बताते हैं कि चूंकि ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तपर मैंने जोर दिया है और मेरे नामके साथ उसका स्थायी सम्बन्ध है, इसलिए उसपर विवाद करना उचित ही है। उन्होंने कहा, मैं वर्ग-संघर्षको बल नहीं देना चाहता। मालिकोंको ट्रस्टी बन जाना चाहिए। हो सकता है, हमारे यह आग्रह करने पर वे ट्रस्टी बन जायें, फिर भी वे मालिक ही बने रहना पसन्द करें।

उस हालतमें हमें उनका विरोध करना और उनसे लड़ना पड़ेगा। तब हमारा हथियार सत्याग्रह होगा। हम वर्गहीन समाज चाहते हो, तब भी हमें गृहयुद्धमें नही फँसना चाहिए। यह भरोसा रखना चाहिए कि अहिंसा वर्गहीन समाज ले आयेगी।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ७-९-१९४५

१. (१८८९-१९५६); अखिल भारतीय किसान सभाके अध्यक्ष, १९३९ और १९४२ में; अ० भा० कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और बादमें प्रजा सोशलिस्ट पार्टीके सदस्य; लखनऊ विश्वविद्यालय और बादमें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके उप-कुलपति

२. यह रिपोर्ट दिनांक, "कानपुर, ५ सितम्बर" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी और साथ ही यह टिप्पणी भी दी गई थी कि "आचार्य नरेन्द्र देव तथा सूरजप्रसाद अवस्थी... गांधीजी से पिछले हफ्ते पूनामें मिले थे।" इसलिए लगता है कि यह बातचीत रविवार, २ सितम्बरसे पहले ही हुई होगी।

३. देखिए खण्ड १९, पृ० १९२।

३५८. तार : जतीनदास अमीनको

एक्सप्रेस

पूना
२ सितम्बर, १९४५

अमीनभाई
आश्रम सेवाग्राम
वर्धा

उपवास हर हालतमें छोड़ना है। पत्र[1] लिख रहा हूँ। हैजेके बीच उपवास अपराधपूर्ण कार्य है।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५९. पत्र : एगथा हैरिसनको

नैसर्गिक चिकित्सालय
६, टोडीवाला रोड, पूना
२ सितम्बर, १९४५

प्रिय एगथा,

तुम्हारे दो पत्र मिले। प्यारेलाल यहाँ नहीं है।

हाँ, समय तो ऐसा ही है जिसमें व्यापक दृष्टि और सच्चेसे-सच्चे किस्मके राज-कौशलकी आवश्यकता है। अन्यथा तथाकथित विजय तीसरे महायुद्धका सूत्रपात कर सकती है, जो पिछले से भी भीषण होगा। मुझे आशा है तुम शीघ्र ही भारतमें आकर मिलोगी।

डोरोथी[2] के लम्बे पत्रका मैं अलग उत्तर नहीं दे रहा हूँ। उससे मेरा प्यार कहना और बताना कि यह हमारी कसौटीकी घड़ी है। प्रभु हमारा "परम संबल"[3] हो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५२६) से

१. देखिए पृ० २२८-२९।
२. डोरोथी हॉग
३. ए० एम० टॉपलेडीके एक अंग्रेजी भजनसे उद्धृत शब्दोंका अनुवाद

३६०. पत्र : अनसूया साराभाईको

२ सितम्बर, १९४५

चि० अनसूया[1],

तुम्हारा पत्र और टिप्पणियाँ अच्छी लगी। टिप्पणियोकी नकले केन्द्रीय कार्यालय, बापा और लक्ष्मी बाबू[2] को भिजवाई जा रही हैं।

तुम्हारा विषाद और मृदुलाके प्रति भक्तिको समझता हूँ।[3] उसका भक्त तो बरबस बन जाना पड़ता है। उसका कार्य, बलिदान और बहादुरी है ही ऐसी। लेकिन अगर तुम यह मानती हो कि अब इस काममे उसका सहयोग नही मिलेगा, तो यह तुम्हारी भूल है। बल्कि इसका परिणाम तो इसके बिलकुल विपरीत होना चाहिए।

मै तुम्हारे इस वादेको याद रखूँगा कि दो महीनेमें तुम मुझे अच्छी हिन्दुस्तानीमें पत्र लिखोगी। यह भी बताना कि अन्तमें तुमने क्या करने का फैसला किया।

स्नेह।

चि० अनसूया देवी
मार्फत श्री मृदुला साराभाई
कश्मीर हाउस, नेपियन सी रोड
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६१. पत्र : जतीनदास अमीनको

२ सितम्बर, १९४५

चि० अमीन,

आज तुम्हारे उपवासके सम्बन्धमें तार[4] भेज रहा हूँ। उपवास कोई मेरी अनुमति के बिना न करे, यह नियम है। हो सकता है, तुम्हे मालूम न हो, लेकिन प्रभाकर तो जानता है।

तुम दोनोके उपवासमे दोष है। अभी तो सबको पूरी शक्तिसे रोगियोंके उपचार

१. अम्बालाल साराभाईकी बहन

२. लक्ष्मीनारायण गडोदिया

३. मृदुला साराभाईने अमृतलाल ठक्करसे मतभेद होने के कारण कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके संयुक्त मन्त्री पदसे त्यागपत्र दे दिया था; देखिए "पत्र : मृदुला साराभाईको", १५-१०-१९४५।

४. देखिए पृ० २२७।

में जुट जाना है, फिर ऐसे समयमें उपवास करके सेवा करने की दृष्टिसे अशक्त होना कहाँ तक ठीक है?

मेरी राय यह है कि जो हैजेका टीका न लगवाना चाहें उन्हें उपवास करके उसके लिए मजबूर [न] किया जाये। संस्थामें नियम बनाया गया हो, तो उसका पालन न करने वाले संस्था छोड़ दें और उन्हें छोड़नी ही चाहिए। हमारे यहाँ ऐसा कोई नियम नहीं है। इसका मूल कारण मैं हूँ; क्योंकि टीके वगैरहमें मेरा विश्वास नहीं है। मेरी यह मान्यता और उसका अमल दक्षिण आफ्रिकासे ही चला आ रहा है। जो चाहे उसके लिए पूरी व्यवस्था कर देनी चाहिए। लेकिन जो नहीं चाहे उस पर उपवासका दबाव नहीं डालना चाहिए। उपवास कब किया जाये, यह जानना हो तो मेरी फुरसतके समय आकर जान लो।

कोटवालको पीटने में कौन लोग शरीक थे? उसका क्या हुआ? लिखने की फुरसत हो तो सारा विवरण लिखना। यह पत्र प्रभाकर वगैरहको हिन्दीमें [अनुवाद करके] पढ़ाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६२. पत्र : अमतुस्सलामको

पूना
२ सितम्बर, १९४५

बेटी अमतुल सलाम,

तेरा खत मिला। मैं क्या कहूं? पुनामें पड़ा हूं। पता नहीं यहांसे कब नीकलुंगा। पता नहीं मुंबई जाना होगा या नहीं। बंगालकी भी तारीख नक्की [पक्की] नहीं है। इतना है कि अक्टुबरके पहले नहीं आना है। प्रफुल्लबाबुको लिखा है।[1] सुधीर बाबू एक कहते हैं, सतीश बाबू दूसरी, प्र० बा० तीसरी। बोरकामता[2] आना चाहूंगा। ठहरना कितना होगा सो तो नहीं जानता हूं। तू महीनेकी बात करती है वह नहीं होगा। यह तो मैं बंगालमें ही रह जाउ तो हो सकता है। मेरा वहीं रहना तो नहीं हो सकता है।

तुझे इतना ही कहूं। मेरे आने तक वहीं रह, हो सके सो सेवा कर, खुदा पर इतबार कर। उसे करना है सो करेगा। मैं तो रोज यही सीखता हूं कि सिवाय खुदाके सब-कुछ निकम्मा है। मुझे सिवाय कामके कुछ अच्छा ही नहीं लगता। तू मेरे पास पैगाम क्यों मागे?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५००) से

१. देखिए पृ० १४५-४६ और १९१।
२. जहाँ अमतुस्सलाम खादी-कार्य कर रही थीं।

३६३. पत्र : अमृतलाल बत्राको

पूना

२ सितम्बर, १९४५

भाई अमृतलाल,

तुम्हारा खत मिला। या तो ट्रस्ट करो, चर्खा सघकी मजूरी लो या खादीका काम छोडो। पजाबकी शाखाके मातहत रहना भी अच्छा न लगे तो भी छोड़ो। खादीमें से पैसे कमाने की बात बिलकुल छोडो। खादी पैसे कमाने के लिए नही है। मेरे पास आकर क्या करोगे? जब मैं सेवाग्राम जाऊ तब ही तो आ सकते हैं। मेरा वहा जाना कब होगा मैं नही जानता हू। बातें करने का समय भी नहीं-सा है। इसलिए कुछ लिखना है तो लिखो। अच्छा है श्री जाजूजीको ही सब लिखो। उनका दिल होगा तो मुझे पूछेंगे।

बापुके आशीर्वाद

अमृतलाल बत्रा
शुद्ध खादी विद्यालय
झग, मघियाना (पजाब)[1]

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६४. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको

पूना

२ सितम्बर, १९४५

चि० अम्बूजम्,

तुम्हारा खत मिला। दुःख है कि तबियत खराब रहती है। अच्छी होने पर दिल चाहे तब मेरे पास आना। इतना कहू कि मेरा रहना थोडा अनिश्चित हो गया है। यहा भीड बहुत है और मैं कहा हूगा इसका ठिकाना नही रहा है। बगाल जाने की बात हो रही है। मुझे पूनामें लिखा करो, कैसी रहती है और कब आना चाहती है?

माताजी अच्छी होगी। पद्माका तो दुःख ही रहा। ईश्वर करे वही सही।

बापुके आशीर्वाद

एस० अम्बुजम्माल
९६, मॉब्रेज रोड
टेनम्पेट, मद्रास[2]

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१ और २. पते अंग्रेजीमें हैं।

३६५. पत्र : सत्यवतीको

पूना
२ सितम्बर, १९४५

चि० सत्यवती[1],

राजकुमारीने तेरा खत दिया है। शरीर रहो या जाओ तेरा शुभ निश्चय कायम ही रहेगा। शरीर गिरने से निश्चय थोड़े ही गिरता है? मैं जानता हूं कि तुझे शारीरिक दुःख दुःख नहीं दे सकता। मेरे बारेमें मत सोच। मेरा हरेक काम आजादीके ही लिए होता है और होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री सत्यवतीजी
ट्यूबरक्युलोसिस हॉस्पिटल
किंग्सवे, दिल्ली[2]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६६. पत्र : प्रेमकान्त भार्गवको

पूना
२ सितम्बर, १९४५

भाई प्रेमकान्त,

तुम्हारा खत मिला। तुमको मैं सलाह देने को असमर्थ हूं। पंडित सुन्दरलालजीसे पूछो। इतना कह सकता हूं कि तुम्हारे माताजीको छोड़ना नहीं और तालीमी संघको भूल जाना। माताजीको साथ रखकर जो हो सकता है करो ।

बापूके आशीर्वाद

श्री प्रेमकान्त
२४२, चौक
इलाहाबाद[3]

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४१२) से; सौजन्य : प्रेमकान्त भार्गव। प्यारेलाल पेपर्ससे भी

१. स्वामी श्रद्धानन्दकी पौत्री; अ० भा० कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीकी राष्ट्रीय कार्यकारिणीकी सदस्या। इन्हें भारत छोड़ो आन्दोलनके दौरान नजरबन्द कर दिया गया था, लेकिन तपेदिक होने के कारण छोड़ दिया गया।

२. पता अंग्रेजीमें है।

३. पता प्यारेलाल पेपर्ससे लिया गया है।

३६७. पत्र : मीठूबहन पेटिटको

पूना
२/३ सितम्बर, १९४५

चि० मीठूबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रसन्न हुआ। आज भाई कल्याणजी[1], कुँवरजी[2] वगैरह मिल गये। तुम्हारी भेजी तेलकी बोतल मिली। हो सका तो उपयोग करूँगा।

मामाके विषयमें बात की है। मामा वहाँ जायें, यह मुझे अच्छा लगेगा। तुम्हारा देखरेखमें वह सुधरे, यह मेरी प्रबल इच्छा है। अपनी तबीयत अच्छी रखना। तुमने काम तो खूब बढाया होगा।

बापूके आशीर्वाद

मीठूबहन पेटिट
कस्तूरबा सेवाश्रम
मरोली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६८. पत्र : मीराबहनको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड मिले। तुम बम्बई आ रही हो इसलिए हम वहाँ या यहाँ मिलेंगे। मेरा जाना अनिश्चित है। सरदारको जाना पडेगा। मुझे खुशी है कि बलवन्तसिंह वास्तवमें कामका है और के० तुम्हारे लिए एक आदमी भेज रहे हैं। सेवाग्रामके पास हैजेका प्रकोप बढ रहा है। बलवन्तसिंहको बताओ कि मैंने उसे कुछ दिन पहले पत्र लिखा था। लगता है, होशियारी और उसका बच्चा ठीक ही हैं। वह मुझे लिखती है और मैं उसे।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५१०) से, सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९९०५ से भी

१. कल्याणजी मेहता
२. कुँवरजी पारेख

३६९. पत्र : मोहन कुमारमंगलम्को

३ सितम्बर, १९४५

प्रिय मोहन[1],

तुम्हारा पत्र मिला। ६ तारीखको शाम ६ बजे मुझसे मिलो।

तुम्हारा,
बापू

श्री मोहन कुमारमंगलम्
राज भवन, मैंडहर्स्ट रोड
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७०. पत्र : ए० वरदाराजुलु नायडूको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

प्रिय डॉक्टर,

तुम्हारा पत्र मिला। राजाजी फिरसे कांग्रेसमें शरीक हो जायें, इस बातपर जोर देना तो तुम्हारे प्रान्तका काम है।[2]

तुम्हारा,
बापू

डॉ० ए० वरदाराजुलु
७५६, अट्टुमंडई स्ट्रीट
कीलावासल
(दक्षिण भारत)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पी० सुब्बारायनके पुत्र; एक समय भारत सरकारके इस्पात तथा खान मन्त्री
२. चक्रवर्ती राजगोपालाचारीने १५ जुलाई, १९४२ को कांग्रेससे इस्तीफा दे दिया था।

३७१. पत्र : एस० बी० सरदेसाईको

३ सितम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मै जान-बूझकर अग्रेजीमें लिख रहा हूँ।

मैंने उर्दू लिपिके १४ वर्णोंका नही, बल्कि आपको दिखाई सारणीमे सगृहीत १४ लिपियोका उल्लेख किया था।

देखता हूँ, आप सुनी-सुनाई बातोपर कान दे सकते है, भले ही वह बात स्पष्ट दिखने वाले साक्ष्यके खिलाफ हो। आपको मालूम होना चाहिए कि काका साहब[1] खुद महाराष्ट्री है और इसी तरह मेरे और अनेक सहयोगी भी।

मेरा तात्पर्य 'गीता' के एक प्रसिद्ध श्लोक[2] से था। उसमें कहा गया है कि उच्चतर कर्त्तव्यके पालनके लिए निम्न प्रतीत होने वाले कर्त्तव्यकी अवहेलना मत करो। और मैंने महाराष्ट्रियोंकी, जो अपने कार्योंके चाहे जितने कठिन होने पर भी उनमें सलग्न रहते है, प्रशसा ही की थी।

आपके मित्रने जितनी बताई है उर्दू उतनी कठिन नही है। मै ऐसे अनेक लोगो को जानता हूँ जिन्होने हफ्ते-भरसे भी कम समयमें उर्दू लिपि सीख ली है। मैंने जो कहा था कि मैं आपको हफ्ते-भरमें उर्दू लिपि सिखाने को तैयार हूँ उसपर मै आज भी कायम हूँ। अगर आप चाहे तो मै अपना कोई आदमी आपको सिखाने के लिए प्रस्तुत कर दूंगा।

हिन्दुस्तानी सीखने और मालिशमें आपके कौशलका प्रदर्शन करने के बीच सम्बन्ध स्पष्ट है। मैं शुल्क लेकर इस प्रकारके प्रदर्शन देखता हूँ। आपको जो शुल्क देना होगा वह यह कि आप अपने कौशलका प्रदर्शन दिखाने के एवजमें हिन्दुस्तानी सीखेंगे।

अब तो आप मुझे लम्बा पत्र नही लिखेंगे, जिसका मुझे उत्तर देना पड़े?

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

श्री एस० बी० सरदेसाई
३०४, सदाशिव पेठ
पूना

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दत्तात्रेय बा० कालेलकर

२. भगवद्गीता के तीसरे अध्यायका ३५वाँ या १८वेंका ४७वाँ श्लोक

३७२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

३ सितम्बर, १९४५

बापा,

क्या महादेव स्मारकके निमित्त १५ लाखकी राशि बम्बई इकट्ठी नहीं कर सकता? बहुत मुश्किलसे हो, तो नहीं करनी चाहिए। न हो पाये तो हर्ज नहीं। मेरी सलाह है कि गुजरातसे उगाही गई राशिमें बम्बईसे उगाही राशि मिला देनी चाहिए। बम्बईकी समितिको भी गुजरातकी समितिमें मिला देना चाहिए और पैसेका उपयोग स्मारककी दृष्टिसे ही विचार करके करना चाहिए। उसीमें शोभा है और वही महादेवके नामके योग्य होगा। स्मारकका स्थायी भवन तो, मैं मानता हूँ, अहमदाबादमें ही ठीक रहेगा। धाराके लिए बम्बईमें कोई मकान रखना जरूरी लगे तो किराये पर लिया जा सकता है। इस विचारमें दोष दिखे तो बताना।

बापू

[मार्फत] शान्तिकुमार मोरारजी
सिन्धिया हाउस
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७३. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

३ सितम्बर, १९४५

चि० शान्तिकुमार,

बापाको पहले पत्र[1] नहीं लिखा जा सका। अभी सवेरेके पहर लिखा। वह इस पत्रके साथ है। अगर तुम्हें ठीक लगे, तो उन्हें भेज देना। सरदारसे पढ़वा लिया है। उन्होंने इसे पसन्द किया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८०५) से। सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

१. देखिए पिछला शीर्षक।

३७४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

३ सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सुशीलाबहनको अभी नही भेजता। ९ को उसे बैठकमें[1] हाजिर रहना है, उसके बाद देखूंगा। वहाँ रसोई घरका काम ठीक चल रहा होगा। दुर्गाबहन[2] मदद करती होगी, और पुष्पाका भी पूरा सहयोग होगा। मोहनसिंह रोटी वगैरह खूब फुर्तीसे बना सकता है, ऐसा मैं समझता हूँ। यह पत्र कृष्णचन्द्रको तथा और लोगोंको भी पढ़ने को देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३६) से। सी० डब्ल्यू० ५५९५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

३७५. पत्र : पुष्पा देसाईको

३ सितम्बर, १९४५

चि० पुष्पा,

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रमे तेरी दृढ़ता दिखती है। इसे बनाये रखना। रजनी-भाईको अभी पत्र नही लिखता। पहली बातमे अगर तू अपने माता-पिताको प्रसन्न नही करती, तो दूसरीमें तो प्रसन्न करना। तेरा पत्र तेरे पिताको भेज रहा हूँ। अगर वे राजी हुए, यानी अगर मेरा लिखना उन्हें पसन्द हुआ, तो लिखूंगा। अपनी सखीको भी अभी तू न लिखे, तो कोई हर्ज नही। लेकिन अगर लिखना ही उचित समझे, तो पत्र अपने पिताजीकी मार्फत भेजना। मेरे सिवाय जिसे भी पत्र लिखे, पिताजीकी मार्फत भेजना। तुझे डिगा कौन सकता है? लेकिन तू भक्ति कर्म-मार्गके माध्यमसे करती है, ऐसा नही कहा जा सकता। लेकिन निष्काम कर्म भक्तिका विरोधी नही होता, बल्कि मैं ऐसा मानता हूँ कि वही सच्ची भक्ति है।

२५ रुपये मुझे किसीने नही दिये। अगर वे देने होंगे तो मुझे दिये जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६३) से

१. मेडिकल बोर्डकी
२. महादेव देसाईकी विधवा

३७६. पत्र : सीता गांधीको

३ सितम्बर, १९४५

चि० सीता,

तेरे पत्रका उत्तर तुरन्त देने का विचार किया था, लेकिन इतने दिन निकल गये।

विद्याभ्यासका काल एक प्रकारका भारी और शायद कठिन संन्यास है। इस कालमें न माता-पिताको याद करनी चाहिए, न किसी वियोगसे दुःखी होना चाहिए या रोना चाहिए। अभी तो तुझे विद्याभ्यासका ही विचार करना है, जिसमें शरीरकी देखभाल भी आ जाती है। तेरा सबकुछ ठीक चल रहा होगा। कठिनाई आये तो कायर न बनना। कठिनाइयोंको जीतना भी विद्याभ्यासमें शामिल है।

बापूके आशीर्वाद

मशरूवालाका बंगला
अकोला

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७७. पत्र : माणेकलाल अमृतलाल गांधीको

३ सितम्बर, १९४५

चि० माणेकलाल,

तुम्हारा पत्र और दरबारश्री[1] से सम्बन्धित कागजात मिले। वे मैंने डॉ० दिनशा को दिखा दिये हैं। उनकी राय साथमें भेज रहा हूँ। डॉ० दिनशाके खर्चके बारेमें पहलेसे क्या कहा जा सकता है? लेकिन अन्दाजा मिल जाये, इस खयालसे उनकी छपी हुई दरें भेज रहा हूँ। अभी तो यहाँ पूरी जगह भरी हुई है। इसलिए दरबारश्री आना चाहें तो भी अक्तूबरके पहले कोई जगह खाली होने वाली नहीं है। डॉक्टर अभी वहाँ जा सकें, ऐसी स्थिति नहीं है। वह [अपना काम छोड़कर] निकल ही नहीं सकता।

बापूके आशीर्वाद

माणेकलाल अमृतलाल गांधी
थाना देवली
काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दरबारश्री अमरावाला

३७८. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

३ सितम्बर, १९४५

भाई वैकुण्ठ,

तुम्हारा पत्र मिला। सब-कमेटीमें तुम्हारा शरीक होना मुझे पसन्द है। तुम कुछ प्रयोजन तो सिद्ध करोगे ही।

मुझे लगता है तुमने भारत बैंक छोडकर[1] ठीक किया। नयेमें क्यो जाओ?

बापूके आशीर्वाद

श्री वैकुण्ठलाल मेहता
९१, बेंक हाउस लेन
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७९. पत्र : डॉ० जीवराज मेहताको

३ सितम्बर, १९४५

भाई जीवराज,

इन दिनों सेवाग्रामके आसपासके गाँवोंमें हैजा फैल गया है। वहाँके अस्पताल वाले कडी मेहनत कर रहे हैं। वे हैजेकी वही दवा देते हैं जो सिविल अस्पताल वाले बताते हैं। क्या पिचकारी (एनिमा) ही उसकी एकमात्र दवा है? हजारों रोगियोको कैसे सँभाला जाये? होमियोपैथी या आयुर्वेदमें कुछ नही है क्या?

मरने वाले सैकडों ग्रामवासियोंका क्रिया-कर्म क्या किया जा सकता है? जलाना हो तो इतनी लकडी कहाँसे आये? रोज सौ-दो सौ को जलाये भी कौन, और कितने समयमें? दफन किया जाये तो कितनी जमीनकी जरूरत होगी? स्थितिका मुकाबला कैसे किया जाये? ९ तारीखको तुम सब मिलो तो इन प्रश्नोंपर विचार करना, और कस्तूरबा स्मारकके सिलसिलेमें भी चर्चा करना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० जीवराज मेहता
१६, अल्टामौंट रोड
बम्बई–२६

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. देखिए पृ० १९८।

३८०. पत्र : हरिश्चन्द्र भट्टको

३ सितम्बर, १९४५

भाई हरिश्चन्द्र,

तुम्हारा पत्र कल मिला और पुस्तिका आज। देखना है उसे [पुस्तिकाको] कब पढ़ पाता हूँ। इच्छा तो बहुत है, लेकिन उसे पूरी करने के लिए उतना समय कहाँसे निकालूँ?

बापूके आशीर्वाद

श्री हरिश्चन्द्र भ० भट्ट
कीकाभाई टाइप फाउंड्रीके ऊपर
प्रिन्सेस स्ट्रीट
बम्बई–२

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमने चार्ज[1] लीया। देखो क्या होता है। धैर्यसे सब कुछ साफ हो जायगा। मुन्नालालके पत्र[2] में मैंने लिखा है सो देखो।

होशियारी अच्छी होगी। दूसरे भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२४) से

१. आश्रमके प्रबन्धकका
२. देखिए पृ० २३६।

३८२. पत्र : प्रभाकर पारेखको

३ सितम्बर, १९४५

चि० प्रभाकर,

अमीनभाई पर लिखा है[1] सो पढोगे। तुम्हारा टीका नही लेना समझ सकता हू। अमीनभाईके सामने भी तुम्हारे उपवास नही करना था। तुम्हारा काम बराबर सेवामें ही लग जाना था और है। अमीनभाईसे कह सकते थे बापूसें पूछो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०३२) से। सी० डब्ल्यू० ९१५६ से भी; सौजन्य : प्रभाकर पारेख। प्यारेलाल पेपर्ससे भी

३८३. पत्र : प्रभावतीको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

चि० प्रभा,

तेरा खत मिला। तू जब मिलेगी तब निश्चय करुंगा। जब आ सकती तब आना। २० सप्टेंबरके बाद मैं यही हूगा। अगर मुबई जाना पडे तो दो दिनके लिए मिटींगके लिये। जाने की इच्छा नही है।

प्रियवदाका खत था। उस बारे तुझे लिखा है।[2] तेरा नाम देना। हाल काम नही करना है।

पिताजी[3] के बारेमें मैं तो चाहता हू कि वे बिलकुल छूटें। मेरी चले तो सब दवा बद करुगा। क्या वहा नीबु भी नही मिलते हैं? नीबुके रसमें पानी और शहद डालना। शहद सोला आउस पानीमें दो चायके चमच काफी हैं। जीतनी घोट पी सकते हैं सो पीएं।

रा० कु०[4] कल आई।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८१) से

१. देखिए पृ० २२८-२९।
२. देखिए पृ० २०५।
३. ब्रजकिशोर प्रसाद
४. अमृत राजकुमारी अर्थात् अमृतकौर १ सितम्बरको पूना पहुँची थीं।

३८४. पत्र : गणेश शास्त्री जोशीको

यह पत्र हाथोंहाथ पहुंचायें

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई गणेश शास्त्री,

सेवाग्रामके आसपास कोलेरा बहुत चलता है। आयुर्वेद क्या बताता है? रोज सेवाग्रामीण मरे। उसकी दहन क्रिया कैसे करें, लकड़ी कहांसे निकालें, कितने समयमें मृत देहको कैसे ले जायं? अगर दाटे [गाड़ें] तो कौन और कैसे? इसका विचार करो। उत्तर लिखो या दो। सुशीलासे मिलो और बातें करो। शीघ्र करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९३३) से। सौजन्य : गणेश शास्त्री जोशी

३८५. पत्र : श्यामलालको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारे दो खत मिले। एक २०९ प्रस्तावके बारेमें, दूसरा कृष्णा जिलाके बारेमें। दोनों सूचना स्वीकृत है।

मो० क० गांधी

श्री श्यामलालजी
क० स्मारक, बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८६. पत्र : पूनमचन्द राँकाको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई पूनमचन्द,

तुम्हारा खत रसिक है। अच्छे हो जाओ। रचनात्मक कार्यमें डूब जाओ। सूतकी सब क्रिया सीखो, सिखाओ।

बापूके आशीर्वाद

शेठ पूनमचन्द रांका
रांका कुटी
शंकर कालनी, नागपुर

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८७. पत्र : अली रजा दबीरको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई साहेब,

आपका खत मिला। लाखों मुसलमान हैं जो उर्दू न बोलते हैं, न पढ़ते हैं। यह कहना गलत है कि उर्दू मुसलमानकी जबान है। पंजाब, कश्मीर, यू० पी० वगैरहमें हिन्दू हैं जिनकी जबान उर्दू है। मुस्लिम इबादत किसीके खातिर नहीं होती है, निजी ख्वाहिशसे होती है। उर्दू लिखने में और इबादत करने में गलतियां होती हैं, इसे आप माफ न करें यह अलग बात है। खुदा जबानकी गलतीको थोड़े देखता है? वह तो दिलकी सफाईको ही देखता है।

आपका,
मो० क० गांधी

जनाब अली रजा दबीर
२४०५, ईस्ट स्ट्रीट
कैम्प, पूना[1]

पत्रकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता अंग्रेजीमें है।

३८८. पत्र : शंकरनको

३ सितम्बर, १९४५

चि० शंकरन्,

कॉलेरा कुछ शान्त हुआ है तो अच्छा है। उसकी जड़ ढूंढो। मुडदा [मुर्दा] को जलाते हैं कि दाटते [गाड़ते] हैं? बयानसे तो मालूम होता है कि लोग भाग रहे हैं। सबको लोगोंकी सेवामें ही व्यस्त होना चाहिए। आश्रमसे कुछ मदद मिलती है? मांगी है कि आवश्यकता नहीं लगी है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८९. पत्र : गोकुलचन्द नारंगको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई गोकुलचंद नारंग[1],

आपका खत पढ़ा। मैं तो लाचार हूं। मुझे पूछा जाय उसीमें मैं उत्तर देता हूं। शायद ही चुनावके बारेमें पूछा जाय। इसमें मेरा रस कम रहता है।

आपका,
मो० क० गांधी

डा. गोकुलचंद नारंग
सेवाय होटल
मसूरी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. लाहौरके बैरिस्टर

३९०. पत्र : प्रबोध रंजन घोषको

पूना
३ सितम्बर, १९४५

भाई प्रबोध रजन,

तुम्हारे बारेमें मुझे खेद है। अगर तुम्हारे पास पैसे नही हैं तो डा० रायसे कहो वही मदद करेंगे।

मो० क० गांधीके वंदेमातरम्

श्री प्रबोध रजन घोष
पी० ओ० मदनीपुर
जिला फरीदपुर (बगाल)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

३९१. पत्र: देवदास गांधीको

पूना
४ सितम्बर, १९४५

चि० देवदास,

तेरा कार्ड मिला। तू जरूर आना। राजकुमारीने मुझसे बात की थी। कल ही उसने तुझे लिखा है। तेरी तबीयत अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री देवदास गाधी
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९२. पत्र : गजानन नारायण कानिटकरको

पूना
४ सितम्बर, १९४५

भाई बालु काका,

मैं किसीको न मिलूं उसमें अपमान क्या? तुमारा तो हो ही कैसे?

सतारा के बारेमें मैं मेरा धर्म जानता हूं[1], अमल करता हूं। जो करता हूं वह किसीके संतोषके लिये नहीं।

मो० क० गांधीके वं० मा०

भाई बालु काका कानिटकर
३४१, सदाशिव
पूना

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४) से। सौजन्य : गजानन कानिटकर

३९३. तार : वसन्ती देवी दासको

पूना
५ सितम्बर, १९४५

वसन्ती देवी दास[2]
रसा रोड
कलकत्ता

हरिदास[3] के मामलेपर ध्यान दे रहा हूं। आशा है आप कुशल होंगी।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अन्य कई स्थानोंकी तरह सतारामें भी भारत छोड़ो आन्दोलनके दौरान ब्रिटिश प्रशासनको ठप करके पत्री सरकारके नामसे समानान्तर प्रशासन कायम कर लिया गया था। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्सके अनुसार, सरकारी प्रेस विज्ञप्तिमें भूमिगत आन्दोलनकारियोंकी लूटमारकी खबरें दी जा रही थीं; और १ सितम्बरको गांधीजी ने इस समस्याके सम्बन्धमें महाराष्ट्रके नेताओंके साथ सलाह-मशविरा किया था।

२. चित्तरंजन दासकी विधवा

३. हरिदास मित्र, जिन्हें मृत्यु-दण्ड सुनाया गया था; देखिए पृ० २७३-७४।

३९४. पत्र : भूपेन्द्रनाथ सेनगुप्तको

पूना
५ सितम्बर, १९४५

प्रिय भूपेन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे विस्तारसे उत्तर देने का श्रम उठाना मेरे लिए मुनासिब नही है। अगर कालान्तरसे ये समस्याएँ स्वत नही सुलझ जाती तो बादमें मिलने पर चर्चा करना या याद दिलाना। जब मैं बगाल जाऊँगा तो मेरे साथ बहुत लोग नही होगे। वहाँ कौन होगा, मैं नही जानता।

स्नेह।

बापू

श्री भू० ना० सेनगुप्त
९९/२, बालीगज प्लेस
कलकत्ता

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १००६६) से

३९५. पत्र : एन मारी पीटरसनको

५ सितम्बर, १९४५

प्रिय मारिया,

अब मुझे तुम्हारे सारे कागजात मिल गये है। देखता हूँ, यह केन्द्रके किसी व्यक्तिकी गलती नही है। जो भी हो, मैं इस सिलसिलेमे कार्रवाई कर रहा हूँ।

स्नेह।

श्रीमती कुमारी मारिया पीटरसन
सेवा मन्दिर, पोर्टो नोवो
दक्षिण भारत

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९६. पत्र : श्यामलालको

पूना
५ सितम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

आश्रमके बारेमें खत मिला। ८१० का बजेट पास करो। बाकीका कमिटीकी रिपोर्टके बाद करें।

गोपालस्वामीने मिस पीटर्सनके बारेमें उत्तर दिया है तो देखो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री श्यामलालजी
बजाजवाड़ी, वर्धा

मूल पत्रसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

३९७. तार : पुलिनसीलको

पूना
६ सितम्बर, १९४५

पुलिनसील
९३, रीजेन्ट स्ट्रीट
लन्दन

तुम्हारा तार नेहरूको भेज रहा हूँ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९८. पत्र : इनायतुल्ला खाँको[1]

पूना
६ सितम्बर, १९४५

मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने आपका पत्र गुम कर दिया, और इस तरह आपको उसकी नकल मुझे भेजने की तकलीफ देने का कारण बना। अब उसे पढ़ गया हूँ और उसके बारेमें आपका तार भी मिल गया था। मेरी अपनी राय तो यह है कि सीटोंका बँटवारा न हो, बल्कि चुनाव वयस्क मताधिकार और केवल एक निर्वाचक मण्डलके आधारपर हो। लेकिन मेरा स्वर तो अरण्य-रोदन ही है। इसलिए, मुझे लगता है कि मतभेद रखने वालोंके बीच उसका कोई महत्व नहीं होगा। आप ३० करोड़ लोगोंका प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हैं। कांग्रेस भी प्रातिनिधिक संस्था है, उसी तरह मुस्लिम लीग तथा और भी बहुत-सी संस्थाएँ हैं। इसलिए आपको उनका सहयोग प्राप्त करना है।

मेरे इस दावेका कि मेरी कोई प्रातिनिधिक हैसियत नहीं है, लोगोंने गलत अर्थ लगाया है। कुछ लोगोंपर मेरा प्रभाव है, इससे मैं प्रतिनिधि नहीं हो जाता। इसलिए मैं आपसे कहूँगा कि यदि आप कर सकें तो कांग्रेस और मुस्लिम लीगका सहयोग प्राप्त करें।

आपकी इच्छानुसार यह पत्र मैं दस्तगीर साहब[2] को भेज रहा हूँ और नकल आपको।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. अल्लामा मशरीकी नामसे विख्यात खाकसार नेता। इनायतुल्ला खाँको इस पत्रका उर्दू अनुवाद भेजा गया था।

२. अहमद दस्तगीर; देखिए अगला शीर्षक।

३९९. पत्र : अहमद दस्तगीरको

६ सितम्बर, १९४५

अहमद दस्तगीर साहब,

दाके वामुताविक मैं अल्लामा साहबके लिये एक खत[1] आपके पास भेज रहा हूं।

आपका खत मुझे मिला था। आप जब चाहें मेरे पास आ सकते हैं।[2]

अल्लामा साहबका खत और उनके पहले खतकी नकल आज मुझे मिली। मैंने उनको गुजारिशके मुताबिक उन्हें भी खत लिख दिया है।

मोहन क० गांधी

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४००. पत्र : हेमेन्द्र किशोरदास शाहको

६ सितम्बर, १९४५

भाई हेमेन्द्र शाह,

तुम्हारा पत्र पढ़ गया। इस विषयमें मेरी बहुत दिलचस्पी नहीं रही। अपने विचार मैंने वर्णव्यवस्था पर लिखी पुस्तक[3] की प्रस्तावनामें व्यक्त किये हैं। इस विषयमें निपुण लोग ही राय दे सकते हैं।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

श्री हेमेन्द्र किशोरदास शाह
अचरतवाई सैनेटोरियम
स्टेशनके सामने
कांदीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्सके अनुसार अल्लामा मशरीकीके कहने पर अहमद दस्तगीरने मशरीकी द्वारा तैयार किये गये संविधानके मसौदेपर गांधीजी के साथ ८ तारीखको आरम्भ होने वाले सप्ताहके दौरान किसी दिन चर्चा की थी।

३. देखिए खण्ड ५९, पृ० ६५-७०।

४०१. पत्र : गजानन नारायण कानिटकरको

पूना
६ सितम्बर, १९४५

भाई बालु काका,

तुमारा खत मिला। मै क्या करू? तुमारे पास, लबी कलम है। मेरे पास कुछ नही।

मो० क० गाधीके वं० मा०

श्री सेवक सेवानन्द बालु काका कानिटकर

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५) से

४०२. तार : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

एक्सप्रेस

पूना
७ सितम्बर, १९४५

मशरूवाला
आश्रम सेवाग्राम
वर्धा

तुम्हारा तार मिला। खेद है। शकरन और अमीनसे कहो कि उन्हें तुम्हारे निर्देशोका पालन खुशी-खुशी करना चाहिए।[1] हैजेके दौरान उन्हें पूरे मनसे काम करना चाहिए। सुशीलाको मेडिकल बोर्डकी रविवारकी बैठकमें अवश्य शामिल होना है, उसके बाद ही वह वहाँ जायेगी।

अग्रेजीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक भी।

४०३. पत्र : शंकरनको

पूना
७ सितम्बर, १९४५

चि० शंकरन्,

तुम्हारे बारेमें सुनकर मुझे खेद होता है और आश्चर्य।

तुमको सब चीज बताना है तो बताना ही व्यर्थ है। प्रभाकरको धमकाना, किशोरलालभाईका न मानना और अंतमें कालिरा चलता है तब काम करने से इनकार करना, कुछ मुनासिब नहीं लगता है। मैंने आज तार दिया है।[1] अगर आश्रममें मौन धारण कर सेवा ही करना है तो सेवा करो अथवा आश्रम छोड़कर जहां जाना है वहां जाओ। ऐसा समझो सब हमारे स्वामी हैं हम सेवक हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री शंकरन्
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०४. पत्र : आर० सी० हॉफमैनको

पूना
७ सितम्बर, १९४५

प्रिय श्री हॉफमैन,

आपका पत्र मिला। मेरी स्थितिको सही सिद्ध करने वाला प्रमाण खुद मेरे जीवनसे और उन अन्य हिन्दुओं तथा गैर-हिन्दुओंके जीवनसे प्राप्त होता है, जिन्होंने अपने अन्दर विद्यमान सत्यको अपने जीवनमें आचरित करने का प्रयत्न किया है। मैं आपके इस कथनको पूर्णतः स्वीकार करता हूं कि जिस प्रकार कार्यके बिना आस्था निष्प्राण है उसी प्रकार आस्थाके बिना कार्य भी निष्प्राण है, और आप खुद भी स्वीकार करते हैं कि आपने स्वयंमें, अर्थात् अपने कार्यमें सन्देह करना शुरू कर दिया है। सन्देह करते ही हम कहींके नहीं रह जाते। क्या यह सम्भव है कि इसके फलस्वरूप आपके कार्यके पीछे विद्यमान त्यागमें भी सन्देह किया जाये? मेरे विस्तृत

१. देखिए पिछला शीर्षक।

अनुभवने मुझे तो यह सिखाया है कि कार्य वाणीसे भी अधिक मुखर होता है, वाणी तो बहुधा भ्रामक होती है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री आर० सी० हॉफमैन
सेक्रेटरी तथा ट्रेज़रर
बंगाल क्रिश्चियन कौंसिल रिलीफ फंड
१३, वेलिंगटन स्क्वेयर
मार्फत लो मेमोरियल मिशन
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०५. पत्र : मनहर दीवानको

पूना
७ सितम्बर, १९४५

भाई मनोहर,

शास्त्रीजी [की मृत्यु] के बारेमें तार मिला। मैं तो बहुत राजी हुआ [कि] वे छूटे। मेरा विश्वास बढ़ता जाता है कि येनकेन प्रकारेण लोगोंको जिन्दा रखना या रहना धर्म नहीं हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०६. पत्र : पूरणचन्द्र जोशीको

नैसर्गिक चिकित्सालय
६, टोडीवाला रोड
पूना
८ सितम्बर, १९४५

प्रिय जोशी,

तुम्हारा ५ सितम्बरका पत्र मिला। कुमारमंगलमूसे मेरी बात हुई है।

मैं हमारे पत्र-व्यवहारको आगे जारी नहीं रखना चाहता। तुम्हारे पत्रसे तो यह लगता है कि तुम मुझसे यह कहलाने का आग्रह कर रहे हो कि 'मैंने तुम्हारी पार्टीके कार्यमें जो इतनी हानि की उसका मुझे खेद है।' लेकिन इस आग्रहके बावजूद स्वेच्छासे मानी हुई मर्यादाओंके साथ मुझे अपने ही तरीकेसे चलते रहना है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री पू० च० जोशी
कम्युनिस्ट पार्टी
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०७. पत्र : विभावती बोसको

८ सितम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

आपका हार्दिक निमन्त्रण मिला। लेकिन इस बार तो काम ऐसा है कि मुझे सोदपुर जाना पड़ेगा। वैसे अगले प्रवासके दौरान किसी दिन आपके घर आने की आशा तो रखूंगा ही।

आप कुशल होंगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीमती विभावती बोस
१, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०८. पत्र : कनु गांधीको

८ सितम्बर, १९४५

चि० कनु,

बहुत दिनो बाद तेरा पत्र मिला। मैं तो इतना ही कहूँगा कि रामदासको तुरन्त स्वस्थ हो जाना चाहिए। और तुझे तो बीमार पड़ना ही नही चाहिए।

तुम सबको–

बापूके आशीर्वाद

श्री कनु गांधी
मार्फत रामदास गांधी
खलासी लाइन
नागपुर, सी० पी०

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५२०) से। सौजन्य . कनु गांधी

४०९. पत्र : कैलाश डाह्याभाई मास्टरको

८ सितम्बर, १९४५

चि० कैलाश,

तुझे पत्र नही लिख सका। तू जम-बस गई है, ऐसा मानकर निश्चिन्त हो गया हूँ। मेरे पास काम बहुत पड़ा हुआ है, इसलिए जिसको लिखे बिना नही चल सकता, उसीको लिखता हूँ। अब तू क्यों बेचैन होती है? खूब सेवा कर, लायक बन, दूसरोंको पढ़ा, जैसे कि होशियारी बहन आदिको। मुझे लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४१०. : पत्र मुन्नालाल गंगादास शाहको

८ सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। रामनारायणजीको तुम्हें कुछ भी लिखने की जरूरत नहीं है।

मेरी सलाह है कि तुम्हें चुपचाप केवल सेवा करते रहना चाहिए। बोलना उतना ही चाहिए जितना कामके लिए जरूरी हो।

कंचनकी समस्या बहुत कठिन है। वह भी सरल हो सकती है, अगर तुम दृढ़ निश्चय करके उसपर अमल कर सको।

हीरामणि वाली बात समझा। आँबगाँवकरको तुम्हें कुछ नहीं लिखना चाहिए। उसे कोर्टमें जाना हो तो जाये। मेरे पास आयेगा तो मैं देख लूंगा।

वीणाकी बात भूल जाओ।

सुशीलाबहन वहाँ आ रही है, अतः अस्पतालके बारेमें जो उचित होगा करेगी।

मैं बहुत व्यस्त हूँ, इसलिए थोड़ेमें सन्तोष कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३५) से। सी० डब्ल्यू० ५५९६ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४११. पत्र : शंकरनको

८ सितम्बर, १९४५

चि० शंकरन्,

तुम्हारा खत मैंने पढ़ा। शुरूसे ही तुम्हारा ढंग अच्छा नहीं रहा है। मैंने बताया भी है, लेकिन तुमको मैं समझ नहीं सका हूं। इसलिए तुम जो वहां सेवक होकर सेवा भावसे शान्तिसे [नहीं] रह सकते हैं तो तुम्हारे कहीं भी स्वतन्त्र काम करना चाहिए। अब शायद अच्छा चल रहा है तो उससे मुझे सन्तोष नहीं रहेगा। अब तो सुशीलाबहन आ रही है। वह ज्यादा बतावेगी।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुम्हारा धर्म है कि प्रभाकर जैसे कहे वही करना। तुम्हारा ज्ञान भले ज्यादा है, लेकिन मनुष्यत्व प्रभाकरमें बहुत ज्यादा है।

बापु

श्री शंकरन्
सेवाग्राम आश्रम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१२. पत्र : होशियारीको

पूना
८ सितम्बर, १९४५

चि० होशियारी,

तू खूब काम कर रही है। कृ[ष्ण] चं[द्र] न पढ़ा सके तो दूसरा या दूसरी जो सिखा सके उससे पढ़ना। तू और गजराज खूब आगे बढ़ो।

बापूके आ[शीर्वाद]

होशियारी
आश्रम, सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१३. पत्र : प्रभाकर पारेखको

पूना
८ सितम्बर, १९४५

चि० प्रभाकर,

अमीनभाई कराची जाय या इस्पीतालके काम सेवाग्राममें ही करे। मेरा ख्याल है कि उनको अपने कामके लिए आवश्यक मदद देना योग्य है।

बापूके आ[शीर्वाद]

श्री प्रभाकर
आश्रम, सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

पूना
९ सितम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला और तार भी। सुशीला आज सवेरे वहां जाने के लिए रवाना हुई, और मैं समझता हूं आज [की गाड़ीसे] ही निकल जायेगी। इसलिए आज चाहूं तो भी उसे रोक नहीं सकता। वह वहां चली जाये, यह तो चाहता हूं। तुम्हारे पत्रसे लगता है कि वहां झगड़ा चल रहा है। तुम्हारा रसखाण जितना होना चाहिए उससे कम है। लिखा तो नहीं रुकूँगा, लेकिन यह बात अच्छी नहीं लगती। इस दृष्टिसे भी सुशीलाका वहां जाना अच्छा है। उसकी होशियारीपर मुझे विश्वास है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१५. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

घनश्यामदास बिड़ला
मार्फत लकी
कलकत्ता

घोष[1] के यहां आने पर मालूम होगा। आशा है तुम अच्छे होगे।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८७२) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. सुधीर घोष

४१६. पत्र : मध्य प्रान्त सरकारके मुख्य सचिवको

नैसर्गिक चिकित्सालय
६, टोडीवाला रोड, पूना
१० सितम्बर, १९४५

मुख्य सचिव
मध्य प्रान्त तथा बरार सरकार
नागपुर

प्रिय महोदय,

साथमें ग्राम-सेवा मण्डल, नालवाडी, वर्धाके दावे[1] का विवरण भेज रहा हूँ। आप देखेंगे कि विवरण बड़ी सावधानीसे तैयार किया गया है और इसमें केवल वही बातें रखी गई हैं जिनसे सरकारी अमले मामूली एहतियात बरतने से ही बच सकते थे। मेरे खयालमें, ऐसे नुकसानका समाधान किसी असामान्य कार्रवाईसे नहीं किया जा सकता।

आपका सच्चा,

सलग्न . १

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४१७. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को

पूना
१० सितम्बर, १९४५

चि० सुन्दरम्[2],

सोमवारका विचार अच्छा है।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१९६) से

१. तात्पर्य नालवाडी और पवनार आश्रमोंकी सम्पत्तिसे है। यह सम्पत्ति पहले सरकारने जब्त कर ली थी और बादमें लौटा दी थी। मुख्य सचिवके नाम लिखे गांधीजी के पत्रोंके लिए देखिए खण्ड ७८, पृ० ३४४-४५।

२. सम्बोधन तमिलमें है।

४१८. पुर्जा : अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९४५

क्या ठीक सोईं? यहाँ भी वैसा ही खाना खाओ जैसा मैनरविले[1] में खाती थी। इसलिए अगर तुम वहाँ सुबह फल या जो-कुछ भी लेती थीं तो वही यहाँ भी लो।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४२०७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८४३ से भी

४१९. पुर्जा : अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९४५

मैंने इसे बहुत जल्दीमें पढ़ा है। तुम इसे सावधानीसे पढ़कर सुधार सुझाओ और जब मैं देख लूँ तब भेज देना।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२०६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८४२ से भी

१. अमृतकौरका शिमला-स्थित आवास

४२०. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१० सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुमने शुद्ध हृदयसे अपनी भूल[1] स्वीकार कर ली। अब उस बातको भूल जाओ। अब उसपर विचार करने से कोई लाभ नहीं। कहना हो तो जिनका इस बातसे सम्बन्ध है उनसे कहो। यानी वीणा और खीमजीको लिखो। मैं यहाँ आभाको बता दूंगा। बाबला[2] वगैरहके बारेमें मुख्य बात यह है कि हम अपनी स्थिति स्पष्ट कर दें। आश्रमके बारेमें मैं तुम्हें तंग नहीं करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३४) से। सी० डब्ल्यू० ५५९७ से भी; सौजन्य मुन्नालाल ग० शाह

४२१. पत्र : रमणलाल शाहको

१० सितम्बर, १९४५

भाई रमणलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। जैसा गोमतीबहन कहती है वैसा करो। वह जहाँ रहने को कहे वहाँ रहो। मैं समझता हूँ कि इसीमें तुम्हारा भला है। इस कहावतमें बहुत तथ्य है कि विश्वासपर ही दुनिया चलती है। विश्वास बलात् नहीं पैदा किया जा सकता। हृदयमें जगे तभी वह सच्चा है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे रमणलाल शाह पेपर्स। सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए पृ० २१८-१९।

२. महादेव देसाईके पुत्र नारायण देसाई

४२२. पत्र : कान्ताको

१० सितम्बर, १९४५

चि० कान्ता,

तेरा पत्र मिला। लड़का बिलकुल ठीक हो गया, यह जानकर बहुत खुशी हुई। तूने यहाँ नहीं आकर ठीक ही किया। मुझसे मिलने में क्या है? तू वहाँ है तो मुझे तो वहाँ आना ही है। तभी मिलूँगा। मुझे यह अच्छा लगेगा कि तू सेवामें रत रहे, लेकिन मुझे या किसीको खुश करने के लिए नहीं, बल्कि अपना धर्म समझकर।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२३. पत्र : सुशीला नैयरको

१० सितम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

तू सकुशल वहाँ पहुँच गई होगी। अभी किशोरलालका तार आया है कि तेरा जाना जरूरी नहीं है। लेकिन तू गई, यह ठीक ही हुआ। साथमें कृष्ण वर्माका लिखा पत्र है। यह हैजेके बारेमें है। इसे पढ़ना। उसने कुछ दवा भेजी है। उसकी भेजी समाचारपत्र [की कतरन] मैं नहीं भेज रहा हूँ।[१]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक भी।

४२४. पत्र : कृष्ण वर्माको

१० सितम्बर, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारी कतरन वापस भेज रहा हूँ। अच्छी है। तुमने दवा आश्रम भेज दी, यह अच्छा किया। सुशीलाबहन इसी सिलसिलेमें सेवाग्राम रवाना हो गई है। तुम्हारा पत्र वहाँ भेज रहा हूँ। १५ के बाद मुझसे पूछकर आना। मामा पचगनी गया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

गाँवमें मृत शरीरोंका क्या करना चाहिए?

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१० सितम्बर, १९४५

यह पत्र तो केवल यह कहने के लिए है कि तू स्वस्थ होगा और कोई भी चिन्ता नहीं कर रहा होगा।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० २०६

४२६. पत्र : सुरेन्द्रको

१० सितम्बर, १९४५

सुरेन्द्र,

श्रद्धा डिगे तो रामनाम लो। वही सच्चा रास्ता बतायेगा। लेकिन यह सब समझना हो तो भाई किशोरलालके पास जाओ। वह सेवाग्राममें है। तुम्हें अभी तो यहाँ नहीं बुलाऊँगा। मेरा कार्यक्रम अनिश्चित है। शायद २१ को बम्बई जाना पड़े। इसे टालने की कोशिश कर रहा हूँ। अक्तूबरमें यहाँसे कलकत्ता जाना पड़ सकता है। वहाँ जाते हुए आश्रम तो जाना ही है। तुम उस समय आ सकते हो। इस सबके बावजूद अगर तुम्हें यहाँ आना हो तो आ जाओ। श्रद्धा बुद्धिका विषय नहीं, हृदयका है। कंकड़में शंकर है, इसे बुद्धि तो अस्वीकार ही करेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१० सितम्बर, १९४५

बापा,

तुम्हारे दो पत्र मेरे सामने हैं। राजकुमारीकी पुस्तिका[1] दूसरी भाषाओंमें जरूर प्रकाशित कराओ। बंगलामें तो शान्तिनिकेतन वाले कर रहे हैं। सुचेता शायद वहाँ न आये। इस बारेमें मैं विचार कर रहा हूँ। कोई तो मिलेगी ही। शेष मिलने पर।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. टु विमेन

४२८. पत्र : चिमनलाल माणेकलाल त्रिवेदीको

१० सितम्बर, १९४५

भाई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। २२ तक तो मुझे जरा भी फुरसत नही मिलने वाली है। बादका भी ईश्वर जाने।

बोमाके बारेमे मुझे कोई समझ नही है। [इस बारेमें] तुम आचार्य कुमारप्पासे मगनवाडी, वर्धामें मिल सकते हो।

बापूके आशीर्वाद

श्री चिमनलाल माणेकलाल त्रिवेदी
आनन्द भुवन
अमरावती रोड
नागपुर, म० प्रा०

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४२९. पत्र : छगनलाल जोशीको

१० सितम्बर, १९४५

चि० छगनलाल,

तुमने जो लिखा है, उसमें कुछ भी अजूबा नही है। यदि मुझे यात्रा करनी ही होगी तो तुम्हे अपने साथ कही ले जाना अच्छा लगेगा। सुविधाका ही सवाल रहेगा। समय आने पर मुझे लिखना।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

चि० छगनलाल जोशी
हरिजन सेवक सघ
राजकोट
काठियावाड

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमारा खत मीला। अब तो सु[शीला] बहिन वहां आती है इसलिए मैं कुछ लिखना नहीं चाहता हूं।

पारनेरकरके बारेमें अगर तुमारा विश्वास [हो] और वह राजी है तो खेती पानीका काम उसपर ही रखा जाय। दूर बैठे मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता हूं। किशोरलालभाई कहें ऐसा करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२५) से

४३१. पत्र : अमलप्रभा दासको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

चिरंजीवी अमलप्रभा[1],

तुम्हारा खत मिला। मैंने ८१०)का बजट पास कर दिया है, दूसरा भी करना तो है ही, लेकिन शिबिरके[2] बारेमें एक कमिटी बैठायी है। उस कमिटीकी रीपोर्ट आने पर कुछ परिवर्तन करना होगा तो करके ही पास करना चाहता हूं। कमिटीने आसामके बारेमें मुझको इखतियार दिया है, इसलिए अगर कुछ ढील हुई तो मेरी तरफसे ही हुई, ऐसा माना जाय, लेकिन मैं होने नहीं दूंगा।

मूगा खरीदना शुरू कर दिया जाय। तरीकेके बारेमें इतनी चीज याद रखी जाय तो काफी होगा।

१. शिबिरका सब काम स्वावलंबन पद्धतिपर निर्भर रखना। इसका मतलब

१. गोहाटी-निवासी डॉ० दासकी पुत्री, जिन्होंने अपना जीवन ग्राम-सेवाके निमित्त समर्पित कर दिया था।

२. जो जनवरी १९४६ में गांधीजी के वहाँके दौरेके सिलसिलेमें गोहाटीके निकट सरैनामें खोला जाने वाला था।

यह है कि शिविर खतम होने तक स्वावलंबी हो जाय। इस कारणसे अगर शिविर थोड़े ज्यादा अर्से तक रहेगी तो कुछ आपत्ति नही है। शायद लंबाने से ज्ञानमें अधिकता आयेगी और गहराई भी।

२. रूईकी कताई और उसकी पूर्ण क्रिया ज्ञानपूर्वक की जाय।

३. कोई एक अच्छी दस्तकारी भी सीखाई जाय, वह भी ज्ञानपूर्वक। स्वच्छता —शिविरकी और व्यक्तिगत, सम्पूर्णतया रखी जाय।

४ स्वावलंवनका आधार रेशमपर रखा जाय।

५ जहांतक हो सके सब काम शिविर-निवासीयोके हाथोसे ही हो। नौकर कम से कम।

६. शिविरमें हो सके वहां तक कार्यकर औरत ही हो।

७ शिविरका स्थान देहातमें या देहातके नजदीक और शिविरका जीवन देहातियोंसे मिलता-जुलता हो।

इतना तो मैंने मार्गदर्शनके लिये ही लिखा है। वहांके नियम जो मध्यस्थके मारफत मिले, [उनका पालन] करना ही है।

मैंने जो लिखा है वह पर्याप्त होना चाहिए। अगर नही है तो मुझे लिखो।

बापुके आशीर्वाद

श्री अमलप्रभा
तालीमी संघ, सेवाग्राम

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३८९) से

४३२. पत्र : इन्दुमती तेन्दुलकरको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

चि० इन्दु,

तेरा खत मिला। अच्छा है। तेरी शादीके बारेमें अखबारोमें देखा था। मेरे पास खत भी आते हैं। तू ठीक कहती है कि तुम लोगोको उत्तर देने की कोई आवश्यकता नही है। वह उत्तरदायित्व मेरे [ऊ]पर है और मौका आने पर जाहिरमें भी उत्तर दूगा। तू अच्छी हो जायेगी। दवा बहुत नही लेना। गुणाजी तो नैसर्गिक उपचार जानते हैं और मानते भी हैं।

डाक्टरका समझा। वे सेवाकार्यमें दृढ़निश्चित हो जायं वह अच्छा ही है। तुम दोनों सीधे कहोगे कि विवाह सेवा बढ़ाने के लिए भी हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री इन्दुमती तेन्दुलकर
ठलकवाड़ी, बेलगाम[1]

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९४८) से; सौजन्य : इन्दुमती तेन्दुलकर। प्यारेलाल पेपर्ससे भी

४३३. पत्र : मनहर दीवानको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

भाई मनहर,

तुम्हारा दूसरा खत मिला है। शास्त्रीजीके बारेमें सब अच्छा ही हुआ है। मैंने तार दिया और एक पत्र[2] भी भेजा। ईश्वर ही तुम्हारी सेवाका फल हो [दे] सकता है। लेकिन तुम्हारे फल ही कहां चाहिए?

बापुके आशीर्वाद

श्री मनहर दीवाण
दत्तपूर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पता प्यारेलाल पेपर्समें उपलब्ध पत्रकी नकलसे लिया गया है।
२. देखिए पृ० २५२।

४३४. पत्र : यशोधरा दासप्पाको

पूना
१० सितम्बर, १९४५

चि० यशोधरा[1],

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे काममें मेरे आशीर्वाद तो हैं ही। देखें क्या तुम्हारा काम मुझे मैसूर फेंकता है या नही। रामदास तो अब नाणावटी[2] के साथ घूमता है। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। तुम दोनो नागरी और उर्दू लिपि पक्की कर रहे है?

बापुके दोनोको आशीर्वाद

श्री यशोधरा दासप्पा
कस्तूरबा ट्रस्ट
वि० वि० मोहल्ला, मैसूर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३५. पत्र : जतीनदास अमीनको

१०/११ सितम्बर, १९४५

चि० अमीन,

तुम्हारा पत्र आज ही मिला।

सुशीला तो आज आश्रममें पुरानी भी पड गई होगी, क्योंकि वह कल ही बम्बईसे [सेवाग्रामके लिए] रवाना हुई। वह सभाके बाद यहाँ एक मिनट भी नही रुकी।

तुम्हारा कार्य ठोस है, इसमें मुझे कोई सन्देह नही। तुमने खुद ही स्वीकार किया है कि तुम शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हो। जो इस तरह उत्तेजित हो जाता है उससे बहुत सेवा नही होती। तुम इस उत्तेजनाकी वृत्तिको त्याग दो तो अच्छा हो। तुम्हारे कामकी प्रशसा भणसाली तो करेंगे ही, लेकिन तुम्हारे कामकी प्रशसा खुद तुम्हारा काम ही होना चाहिए। दूसरे प्रशंसा न करे तो भी अपने काममें लेशमात्र भी कमी न रहने दो। तुम्हारी शक्ति बहुत है, यह मै जानता हूँ। तुम ऐंठ न रखो तो तुम्हारी शक्ति और भी बढेगी, यह निश्चित मानो। तुम आश्रमके हो और मैं चाहता हूँ

१. मैसूर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष एच० सी० दासप्पाकी पत्नी
२. अमृतलाल नानावटी

कि तुम आश्रमसे न हटो। आश्रम तुम्हारी माता-रूप होना चाहिए, और मातासे अलगाव कब तक चल सकता है?

तुम पत्र लिखते रहना। यही पत्र सुशीलाबहनको पढ़ा देना; इसलिए उसे ज्यादा नहीं लिख रहा हूँ।

शंकरनको बताना कि उसका पत्र मिल गया है। उसके उत्तरकी जरूरत नहीं है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३६. पत्र : मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैयाको

नैसर्गिक चिकित्सालय
६, टोडीवाला रोड, पूना
११ सितम्बर, १९४५

प्रिय सर विश्वेश्वरैया[1],

आपका ७ जुलाईका पत्र मिला। मैं जानता हूँ कि मैंने उत्तर देने में बहुत देर कर दी, लेकिन यह अनिवार्य था। अभी भी ये चन्द सतरें मैं कामकी भीड़के बीच ही किसी तरह लिख रहा हूँ। अपने प्रिय हेतुके प्रति आपके उत्साहकी मैं सराहना करता हूँ और इस बातसे चकित हूँ कि इस उम्रमें भी आप इतनी शक्ति और चिन्तनके साथ अपने कार्यमें लगे रहते हैं। लेकिन कहना होगा, मेरी प्रशंसा यहीं आकर समाप्त हो जाती है।

शाब्दिक दृष्टिसे तो हमारे लक्ष्य समान प्रतीत होते हैं, लेकिन जब मैं साधनोंकी ओर ध्यान देता हूँ तो अन्तर इतना अधिक दिखाई देता है कि जिसे पाटा नहीं जा सकता। हो सकता है, हम दोनोंके वृद्ध हो जाने के कारण हमारे रुखोंमें बहुत कठोरता आ गई हो, और इसलिए हमारे नजरिये एक दूसरेसे मिल नहीं पाते। अगर आप दक्षिण आफ्रिकाको पाश्चात्य संसारका ही फैला हुआ हिस्सा मानते हैं, तो मैंने अपने जीवनका एक अच्छा खासा भाग पाश्चात्य संसारमें ही बिताया है। मैंने छोटे-बड़े सबको अत्यन्त आधुनिक यन्त्रोंकी सहायतासे आश्चर्यजनक गतिसे काम करते देखा है और साधारणसे-साधारण यूरोपीय श्रमिककी आय भी अमेरिकी श्रमिककी आयसे ज्यादा देखने में आई है। तथापि वहीं मुझपर उनके तौर-तरीकोंसे धक्का-सा पहुँचने लगा था। वे हब्शियोंके कष्टों और मजबूरियोंसे लाभ उठाते थे और उन्हें तथा उनकी पत्नियोंको पशुओंकी तरह रखते थे। इसलिए जो चीजें आपको आकृष्ट करती हैं वे मुझे न केवल आकृष्ट ही नहीं करतीं, बल्कि मुझमें वितृष्णा पैदा करती हैं।

---

१. (१८६१-१९६२); इंजीनियर और राजनयिक; मैसूरके भूतपूर्व दीवान

मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं आपके साथ एक विनम्र सहयोगीके रूपमें काम कर पाऊँ, लेकिन कर नही सकता।

आपके विस्तृत तथा धैर्य और सावधानीसे तैयार किये गये उत्तर[1] मुझे कायल नही कर पाये। फिर अपने और भी प्रश्नोंसे आपको परेशान करने से क्या लाभ? आपसे यह कहने की इजाजत चाहता हूँ कि मेरा दावा है कि मैं ग्रामीण लोगोंके बीच सुसंगठित सस्थाओंको सहायतासे बहुत-सी योजनाओको काफी सफलतापूर्वक कार्यान्वित करता रहा हूँ। ग्रामवासियोके बीच लगभग चार करोड़ रुपये (जहाँ तक मुझे याद है) वितरित किये गये है — कोई खैरात के तौरपर नही बल्कि ठोस कामके एवजमें — और वह भी बहुत सारी कठिनाइयोका सामना करते हुए। अगस्त १९४२ के बाद यदि सरकारका विरोध और उसका निराधार क्रोध आड़े न आया होता, तो उपर्युक्त सस्थाओने और भी ज्यादा करके दिखाया होता। लेकिन आपसे, जिसने कृष्णसागर[2] जैसा चमत्कार कर दिखाया है, मेरी योजनाकी ओर दृष्टि डालने तककी अपेक्षा मैं नही कर सकता। इसलिए अन्तमें मैं यही कह सकता हूँ कि मैं आपकी योजनाको नही बल्कि आपके ठोस कार्यको उत्सुकतासे देखूँगा और यदि उसमें मुझे कुछ सीखने-जैसा मिला तो सीखूँगा।

आशा है, आप पूर्णत. स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर मो० विश्वेश्वरैया, के० सी० आई० ई०
अपलैंड्स, हाई ग्राउन्ड
बंगलौर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४३७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

११ सितम्बर, १९४५

चि० चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सुशीला अब वहाँ पहुँच गई होगी। अगर जाजूजी मोतीलाल राठीकी जगह रामप्रसादको रख ले और रामप्रसाद इस कामको हाथमें ले ले तो यह मुझे तो पसन्द होगा। रामप्रसादको और भी अधिक वेतन चाहिए, यह बात मेरी समझमें नही आती। फिर भी, अगर जाजूजी उसका वेतन बढाने के पक्षमें हो तो मैं आपत्ति नही करूँगा। मैं स्वय निर्णय नही कर सकता। अगर रामप्रसाद इमारत

१. गांधीजी के प्रश्नोंके लिए देखिए खण्ड ८०, पृ० ३१५-१६।
२. तात्पर्य कृष्णसागर बाँधके निर्माणसे है।

बनवाने के कार्यमें लग जाये तो ये पति-पत्नी वहीं रहेंगे, या जैसे अभी रहते हैं आश्रममें ही रहेंगे? इस बातका निर्णय भी तुम्हींको करना होगा।

रसिकलालकी मार्फत मिले ५,००० रुपये के बारेमें मुझे और कुछ नहीं जानना है। बापाने जिस हरिजन कार्यमें उसका उपयोग करने की योजना बनाई है, उसमें उसका उपयोग करने की उन्हें अनुमति दे देना। मुझे याद है कि काठियावाड़के लिए उसका उपयोग करने की बात बापा कह रहे थे।

अब शर्माके बारेमें। तुम्हारा भेजा पत्र-व्यवहार मैं पढ़ गया। तुम पत्र-व्यवहार करो, और परिणाम मुझे बताओ। चि० कनैयो आ गया है। वह आते हुए शारदाको देखने सूरत उतर गया था। कहता था, शारदाको फिर हलका बुखार आने लगा है।

मुझे लगता है कि अब मैं सब बातोंके जवाब दे चुका।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४३) से

४३८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
११ सितम्बर, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। अब तो सुशीलाबेन आ गई है इसलिए मुझे कुछ लिखने का नहीं रहा है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२६) से

४३९. पत्र : नारणदास गांधीको

पूना
१२ सितम्बर, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र और वक्तव्य मिले। तुम देखोगे कि वक्तव्यमें मैंने काफी सुधार किये हैं। आशा है, उनका कारण भी तुम समझ जाओगे। उसमें चरखा संघके आजके नियमोंका उल्लंघन नहीं होता। अब मेरी सलाह यह है कि तुम जो भण्डार चलाते

हो या काठियावाड़में तुम्हारे निरीक्षणमें जो भण्डार चलते हैं उनमें तुम सदस्योंको प्रति १०० रुपयेकी खादीकी खरीदपर डेढ़ रुपयेकी छूट दो। यदि चरखा संघ इस नियमको स्वीकार करे तो उसे उन शाखाओंके अधीन चलने वाली दुकानोंसे ही खादी खरीदने का निर्णय करना चाहिए। ऐसा न करके यदि कन्याकुमारीका कोई सदस्य पंजाबकी शाखाकी दुकानोंसे खादी लेने का विचार करेगा तो इसमें धोखाधड़ीकी बहुत सम्भावना रहेगी।

तुम्हारी योजनाके लिए मेरा आशीर्वाद तो है ही और जो भी व्यक्ति यहाँसे वहाँ जा रहा होगा उसके साथ मैं कुछ भेजूँगा भी।

बालासाहब खेर[1] तो २-३ तारीख तक व्यस्त हैं, इसलिए वे तो नहीं आ सकते। अपनी जगह उन्होंने ये नाम सुझाये हैं नरहरि परीख, मोरारजी देसाई, काका कालेलकर, दादा मावलकर। इनमें से काका कालेलकर यहीं हैं। उनसे मैं मिला था। मुझे लगता है कि काका सबसे ज्यादा उपयोगी होंगे। नरहरिको अभी छुट्टी मिल भी नहीं सकती। उसके सिरपर बहुत सारे काम हैं। काका वहाँ १ तारीखको पहुँच सकते हैं और वहाँसे ४ तारीखको उन्हें वापस आ जाना चाहिए। इसलिए वे वहाँ ज्यादा लम्बा दौरा नहीं कर सकते। वे ६ तारीखको बम्बईमें होने वाली एक महत्त्वपूर्ण सभामें उपस्थित होने की स्वीकृति दे चुके हैं।

तुम आज अपने ६०वें वर्षमें प्रवेश कर रहे हो। किन्तु मेरे हिसाबसे तुम्हें अभी कमसे-कम ६० वर्ष और जीने की इच्छा रखनी चाहिए। यानी, तुमने अभी केवल आधा ही रास्ता तय किया है। आज ही मैंने एक पुस्तकमें पढ़ा कि मनुष्यको इच्छा तो डेढ़ सौ वर्ष जीने की रखनी चाहिए। ऐसी इच्छा करोड़ों लोग कर सकते हैं। किन्तु उनकी ऐसी इच्छा निरर्थक होगी, क्योंकि जो लोग ऐसी इच्छा रखते हैं उनके लिए शर्त यह है कि उन्हें अपने जीवनका सारा समय यज्ञार्थ यानी अनासक्त रहकर सेवा करने में ही बिताना चाहिए। अनासक्तिका पालन करना बड़ा कठिन कार्य है। परन्तु जो अनासक्तिका पालन कर सकता है वह अवश्य १२५ वर्ष तक जियेगा, और तुम अनासक्तिका पालन करने की शक्ति अवश्य रखते हो, ऐसा मैं मानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६२९ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

१. बाल गंगाधर खेर (१८८८–१९५७); स्वराज्य पार्टीके मन्त्री; बम्बईके मुख्य मन्त्री; बादमें भारतके लन्दन-स्थित उच्चायुक्त

४४०. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

१२ सितम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

चि० नारणदासके वक्तव्य और पत्र इन दोनोंकी नकल भेज रहा हूँ। इन्हें पढ़ जाना और अगर तुम्हें लगे कि उसने वक्तव्यमें जो-कुछ लिखा है वह ठीक है, तो मेरा खयाल है कि सारे हिन्दुस्तानमें ऐसे सदस्य बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। पत्रमें कांग्रेसके सम्बन्धमें जो सुझाव दिया है उसपर अमल करवाना मुझे असम्भव-सा लगता है, क्योंकि उसके लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है। यदि हम [काफी] सदस्य बनाने में सफल हो जायें, तो शायद कांग्रेसमें वैसा वातावरण पैदा कर सकें। मतलब यह कि चरखा संघको अपने कार्यसे कांग्रेसपर प्रभाव डालना है। उसके लिए योग्य शक्ति प्राप्त करने का साधन हमें ढूँढ़ निकालना है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४१. पत्र : लॉर्ड वेवलको

नैसर्गिक चिकित्सालय
६, टोडीवाला रोड, पूना
१४ सितम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

खेद है कि आपके लगभग लन्दनसे लौटते ही मुझे आपको कष्ट देना पड़ रहा है। मेरे पास इसकी एकमात्र सफाई यह है कि कार्य विशुद्ध मानवीय है।

बाईस वर्षीय श्री हरिदास मित्रको एक ऐसे आधारपर मृत्यु-दण्ड सुनाया गया है, जो मुझे लगता है ठीक नहीं है। वे कलकत्ता विश्वविद्यालयके एम० ए० हैं और सुभाषचन्द्र बोसकी नवयौवना भतीजी[1] के पति हैं। उनके चाचा तथा उनके वकील कार्डन नोड द्वारा दायर की गई क्षमादानकी याचिका मैंने पढ़ी है। मेरा विचार है कि उन्होंने क्षमादानके अधिकारके प्रयोगके लिए उचित कारण प्रस्तुत किये हैं। जो भी हो, इस मामलेमें क्षमादान इसलिए भी अपरिहार्य हो जाता है कि जापानके साथ युद्ध खत्म हो गया है। यदि इस मृत्यु-दण्डको कार्यान्वित किया गया तो वह भारी राजनीतिक भूल होगी।

१. बेला मित्र

यह जानकर मैं उल्लाससे भर गया था कि आपने लौटकर आने के बाद मामले पर खुद विचार करने तक दण्डके अमलको स्थगित रखने का आदेश दिया है।

इस मामलेकी ओर मेरा ध्यान कैदीकी पत्नीने दिलाया, क्योंकि जब मुझे एडवोकेट शरत्चन्द्र बोसका अतिथि बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उन दिनों मेरी प्रार्थना-सभाओंमें वे अक्सर भजन गाया करती थीं। मुझे जानकर खुशी हुई कि भारत सरकारने शरत्चन्द्र बोसको रिहा करने का आदेश दे दिया है।[1]

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

वाइसराय महोदय
वाइसराय हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]
गांधीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४६-४७

४४२. पत्र : रणजीतसिंह हरभामजीको

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

भाई रणजीतसिंहजी,

आपका पत्र मिला। मजेकी बात है कि मनुष्य बहुधा यह नहीं जानता कि कौन उसका मित्र है और कौन शत्रु। दूसरी बात यह कि आप मातृभाषामें न लिखकर अपनेको स्वयं ही विदेशी बना रहे हैं। आप अपने पैरपर आप ही कुल्हाड़ी क्यों मार रहे हैं?

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

श्री रणजीतसिंहजी हरभामजी
रवा विलास
राजकोट, काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. इसके उत्तरमें वाइसरायके निजी सचिव ई० एम० जेन्किन्सने १८ सितम्बरको लिखा था कि मामलेपर बंगालके गवर्नर अब भी विचार कर रहे हैं और कुछ ही दिनोंमें वह वाइसरायके समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

४४३. पत्र : सरस्वती गडोदियाको

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

चि० सरस्वती,

तुम्हारा लंबा खत मुझको मिला। भाई हीरालालने मुझे सब लिखा है इसलिए उनको जो कहना है वह मैं जानता हूं। लेकिन वह बड़ा क्रोधी है और जो क्रोधी है उनसे मैं भागता हूं। इसलिए उनके काममें मैं दखल नहीं देता हूं। लक्ष्मीनारायणजी[1] ने जो खत उनको लिखे हैं उसकी नकल भेज दी हैं। उसमें मैं क्या पढ़ूं? इसलिए मैं इतना ही चाहता हूं कि तुम दोनोंको जो शुद्ध सत्य प्रतीत हो उसीका आचरण करें तो मुझे बड़ा संतोष होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६२९) से

४४४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुम्हारा खत मिला। मुन्नालाल और प्रभाकर १२ माईल दूर गये सो तो अच्छा ही है। पैदल तो नहीं गये हैं न?

हु० बहिनका वर्ग तुम लेते हो[2] वह अच्छा है। बाबाजी भी अच्छे होंगे। महारकी बात खराब है, यदि किस्सा और बढ़े तो उसकी खबर देते रहो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

पुष्पाका खर्च हमारे ही करना है। उसके पैसा उसके लिए खर्च होता है उसमें जमा कीया जाय।

कामलेका देखा जायगा। बा० कृ०[3] को बुखार आ गया था। अब ठीक है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२७) से

१. सरस्वती गडोदियाके पति लक्ष्मीनारायण गडोदिया। ये खुर्जामें हीरालाल शर्मा द्वारा संचालित प्राकृतिक चिकित्सालयके ट्रस्टी और कोषाध्यक्ष थे।

२. होशियारीबहन कृष्णचन्द्रसे पढ़ती थीं।

३. बालकृष्ण

४४५. पत्र : लक्ष्मणसिंह गेलाकोटीको

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

भाई लक्ष्मण सिंहजी,

आपका भेजा हुआ कपडा सेवाग्राम पहुच गया है। यहा बादमे आ जायेगा। आपने कातने, बुनने का कार्य आरम्भ किया है वह अच्छी बात है। मेरे आशीर्वाद हैं ही।

बापुका आशीर्वाद

लक्ष्मणसिंह गेलाकोटी
अध्यापक, मिडल स्कूल
वाडेट्टीना
अलमोडा

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४६. पत्र : डॉ० बी० एस० मुंजेको

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

भाई मुंजे,

आपका लम्बा खत मिला है। जवाब देने से क्या लाभ? आपके विचार और मेरे विचार [के] बीच महासागरसा अन्तर है। अच्छा है कि अन्तर होते हुए भी हम एक दूसरेके मित्रवत् रह सकते हैं। आपका खत इग्रेजीमे क्यो? मराठी या हिन्दुस्तानी में क्यो नही?

आपका,
मो० क० गांधी

डाक्टर साहेब मुजे
भोंसले मिलिटरी स्कूल
रामभूमि, नासिक

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४४७. भाषण : प्रार्थना-सभामें

पूना
१४ सितम्बर, १९४५

यह सार्वजनिक सभाका नहीं, प्रार्थनाका स्थल है। अपने मूर्खतापूर्ण और अनुचित व्यवहारसे जिन लोगोंने मुझे और चिकित्सालयमें रहने वाले अन्य लोगोंको परेशान किया, उन्होंने यह दिखा दिया कि वे प्रार्थनाके लिए नहीं आये थे।[1] मुझे मालूम है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो ईश्वरके अस्तित्वमें विश्वास नहीं करते। इंग्लैंडमें ऐसे कुछ लोगोंसे मैं मिला था और शायद यहाँ भी उस तरहके कुछ लोग हों। वे पूछते हैं, "ईश्वर कहाँ है?" और "अगर ईश्वर है तो फिर संसारमें इतना कष्ट क्यों है?" लेकिन ईश्वर और प्रार्थनामें विश्वास करने वाले लोग किसीको ईश्वर दिखा नहीं सकते। हम यह आशा करते हैं कि ये प्रार्थनाएँ हमारे साथ इनमें शामिल होने वाले लोगोंके मनपर कुछ प्रभाव डालेंगी।

मैं जानता हूँ कि आप अपने नेताओंको प्यार करते हैं और उनके दर्शन करना तथा उनकी बात सुनना चाहते हैं। लेकिन यह बात गलत है कि वे कठिन परिश्रम करके थक गये हों या जगह छोड़कर चले गये हों तब भी आप उन्हें सामने आने को मजबूर करें। अन्य सार्वजनिक सभाओंमें आपको उनके दर्शन करने और उनकी बातें सुनने का अवसर मिलेगा। इसलिए आपसे मेरा अनुरोध है कि आप प्रार्थनाके समय और बादमें अनुशासनका पालन करें। अगर हम शान्ति नहीं रखेंगे और अनुशासित व्यवहार नहीं करेंगे तो अपनेको स्वराज्यके लिए कैसे प्रशिक्षित करेंगे?

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १६-९-१९४५

१. साधन-सूत्रके अनुसार जवाहरलाल नेहरूके दर्शनके लिए कुछ लोगोंने पिछली रात हंगामा खड़ा कर दिया था।

४४८. पत्र : भोपालके नवाबको

(चन्दू शाहके हाथ)

पूना

१६ सितम्बर, १९४५

प्रिय नवाब साहब,

अभी-अभी चन्दूने मुझे आपका कृपापत्र दिया है। आपकी इस क्षतिमें आपसे मेरी पूरी सहानुभूति है।

जब भी आपको समय उपयुक्त लगे मैं आपके पत्रकी अपेक्षा करूँगा।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

हिज हाइनेस नवाब, भोपाल

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४९. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

पूना

१६ सितम्बर, १९४५

प्रिय जैरामदासभाई,

आपका पत्र आज पू० बापुको मिला। तार तो परसों ही पहुंच गया था। आप यहां नहीं आ सके यह वे समझते हैं। विवाहके बारेमें तो सफलता प्राप्त होगी ही, ऐसा पू० बापु कहते हैं। चुनावके बारेमें आप सरदारको लिखकर तय कर लेंगे।

मेरा खत आपको मिला होगा, जिसमें मैंने बापुके हिंदु-मुस्लिम लेखोंका संग्रह करने के लिये आपसे दरखास्त की थी। बापु भी खुश होंगे, अगर इस कामको आप करें। और वे कहते हैं कि इसमें आनन्द हिंगोरानी आपको हर तरहकी मदद देने में जरूर तैयार होंगे।

देवीबहिन और आपको मेरा सप्रेम वंदे — प्रेमीको आशीर्वाद

आपकी,

अमृतकौर

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ११०५९) से। सौजन्य अर्जुन जयरामदास

४५०. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

१६ सितम्बर, १९४५

चि० हर्षदा,

तुम्हारा यह कौन-सा जन्म-दिन है, यह तुमने नहीं लिखा। लेकिन जो भी हो, जीने के इतने वर्ष कम हो ही गये न? इस दृष्टिकोणसे तो वर्षगांठके दिन हमें शोक मनाना चाहिए। और अगर आशीर्वाद देना हो तो इस अभिप्रायसे देना चाहिए कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी अगर ईश्वरको पूरा न पहचाना हो तो अब उसे पहचानने में शेष जीवन बिताया जाये।

क्या तूने उर्दू लिपि सीखना शुरू किया है? नहीं किया तो क्यों नहीं किया? बुखार कभी कुछ आया हो, मुझे तो यह भी याद नहीं है, फिर बहुत दुःखकी तो बात ही कहां पैदा होती है?

बापुके आशीर्वाद

श्री हर्षदाबहन दीवानजी
१५वां रास्ता
खार
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२२५) से। सौजन्य : हर्षदा दीवानजी

४५१. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१६ सितम्बर, १९४५

तेरी चिट्ठी मिली। जड़भरत[1] सम्बन्धी भजन तो मैं दक्षिण आफ्रिकामें गुनगुनाता था, इसलिए मुझे याद है। लेकिन उसका गूढ़ार्थ जो तेरे मनमें है वही मेरे मनमें है, यह नहीं कहा जा सकता। इसलिए अपना अर्थ लिख भेजना। नैसर्गिक उपचारकी दृष्टिसे सभी रोगोंका मूल कारण एक ही होता है। अगर यह बात सच हो तो "नवीवन और प्रतापसे अच्छी है", यह वाक्य निरर्थक माना जायेगा। वैसे यह पत्र तो केवल मेरे और मेरे विनोदके लिए है, और तुझे यह जताने के लिए कि मैं रोज तेरी याद करता हूं।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० २०३

१. भागवत में वर्णित एक योगी

४५२. पत्र : चम्पा मेहताको

१६ सितम्बर, १९४५

चि० चम्पा,

तेरा पत्र मिल गया है। लाल बगले[1] के बारेमें तूने जो लिखा है सो मैं समझ गया हूँ। इसका मुझपर कोई अच्छा असर नही पडा है। किन्तु इसके लिए पैसे तो डॉक्टर[2] ने ही खर्चे हैं। उन्होंने इसके बारेमें कोई वसीयत तो छोडी नही है, इसलिए तुम सब लोगोको इसे अपनी मिल्कियत मानने का अधिकार है। मगनभाई[3] के बारेमें मैं क्या लिखूँ? मैं कामना करता हूँ कि सरला बिलकुल ठीक हो जाये।

चम्पाबहन मेहता
चन्द्रकुज
जागनाथ प्लॉट
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४५३. पत्र : कृष्ण वर्माको

१६ सितम्बर, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र[4] मैं सुशीलाबहनको भेज रहा हूँ। मैयतकी बात तुम ठीक समझे हो, किन्तु तुम्हारा तरीका भी पुराना ही है। इस मामलेमें किसीको तो खोज करनी ही पडेगी। यह मामला प्राकृतिक चिकित्साके क्षेत्रसे बाहर नही होना चाहिए। जहाँ थोडी-सी खुदाई करने से पानी निकल आता हो और लकडियाँ न मिलती हो वहाँ शवका सस्कार कैसे किया जाये, यह गहराईसे सोचने की बात है। अ० भा० का० कमेटीकी बैठक समाप्त होने के बाद तुम यहाँ चले आना।

कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार अस्पताल
मलाड

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. साबरमती आश्रमके निकट
२ और ३. डॉ० प्राणजीवनदास मेहता और उनके सबसे छोटे पुत्र
४. सम्भवतः यह कृष्ण वर्माको १० सितम्बरको लिखे गांधीजी के पत्रका उत्तर था; देखिए पृ० २६२।

४५४. पत्र : जमशेदजी मेहताको

१६ सितम्बर, १९४५

भाई जमशेदजी,

तुम्हारा तार मिला। तुमने जो लिखा सो ठीक है, किन्तु यह उतना सहज प्रश्न नहीं है जितना कि तुम समझते हो।

जमशेदजी नशेरवानजी मेहता
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५५. पत्र : कनु गांधीको

१६ सितम्बर, १९४५

चि० कानम,

तेरा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तू विनोबाके पास जा रहा है। संस्कृत अच्छी तरह सीख लेना और उर्दू तो तू सीखेगा ही। अधीर होकर अपना स्वास्थ्य मत बिगाड़ लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री कनु गांधी
मार्फत श्री रामदास गांधी
खलासी लाइन्स
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५६. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको

१६ सितम्बर, १९४५

भाई बनारसीदास[1],

तुम्हारा खत पाकर दुःख हुआ। लेकिन उस कारण इस्तीफा देना अच्छा नही है। शक्कर इ० के त्यागसे ही काम नही चलता है। मनपर काबू पाना भिन्न विषय है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५१७) से

४५७. पत्र : ख्वाजा साहबको

पूना
१६ सितम्बर, १९४५

जनाब ख्वाजा साहब,

आपका खत मवरखा [दिनाक] ७ मुझे मिला। मौलाना साहबने मुझे कहा है कि आपने उन्हें भी एक ऐसा खत लिखा है। इस मामलेमें जो करना है सो मौलाना साहब ही करेंगे, लेकिन आपने मुझे इतनी तफसीलमें लिखा इसके लिए मैं ममनून [आभारी] हूं।

आपका,
मो० क० गांधी[2]

मूल उर्दूसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. विशाल भारत के सम्पादक और लेखक; प्रवासी भारतीयोंके लिए तोताराम सनाढ्य तथा सी० एफ० एन्ड्रयूजके साथ काफी काम किया; राज्य-सभाके सदस्य रहे।

२. हस्ताक्षर हिन्दीमें हैं।

४५८. पुर्जा : अमृतकौरको

१७ सितम्बर, १९४५

आज तुम्हारी तबीयत कैसी है? तुम्हारी जिद नुकसानदेह है। यह ऐसी जगह है जहाँ हो सकता है, तुम्हारी गलेकी तकलीफ खत्म हो जाये। जो भी हो, दिनशाको आजमाना चाहिए। वह कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। कोई दवाई नहीं खानी पड़ेगी। "विनाशसे पहले अहंकार और पतनसे पहले दर्प आ जाता है", इसका जो भी अर्थ हो।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६५) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०१ से भी

४५९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम हास्यास्पद आपत्तियाँ उठाते हो। तुम्हारे पत्र लम्बे होते हैं, यह तुम्हींने स्वीकार किया है। मैंने तो तुम्हें सुधारने के लिए तुम्हारा ध्यान उस ओर आकर्षित किया था।

मुझे बुरा लगने की कोई बात नहीं है। पारनेरकर-सम्बन्धी अंश मैंने पढ़ लिया था। उस सम्बन्धमें मुझे कुछ नहीं कहना था। मैं वहाँ आऊँ, तभी कुछ हो सकेगा। यों मैंने पारनेरकरको लिखा तो है।[1] लेकिन सच बात यह है कि मेरी खुदकी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा है।

तुम बहुत बोलते हो, यह तुम्हींने कहा है। तुम अधीर हो जाते हो, खीझ पड़ते हो। अगर यह बात तुम भूल जाओ, तो सुधर कैसे सकोगे? तुम काम बहुत करते हो, लेकिन बोलकर सब बिगाड़ लेते हो। क्या तुम यह स्वीकार नहीं करोगे? प्रार्थना में तो मुख्य प्रश्न केवल स्वरका है। यह तो मात्र सहज बुद्धिकी बात है कि अगर तुम्हारी आवाजमें और लोग अपनी आवाज न मिलायें या तुम अपनी आवाज और लोगोंकी आवाजमें न मिला सको तो क्या करना चाहिए। अतः प्रार्थना करना उपाय नहीं है, स्वर पहचानने की बात है। सेवा करते जाओ। हैजेने मुझे बहुत सिखाया है। और सब लोग भी सीखें।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३३) से। सी० डब्ल्यू० ५५९८ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. देखिए पृ० २०२।

४६०. पत्र : रामनारायण चौधरीको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० रामनारायण,

तुम्हारा खत मिला। रा[ज]कु[मारी] पर लिखा है सो भी। मैं पाता हू कि तुमको सब तरहसे, सब जगहसे अन्याय ही मिला है। कभी सोचते हो कि जब सबके तरफसे अन्याय ही देखा जाता है तो हमारेमें ही बुरा देखने की ऐब है? और गोसेवा जमनालालजीके कारण ही ली थी या मेरे कारण? अपना भलाके लिए नही? तुम्हारी निष्ठा कच्ची लगती है। सब अच्छे रहो। लडकियोको स्वय पढाते हो अच्छा है।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामनारायण चौधरी
श्री आनन्द काटन मिल
सरसपुर दरवाजाके पास
अमदाबाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४६१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० कृ[ष्ण]च[द्र],

तुमारा खत मिला है। रा[जकुमारी] और शा[ता]बहन आये हैं।

मिर्चके बारेमें समिति निर्णय करे। आश्रममें जो आश्रमवासी बनकर न रहें उनको या दाक्तर कहें उनको मिर्ची देना ठीक लगता है। चि० कैलास[1] आश्रमके सब नियमोका पालन करने के लिये आयी है। उसे आश्रमके नियमका भग करने की इच्छा नही करना चाहीये। दाक्तर सेहतके कारण कहे तो दूसरी बात होगी।

सख्ती तो होनी ही नही चाहीये।

पारनेरकरजीका खत अब तक नही है।

बालकृष्णका अब तक रास्तेपर आया है ऐसे नही कहा जा सकता।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२८) से

१. कैलाश मास्टर

४६२. पत्र : पृथ्वीसिंह आजादको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

भाई पृथ्वीसिंह,

आपका पत्र[1] अथसे इति तक पढ़ गया हूं। दस्तखत तो आपके हैं लेकिन भाषा आपकी नहीं है, न अक्षर आपके हैं। मैंने जोशीजीको तो लिख ही भेजा है।[2] मैं हकीकतमें जा नहीं सकता हूं। ईश्वर जो मुझे बतावेगा सो मैं करूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च:]

आप लिखते हैं कि नाथजी[3] को पत्र बताया है। अगर वे सब हकीकतके साक्षी बन सकते हैं तो किशोरलालभाईको लिखें। वे शायद तहकीकात करें और नाथजी मांगेंगे तो करेंगे ऐसी मेरी मान्यता है।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५५) से। सी० डब्ल्यू० २९६६ से भी; सौजन्य : पृथ्वीसिंह आजाद

४६३. पत्र : वीणा चटर्जीको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० वीणा,

तेरा खत मिला। माताजीके खातर देरी करना ही होगा। मैंने तो तुझे खत लिखा है ऐसा स्मरण है। अगर नहीं लिखा है तो रह गया समझो। कलकत्ता जाना मुझको तो फिजूल लगता है लेकिन तेरा दिल वहीं है। और शैलेन खर्च देवे तो जा। अच्छा शायद यह होगा कि शादी बाद जाना। मैं इसमें बहुत नहीं कर सकूंगा। तेरी तबियत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पत्रमें भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीकी नीतिका समर्थन किया गया था।
२. पूरणचन्द्र जोशी; देखिए पृ० २५३।
३. केदारनाथ कुलकर्णी

४६४. पत्र : होशियारीको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० होशियारी,

तू और गजराज अच्छे होंगे। तू बरोबर काम कर रही है सो मुझे अच्छा लगता है। गजराज लिखता है क्या? रोज कुछ लिखे, कुछ पढे, कुछ काते। और जो करे सो अच्छा करे।

बापुके आशीर्वाद

आश्रम सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४६५. पत्र : अनुग्रह नारायण सिंहको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

भाई अनुग्रह बाबू,

तुम्हारा खत मिला। औषधि आने पर उसका उपयोग करवाऊंगा। दवा अगर ऐसी सफल होती है तो कैसे बनती है सो बताना चाहिए। उसका व्यापार नहीं करना धर्म है।

बापुके आशीर्वाद

अनुग्रह नारायण सिंह
कदम कुआं
पटना, बिहार

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६६. पत्र : बलवन्तसिंहको

पूना
१७ सितम्बर, १९४५

चि० बलवंतसिंह,

तुमारा खत मिला। पहूंच लिखने का ही समय है। चि० होशियारीके खत आते रहते हैं। अच्छी है। तुम अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

श्री बलवंतसिंह
किसान आश्रम
डाकघर बहादराबाद
बरास्ता ज्वालापुर, यू० पी०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६७) से

४६७. पत्र : मीराबहनको[1]

१७ सितम्बर, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। बस इतना ही।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १९६७) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह बलवन्तसिंहको लिखे पत्रके नीचे लिखा हुआ है; देखिए पिछला शीर्षक

४६८. पत्र : पामु राममूर्तिको

१९ सितम्बर, १९४५

प्रिय राममूर्ति,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं तुमसे बहस नही करूँगा। अगर कांग्रेस हरिजनोकी सेवा करने के बजाय उनका शोषण करती है, तो यह सौदा उसे बहुत महँगा पडेगा। मैं इस सार्वत्रिक नियममे विश्वास रखता हूँ कि शोषक अपनी कब्र आप खोदता है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री पामु राममूर्ति
चेदिलापुर
रामारावपेटा, काकिनाडा

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

४६९. पत्र : नारणदास गांधीको

१९ सितम्बर, १९४५

चि० नारणदास,

ऊपरका वक्तव्य मुझे तो पसन्द आया। मेरा विश्वास है कि उसके सम्पूर्ण पालनमे भारतका स्वराज्य निहित है।

यह तुम्हारे पोस्टकार्डके जवाबमें लिखा है—तुम्हारे वक्तव्यके साथ या उसके नीचे छापने के लिए।

काका साहबके साथ तो कुछ[1] भेजूँगा ही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

कनैयो बम्बईमें है। तुम्हारी तबीयत ठीक हो गई होगी।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६३० मे भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

१. चरखा जयन्तीके लिए

४७०. पत्र : गजानन नायकको

१९ सितम्बर, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र मिला।

भाई कामथको मैं अपने साथ नहीं ले जा सकता। मैं उनकी कोई मदद भी नहीं कर सकूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री गजानन
मगनवाड़ी
वर्धा
सी० पी०

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७१. पत्र : प्रभावतीको[1]

१९ सितम्बर, १९४५

चि० प्रभा,

तू मूर्ख है। तेरे पत्रमें ऐसा निजी क्या है? मैं क्या करूँगा, यह कुछ निश्चित नहीं है। अभी तो तू वहीं रहते हुए जो पढ़ सकती है सो पढ़। लिखना, क्या पढ़ती है। अक्तूबरमें मैं बंगाल जाने की बात सोचता हूँ। वहाँ जाऊँ, तब मिलना। इस बीच तेरे पत्र तो आते ही रहेंगे। अपनी तबियत ठीक रखना। कस्तूरबा समितिमें तुझे रहना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८२) से

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

४७२. एक पुर्जा

१९ सितम्बर, १९४५

"जहाँ पेड़ नहीं होते, वहाँ एरण्ड पेड़ मान लिया जाता है", इस न्यायके अनुसार तो मुझे यह योजना पसन्द है।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०८९) से

४७३. एक पुर्जा[1]

पूना
१९ सितम्बर, १९४५

मेरी उमेद है कि इस निवेदनको जनताकी मदद मिलेगी।

मो० क० गांधी

- पुर्जेकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४७४. पत्र : श्यामलालको

पूना
१९ सितम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा ७ ता० का खत कुछ दिन हुए मिला। एक परिपत्रमें मैं देखता हूं कि लोगोंसे कहा गया है कि २१-२२ सितम्बरकी समितिकी बैठकके सामने उनके उत्तर आ जावे। अगर मेरे जवाबके पीछे ही पत्रिका भेजने की बात थी तब तो समय चला गया है। आजके पहले मैं पत्रिका पढ नहीं सका। अगर मैं जवाब भेज भी सकता तब भी मेरी रायमें सब प्रान्तोंको भेजना और उनसे समयपर उत्तर आना असम्भव होता। इतनी शीघ्रतासे काम किस तरह कर सकते हैं? और मैं वापसी डाकसे जवाब भेज सकूं करीब-करीब नामुमकिन है। बाज दफा छोटे पत्रोंका उत्तर जा सके

१. यह हरिजन उद्योगशाला कोषके लिए जारी की गई उस अपीलके नीचे लिखा हुआ है जिसे गांधीजी ने संशोधित किया था।

वह भी हमेशाके लिए तो नहीं। ऐसी हालतमें क्या किया जाये? अच्छा यह होगा कि ऐसे कामके लिए जो तुरन्त करना हो मेरी इजाजतके लिए न ठहरा जाय, या इजाजत जरूरी ही समझी जाये तो मुझे तारसे खबर देनी चाहिए। उत्तरकी तैयारी कर रखना तब शायद मेरे लिए सम्भव हो।

परिपत्र सब पढ़ गया। इसमें अब तो कुछ सुधारने की आवश्यकता नहीं हो सकती। अगर परिपत्र नहीं भेजे गये हों तो तारीख बदलकर भेजे जायें और समिति की दूसरी बैठक हो उसमें रखे जायें या उत्तर आने पर नकल सबको भेजी जाय।

सुचेताबहनका पत्र मुझे कल मिला। उसे मैं भेजता हूं। दफ्तरमें रखा जाय और उसकी नकल बापाको भेजनी चाहिए। अच्छा होगा कि तीन महीनेके लिए वह हमारी परीक्षा करे और हम उसकी। और बादमें स्थायी रूपमें रहने को तैयार हो तो रह जाये। अल्लाहाबाद और वर्धाके बीचमें आती-जाती रहे। इसमें मैं कोई आपत्ति नहीं पाता। अभी कुछ तनख्वाहकी आवश्यकता नहीं। आज वह बम्बई चली गई है। बापासे वहां मिलेगी भी।

परिपत्र सब भेज देता हूं। शायद उनका वहां उपयोग हो सकता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री श्यामलाल
क० स्मारक, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७५. पत्र : सुशीला नैयरको

१९ सितम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

इस समय रातके नौ बजे हैं। लेकिन मुझे कुछ तो लिखना ही चाहिए। मालिश आदिको छोड़कर सारे दिन काम ही तो चलता रहता है। कल रातको मुझे बम्बई जाना है। वहाँ तीन दिन रहकर फिर यहीं वापस लौट आऊँगा।

तेरा पत्र अच्छा है। वर्णन सजीव है। यदि हमें सरकारकी मदद नहीं मिलती तो कोई बात नहीं। ऐसे समयपर यदि मोटर किरायेपर लेनी पड़े तो ले लेना। एक मोटर या लारी खरीदने की बात तो हम बादमें सोचेंगे।

प्यारेलाल वैसा ही है। इस मामलेमें तुझे और अधिक क्या लिखूं?

बापुके आशीर्वाद

डॉ० सुशीला नैयर
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७६. तार : 'टाइम्स' को

२१ सितम्बर, १९४५

परमाणु बमके बारेमें मैंने कभी कोई सार्वजनिक वक्तव्य नही दिया।[1]

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४७७. पत्र : अमराबापाको[2]

बिड़ला हाउस
बम्बई
२१ सितम्बर, १९४५

दरबारश्री,

आपका पत्र मिला। ५१ (केवल इक्यावन रुपये) रुपये भी मिले। यह रुपया मैं धर्मखातेमें उपयोग करने के लिए डॉ० दिनशाको दूंगा।

आपके पिताश्रीसे मैं मिला था, इसकी मुझे कुछ धुंधली-सी याद है। मैं कामना करता हूँ कि आप स्वस्थ हो जाये।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०२२८) से। सौजन्य गजानन जोशी

१. १९ सितम्बर, १९४५ के एक तारमें लन्दनके टाइम्स ने गांधीजी से निम्नलिखित समाचारकी पुष्टि करने का अनुरोध किया था : "असहाय चीनी और भारतीय कैदियोंके प्रति जापानियों के अमानवीय रुखको ध्यानमें रखते हुए महात्मा गांधीने एक सन्देशमें परमाणु बमके उपयोगका अनुमोदन किया।"

२. काठियावाड़-स्थित थाना-देवली रियासतके राजा

४७८. पत्र : कैलाश डाह्याभाई मास्टरको

बिड़ला हाउस
माउन्ट प्लेजेन्ट रोड
बम्बई
२१ सितम्बर, १९४५

चि० कैलाश,

तेरा पत्र मुझे बम्बई पहुँचते ही मिल गया। तेरी लिखावट ठीक ही लगती है, किन्तु इतनी साफ नहीं है कि आसानीसे पढ़ी जा सके। यदि तू जरा बड़े-बड़े अक्षर लिखे और उन्हें एक-दूसरेसे मिलाये नहीं तो पढ़ना आसान होगा।

तू दो घोड़ोंपर सवारी नहीं कर सकती। यदि सभी बच्चे हमेशा अपने माता-पिताके साथ ही रहें तो संसार नहीं चल सकता। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो उन्हें कमाने के लिए, पढ़ने अथवा सेवाके लिए बाहर भटकना पड़ता है। और जब वे सेवा, कमाई अथवा पढ़ने के लिए बाहर जाते हैं तो उन्हें अपने वृद्ध और बीमार माता-पिताको भी भूलना ही पड़ता है। इसलिए जो अनिवार्य है उसके लिए दुःख किस बातका? जब तेरे माता-पिताने तुझे बाहर भेजा उस समय उन्होंने और तूने सोचा होगा कि अब तेरा धर्म उनकी सेवामें नहीं, बल्कि सेवा करते हुए उपार्जन करके उनका बोझ हलका करने में है। और यही तू कर भी रही है। यह अच्छा है कि तू अपना सारा काम खुद ही करती है और धीरे-धीरे सब सीख रही है। यदि तू अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए और कोई चिन्ता न करते हुए वहाँ जम जाती है, तो तू स्वयं अपनेको, अपने माता-पिता और आश्रमको गौरव प्रदान करेगी।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तू मिर्च खाना चाहती थी, किन्तु स्वेच्छासे खाना छोड़ दिया। मैं यह जानता हूँ कि कुछ लोगोंको मिर्च खाने की इतनी ज्यादा आदत होती है कि उन्हें मिर्च छोड़ना मरने की अपेक्षा मुश्किल जान पड़ता है। इससे पता चलता है कि मिर्च कोई अच्छी चीज नहीं है। हिन्दुस्तानमें ऐसा ही होता है कि गरीब लोगोंको कुछ भी नहीं मिलता, इसलिए रोटी खाने और उसे जैसे-तैसे पचाने के लिए वे उसमें नमक-मिर्च मिला देते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह बात भयंकर अज्ञानकी द्योतक है कि सभी लोगोंको मिर्च अवश्य खानी चाहिए। अनेक प्रकारका खाना खाने वाले लोग जब उसके साथ रोटियाँ भी खाते हैं तो वह [रोटी] उनके लिए खुराक नहीं होती। इसके विपरीत वह अनावश्यक और नुकसान-देह भी साबित हो सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

बिड़ला हाउस
माउन्ट प्लेजेन्ट रोड
बम्बई
२१ सितम्बर, १९४५

चि० कृष्णचद्र,

आज मै यहा ४ बजे पहुचा। तुम्हारा खत मिला।

- जो आदमी २ प्रतिशत आल्कोहोल वाला बीअर पीता है और उसको ७५ प्रतिशत आल्कोहोल वाली विस्कीकी मनाई होती है तो मै पूछ नही सकता हू कि बीअर क्यो और विस्की क्यो नही? ऐसा भी समजो कि लैमनेड हम पीते है या तो वैसी बहुत किसमकी चीजें खाते हैं जिसमें थोड़ा-सा अश आल्कोहोलका होता है इससे कोई ऐसा नही कहता है कि हम सब आल्कोहोल पीते हैं। मिर्चीका मुकाबला विस्की के साथ करो और पीछे सोच लो कि मिरची, हल्दी और धनियाके साथ रह सकती है? मसालाका अर्थ यह है ही नही कि हरेक किसमके मसाला मनुष्य खा सकता है। लाल मिर्ची और हरी मिर्चीमें बडा फरक कहा जाता है। आश्चर्य है कि यह सारी बात तुम्हारे ध्यानके बाहर है। जितना मसाला हम देते हैं हल्दी, काली मरच, धनिया ई० वह डा० के कहने से और सेहतके कारण। ऐसा होते हुए भी जो मनुष्य उसे स्वादके लिए खाये उसका प्रतिबंध कौन करेगा, कैसे किया जायगा? तुमने सूना है या नही कि एक वाघरण[1] को दो दिनकी पुरानी वगैर घीकी बाजरीकी रोटीमें बहुत स्वाद आता था और खीर, लापसी इत्यादि रोज देते हुए भी वह पिगलती जाती थी और आखरमें बिमार पडी। तब हम ऐसा कहें कि वह वाघरणने स्वाद मात्रको जीत लिया और सूकी रोटी, मिरची और नमक खाते निर्वाह किया? और क्या लिखू?

आज तक मिरचीकी बात सेहतकी दृष्टिसे मुझे क्यो न पूछी? यो तो शकरी-बेनको बड़े भावसे मिरची [लेने] देते हैं। दूसरोको कैसे दें? उसकी वजह यह नही है कि मिरचीमें कुछ भी गुण नही। औषधकी दृष्टिसे है ही। लेकिन औषधालयमें इसका स्थान नही दिया। इतना है 'पेइन किलर' मिरचीका अर्क है। हम आश्रममें स्वादकी दृष्टिसे तो कुछ भी न ले, न देते हैं। लेकिन सबको पूछते नही कि वे [जो] खाते हैं उसमें स्वाद करते हैं या नही, अगर लेते हैं तो आश्रम छोडो। इस प्रकार हम निरीक्षण करे तो पशु-पक्षीके सिवा आश्रममे कोई न रहेगा।

१. एक पिछड़ी जातिकी महिला

किसी तरह कामसे शांत हो जाय और शरीर भी अच्छा कर ले।

पूर्णचन्द्रजीके बारेमें तो मैंने लिखा है। आश्रममें रहते हुए तो सबको ब्रह्मचर्यका पालन करना आवश्यक है। मैं तो रामप्रसादजीकी बात जानता ही नहीं था, लेकिन रामप्रसादका मकान आश्रमके मकानोंसे अलग है, ऐसा तो मनमें ठाना ही था। नियामतका कमरा वहीं [था] और नियामतको कभी पूछा भी नहीं गया [कि] उसे ब्रह्मचर्यका पालन करना है। लेकिन रामप्रसाद नियामतके जैसे आश्रममें नहीं आये थे, ऐसा मैं समझा था। लेकिन जबसे पता चला कि इस तरह रहते हैं कि प्रजोत्पत्ति भी कर सकते हैं तो मेरे मनमें खटका पैदा हो ही गया और यह अन्य कारणोंमें सबल कारण है कि जिनसे आश्रमको छोड़ते हैं। उनका अलग रसोई भी मुझे चुभता था, लेकिन दूसरोंको भी करने दिया है इस कारण मैं बहुत आग्रह नहीं कर सकता था।

पूर्णचंद्रजी ब्रह्मचर्यका पालन आश्रममें रहकर करते होंगे ऐसा मान लेना काफी नहीं। उनको बराबर पूछना आवश्यक है।

यहांसे २८ तारीखको पुना जाऊंगा। ऐसी उमीद है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५२९) से

४८०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

बम्बई
२१ सितम्बर, १९४५

प्रार्थना-कालके लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते लोगोंको सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैंने अपने डॉक्टरोंसे किसी साये तले प्रार्थना करने की इजाजत ले ली है।[1]

लोगोंसे हरिजन कोषके लिए चन्दा देने का अनुरोध करते हुए गांधीजी ने कहा, अगर लोग नकदके बजाय हाथ-कता सूत दें, तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। मैं उस सूतसे कपड़ा तैयार करवा कर आपके हाथों बेच दूंगा, जिससे ज्यादा पैसा आयेगा। उन्होंने कहा, चन्देमें सूत देने वाला पहला नगर बम्बई ही था। मुझे आशा है कि यहांके नागरिक इस परिपाटीको कायम रखेंगे।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २२-९-१९४५

१. गांधीजी को इन्फ्लुएंजा हो गया था और इसलिए उन्हें पूरा आराम करने की सलाह दी गई थी। इस बीमारीकी वजहसे ही वे अ० भा० कां० कमेटीकी बैठकमें भी शामिल नहीं हो सके थे।

४८१. पत्र : अमृतकौरको

बिड़ला हाउस, बम्बई
२३ सितम्बर, १९४५

चि० अमृत,

मैं आज पूरे दिन तुम्हारी बीमारीको लेकर चिन्ता करता रहा हूँ—इसलिए और भी कि मैं तुम्हारे पास आ नहीं सकता। और अब मैं देखता हूँ कि कल तुम पूना नहीं चल सकती। मुझे निस्संकोच बताओ कि मुझसे क्या कराना चाहती हो।

तुम्हारी जिद अनोखी है और वही तुम्हारी तकलीफका कारण है। लेकिन अभी उसके बारेमें कुछ नहीं कहूँगा। उसका उल्लेख अभी मैंने इसलिए किया कि तुम जब ठीक हो जाओ तो इस बातको याद रख सको और जैसा तुमने अन्य सभी मामलोंमें किया है उसी तरह इसे भी बिना किसी बखेड़ेके छोड़ दो। यदि तुम लिख नहीं सकती हो तो उत्तर किसीसे लिखवा भेजो।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६६) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०२ में भी

४८२. पत्र : सनत्कुमार जोशीको

[२४ सितम्बर, १९४५ के पूर्व][1]

भाई सनत्कुमार,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जो लिखा है वह 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' जैसा ही है। यदि यह बात सच हो कि हम खादीके द्वारा स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं तो तुम्हें यत्किंचित् कष्ट उठाकर भी अच्छी आँटियाँ तैयार करनी चाहिए। किन्तु यदि तुम्हें इतना करने में भी तकलीफ हो तो अहिंसाके द्वारा स्वराज्य नहीं प्राप्त किया जा सकता। किन्तु जिनमें इतना उत्साह न हो वे यदि खादी छोड़ दें तो उससे न तो देशका नुकसान होगा और न खादीका।

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह पत्र १९ सितम्बरके बाद और २४ सितम्बरके पूर्व लिखा गया था।

तुम्हारी पढ़ाईके बारेमें तुम्हारे बड़े भाई जैसा कहते हैं वैसा ही करना उचित होगा।

सनत्कुमार के० जोशी
जमीयतरामकी खिड़की
भड़ौंच

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८३. प्रस्तावना[1]

डॉ० भारतन कुमारप्पाने "विलेजिज्म" (ग्रामवाद) — यह उनका गढ़ा नया शब्द है — पर लिखी अपनी पुस्तकमें अर्थशास्त्रके ग्रन्थोंसे अपरिचित आम पाठकों और ग्रामसेवकोंके लिए पूँजीवाद और समाजवादके, जिसमें मार्क्सवाद और साम्यवाद भी आ जाते हैं, नामसे प्रख्यात आधुनिक आन्दोलनोंका तुलनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया है; और उन्होंने इन अर्थव्यवस्थाओंका खोखलापन साबित करने के लिए अन्य कारण देने के साथ-साथ बड़ी संजीदगीसे, तथा मेरे विचारमें विश्वासोत्पादक ढंगसे, यह दिखाया है कि हमारी पीढ़ीके दौरान हुए पिछले दो "महायुद्धों" से इनका निपट दिवालियापन सिद्ध हो गया है। प्रसंगवश मैं यह भी कह दूं कि मुझे लगता है, इन युद्धोंसे युद्धकी निरर्थकता भी सिद्ध हो गई है। यदि सशक्त और स्पष्ट शब्दोंमें कहें तो युद्धका मतलब हिंसा ही है और सभ्य कहे जाने वाले राज्यों द्वारा आयोजित होने के कारण वह हिंसासे किसी भी तरह कम नहीं है। विश्वमें शान्ति बनाये रखने के लिए अहिंसा हिंसाका स्थान प्रभावकारी ढंगसे लेती है या नहीं, यह अभी देखना है। परन्तु इतना निश्चित है कि यदि मानव-जाति सबल द्वारा दुर्बल के शोषणके अपने पागलपनके रास्तेपर ही चलती रही, तो वह निश्चय ही उस प्रलयका ग्रास बन जायेगी जिसकी भविष्यवाणी सभी धर्मोंमें की गई है। डॉ० भारतन कुमारप्पाने यह बतलाया है कि सत्य और अहिंसापर आधारित जिस "ग्रामवाद" के लिए भारतमें कोशिश की जा रही है वह उस सर्वनाशको रोकने की क्षमता रखता है। यदि पाठकोंको इस जीवन-रक्षक प्रक्रियामें दिलचस्पी है तो उन्हें डॉ० भारतन कुमारप्पाके ये शिक्षाप्रद पृष्ठ, जो उन्होंने हालके अपने कारावासमें[2] लिखे हैं, अवश्य पढ़ने चाहिए।

मो० क० गांधी

पूना, २४ सितम्बर, १९४५

[अंग्रेजीसे]

कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऑर विलेजिज्म ?

१. कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऑर विलेजिज्म ? की

२. इन्हें १९४२ में गिरफ्तार करके जनवरी १९४५ में रिहा कर दिया गया था।

४८४. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

बिड़ला हाउस
माउन्ट प्लेजेन्ट रोड, बम्बई
२४ सितम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

कैदी श्री हरिदास मित्रसे सम्बन्धित मेरे पत्र[1] के जवाबमें भेजे गये आपके १८ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद। इस मामलेके सम्बन्धमें आगे उत्तरकी प्रतीक्षा करूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर एवन एम० जेन्किन्स, के० सी० एस० आई०
वाइसराय हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]
गांधीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४८

४८५. पत्र : कंचन मु० शाहको

२४ सितम्बर, १९४५

चि० कचन,

मालूम होता है, तू फिर ज्यादा बीमार पड़ गई। बिलकुल अच्छी हो जाना। डॉ० लीलावती वहाँ है, यह अच्छी बात है।

तबीयत ठीक लगे, तो पत्र लिखना। जल्दी अच्छी हो जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६३) से। सी० डब्ल्यू० ६९८७ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

१. देखिए पृ० २७३-७४।

४८६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२४ सितम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुमने यह भयानक समाचार दिया है। हम लोग मूर्तिकी चोरी नहीं कर सकते, न इस बातको छिपा सकते हैं। यह चि० बारीनको अवश्य समझना चाहिए। हमें यह बात गाँववालोंके सामने नम्रतापूर्वक स्वीकार करनी चाहिए। यह मेरा [मत है]...[1] जैसा चि० किशोरलाल कहे। यहाँसे तो मैं अपना मत ही बता सकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४२९) से। सी० डब्ल्यू० ५५९९ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४८७. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२४ सितम्बर, १९४५

इस बार मैं तुझे बिना देखे चला जाने वाला हूँ, यह मुझे खटकता है। लेकिन अपनी हालकी कमजोरीकी स्थितिमें मैं कहीं न जाऊँ, यही ठीक मालूम होता है। तेरी तबीयत इस समय ठीक है, यह जानकर हर्ष हुआ। मुझमें जल्दी शक्ति आ जायेगी, ऐसा समझता हूँ।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृ० २०७

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अंश पढ़ा नहीं जाता।

४८८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

बम्बई
२४ सितम्बर, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमारा खत मिला। शास्त्रीजीको विनोबाके बारेमें तुमने लिखा है ऐसे कीया जाय। कचनबहनकी दुःखद बात है। ऐसे दा० महोदयकी। मैं ट्रेनकी तैयारीमें हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३०) से

४८९. पत्र : अमतुस्सलामको[1]

पूना जाते हुए
२४ सितम्बर, १९४५

चि० अ० सलाम,

तेरा खत मिला और खादी मिली। तू २ अक्तूबरको मेरे पास नही होगी, इससे क्या? जो मेरा काम करता है वह दूर होने पर भी मेरे पास ही है। तू तो वहाँ मेरा ही काम करती है न? और तू मेरी राह देखेगी ही, फिर क्या? तू जल्द अच्छी हो जा।

मैं बिलकुल ठीक हो गया हूँ। मेरी फिक्र न करना। राजकुमारी बीमार हो गई है। अभी तो ठीक है। मेरे साथ ही गाडीमें है। जोहरा पूनामें है।

बापूके आशीर्वाद

गजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०१) से

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

४९०. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

पूना जाते हुए
२४ सितम्बर, १९४५

चि० सतीश बाबू,

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। प्रफु[ल्ल] से बातें हुई हैं। शायद २ नवेम्बरको पहुंचूंगा। शरत बाबूसे बात होने वाली है। पूना आवेंगे। सब अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९१. पत्र : धीरेन्द्र चटर्जीको

पूना जाते हुए
२४ सितम्बर, १९४५

चि० धीरेन,

तेरा खत कल मिला। तू सब तरह अच्छा रह यही मैं चाहता हूं। भूलना ही भूल जा। सोदपुर[1] तेरे लिए बड़ा शिक्षालय है। मेरी उम्मीद तो है कि मैं वहां नवम्बरमें २ ता० के आसपास पहुंचूंगा। आभा, कनु इत्यादि साथ होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सतीशचन्द्र दासगुप्त द्वारा स्थापित सोदपुर खादी प्रतिष्ठान

४९२. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

पूना
२५ सितम्बर, १९४५

चि० बबुड़ी,

वहाँकी बरसातके समाचार पढकर मेरा मन तेरी ओर दौड गया, जैसे मुझे दूसरोंकी चिन्ता ही न हो। अनासक्तिका चाहे जितना अभ्यास करो, फिर भी ऐसा कुछ हो ही जाता है। तू अच्छी होगी। तुझे पत्र लिखने की जरूरत नही। चि० गोरधनदास एक कार्ड लिख दे तो काफी होगा। गरीब तो बेघरबार हो ही गये होंगे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६०) से। सौजन्य शारदाबहन गो० चोखावाला

४९३. पत्र : सीताराम पुरुषोत्तम पटवर्धनको

२५ सितम्बर, १९४५

भाई अप्पा,

तुम्हारा पत्र मिला। राजपुरके निकट [बह रही] गंगाका वर्णन मैंने पढ़ा। मुझे जानकारी देते रहना कि क्या होता है। यदि पडोंको जनमतके द्वारा प्रभावित किया जा सके तो मामलेको अदालतमें नही ले जाना पड़ेगा। किन्तु यदि जनमत कुछ न कर सके तो तुम्हें निरन्तर बचाव करना ही है। यदि हमारी तरफसे मामला कमजोर हो तो हमें बचावके लिए बचाव नही करना चाहिए। बहुत बार ऐसा होता है कि नैतिक दृष्टिसे हम सही होते हैं और यदि बचाव करने से हमारी स्थिति अधिक स्पष्ट होने की आशा हो तो यह जानते हुए भी कि अन्तत हम हार जायेंगे, बचाव करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। ऐसा मैंने बहुत बार किया है और सफल भी हुआ हूँ। इसलिए यह दृष्टिकोण मैं तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। आशा है दादासाहब[1]

१. ग० वा० मावलंकर (१८८८-१९५६); बम्बई विधान-सभाके अध्यक्ष (१९३७-४५); लोकसभाके अध्यक्ष (१९४७-५६)

वहाँ यथासमय पहुँच जायेंगे। तुमने जो भूलें गिनाई हैं उनसे मैं तो सहमत हूँ, लेकिन शायद नेतागण सहमत न हों। कमसे-कम सभी तो ऐसा कदापि नहीं मानते। किन्तु तुम्हें इन सब चीजोंकी भूलोंमें गिनती करने का पूर्ण अधिकार है। मैं तो करूँगा ही। अब तुम सबसे पहले तो उर्दू लिपिमें संक्षेपमें सवाल मौलानाको भेज दो। मैं समझता हूँ कि वे उनका जवाब देंगे। तुम अपना ओहदा उन्हें बता देना। उत्तरके लिए उचित समय तक प्रतीक्षा करने के बाद सार्वजनिक रूपसे प्रश्न सामने रखना। देव[1] की राय तो तुम लोगे ही। किसी-न-किसी तरह सारी स्थिति स्पष्ट तो करनी ही पड़ेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९४. पत्र : श्रीमती शुक्लको

२५ सितम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

नि० निर्मला मुझसे मिलने आई थी। उसने आपके गिर जाने और खटियामें पड़ जाने की खबर दी। यह सुनकर मुझे दुःख हुआ। आपकी आयु तो मुझसे भी अधिक होनी चाहिए। अपने स्वास्थ्यके बारेमें मुझे लिखवाना।

मोहनदासके दण्डवत्

श्रीमती शुक्ल
बैरिस्टर शुक्लका बंगला
राजकोट
काठियावाड़

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शंकरराव देव; अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य

४९५. पत्र : सुशीला नैयरको

२५ सितम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

साँझको भोजन करने के बाद अपनेमें कुछ ताकत महसूस कर रहा हूँ, इसलिए यह लिख रहा हूँ। वहाँका काम पूरा हो जाने के बाद मैं तेरे तुरन्त यहाँ लौट आने की आशा लगाये हुए हूँ। मुझे कमजोरीके सिवा और कुछ नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

४९६. पत्र : रानी राजवाड़ेको

पूना
२५ सितम्बर, १९४५

प्रिय भगिनि,

तुम्हारे वैधव्यकी मैं कल्पना ही नहीं कर सकता हूं। राजा साहेब एकाएक चले गये। तुम्हारेमें मैंने धैर्य मान रखा है। ईश्वर तुम्हें धैर्य देगा। तुम्हारे रमाबाई रानडे[1] का अनुकरण करना होगा।

बापूके आशीर्वाद

रानी राजवाड़े
पूना

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१ (१८६२-१९२४); महादेव गोविन्द रानाडेकी पत्नी; बम्बई और पूनाके सेवा सदनकी अध्यक्षा; १९२१ में केन्द्रीय राहत समितिमें कार्य किया; महिला मताधिकारकी माँगसे सम्बन्धित आन्दोलनका नेतृत्व किया।

४९७. पत्र : आनन्द सुन्दरमको

पूना
२६ सितम्बर, १९४५

चि० आनन्द,

तेरा पत्र मिला। मैं इंग्लैंड गया इसलिए सब जायें यह कोई न्याय नहीं। मैं जितना बुरा करूं क्या दूसरोंको भी करना है? मैं नहीं मानता कि हिन्दुस्तानकी सेवा बाहरकी पढ़ाई प्राप्त कर सबसे बेहतर होगी। ऐसा समझना घोर अज्ञान है और यह समझना भी अज्ञान है कि बाहरकी पढ़ाई सबसे बेहतर पढ़ाई है।

बाहरकी पढ़ाईके लिए मेरे आशीर्वाद नहीं मिलते।

बापूके आशीर्वाद

श्री आनन्द सुन्दरम
कृष्ण कुटीर
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९८. पत्र : वी० ए० सुन्दरमको

पूना
२७ सितम्बर, १९४५

चि० सुन्दरम[1],

कितनी अच्छी बात है कि तुम्हारी बहन बिना तकलीफके चल बसी। हम सबको उनके पास जाना है, कुछको जल्दी तो कुछको देरसे।

स्नेह।

बापू

श्री सुन्दरम
कृष्ण कुटीर
डाकखाना बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०५२३) से। सौजन्य : एस० आर० वेंकटरामन

१. सम्बोधन तमिलमें है।

४९९. पत्र : एस० रामनाथनको

२७ सितम्बर, १९४५

प्रिय रामनाथन,

तुम्हारा पत्र पढा। तुम यह तो नही चाहते कि मैं तुमसे बहस करूँ।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्री एस० रामनाथन
९, ब्रॉडवे
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५००. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

२७ सितम्बर, १९४५

प्रिय बडे भाई,

आपकी भेंटको मैं सँजोकर रखूँगा। प्रस्तावना[1] मैंने पढ ली है। उसमें मुझे बुरा लगने वाली क्या बात है? जगदीशन्ने जो लिखा है, ठीक ही लिखा है। लेकिन सिर्फ १४७ पृष्ठोंकी पुस्तकमें भी वह शुद्धिपत्र दिये बिना क्यो नही रह पाया?

आशा है, आप सकुशल होगे।

सस्नेह,

छोटा भाई

परम माननीय वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री
स्वागतम्
मैलापुर
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीके गोखले-विषयक लेखों और भाषणोंके टी० एन० जगदीशन द्वारा तैयार किये गये माई मास्टर गोखले शीर्षक संकलनकी

५०१. पत्र : सीता गांधीको

२७ सितम्बर, १९४५

चि० सीता,

तू अक्षर बड़े और दूर-दूर लिखती है, इसलिए सुन्दर लगते हैं। लिखने में देर लगती हो, तो कोई हर्ज नहीं। बादमें देर भी नहीं लगेगी।

तुझे अनुत्तीर्ण बिलकुल नहीं होना है। परीक्षा हो जाने के बाद मेरे पास जरूर आना। परीक्षाका बोझ मनपर नहीं पड़ने देना चाहिए। जब हम मेहनत करते हैं, तो फिर बोझ कैसा?

अरुण[1] और इला[2] मजे कर रहे हैं। अरुण अभी चुप ही रहता है, लेकिन इला उसकी कमीको पूरा कर देती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५६) से

५०२. पत्र : डाह्याभाई मणिभाई पटेलको

२७ सितम्बर, १९४५

भाई डाह्याभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी सलाह है कि तुम्हें यहाँ आने के पैसे बचा लेने चाहिए और उन्हें सेवाके काममें लगाने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
मार्फत सेठ जमनादास अड़कोया
२११-१३, कालबादेवी
बम्बई-२

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७१४) से। सौजन्य : डाह्याभाई पटेल

१ और २. सीता गांधीके भाई और बहन

५०३. पत्र : कृष्ण वर्माको

२७ सितम्बर, १९४५

श्री कृष्ण वर्मा,

हम लोगोने बम्बईमे तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की। अब जब तुम यहाँ आ सको तब आ जाना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार अस्पताल
डाकखाना मलाड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५०४. पत्र : मगनभाई प्रभुदास देसाईको

२७ सितम्बर, १९४५

चि० मगनभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। वर्षा होने का डर था इसलिए मैं चि० अमृतलालसे कह आया था कि क्या करना होगा। इसलिए मैं फिलहाल और ज्यादा कुछ नही कर रहा हूँ। हो सके तो अब भी चले जाओ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मगनभाई देसाई
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद
बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०५. पत्र : एन० व्यासतीर्थको

पूना
२७ सितम्बर, १९४५

भाई व्यासतीर्थ,

आपका पत्र मिला। आप लोगोंकी सूत प्रवृत्ति स्तुत्य है। ऐसे ही बढ़ाया करो। सूतकी सब अगली क्रिया जान लें।

बापूके आशीर्वाद

श्री एन० व्यासतीर्थ
८४०, सुलतान बाजार
हैदराबाद दक्कन

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०६. पत्र : नारणदास गांधीको

२८ सितम्बर, १९४५

चि० नारणदास,

काका साहब वहाँ आ रहे हैं; इसलिए वे जो कहें उसीको मेरा सन्देश माना जाये। तथापि मैं इतना कहता हूँ: इस बारका यज्ञ अनोखा है। सूत सोने-चाँदीकी मुद्राका स्थान ले रहा है। अर्थात् अब मुद्राकी जगह श्रमको मिल रही है और श्रम अब उसके साथ उसी पंक्तिमें खड़ा हो रहा है। यदि यह चलन जारी रहे और बढ़ता जाये तो उसका प्रभाव इतनी दूर तक जायेगा कि आज उसका अनुमान ही नहीं लगाया जा सकता। इसमें कहीं भी दम्भ और असत्यके लिए स्थान नहीं होना चाहिए। दम्भ और असत्यकी मिलावटसे अच्छेसे-अच्छा काम भी नष्ट हो जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६३१ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

५०७. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२८ सितम्बर, १९४५

चि० चिमनलाल,

चि० पारनेरकरका पत्र इसके साथ रख रहा हूँ, चि० किशोरलालका भी। दोनों पत्र विचारणीय हैं। उनके विषय भिन्न होते हुए भी एक हैं। सबको, यानी वहाँ स्थित सभी संस्थाओंको, कि० के पत्रपर विचार करना है। पारनेरकरके अधीन काम करने में किशोरलाल जैसे साधु पुरुषने हार कैसे स्वीकार कर ली? विचार करने में दिमाग खराब मत कर लेना। अगर कुछ समझमें न आये तो पत्र एक ओर रख देना। सब लोगोंको उस पत्रके पढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा। तुम तीन व्यक्ति ही पढ़ना। थोड़ी सलाह करके अगर कुछ सूझे तो मुझे लिखना, अन्यथा जाने देना। अगर चर्चामें बहुत समय लगने का भय हो तो जाने देना। नरहरिभाई समितिके मन्त्री हैं, इसलिए उन्हें तो दोनों पत्रोंपर अवश्य विचार करना चाहिए।

१. क्या संस्थाओंको अलग-अलग रखना चाहिए था? क्या अब भी यह हो सकता है? (यह हुआ कि० के पत्रका विषय)

२. क्या दो पड़ोसी मिलकर नहीं रह सकते? खेत भले अलग-अलग जोतें, अपने-अपने ढोर, फल, पानी आदिका प्रबन्ध अलग-अलग करें। (पारनेरकरके पत्रका विषय)

गोरधनदासका पत्र कल आया था। लगता है, शारदाका बुखार अब चला गया। टायफाइडके साथ मलेरिया था। मैंने खान-पानके बारेमें सावधान रहने को लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४५) से

५०८. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको

२८ सितम्बर, १९४५

भाई कानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। जो मुझसे हो सकता है सो मैं यहीं बैठा हुआ कर रहा हूँ। पिताके रूपमें तुम्हारे मनोभावको मैं भली-भाँति समझता हूँ। किन्तु तुम्हारा, मेरा

और पुत्राका सच्चा सहायक तो परमेश्वर ही है, इसलिए हम उसीका आश्रय लें। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हें अपनी छोटी कन्याके उपयुक्त पति मिल जायेगा।

कानजी जेठाभाई देसाई
पुरानी हनुमान गली, २ क्रॉस लेन
कमरा ४, दूसरी मंजिल
राजदासकी चाल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०९. पत्र : शशिकान्त मेहताको

२८ सितम्बर, १९४५

चि० शशि[1],

तेरा पत्र मिला। डॉक्टरकी बिना हस्ताक्षरकी वसीयत (विल) भी मैं पढ़ गया। कानूनके अनुसार मुझे या आश्रमको कोई अधिकार ही नहीं है।[2] इसलिए तुम जो चाहो सो करने के लिए स्वतन्त्र हो।

मगनभाईसे मैंने तो बहुत-कुछ कहा है। अब तो बाजी तुम्हारे ही हाथमें है। आशा है, तुम सब कुशलपूर्वक होगे। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है कि आजकल चि० रतिलाल घरमें ही है। आशा है, उसकी तबीयत ठीक होगी।

शशिकान्त मेहता
चन्द्रकुंज
जागनाथ प्लॉट
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके पौत्र और रतिलाल मेहताके पुत्र
२. सम्भवतः यहाँ लाल बँगलेका उल्लेख है; देखिए पृ० २८०।

५१०. पत्र : डंकन ग्रीनलीजको

पूना
२९ सितम्बर, १९४५

प्रिय डंकन,

डॉ० राजूकी मार्फत तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। उनसे अवश्य मिलूंगा। तुम्हारे पूरे पत्रसे निराशाका स्वर ध्वनित होता है। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। तुम तो प्रभु-परायण आदमी हो, और ऐसे आदमीके लिए निराशाके स्वर-जैसी कोई बात नहीं हो सकती।

जब देख लो कि मैं अपनी जगह अच्छी तरह जम गया हूँ, तब शीघ्र ही मेरे पास आ जाओ। अभी तो, जैसा तुम देख रहे हो, मैं आरोग्यालयमें हूँ। फिर अगर सब कुछ ठीक रहा तो दिसम्बरमें मद्रास और वहाँसे शायद सीमा-प्रान्त जाऊँगा। उसके बाद सेवाग्राममें जम जाऊँगा।

अपनी पाण्डुलिपि मुझे भेजो। उसे पढ़कर देखूंगा और यदि जँच गई तो प्रकाशित करवा दूंगा।

स्नेह।

बापू

प्रोफेसर डंकन ग्रीनलीज
भीमलीपट्टम, विजग जिला

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५११. पत्र : बैंसिकको

[२९ सितम्बर, १९४५][1]

प्रिय बैंसिक,

आपके पत्र और ड्राफ्टके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने मेरी उम्रका अनुमान ठीक लगाया है। मुझे नहीं मालूम था कि आपके नेक ससुर स्वर्गवासी हो चुके हैं। एक-न-एक दिन तो हम सबको जाना है। आशा है, आप स्वस्थ होंगे। अमतुस्सलाम बंगालमें खादी-सेवा कर रही है। आप कौन-सा सेवा-कार्य कर रहे हैं? आपने मुझे अपना पूरा नाम नहीं दिया है। फिर भी, आशा करता हूँ, यह पत्र आपको मिल जायेगा।

डाकघर देहेन्नू
बरास्ता खन्ना
लुधियाना जिला

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तारीखके पत्रोंके साथ रखा गया है।

५१२. पत्र : पुष्पा देसाईको

पूना
२९ सितम्बर, १९४५

चि० पुष्पा,

इस बीच तेरा पत्र नहीं आया। इस पत्रके साथ तेरे पिताका पत्र भेज रहा हूँ। अभी तो वे तेरा विश्वास ही नहीं करेंगे। लेकिन इसके लिए दुःखी होने की जरूरत नहीं है। जब तू अपना वैराग्य सिद्ध कर देगी तब उनका वर्तमान दुःख सुखमें बदल जायेगा और तू सबको गौरवान्वित करेगी।

तू दो-चार दिनके लिए विनोबाजीके पास हो आये, यह बात मुझे पसन्द है। शुद्ध सेवामें कृष्ण-दर्शन हो, इसीको सच्चा कृष्ण-दर्शन मानना। अपनी तबीयतका ध्यान रखना। जो करना, सब शान्तिपूर्वक और सावधानीके साथ करना। जो भी सेवा-कार्य करना, ठीक समझ लेने के बाद करना। पिताजीको लिखती रहना। और किसीको लिखना हो, तो उनकी या मेरी मार्फत लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६५) से

५१३. पत्र : सुमित्रा गांधीको

२९ सितम्बर, १९४५

चि० सुमी,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार पड़ती रहती है, यह अच्छा नहीं लगता। क्या बीमार न पड़ना सीखना भी शिक्षाका एक आवश्यक अंग नहीं है?

सुमित्रा गांधी
बिड़ला हाई स्कूल
पिलानी
राजपूताना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१४. पत्र : रामदास गांधीको

२९ सितम्बर, १९४५

चि० रामदास,

सुमित्राका यह पत्र[1] तुम्हारे देखने के लिए भेज रहा हूँ। मैं तो कहूँगा कि सुमी को पिलानी और दिल्लीमें रहकर योग्य बनने देना चाहिए। मैं ठीक हूँ।

रामदास गांधी
खलासी लाइन्स
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५१५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
२९ सितम्बर, १९४५

चि० कृ० च०,

तुमारा खत मिला है। जो करो विचारपूर्वक करो। कचनबहनसे बात अवश्य करो। तुमारी बातमें माधुर्य होना चाहीये। अनतरामकी बात सुनकर मुझे हर्ष होता है। भयकर व्याधिके समक्ष हमारा काम तो नम्रतासे सेवा करने का ही है।

कचनबहन अच्छी हो गई होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३१) से

१. देखिए पिछला शीर्षक।

५१६. पत्र : सुन्दरीको

पूना
२९ सितम्बर, १९४५

चि० सुन्दरी,

तुम्हारे पैसे मिले। तुम्हारे देवनागरी या उर्दूमें लिखना चाहिए। इंग्रेजीमें क्यों?

मार्फत शेठ प्रताप दयालदास
चौपाटी बिल्डिंग, १ माल
बाबुलनाथ
मुम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१७. पत्र : होशियारीको

२९ सितम्बर, १९४५

चि० होशियारी,

तू थोड़ी ढीली हो गई है, ऐसे कृ० चं० लिखते हैं। अब तो अच्छी हुई होगी और तेरा और गजराजका ठीक चलता होगा। मैं ठीक हूं। थोड़ी दुर्बलता है सो जायगी।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१८. पत्र : लालचन्दको

पूना
२९ सितम्बर, १९४५

भाई लालचन्द,

आपका खत मुझे मिला था। मैंने तलाश की थी। पंडित रामरखामलके बारेमें मुझे दु:ख है। उनके कुटुम्बीजनको मेरे तरफसे आश्वासन देना। मैं मानता हूं कि मरहूम आत्मा सिंघके बारेमें जो आदर बताया गया था सो अनुचित था।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री लालचन्द
क्लर्क, लोको व्हीलशाप
एन० डब्ल्यू० आर०, मोगलपुरा, लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१९. प्रस्तावना : 'नेहरू योर नेबर' की

पूना
[३० सितम्बर, १९४५][1]

पण्डित जवाहरलाल नेहरूके अनेक प्रशंसकोंके असख्य लेखोंमें से चुनकर श्री पी० डी० टंडन[2] द्वारा तैयार किया गया यह एक सुन्दर सकलन है। इसपर एक नजर डालने से इस देशभक्तके विभिन्न पहलुओंसे देखे हुए रूपकी एक अच्छी छबि उभर आती है। पिता, भाई, लेखक, यात्री, देशभक्त या अन्तर्राष्ट्रीयतावादीके रूपमें यहाँ उसकी छवि सहज ही उद्भासित होती है। तथापि इन लेखोंमें पाठक उसके जिस विशिष्ट रूपके दर्शन करेंगे वह है अपने देश तथा उसकी स्वतन्त्रताके ऐसे परमोत्साही भक्तका रूप जो उसकी वेदीपर अपनी सभी आकांक्षाओंको उत्सर्ग कर देने को तैयार है। किन्तु उसे इस बातका भी श्रेय देना पड़ेगा कि किसी अन्य देशके हितोंकी कीमतपर उस स्वतन्त्रताको प्राप्त करना वह अपनी गरिमाके विरुद्ध मानेगा। उनकी राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता समान है।

[अंग्रेजीसे]
नेहरू योर नेबर। सी० डब्ल्यू० १०५४१ से भी; सौजन्य पी० डी० टंडन

१. यह पी० डी० टंडनके नाम ३० सितम्बरके पत्रके साथ भेजी गई थी; देखिए अगला शीर्षक।
२. इलाहाबादके एक पत्रकार

५२०. पत्र : पी० डी० टंडनको

पूना
३० सितम्बर, १९४५

भाई टंडन,

मुझे दुःख है कि तुम्हारे संग्रहके लिये इससे पहले कुछ भी भेज नहीं सका। एक कारण मेरा व्यवसाय रहा और दूसरा कुछ भी लिखने की अनिच्छा। लेकिन भाई जवाहरलालके बारेमें कुछ न लिखूं वह भी कैसे हो सकता था? अब तो मेरी इतनी आशा है मेरा आमुख[1] समयके बाहर नहीं पहोंचेगा।

आपका,
मो० क० गांधी

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० १०५८२) से। सौजन्य : पी० डी० टंडन

५२१. पत्र : उत्तिमचन्द गंगारामको

३० सितम्बर, १९४५

प्रिय उत्तिमचन्द,

आपके ५०० रुपयेके चैकके लिए धन्यवाद। इसका उपयोग भी पिछली रकमोंकी ही तरह किया जायेगा।[2]

आपकी पहेली तो अब भी पहेली ही है।[3] यहां मैंने एक विद्वान व्यक्तिके सामने उसे रखा—सेवाग्राममें भी ऐसा ही किया था। लेकिन दोनोंमें से कोई कुछ नहीं कर पाया। मेरा तो खयाल है कि अगर पहेलीका हल आसानीसे निकल आये तो वह पहेली ही नहीं रह जायेगी।

हिन्दी अनुवाद दोषपूर्ण हिन्दीमें होते हुए भी अच्छा और शिक्षाप्रद है। उसे समझने में मुझे कोई कठिनाई नहीं होती।

बम्बई बेकरी
हैदराबाद सिन्ध

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२ और ३. देखिए पृ० २१७ भी।

५२२. पत्र : जयकृष्ण भणसालीको

३० सितम्बर, १९४५

चि० भणसाली,

जिन लड़कोंके बारेमें लिख रहे हो, उनपर कितना खर्च आयेगा? क्या तालीमी संघ उन्हें लेगा? उनकी उम्र कितनी है? मैं नहीं समझता कि उनका खर्चा देने में कोई अड़चन होगी।

लड़कीके बारेमें तुमने महिला आश्रममें पूछा होगा।

तुम्हारा खान-पान नियमपूर्वक हो रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३५८) से। सी० डब्ल्यू० ७१९० से भी, सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

५२३. पत्र : सुशीला गांधीको

३० सितम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा इलाज पूरा हो गया, ऐसा अभी नहीं कहा जा सकता। वह तब पूरा होगा, जब तू मानेगी कि पूरा हो गया।

मेरी सेवा करने की इच्छा तेरे मनमें है, इसीको तू मेरी सेवा करने के बराबर समझ। इस इच्छाको तृप्त तब करना, जब तेरी सेवाकी सचमुच जरूरत हो। अभी तो अनेक लोग सेवा कर रहे हैं और करने को तत्पर हैं। जब ऐसा समय आये कि कोई सेवा करने को तैयार न हो, तब तुझ-जैसीको [सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अभी तो][1] जो यहाँ हैं उन्हींको मेरी सेवा करने दे और प्रसन्न रह। यह है . . .।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५७) से

१ और २. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ शब्द पढ़े नहीं जाते।

५२४. पत्र : प्रेमा कंटकको

३० सितम्बर, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र पढ़ा। उत्तर लिखकर पत्र फाड़ डालूंगा।

तू पागल ही है। मुझे जरा बुखार आ जाये तो इसमें प्रार्थना करने की क्या बात है? और मैं पंडालमें न होऊं तो इसका खेद कैसा?[1] इतने बड़े जलसेमें कोई हां या न हो, उसका क्या असर हो सकता है और किसलिए हो? मुझे यह सब अनुचित लगता है। जैसा मुझे लिखा है वैसा तूने 'नवा काल'[2]में लिख भेजा हो तो तूने भूल की है।

तेरे शिविरके बारेमें मैंने बापाको लिख दिया है। उसे कुछ दिन हो गये। तुझे अनुमति मिल जानी चाहिए। उसके साथ-साथ अस्पताल भी हो तो अच्छा ही है।

शंकररावजीसे आजकल मैं नाराज हूँ, ऐसी शंका भी तुझे किसलिए होती है? मेरे सामने यह सवाल ही नहीं उठता। सतारा-सम्बन्धी उनका लेख मैंने नहीं पढ़ा। ऐसे बहुत कम लेख ही मेरे पढ़ने में आते हैं।

मैं मौन रखूं या न रखूं, इसके साथ कमेटीके सदस्योंका सम्बन्ध होना ही नहीं चाहिए। चरखा-द्वादशीके बाद चि० नारणदासके आने की सम्भावना जरूर है। तू नजदीक होने पर भी मुझसे मिलने नहीं आती, तो इससे क्या? तू काम तो करती ही रहती है। फिर मिलने से ज्यादा क्या हो जायेगा? काम न हो तब तो मिलने की छूट तुझे है ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३७) से। सी० डब्ल्यू० ६८७६ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

५२५. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

३० सितम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

अपने पोस्टकार्डमें तुम अपनी बीमारीको सामान्य बताते हो। किन्तु आश्रमके पत्र तुम्हारे बुरी तरह बिगड़े हुए स्वास्थ्यकी सूचना देते हैं।

१. यहाँ संकेत २१, २२ और २३ सितम्बरको बम्बईमें हुई अ० भा० कां० कमेटीकी बैठक में गांधीजी की अनुपस्थितिसे है। देखिए पृ० २९५ की पा० टि० १ भी।

२. बम्बईसे प्रकाशित मराठी दैनिक

चि० रमणलालके बारेमें तुम जो निर्णय करोगे[1] सो ठीक होगा। यदि वहाँ किसी प्रकार जम जाये तो अच्छा हो।

यह आश्चर्यकी बात है कि मूर्तियोंके कारण किसी प्रकारका हल्ला-गुल्ला नहीं हुआ। यह भी आश्चर्यकी बात है कि कामलेके बारेमें जान लेने के बावजूद सवर्णोंने उनके भजन सुने।

जोहरासे सम्बन्धित अंश मैंने उसे पढ़वा दिया है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

५२६. पत्र : गजानन नायकको

३० सितम्बर, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र मैं पढ़ गया। यदि पत्रमें लिखी तुम्हारी बात सही हो तो वह विचार करने योग्य है। यह पत्र तुम्हें स्वयं कुमारप्पाजीको दिखाना चाहिए। यदि तुम अनुमति दो तो मैं ही उन्हें दिखा दूँगा। उसमें उल्लिखित शिकायतको तुम दबा नहीं सकते। मुझे तो यह भी लगता है कि ऐसी संस्थामें तुम्हारा निबाह हो ही कैसे सकता है? तुम्हारे कथनमें अतिशयोक्ति तो नहीं है न? इस दौरान मैं तुम्हारा पत्र सँभालकर रखे रहूँगा।

भगनवाडी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २६० भी।

५२७. खादी खरीदने के लिए सूत देने की शर्त[1]

[सितम्बर, १९४५]

खादी कांग्रेसने अपनाई। चरखा संघने सूतकी शर्त लगाई। और जिस खादीको चरखा संघने प्रमाणित नहीं किया है वह गैरकानूनी है। अब खादी खरीदने के लिए कुछ अंशमें सूत देना पड़ता है। यह सब सही है। लेकिन इसमें मैं तो जरा-सी भी जबरदस्ती नहीं पाता हूँ। जबरदस्ती उसका नाम है जिसमें इनकारकी सजा होती है। सजा कैसी हो, यह अलग बात है। मैं अगर मुफ्त खादी न दूं और उसके दाम लूं, तो उसमें कोई जबरदस्ती नहीं है। इसी तरह किसी संस्थामें सभ्य [सदस्य] होने की शर्त रहती है, या उसमें फेर-फार होता है तो वह भी जबरदस्ती नहीं है। ऐसे ही अप्रमाणित खादीके बारेमें है। बाहरकी यानी अप्रमाणित खादी चले तो वह खादी है या नहीं, या बुनकरको या कत्तिनको ठीक दाम दिया गया या नहीं, इसकी जिम्मेवारी कौन उठाये?

जैसे समय आगे बढ़ता है और अनुभव मिलता है वैसे कानूनोंमें परिवर्तन होता ही रहता है। अब देखने की बात यह रह जाती है कि जो परिवर्तन हुआ है वह हेतुको सफल करता है या नहीं, सत्य और अहिंसाका अनुसरण करता है या नहीं, पारमार्थिक है या स्वार्थवश हुआ है, इन सब प्रश्नोंका उत्तर बतायेगा कि परिवर्तन मूल हेतु सिद्ध करने के ही लिए है और किसी जगह जबरदस्तीकी बू तक नहीं है।

मेरे मालके बदलेमें मैं पैसेको जगह सूत माँगूं या वैसी कोई दूसरी वस्तु माँगूं तो उस बारेमें मुझे धन्यवाद ही मिलना चाहिए।

अब जरा भीतर देखें। हम मानते हैं (और जो मानते हैं उन्हींके लिए खादीका उद्यम है) कि खादी व्यापक होने से अहिंसक स्वराज्य मिलता है। तब ज्यादासे ज्यादा आदमी थोड़ा समय भी कातें तो स्वराज्य-प्राप्तिमें बहुत मदद मिलती है। इसलिए हम कातते हैं तो मजबूर होकर नहीं, शौकसे। और कातने से हम गरीबोंके साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं, यह और भी फायदा उठाते हैं।

इन सब कारणोंसे मेरा उत्तर साफ है कि सूतको खरीदने का दाम बनाने में तनिक भी मजबूरी[2] नहीं है।

खादी जगत्, अक्तूबर, १९४५

१. यह एक पत्र-लेखकके इस प्रश्नके उत्तरमें लिखा गया था: "कांग्रेसके पास आप ही ने खादीकी शर्त लागू करवाई और अ० भा० चरखा संघके पास सूतकी। चरखा संघके सिवा अन्य खादीका प्रयोग कांग्रेसियोंके लिए गैर माना गया; और अब बिना सूतके चरखा संघसे खादी देना मना कर दिया गया है। क्या यह जबरदस्ती नहीं है?"

२. स्पष्ट ही तात्पर्य "मजबूर करना" या "जबरदस्ती" से है।

५२८. तार : वीणा दासको

एक्सप्रेस

पूना
१ अक्तूबर, १९४५

वीणा दास
मार्फत कुमिल्ला बैंक
बम्बई

गुरुवारको शामके चार बजे आओ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५२९. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पूना
१ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सी० आर०,

सरदारके नाम आपका पत्र[1] पढा। उसमें मुझे आपकी चिन्ताका आभास मिलता है। लेकिन चिन्ता क्यो? सरदारने किसीसे कुछ नही कहा है। हाँ, उन्हें यह लगता अवश्य है कि कांग्रेसी हलकोंमें आप अपनी लोकप्रियता खो बैठे हैं।[2] लेकिन यह आपके लिए कोई महत्वकी बात नही होनी चाहिए। आपकी सेवाकी जरूरत होगी तो आप सेवा करेंगे। खुद मेरी राय है कि वक्त आने पर आपकी जरूरत महसूस की जायेगी। लेकिन मैं यह नही चाहता कि आप इस बातको ज्यादा महसूस करें। आप ऐसा मत सोचिए कि सरदारके पास कोई जादूकी छडी है। वे एक हद तक ही कुछ कर सकते हैं, उससे ज्यादा नही। अगर उन्होने अपनी मर्यादाओंका उल्लघन किया, तो वे अपना

१. २८ सितम्बर, १९४५ के इस पत्रमें अन्य बातोंके अलावा यह कहा गया था : "साथमें आन्ध्र पत्रिका की एक मुख्य समाचार-कथाका, जिसके लिए डॉ० पी० [सुब्बारायन] के मित्रगण जिम्मेदार हैं, मर्यादित पाठ भेज रहा हूँ। इसमें लोगोंके मनपर यह छाप डालने की कोशिश की गई कि डॉ० पी० को आपने एक नेताके रूपमें खड़ा किया है और यह एक बड़ी योजनाका अभिन्न अंग है।"

२. तात्पर्य चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको मद्रास प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीमें स्थान न दिये जाने से है।

प्रभाव खो बैठेंगे। मेरा सुझाव यह है कि हम दोनोंके यहाँ रहते आप यहाँ आयें और हम अपना मन बहला सकें। चुनावों[1] को उनके भाग्यके भरोसे छोड़िए। मैं यह तो चाहूँगा कि उम्मीदवारोंमें आपका नाम शामिल हो, लेकिन सो भी बिना किसी प्रयत्नके। लेकिन इन सबकी चर्चा आपके यहाँ आने पर हो सकती है। आपको मेरे साथ काफी समय रहने के इरादेसे आना चाहिए। आप एक कांग्रेसीके पास दूसरे कांग्रेसीको तरह नहीं, किसी कामसे नहीं, बल्कि एक मित्रकी तरह आयेंगे। मौसम बहुत अच्छा है। इस बार आप पर्णकुटी[2] में नहीं ठहरेंगे। आप इस चिकित्सा-गृहमें ही आयेंगे। आपके रहने-सहने की ठीक व्यवस्था कर दूंगा। आशा है, आप बहुत कमजोर या बहुत बीमार नहीं होंगे। मगर ठीक हों या बीमार, आपको यहाँ आना चाहिए।

स्नेह।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३०. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको

१ अक्तूबर, १९४५

वहाला बहिन[3],

तुम्हारे पत्रको मैं समझता हूँ। बेशक, तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हें जहाँ ले जाये, तुम्हें वहीं जाना चाहिए। तुम जहाँ भी रहोगी, अपनी योग्यताका ठीक परिचय हो दोगी। लेकिन मैं यह चाहूँगा कि तुम किसी दिन कोई निश्चित काम पकड़कर उसीमें रम जाओ। दोरडी [रस्सी] की खूबी यही है।

नरगिसबहनने तुम्हारा पत्र देखा। वह अक्सर यहाँ आती है।

स्नेह।

श्री खुर्शेदबहन नौरोजी
ओरिएंट क्लब, चौपाटी
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नवम्बरमें होने वाले केन्द्रीय विधानसभाके चुनाव
२. पूनामें प्रेमलीला ठाकरसीका निवास-स्थान
३. सम्बोधन गुजरातीमें है; वहाला, अर्थात् प्रिय।

५३१. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१ अक्तूबर, १९४५

चि० रेहाना,

तेरा पत्र आज मिला। सालेहभाईका लेख मैं पढ़ गया। उसमे कही गई कुछ बातें तो सही हैं, किन्तु न तो वर्मा और न हिन्दुस्तानको ही कोई अधिकार प्राप्त है। किसी सच्चे हिन्दुस्तानी या सच्चे बर्मीकी बात कोई नही सुनेगा और उसका कोई असर नही होगा। हिन्दुस्तानका सच्चा धर्म स्वय स्वतन्त्र होना और बर्मा तथा अन्य देशोको स्वतन्त्र होने में सहायता देना है। जब दोनो स्वतन्त्र हो जायेंगे तो सारा वैर मिट जायेगा। फिलहाल तो सालेहभाईके कथनपर कोई ध्यान नही देगा। उन्हें तो मात्र एक पदाधिकारी माना जायेगा। मेरी सलाह तो यह है कि उन्हें शान्त होकर बैठना चाहिए और मूक भावसे जो सेवा बन पड़े सो करनी चाहिए। पदाधिकारी का धर्म कथनी नही, करनी है।

यह सालेहभाईको भेज देना।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

रेहाना तैयबजी
४० ए, रिज रोड
मलाबार हिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३२. तार : तान युन-शानको

एक्सप्रेस

पूना
२ अक्तूबर, १९४५

प्रोफेसर तान युन-शान[1]

सम्पूर्ण चीनको मेरी शुभकामनाएँ। स्नेह।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. तान युन-शान रवीन्द्रनाथ ठाकुरके निमन्त्रणपर भारत आये थे और यहाँ उन्होंने विश्वभारती के चीन-भारत अध्ययन विभाग तथा बादमें चीन-भारत सांस्कृतिक सघका संगठन किया था।

५३३. पत्र : कोंडा वेंकटप्पैयाको

पूना
२ अक्तूबर, १९४५

प्रिय देशभक्त[1],

क्या अब वह समय नहीं आ गया जब मैं आपको हिन्दुस्तानीमें लिखूं? हम दोनों बूढ़े हो चले हैं। अगर जवान लोग हमें नहीं बख्शते तो हम तो एक-दूसरेको बख्शें। मुझे अब यहाँ-वहाँ मत घसीटिए। आशा है, आप सकुशल होंगे।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२९) से

५३४. पत्र : एन मारी पीटर्सनको

२ अक्तूबर, १९४५

प्रिय मारिया,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम मूर्ख हो, और मूर्ख तो हम सब हैं, कोई ज्यादा, कोई कम। इसलिए फिक्र क्यों करें? तुम्हें स्वस्थ होकर दीर्घकाल तक जीना है, ताकि तुम अपने कामको फूलते-फलते देख सको।

तुम्हारे प्रार्थना-पत्रपर कार्रवाई हो रही है।[2] बोर्डकी बैठक इसी महीने किसी दिन होगी; आशा है, उसमें उसपर अन्तिम रूपसे विचार कर लिया जायेगा। सबसे अच्छा यह होगा कि तुम्हारा खर्च आसपासकी जगहोंसे ही निकल आये। हमें इसी उद्देश्यको प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मद्रास आऊँगा, तब वहाँ तो तुम मुझसे मिलोगी ही। विदेश जाने के लिए क्या तुमने तिथि तय कर ली है?

एस्थर[3] को पत्र लिखो तो उससे मेरा प्यार कहना। तुम भी मेरा प्यार स्वीकार करो।

बापू

कुमारी मारी पीटर्सन
सेवा मन्दिर, पोर्टो नोवो (द० भारत)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कोंडा वेंकटप्पैया, कांग्रेस कार्य-समिति और अ० भा० कांग्रेस कमेटीके सदस्य और बादमें मद्रास विधान-सभाके सदस्य

२. देखिए पृ० १७१।

३. एस्थर मेनन

५३५. पत्र : के० राम रावको

२ अक्तूबर, १९४५

प्रिय राम राव,

यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हे अपने पहले वाले पदपर[1] बुला लिया गया है। तुम्हारे कार्यको मेरा आशीर्वाद है ही।

'नेशनल हेरल्ड'
लखनऊ

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

२ अक्तूबर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

आशा है कंचन और हीरामणि अब अच्छी हो गई होंगी।

जब तुम हैजेके कामसे मुक्त हो जाओ, तब जो काम कोई न करे, वह तुम्हें अपने हाथमें ले लेना चाहिए। कोई भी काम न हो तो कातना चाहिए।

मेरी राय तो यह है कि मिर्च केवल डॉक्टर कहे तो देनी चाहिए, अन्यथा नहीं। तुम्हें अपनी राय बता देनी चाहिए; उसके बाद तटस्थ हो जाना चाहिए।

प्रार्थनामें न गाने की मैंने तुम्हें सलाह[2] दी थी, प्रतिबन्ध नही लगाया था। अगर मेरी सलाह कड़वी लगे, तो उसे हर्गिज नही मानना चाहिए। तुम्हें लगे कि तुम गायनमें सम्मिलित हो सकते हो तो हो जाना चाहिए। तब तुम्हें दूर जाकर उच्च स्वरसे गाना चाहिए और स्वर बदलते रहना चाहिए। इससे तुम्हें स्वर-ज्ञान हो जायेगा। नई तालीममें संगीत-शिक्षक है। उससे सरगम सीख लो। हीरामणि तो महिला आश्रममें काफी समय रही है। उसे सरगमका ज्ञान होना चाहिए। उससे सीख लेना।

१. नेशनल हेरल्ड के सम्पादक पदपर। इस समाचार-पत्रपर अगस्त १९४२ में पाबन्दी लगा दी गई थी।

२. देखिए पृ० २८३।

पेड़ोंके बारेमें तो जो किशोरलालभाईने तय किया हो, उसीपर अमल होने दो। मैं वहाँ आऊँ, तब मुझे और अधिक समझाना।

अब सब जवाब दिये जा चुके।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४३१) से। सी० डब्ल्यू० ५६०० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५३७. पत्र : प्रभावतीको

२ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। मैं अच्छा हूँ। २ नवम्बरको कलकत्ता पहुँचने का विचार है। सोदपुरमें सतीशबाबूके साथ ठहरूँगा। तू वहाँ उसके पहले या उसी दिन पहुँचना। तुझे क्या पढ़ना चाहिए, इसका विचार करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८३) से

५३८. पत्र : आनन्द गो० चोखावालाको

२ अक्तूबर, १९४५

चि० आनन्द[1],

तूने पत्र लिखा, अच्छा किया।

तू प्रभात-फेरीमें जाता है, यह उत्तम बात है। ऊधम कम करना। शारदाको तंग तो नहीं करता न? अब तो तुझे उसकी सेवा करनी चाहिए।

सरदारके और बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००८८) से। सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

१. गोरधनदास और शारदाबहन चोखावालाके पुत्र

५३९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

२ अक्तूबर, १९४५

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र पढ़कर बहुत प्रसन्न हुआ। चि० गोरधनदासका पत्र उससे पहले मिला था। इतनी जबर्दस्त बरसातका मुकाबला तुम लोगोने ठीक कर लिया। जब तक तू बिलकुल अच्छी न हो जाये, शकरीबहनको जाने मत देना। जब मैं सेवाग्राममें जम जाऊँ तब वहाँ आना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६१) से। सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

५४०. पत्र : टी० पी० जोशीको

२ अक्तूबर, १९४५

प्रिय बहन,

आपका चेक और पत्र मिल गया है। आपकी कविताएँ सुनने के लिए भी मुझे महाबलेश्वर आना अच्छा लगेगा। किन्तु ईश्वरने जो सोचा होगा वही तो होगा न?

टी० पी० जोशी
४० ए, रिज रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४१. पत्र : लीलावती आसरको

२ अक्तूबर, १९४५

चि० लिली,

तेरा पत्र मिला। मेरी चिन्ता मत कर। मेरी सूजन उतर गई है और मैं अच्छा हूँ।

मुझे यह जानकर अच्छा नहीं लगा कि तुझे बुखार आ गया। आशा है, अब बिलकुल स्वस्थ हो गई होगी। यथाशक्ति परिश्रम करना। यथासमय परीक्षा तो देनी ही है। तू उत्तीर्ण हो जायेगी, किन्तु उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण होने को हमें एक-सा ही मानना चाहिए। तुझे इतना तो 'गीता' से सीख ही लेना चाहिए। किया हुआ परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। आत्मसात किया हुआ ज्ञान साथ देता है। जो पढ़े उसपर विचार करना। रटना कम और पढ़े हुए को सावधानीसे विचार करके याद करने की चेष्टा करना।

जी० एस० मेडिकल कॉलेज
महिला हॉस्टल
परेल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४२. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
२ अक्तूबर, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुमारा खत मिला। रामप्रसादको लिखा है सो साथमें है।[1] मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने ब्रह्मचर्यकी बात क्यों न की।

मनोज्ञा[2] और दुर्गाबहन अच्छे हो गये होंगे।

न्यामत आश्रममें नहीं रहता है क्या?

मेरी उमीद है कि मैं वहां २२ तारीखको पहोंचुंगा और पहेली न[वम्बर] तारीखको कलकत्ताके लिये रवाना हूंगा। हो सकता है कि वहां पहोंचने में एक दीन निकल जाय। सेवाग्राम छोड़ने की तारीख निश्चित मानी जाय। बाकी तो ईश्वराधीन है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३३) से

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. गांधीजी के रिश्तेके पोते कृष्णदास गांधीकी पत्नी

५४३. पत्र : रमणलाल अग्रवालको

पूना
२ अक्तूबर, १९४५

भाई रमणलाल,

आप इंग्रेजीमें क्यों लिखते हैं? आपकी चचल वृत्ति है इसलिए आप दुबारा खादीसे ऊब जायेंगे तो क्या होगा? आप क्या करते हैं? आप अच्छे कार्यकर्ता होंगे तो आपकी सेवाका स्वीकार अवश्य होगा। अपना इतिहास सविस्तार लिखें।

रमणलाल अगरवाल
३३ डी, नाथ टेरेस
लेडी जमशेदजी रोड
बम्बई–१६

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४४. पत्र : चाँदरानीको

पूना
२ अक्तूबर, १९४५

चि० चाद,

तेरा खत मिला, बहुत दिनके बाद। तेरी तबियत अच्छी नही रहती है सो अच्छा नही लगता है। शरीर बिगाडकर अभ्यास नही करना है। सत्यवतीका ऐसे ही है।

दागा मेमोरियल हास्पिटल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४७. तार : इन्डो-ब्रिटिश फ्रेन्डशिप ग्रुपके अध्यक्षको

पूना
३ अक्तूबर, १९४५

अध्यक्ष
इन्डो-ब्रिटिश फ्रेन्डशिप ग्रुप
ब्राउन्टन

धन्यवाद। हर अहिंसात्मक प्रवृत्तिको मेरा आशीर्वाद हमेशा रहता है। ब्रिटेनकी अहिंसा और सत्यकी सच्ची कसौटी उसके द्वारा भारतकी पूर्ण स्वतन्त्रताकी स्वीकृतिमें है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४८. पत्र : नारणदास गांधीको

पूना
३ अक्तूबर, १९४५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। इस बार सूतका हिसाब देखने लायक होगा। यदि सूतको पैसेमें बदला जाये तो कितना पैसा आयेगा, यह भी बताना।

वहाँका काम निपटा चुके होगे। काम पूरा करके जल्दी आ जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८६३२ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

५४९. पत्र : प्रेमा कंटकको

३ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरे पत्रका मैंने तुझे लम्बा उत्तर[1] भेजा है। वह अब तो मिल गया होगा। तूने अपना लिखा सच्चा कर दिखाया है। 'नवा काल' का लेख[2] मुझे भेजना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३८) से। सी० डब्ल्यू० ६८७७ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

५५०. पत्र : चिमनलाल सीतलवाडको

३ अक्तूबर, १९४५

प्रिय चिमनलाल,

आपकी शुभेच्छाओंके लिए आभार।

वर्षों हो गये, चुनावोंमें मैं किसी तरहसे भाग नहीं लेता। अतएव आपका पत्र मैं सरदारको सौंप रहा हूँ। उनसे भी इस सम्बन्धमें मैं मुश्किलसे ही कभी बात करता हूँ।

बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३१९।

२. "आम्ही कोठें आहोंत?" शीर्षक लेख। प्रेमा कंटकने अ० भा० कांग्रेस कमेटीकी बैठककी कार्रवाईकी जबर्दस्त आलोचना की थी, क्योंकि उस बैठकमें न तो कार्यकर्त्ताओंको कोई दिशा-निर्देश ही दिये गये थे और न ही गांधीजी की अनुपस्थितिकी कोई चर्चा ही थी।

५५१. पत्र : यूसुफ मेहरअलीको

३ अक्तूबर, १९४५

भाई मेहरअली[1],

तुम्हारी शुभेच्छाएँ मिलीं, यह सूचित करना तो तुम्हें लिखने का बहाना है। आशा है, तुम स्वस्थ होगे। अपनी इच्छा अभिव्यक्त करने का यह अवसर मुझे मिला है।

यूसुफ मेहरअली
वाडिया लॉज
इगतपुरी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५२. पत्र : करसनदास चितलियाको

३ अक्तूबर, १९४५

भाई करसनदास,

मैं गोखलेकी पैतृक सम्पत्तिके बारेमें पता लगा रहा हूँ। सुशीलाबहन हैजेकी रोकथामके लिए सेवाग्राममें है।

कस्तूरबा निधिके [कामके] बारेमें बापा सबसे पूछ रहे हैं।

भगिनी सेवा मन्दिरके मामले भी वही देखेंगे न?

तुम ढीले कैसे पड़ गये हो? और यदि पड़ ही गये हो तो अनिवार्यके लिए दुःख कैसा?

करसनदास चितलिया
भारत सेवक समाज
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. (१९०३-१९५०); अ० भा० कांग्रेस कमेटीके सदस्य; अ० भा० समाजवादी पार्टीके संयुक्त सचिव; बम्बईके भूतपूर्व मेयर

५५३. पत्र : जमनाबहन गांधीको

३ अक्तूबर, १९४५

चि० जमना,

तुम इतनी दुबली क्यों हो गई हो? यहाँ कुछ आवहवा बदल जाने से भी फायदा होने की सम्भावना है।

अपना बम्बईका काम पूरा करके कनैयो मेरे पास पहुँच गया है। फिलहाल सन्तोक, राधा, केशू[1] और उसकी पत्नी भी आ गये हैं। चि० पुरुषोत्तम[2] को मैं अलगसे नहीं लिख रहा हूँ।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५४. पुर्जा : दिनशा मेहताको

३ अक्तूबर, १९४५

चि० दिनशा,

१. क्लिनिकमें गन्दगी बनी रहती है, वह बिलकुल साफ होनी चाहिए। पानी कहीं रिसना नहीं चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सामें स्वच्छताको प्रथम स्थान मिलना ही चाहिए। यदि इस कारण खर्च बढ़ता हो तो बढ़ने दो।

२. क्लिनिकको चलाने के बारेमें मैंने बहुत गहराईसे विचार किया है और रोज विचार करता रहता हूँ। निःसन्देह मुझे लगता है कि तुम्हें उसे चलाना चाहिए। न्यास बनाना ठीक तो लगता है, किन्तु वह गौण बात है। यदि विश्वविद्यालय बनने वाला होगा तो वह क्लिनिकसे ही बनेगा। यदि इसे किसी अन्यको सौंप दिया गया तो विश्वविद्यालय कदापि नहीं बनेगा। इसको छोड़ने का मतलब होगा अपना धन्धा छोड़ना। विश्वविद्यालय बनाने के लिए तुम्हें सभी प्राकृतिक चिकित्सकोंसे मिलना चाहिए, उनसे मित्रता करनी चाहिए और उनका सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक सारा प्रयत्न निरर्थक है। संसारके सभी कार्य इसी प्रकार सम्पन्न होते हैं। पैसेके बलपर विश्वविद्यालय नहीं बनते।

३. गांवोंके लिए काम करना एक बिलकुल अलग प्रश्न है। मैं देखता हूँ कि फिलहाल तुम सिर्फ गांवोंमें काम नहीं कर सकते। तुम अकेले दोनों काम नहीं कर

१. मगनलाल गांधीके पुत्र

२. जमनाबहनके पुत्र

सकते। यदि फिलहाल गाँवका काम स्थगित रहे तो मुझे परवाह नहीं। यह अच्छा हुआ कि ट्रस्ट बना दिया गया है। मैं मानता हूँ कि यह काम ठोस बुनियादपर आधारित हो और इसे विचारपूर्वक किया जाना चाहिए। काम शुरू करने के बाद उससे मुँह मोड़ लेना ठीक नहीं होगा।

इन तीनों मुद्दोंके बारेमें विचार-विमर्श करने के लिए हम कल रातको ८-३० बजे बैठेंगे। यदि विचार-विमर्श पूरा नहीं हुआ तो हम फिर मिलेंगे।

सरदार किसी रूमानियन डाक्टर द्वारा जाँच करवाने की अनुमति माँगते हैं। मैंने उनसे कहा है कि चाहे जिससे जाँच करवाओ, किन्तु उपचार तो तुम्हारा ही चलना चाहिए।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

५५५. पत्र : जमशेदजी मेहताको

३ अक्तूबर, १९४५

भाई जमशेदजी,

तुम्हारा पत्र मिला। सभी शुभ प्रवृत्तियोंमें मेरा आशीर्वाद तो है ही। इसके अतिरिक्त मुझसे और कुछ माँगना ही नहीं चाहिए। तुम माँगते भी नहीं हो।

सेठ जमशेदजी नसरवानजी मेहता
श्री शारदा मन्दिर
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

पूना
३ अक्तूबर, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला है। ११ को आने की राह देखुंगा।

बापुके आशीर्वाद

शेठ घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला पार्क
बनारस

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७२) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

५५७. पत्र : राधाकान्त मालवीयको

पूना
३ अक्तूबर, १९४५

भाई राधाकान्त[1],

मैं कहां चूंटणी (चुनाव) में हिस्सा लेता हूं? मैं तो चाहूंगा कि बाबूजी भी उसमें से मन निकाल दें।

राधाकान्त मालवीय
१८, हेमिल्टन रोड
अल्लाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मदनमोहन मालवीयके पुत्र

५५८. पत्र : गोकुलभाई भट्टको

पूना
४ अक्तूबर, १९४५

भाई गोकुलभाई,

क्या ऐसा हो सकता है कि मैं तुम्हें खड़े-खड़े निकाल दूं? अगर मुझे अपने स्वास्थ्यकी हिफाजत करनी है तो मेरी स्थिति यही करने लायक है।

तुम पेंसिलसे लिखने का अपराध क्यों करते हो? क्या ऐसा करने में तुम्हें हिंसा नजर नहीं आती?

मुझे ट्रस्टी बनाकर मणिबहनको क्या मिलेगा? तुम सब जो ओहदा आज मुझे दे रहे हो क्या ट्रस्टी बनाकर उससे अधिक दोगे? शेष सुझाव मुझे ठीक जान पड़ते हैं। क्या तुमने पत्रकी नकल सभीको भेजी है?

गोकुलभाई भट्ट
भगिनी सेवा मन्दिर न्यास
विले पार्ले

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५९. पत्र : मृदुला साराभाईको

४ अक्तूबर, १९४५

चि० मृदुला,

इस बार तू बेकार नहीं आ रही है। जब तू आयेगी तो मैं वैसा ही हो जाऊँगा जैसा आज हूँ। ताकत घोड़ेकी गतिसे जाती है और चींटीकी गतिसे आती है। तू मंगलवार ९ तारीखको आना। मैं ३ बजेका समय रख रहा हूँ। आशा है तू प्रसन्न होगी।

मृदुलाबहन साराभाई
कश्मीर हाउस
नेपियन सी रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६०. पत्र : मणिलाल शुक्लको

४ अक्तूबर, १९४५

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तेरी तबीयत काफी सुधर गई है, हालांकि मुझे यह मालूम नहीं था कि तू अभी तक बीमारीके चंगुलमें है।

माताजी सामान्यतः ठीक हो जायेंगी, इसके लिए भी भगवानका आभार मानना चाहिए।[1] ८० वर्षकी आयुमें टूटी हड्डी फिर जुड़ जाये, यह आश्चर्यकी ही बात है।

सामान्यतः ऐसा नहीं होता कि कोई पत्र, जिसमें कुछ आवश्यक बात हो, मुझे न दिखाया जाये। किन्तु लगता है कि तेरा पत्र ऐसे समय मिला होगा जब मुझे कोई भी पत्र देने की मनाही कर दी गई होगी।

मेरे लिए यह नई बात है कि तू जन्म-कुण्डलियोंमें रुचि लेता है और तुझे उसका कुछ ज्ञान है। मुझे दुःख इस बातका है कि मैं तेरी जिज्ञासाको शान्त नहीं कर सकता। मुझे इस बातका पता है कि मेरी जन्मपत्री सदा परिपूर्ण रखी जाती थी, किन्तु वह अभ्यास मेरे पिताश्रीके साथ ही चला गया। वे उसमें रुचि लेते थे और विस्तृत जन्म-पत्रीसे वर्षफल बनवाते थे। मेरे बड़े भाई[2] के बड़े लड़के शामलदासके पास वह पूरा संग्रह है, और उसके पास मेरी भी हो सकती है। मैं उसे लिख रहा हूँ। सम्भवतः तू स्वयं भी उसे जानता है। इसलिए उसे लिखना। वह 'वन्देमातरम्' दैनिक चलाता है।

कहा जा सकता है कि आजकल मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। तू अच्छा हो जा और समय-समयपर मुझे लिखते रहना।

मणिलाल शुक्ल
बैरिस्टर साहब
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३०३।
२. लक्ष्मीदास गांधी

५६१. पत्र : कंचन मु० शाहको

४ अक्तूबर, १९४५

चि० कचन,

तेरा पत्र मुझे अच्छा लगता है। मेरी सहानुभूति भी तेरे साथ है। मुन्नालालने अभी विषयासक्तिपर विजय नही पाई है। पाई होती तो तू तो अपने-आप शान्त हो जाती। आज बस इतना ही, क्योकि सोने का समय हो गया है।

अच्छी हो जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६२) से। सी० डब्ल्यू० ६९८४ से भी, सौजन्य . मुन्नालाल ग० शाह

५६२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

४ अक्तूबर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला, साथमें कचनका भी। तुम्हारे लिए एक मार्ग है : तुम शिवजीके समान निर्विकार होकर—प्रयत्न करके नही—कचनको जीत सकते हो। लेकिन यह तुम्हारी शक्तिसे परे है। इसलिए चारा यही है कि तुम अलग घर बसाओ। कचनको सन्तुष्ट करना आवश्यक है। यह तुम्हारा धर्म है। इसे मैं तुम्हारा प्रथम कर्तव्य मानता हूँ। इतना करो तो तुम्हें अपने सब प्रश्नोका उत्तर मिल जायेगा। कचनका मुझे लिखा पत्र तुमने पढ़ा होगा। न पढा हो तो उससे पूछना। मैंने उसका पत्र फाड़ डाला है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८३६२ और ८४३०) से

५६३. पत्र : शरतचन्द्र बोसको

पूना

५ अक्तूबर, १९४५

प्रिय शरत बाबू,

आपका पत्र मिला। मेरी अन्तर्बुद्धि तो यह कहती है कि अन्तिम उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। लेकिन जैसा आपको कहे, वैसा कीजिए। आखिर बहुत बड़ी चीज दाँवपर लगी हुई है।

लेकिन यह पत्र लिखने का प्रयोजन आपसे यह जानना है कि आपने जवाहरलाल पर सार्वजनिक रूपसे प्रहार करना क्यों आरम्भ कर दिया है?[1] क्या आपने पहले उसके साथ पत्रापत्रपर चर्चा नहीं कर ली थी? इसकी सार्वजनिक चर्चा अशोभन लगती है। अगर करा सकें तो स्थितिसे अवगत करायें।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे और अपनेको कुछ आराम देंगे।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. वल्लभभाई पटेलके नाम अपने १ अक्तूबर, १९४५ के पत्रमें जवाहरलाल नेहरूने कहा था : "...समाचारपत्रोंमें आपका ध्यान शरतचन्द्र बोस और मेरे बीच एक सर्वथा अनावश्यक विवादकी ओर गया होगा।...वे च्यांग-काई-शेकके पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं; यह बात मुझे बुरी और हानिकर लगती है और इससे चारों ओर अनावश्यक बखेड़ा खड़े होने की सम्भावना दिखाई देती है। च्यांग-काई-शेकने जो-कुछ किया है उसमें से सब कुछकी प्रशंसा तो हममें से कोई नहीं करता। लेकिन उनपर इस तरह प्रहार करना बुरा जरूर लगता है। वे चीनके प्रधान हैं, और जहाँ तक भारतका सम्बन्ध है, उनका रुख हमेशा मैत्रीपूर्ण रहा है। रही मेरी बात, तो मैंने न केवल च्यांग-काई-शेक और चीनी सरकारसे, बल्कि उनके बहुत-से आलोचकोंसे भी दोस्ताना ताल्लुकात रखे हैं। शरत बाबूके साथ इस विवादमें पड़ना मुझे अच्छा तो नहीं लगता, लेकिन चुप रहना भी असम्भव हो गया है...।"

५६४. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको

५ अक्तूबर, १९४५

वहाला बहन[1],

तुम्हारा पत्र किसी दलीलकी अपेक्षा नहीं रखता। उसके सम्बन्धमें प्रार्थनाकी जरूरत है। तुम्हें अपनी ही राह जाना है। तुम सारी बहनोंपर जैसा बाप वैसी बेटी वाली बात लागू होती है। इसलिए तुम्हारा ऐसा करना ठीक ही है। जिस तरह किसी चीजकी स्वीकृति होती है उसी तरह अस्वीकृति भी होती है। इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि न स्वीकृति हो और न अस्वीकृति। सत्यान्वेषककी स्थिति यह भी होनी चाहिए। मैं इस कथनको न स्वीकार करता हूँ और न अस्वीकार कि मगल ग्रहपर जीवन है।

स्नेह[सहित]।

बापू

श्री खुर्शेदबहन नौरोजी
ओरिएंट क्लब, बम्बई–७

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६५. पत्र : एन० के० बोसको

५ अक्तूबर, १९४५

खुर्शेदबहनने अपने नाम लिखा आपका पत्र गांधीजी को भेजा है। उनकी इच्छा है कि आपको लिखकर बता दूं कि उनके कलकत्ता पहुँचने पर आप उनसे अवश्य मिलें। ईश्वरकी इच्छा हुई तो वे नवम्बरके पहले सप्ताहमें कलकत्ता पहुँचेंगे।

[अमृतकौर]

[अंग्रेजीसे]
माई डेज विद गांधी, पृ० २०

१. सम्बोधन गुजरातीमें है।

५६६. पत्र : कुँवरजी पारेखको

५ अक्तूबर, १९४५

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा पत्र मिला। थोड़ेमें निबटाने के लिए कार्ड ही लिख रहा हूँ। माधवदासको अलगसे नहीं लिखता। तुम सबने उसे अपना लिया है, इसलिए मैं निश्चिन्त हूँ। अब तुम्हें जैसा ठीक लगे, करना। माधवदासको साहस और दृढ़ताका अभ्यास करना चाहिए। घरका मोह नहीं करना चाहिए। हो सका तो मणिलाल वहाँ आयेगा। आशा करता हूँ, चि० वसन्तलालका मामला सही-सलामत सुलझ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से

५६७. पत्र : प्रभावतीको

५ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रभा,

तेरा पत्र मिला। मैंने तुझे एक लम्बा पत्र लिखा है, जिसमें सब आ जाता है। मेरा विचार २ नवम्बरको कलकत्ता पहुँचने का है। मेरी इच्छा है कि तू मुझसे वहाँ आकर मिले, जिससे तुझे भटकना न पड़े। तेरा पत्र आया तो मैं तुझे लिखूंगा ही। मेरे कार्यक्रममें कोई परिवर्तन हुआ तो मैं तुझे खबर दूंगा।

तेरी 'अरेबियन नाइट्स' पुस्तक मुझे प्यारेलालने दी है। तुझे भेज नहीं रहा हूँ। साथमें लाऊँगा। तेरी इच्छा हो तो पहले भेज दूं।

अपने लिए दूधकी व्यवस्था तो तुझे करनी ही चाहिए। जो भी हो, अब तो हम शीघ्र मिलेंगे। आशा है, तू कुछ-न-कुछ पढ़ती ही होगी और लिखती भी होगी। रुई ठीक कर लेना। रूईकी सारी क्रियाएँ सीख लेना। पिताजीकी तबीयत अब कुछ ठीक है, ऐसा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८४) से

५६८. पत्र : गुणोत्तम हठीसिंहको

५ अक्तूबर, १९४५

चि० राजा,

अंग्रेजीमें क्यो लिखते हो? और चुनावोसे तो मेरा कोई वास्ता ही नही है। उनके बारेमें मै कुछ नही जानता। मै नाराज क्यो होऊँगा? हाँ, मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि "प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई।" प्रयत्न करने से ऐसी टेव पड जायेगी।

राजा हठीसिंह
२०, कारमाइकेल रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६९. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

५ अक्तूबर, १९४५

चि० जवाहरलाल,

तुमको लिखनें का तो कई दिनोंसे इरादा किया था, लेकिन आज ही उसका अमल कर सकता हूं। अग्रेजीमें लिखु या हिन्दुस्तानीमें यह भी मेरे सामने सवाल रहा था। आखरमें मैंने हिन्दुस्तानीमें ही लिखने का पसंद किया।

पहली बात तो हमारे बीचमें जो बडा मतभेद हुआ है उसकी है। अगर वह भेद सचमुच है तो लोगोंको भी जानना चाहिये। क्योंकि उनको अंधेरेमें रखने से हमारा स्वराजका काम रुकता है। मैंने कहा है कि 'हिन्द स्वराज'[1] में मैंने लिखा है उस राज्य पद्धतिपर मैं बिलकुल कायम हूं। यह सिर्फ कहने की बात नही है, लेकिन जो चीज मैंने १९०९[2] सालमें लिखी है उसी चीजका सत्य मैंने अनुभवसे आज तक पाया है। आखरमें मैं एक ही उसे मानने वाला रह जाऊं, उसका मुझको जरा-सा भी दु:ख न होगा। क्योंकि मैं जैसे सत्य पाता हूं उसका मैं साक्षी बन सकता हूं। 'हिन्द स्वराज' मेरे सामने नहीं है। अच्छा है कि मै उसी चित्रको आज अपनी भाषामें खेंचु।

१. देखिए खण्ड १०, पृ० ६-६९।
२. किन्तु साधन-सूत्रमें '१९०८' है।

पीछे वह चित्र सन् १९०९ जैसा ही है या नहीं उसकी मुझे दरकार न रहेगी, न तुम्हें रहनी चाहिये। आखरमें तो मैंने पहले क्या कहा था, उसे सिद्ध करना नहीं है, आज मैं क्या कहता हूं वही जानना आवश्यक है। मैं यह मानता हूं कि अगर हिंदुस्तानको सच्ची आजादी पानी है और हिन्दुस्तानके मारफत दुनियाको भी, तब आज नहीं तो कल देहातोंमें ही रहना होगा, झोंपड़ीयोंमें, महलोंमें नहीं। कई अवज[1] आदमी शहरोंमें और महलोंमें सुखसे और शांतिसे कभी रह नहीं सकते, न एक-दूसरोंका खून करके—मायने हिंसासे, न झूठसे—यानी असत्यसे। सिवाय इस जोडीके (यानी सत्य और अहिंसा) मनुष्य जातीका नाश ही है उसमें मुझे जरा-सा भी शक नहीं है। उस सत्य और अहिंसाका दर्शन केवल देहातोंकी सादगीमें ही कर सकते हैं। वह सादगी चर्खामें और चर्खामें जो चीज भरी है उसीपर निर्भर है। मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उल्टी ओर ही जा रही दिखती है। यों तो पतंगा जब अपने नाशकी ओर जाता है तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते-खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिन्दुस्तान इस पतंगेके चक्करमें से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखर दम तक उसमें से उसे और उसके मारफत जगतको बचाने की कोशिश करूं। मेरे कहने का निचोड यह है कि मनुष्य जीवनके लिये जितनी जरूरतकी चीज है, उसपर निजी काबू रहना ही चाहिये—अगर न रहे तो व्यक्ति बच ही नहीं सकता है। आखर तो जगत व्यक्तियोंका ही बना है। बिन्दु नहीं है तो समुद्र नहीं है। यह तो मैंने मोटी बात ही कही—कोई नई बात नहीं की।

लेकिन 'हिन्द स्वराज' में भी मैंने यह बात नहीं की है। आधुनिक शास्त्रकी कदर करते हुए पुरानी बातको मैं आधुनिक शास्त्रकी निगाहसे देखता हूं तो पुरानी बात इस नये लेबासमें मुझे बहुत मीठी लगती है। अगर ऐसा समझोगे कि मैं आजकी देहातोंकी बात करता हूं तो मेरी बात नहीं समझोगे। मेरी देहात आज मेरी कल्पनामें ही है। आखरमें तो हरएक मनुष्य अपनी कल्पनाकी दुनियामें ही रहता है। इस काल्पनिक देहातमें देहाती जड़ नहीं होगा—शुद्ध चैतन्य होगा। वह गंदगीमें, अंधेरे कमरेमें जानवरकी जिन्दगी बसर नहीं करेगा, मरद और औरत दोनों आजादीसे रहेंगे और सारे जगतके साथ मुकाबला करने को तैयार रहेंगे। वहां न हैजा होगा, न मरकी [प्लेग] होगी, न चेचक होंगे। कोई आलस्यमें रह नहीं सकता है, न कोई एश-आराममें रहेगा। सबको शारीरिक महेनत करनी होगी। इतनी चीज होते हुए मैं ऐसी बहुत-सी चीज का ख्याल करा सकता हूं जो बड़े पैमानेपर बनेगी। शायद रेल्वे भी होगी, डाकघर, तारघर भी होंगे। क्या होगा, क्या नहीं उसका मुझे पता नहीं। न मुझको उसकी फिकर है। असली बातको मैं कायम कर सकूं तो बाकी आने की और रहने की खूबी रहेगी। और असली बातको छोड़ दूं तो सब छोड़ देता हूं।

उस रोज जब हम आखरके दिन वर्किंग कमेटीमें बैठे थे तो ऐसा कुछ फैसला हुआ था कि इसी चीजको साफ करने के लिये वर्किंग कमेटी २-३ दिनके लिए बैठेगी। बैठेगी तो मुझे अच्छा लगेगा, लेकिन न बैठे तब भी मैं चाहता हूं कि हम दोनों एक-

१. अरब

दूसरेको अच्छी तरह समझ ले। उसके दो सबब हैं। हमारा सबध सिर्फ राजकारणका ही नहीं है। उससे कई दरज्जे गहरा है। उस गहराईका मेरे पास कोई नाप नहीं है। वह सबध टूट भी नही सकता। इसलिए मैं चाहूंगा कि हम एक-दूसरेको राजकारणमें भी भली भाति समझें। दूसरा कारण यह है कि हम दोनोंमें से एक भी अपनेको निकम्मा नही समझते हैं। हम दोनों हिन्दुस्तानकी आजादीके लिए ही जिन्दा रहते हैं, और उसी आजादीके लिए हमको मरना भी अच्छा लगेगा। हमें किसीकी तारीफ की दरकार नही है। तारीफ हो या गालियां—एक ही चीज है। खिदमतमें उसे कोई जगा [जगह] ही नही है। अगरचे मैं १२५ वर्ष तक सेवा करते-करते जिन्दा रहने की इच्छा करता हूं तब भी मैं आखरमें बूढा हूं और तुम मुकाबलेमें जवान हो। इसी कारण मैंने कहा है कि मेरे वारस तुम हो।[1] कमसे कम उस वारसको मैं समझ लू और मैं क्या हूं वह भी वारस समझ ले तो अच्छा ही है और मुझे चैन रहेगा।

और एक बात। मैंने तुमको कस्तुरबा ट्रस्टके बारेमें और हिन्दुस्तानीके बारेमें लिखा था।[2] तुमने सोचकर लिखने का कहा था। मैं पाता हूं कि हिन्दुस्तानी सभामें तो तुम्हारा नाम है ही। नाणावटीने मुझको याद दिलाया कि तुम्हारे पास और मौलाना साहबके पास वह पहुँच गया था और तुमने अपने दस्तखत दे दिये हैं। वह तो सन् १९४२ में था। वह जमाना गुजर गया। आज हिन्दुस्तानी कहा है उसे जानते हो। उसी दस्तखतपर कायम हो तो मैं उस बारेमें तुमसे काम लेना चाहता हूं। दौड़-धूपकी जरूरत नही रहेगी, लेकिन थोड़ा काम करने की जरूरत रहेगी।

कस्तुरबा स्मारकका काम पेचिला है। उपर जो मैंने लिखा है वह अगर तुमको चूभेगा या चूभता है तो कस्तूरबा स्मारकमें भी आकर तुमको चैन नही रह सकेगा, यह मैं समझता हूं।

आखरकी बात शरतबाबुके साथ जो-कुछ चिनगारियां फूटी है वह है।[3] इससे मुझे दर्द हुआ है। उसकी जड़ मैं नही समझ सका। तुमने जो कहा है इतना ही है बाकी कुछ नही रहा है तो मुझे कुछ पूछना नही है। लेकिन कुछ समझाने जैसा है तो मुझको समझने की दरकार है।

इस सबके बारेमें अगर हमें मिलना ही चाहिए तो हमारे मिलने का वक्त निकालना चाहिए।

तुम बहुत काम कर रहे हो, स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। इन्दु[4] ठीक होगी।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे : गांधी-नेहरू पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए खण्ड ७५, पृ० २४८।
२. देखिए खण्ड ८०, पृ० ३८७-८८।
३. देखिए पृ० ३४१, पा० टि० १
४. जवाहरलाल नेहरूकी पुत्री, इन्दिरा गांधी

५७०. पत्र : अमतुस्सलामको

पूना
५[1] अक्तूबर, १९४५

चि० अ० स०,

तेरा खत मिला। निराशा ही है ऐसे लिखने का तेरा तर्ज बन गया है। तेरी निराशाके पीछे आशा ही भरी है। तेरा तर्ज बदलेगी तो बहुत ज्यादा काम करेगी। मेरे पास रहने से क्या फायदा? मेरे पास रहने का सबसे ज्यादा फायदा तूने उठाया है। ऐसा मैं पाता हूं। क्योंकि तेरा काम तूं ही कर सकती है। तेरे बदलेमें कोई काम नहीं कर सकता है। इसीलिये मेरे आने तक तू भले वहीं पड़ी रह। आने के बाद देखुंगा। तू मेरे साथ घूमेगी तो अच्छा होगा कि तेरी जगहपर रहने से? सब चीज मेरे वहां आने पर छोड़। बारकमता तो आना है ही। दरम्यान तेरी तबीयत अच्छी कर ले।

इनमें मैंने नव जवाब दे दीया।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३७) से

५७१. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

पूना
५ अक्तूबर, १९४५

चि० आनंद,

तुमारा खत मिला। आशीर्वाद तो तुमारे साथ हैं ही। अच्छे हो जाओ तो बहुत सेवा होगी। ईश्वरका ही चिंतन करो। उसमें विद्या आ गई, उसकी भी सेवा आ गई।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१. यह ५ के बजाय २ भी पढ़ा जा सकता है।

५७२. पत्र : इफ्तिखारुद्दीन और इस्मतको

पूना
५ अक्तूबर, १९४५

भाई इफ्तेखार[1] और इस्मत,

तुम्हारा तार मिला। दोनो अच्छे रहो और कौमकी खिदमत करो। लीगमें भले गये। वहा भी काम तो दोस्तका ही करो। किसीकी दुश्मनी कभी मत करो।

२१, एक मेन रोड
लाहोर

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७३. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

पूना
५ अक्तूबर, १९४५

चि० सतीश बाबू,

प्रफुल्लबाबूके बारेमें दु:ख है। कैसे भी हो मेरा रहने का तो सोदपुरमें ही होगा। सुधीर बोसका हिस्सा प्रवासके बारेमें बड़ा होगा। अगर सब तत्र एकत्रित नही होगा तो मुझे अच्छा नही लगेगा। आज इतना ही।

सतीश बाबू
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (२४ परगना)

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व अध्यक्ष

५७४. भाषण : गोवर्धन संस्थामें[1]

पूना

५ अक्तूबर, १९४५

महात्मा गांधी ने कहा कि गाय जीवित और मृत दोनों दशाओंमें एक बड़ा धन है। भारतकी आबादीका अधिकांश हिस्सा ग्रामीण है और उसे अपनी जीविकाके लिए इस पशुपर बहुत निर्भर रहना पड़ता है। इस धनके परिरक्षण और संवर्धनमें चौंडे महाराज और गोवर्धन सोसायटीके प्रयत्नोंकी सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामीण भारतकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थामें गायको उसका उचित स्थान दिलाने का जो वांछित लक्ष्य है उसे पूरा करने के लिए सारे देशमें और ज्यादा जोरदार प्रयत्न करने पड़ेंगे।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ६-१०-१९४५

५७५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पूना

६ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सी० आर०,

आपके बारेमें बात करने के लिए हमारे मित्र श्रीनिवासन थोड़ी देरके लिए मुझसे मिले थे। यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि आप बीमार और उदास हैं। आप बीमार पड़ें ही क्यों? जैसी विनोद वृत्ति आपमें है उसके रहते दुनिया उलट जाये तब भी आप उदास हों, इस बातपर तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था। अगर वे आपकी सेवा प्राप्त करना चाहेंगे तो उन्हें आपकी जरूरत तो होगी ही। मैंने तो जो पहले कहा है[2] उसीको दुहराऊँगा। यहाँ आकर जितने दिन रह सकें उतने दिन आप मेरे साथ रहिए।

स्नेह।

बापू

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी कस्तूरबा गोशालाका शिलान्यास कर रहे थे।
२. देखिए पृ० ३२२-२३।

५७६. पत्र : प्रेमा कंटकको

६ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र पढ़कर फाड़ दिया। कतरन[1] सुशीला[2]के साथ लौटा रहा हूँ।

तेरा लेख सुशीलासे पढ़वाकर सुन लिया, ताकि कोई भूल न करूँ। इसे अंग्रेजीमें छपवाने में कोई सार नही। मराठीमें है, वही काफी है। इसमें भाषा-दोष नही है। परन्तु सब-कुछ हर समय कहने लायक नही होता। तू कभी मिलेगी, तब इस विषय में बात करेंगे। खास इसी बातके लिए आना हो तो भी समय निश्चित कराकर आ जाना। तेरे शिविरके बारेमें बापाने ट्रस्टियोंको[3] निवेदन भेजा है। १६ तारीखको तो यहाँ समितिकी बैठक रखी है, तब देख लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४३९) से। सी० डब्ल्यू० ६८७८ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

५७७. पत्र : पूनमचन्द राँकाको

६ अक्तूबर, १९४५

भाई पूनमचन्द,

आपका पत्र मिला है। मेरे सेवाग्राममें स्थिर होने पर जरूर आना। कोई साथ दे या न दे तुम्हारे अपना काम करना ही है। धनवतीजी[4] मुझे मिल गई थी।

शंकर कुटिर
रांका कोलोनी
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नया काल में छपे लेखकी; देखिए पृ० ३३३ की पा० टि० २।
२. सुशीला पै
३. कस्तूरबा स्मारक कोषके
४. पूनमचन्द राँकाकी पत्नी

५७८. पत्र : माधव श्रीहरि अणेको

६ अक्तूबर, १९४५

भाई बापूजी अणे,

आपकी प्रसादी मुझे मिल गई है। तार भी मिला था। श्लोक रससे पढ़ गया हूं। हिन्दी अनुवाद अच्छा लगा।

अच्छे होंगे।

बापु

माननीय श्री अणे
भारत सरकारके एजेंट
११, स्टैनमोर, कोलम्बो (सीलोन)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७९. पत्र : रेहाना तैयबजीको

पूना
६ अक्तूबर, १९४५

चि० रैहाना,

तेरा खत मिला। तू दीवानी है। इतना लिखने की जरूरत नहीं थी। रत्नमयी बहनकी बात मेरे पास आई थी। मैंने ध्यानसे सुनी भी नहीं, ख्याल भी तू ही देती है। वह देहातमें जा रही थी, लेकिन जा नहीं सकी है। उसमें सचमुच तो शिकायत क्या हो भी सके? मेरा मोह था, कम हुआ।

रेहाना तैयबजी
४०ए, रिज रोड
मलाबार हिल, बम्बई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८०. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पूना
७ अक्तूबर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे पत्रमे कही भी आत्म-दमनका सकेत तो हो ही नही सकता। आत्म-दमन किये बिना जिस अनासक्तिका अभ्यास करना है, उसीको मै ठीक मानता हूँ।

तुम्हारे अन्य सवालोके उत्तर अपने आगामी पत्र तक मुल्तवी रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६३०) से

५८१. पत्र : सुरेन्द्रको

७ अक्तूबर, १९४५

चि० सुरेन्द्र,

मैंने तो तुम्हें पहले ही पत्र लिखा है।

मैं २१ को या उसके आसपास सेवाग्राममें रहूँगा। उस समय तुम अवश्य आना। वहाँसे मै सम्भवत बगाल जाऊँगा।

साधु सुरेन्द्रजी
बोरीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८२. पत्र : जतीनदास अमीनको

७ अक्तूबर, १९४५

चि० अमीन,

तुम्हें मैं लिख[1] तो चुका हूं। पापका नाश करना सभीका कर्त्तव्य है। किन्तु वह व्यक्तिके अपने पापके बारेमें है। किन्तु अन्य लोगोंके पापके बारेमें असहकार[2] अर्थात् अहिंसा ही कर्त्तव्य है। मेरी माता देवदर्शनके लिए जाती थीं, किन्तु मैं नहीं जाता था। उनके पास जो मूर्ति थी उसे मैं न तो तोड़ता था और न लेता था। हम दूसरोंके काजी कदापि न बनें। तुम्हारी सेवा तो मुझे मुग्ध करती ही है। किन्तु तुम उतावले और क्रोधी हो। यदि इन दोनों दोषोंको दूर कर सको तो तुम्हारी सेवाकी शक्ति दूनी हो जायेगी।

अमीनभाई
ऐन्टी कोढ़रा कैम्प
हिन्दी धर्मशाला
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८३. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
७ अक्तूबर, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुम्हारा खत मिला।

विनोबाजी से पूछते रहते हो मुझे अच्छा लगता है।

'गीताई' [के बारेमें] जैसे विनोबा कहें ऐसे ही करो। उसमें शक नहीं है कि मराठी प्रान्तमें रहते हुए हम मराठी न समजें वह अच्छा नहीं है। हमारेमें उत्साह होना चाहीये।

कुष्ठ रोगीकी पत्नीको रखा सो मुझे तो अच्छा लगता ही है।

मुन्नालालका तो मैं इतना ही कहूंगा कि दोनोंको एक दूसरोंको जीतना है। उसमें अहिंसाकी कम से कम परीक्षा है। लेकिन यह तो शुभ प्रयत्नकी ही बात हुई।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३४) से

१. देखिए पृ० २९८-९९।
२. साधन-सूत्रमें "असंहार" शब्द है।

५८४. पत्र : अबुल कलाम आजादको

पूना
७ अक्तूबर, १९४५

आपकी बीमारीका अखबारोंमें पढ़कर अच्छा नही लगता। बार बार बुखार आता रहे सो ठीक नही है। अब तो पंजाबकी हवा अच्छी होनी चाहिए। शायद सरहद पर लाहोरसे भी बेहतर होगा। थोड़ा आराम लेना जरूरी मानता हू।

पंजाबमें मालूम देता है कि आपने ठीक काम किया है।

मौलाना साहब अबुल कलाम आजाद
फेलेटिस होटल
लाहोर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

पूना
८ अक्तूबर, १९४५

मुझे विश्वके हर हिस्सेके व्यक्तियों और संस्थाओंसे जन्मदिनकी शुभकामनाएँ मिली है। वे सब मुझे व्यक्तिगत प्राप्ति-सूचना न भेजने के लिए क्षमा करें। आशा है उसके बदलेमें वे इस आभार-सन्देशको स्वीकार करेंगे।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ९-१०-१९४५

५८६. पत्र : मदालसाको

८ अक्तूबर, १९४५

चि० मदालसा,

तुम्हें लिखे बिना कैसे चलेगा? निराशाकी बात ही मनमें से निकाल डालना। निराशा केवल अपनी कल्पनामें बसती है।

मुझे बुखार दो ही दिन रहा। अब ठीक हूँ। रसगुल्ला[1] तो मैं आऊँगा तभी चख सकूँगा। अब तो खूब बड़ा दीखता होगा।

तुम तीनोंको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

इस महीनेके अन्तिम सप्ताहमें वहाँ आने की आशा है।

[गुजरातीसे]
पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२६

५८७. पत्र : ग० वा० मावलंकरको

८ अक्तूबर, १९४५

भाई मावलंकर,

तुम्हारा मसौदा[2] मुझे पसन्द है। पृष्ठ ५ (ई)में जहाँ "वर्नाक्युलर चौथा दर्जा"[3] है, वहाँ "अथवा इतना समकक्ष दर्जा"[4] और जोड़ देना चाहिए, ऐसा मेरा खयाल है। लेकिन जैसा तुम्हें ठीक लगे, करना। समितिकी बैठक यहाँ नहीं होगी, बल्कि सेवाग्राम में २५, २६ और २७ को होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५४) से

१. मदालसाके पुत्र भरत, जिनका यह प्यारका नाम था।
२, ३ और ४. साधन-सूत्रमें इनके गुजरातीके बजाय अंग्रेजी पर्यायोंका प्रयोग हुआ है।

५८८. पत्र : गजानन नायकको

८ अक्तूबर, १९४५

चि० गजानन (नायक),

तुम्हारा पत्र मिला। तुम विचार करो कि मेरी वफादारी क्या माँगती है। या तो तुम्हारी शिकायतपर ध्यान न दिया जाये या फिर उसे कुमारप्पाजी के सामने रख देना चाहिए और उनकी बात सुनकर उसका प्रत्युत्तर तुमसे माँगना चाहिए और उसके बाद निर्णय देना चाहिए। तुम्हारी अपनी वफादारी भी इसीकी माँग करती है।

मगनवाड़ी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८९. पत्र : चम्पा मेहताको

८ अक्तूबर, १९४५

चि० चम्पा,

मैंने शशिको उत्तर तो दिया था।[1] यदि केशवलाल किराया नही देता तो तुम उसके विरुद्ध निश्चय ही आवश्यक कदम उठा सकती हो। क्या मुझे यह भी समझाना होगा कि तू कोई भोली नही है? चि० सरलाको जल्दी ही अच्छा हो जाना चाहिए।

चम्पाबहन मेहता
चन्द्रकुज
जागनाथ प्लॉट
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३११।

५९०. पत्र : वीरभानुको

८ अक्तूबर, १९४५

भाई वीरभानु,

तुम्हारा पत्र मिला। जिन लोगोंने सूतकी आंटियाँ बनाने का व्रत लिया है उन्हें धन्यवाद। यह अच्छा ही है कि आंटियां डाकसे नहीं भेजी गई। कातने वालोंको पाई-पाईकी किफायत करना सीखना चाहिए, क्योंकि यह पाई भी उनकी नहीं, गरीबोंकी है। यही उचित होगा कि आंटियां भण्डारमें दी जायें। और यही अच्छा होगा कि बुनाईके बाद खादी भी बेची जाये।

डिप्टी सदन
अठवा लाइन्स
सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९१. पत्र : पुरुषोत्तमदास टंडनको

पूना
८ अक्तूबर, १९४५

भाई टंडनजी,

आपका १-१०-४५ का पत्र मिला है। एक साथ दो घोड़ोंपर सवारी कैसे करूं? एक साथ कहूं राष्ट्रभाषा हिन्दी, और राष्ट्रभाषा=हिन्दी+उर्दू=हिन्दुस्तानी। ऐसा मुझको कौन समझेगा? हिन्दीकी सेवा करूंगा लेकिन बाहर रहकर[1]। स्थायी समिति मुझे माफ करे।

आपका,
मो० क० गांधी

पु० दा० टंडनजी
हि० सा० सम्मेलन
अल्लाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे

५९२. पत्र : श्यामलालको

८ अक्तूबर, १९४५

भाई श्यामलाल,

मुझे दादा मावलकरका रिपोर्ट मजूर है। पाच पन्नेपर 'ई' में "वर्नाकुलर स्टै० फोर"[1] है वहा "ऑर इट्स इक्विवैलेट"[2] बढ़ाना आवश्यक समझता हू। दादाको भी लिखा है।[3]

कस्तुरबा निधि
वजाजवाडी, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

पूना
९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

क्या मैं वाइसराय महोदयको यह याद दिला सकता हूँ कि श्री हरिदास मित्रके मामलेमें फैसला देने में काफी देर हो चुकी है।[4] यहाँ यह बता देना अनुचित न होगा कि मृत्युदण्डके वदले कोई कम सख्त सजा दिये जाने की आशासे मैंने कैदीके हकमें होने वाली सभी सार्वजनिक अपीलों और प्रदर्शनोपर रोक लगा दी है। उनकी युवा पत्नी अभी पिछले दिनो मुझसे मिली थी। वे चाहती थी कि यहाँ और ग्रेटब्रिटेनमें भी इस मामलेपर सार्वजनिक रूपसे कोई कदम उठाया जाये। लेकिन वे मेरी बात मानकर इतजार करती रही हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर एवन जेन्किन्स
वाइसराय महोदयके निजी सचिव
वाइसराय हाउस
नई दिल्ली

[अग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४८

१ और २. साधन-सूत्रमें ये रोमन लिपिमें हैं, अर्थात् "देशी भाषा चौथा दर्जा" और "या उसका समकक्ष"।

३. देखिए पृ० ३५५।

४. देखिए पृ० २९८।

५९४. पत्र : मीराबहनको

९ अक्तूबर, १९४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। जब उधर आऊँगा, तब तुमसे मिलना नहीं भूलूँगा। लेकिन अभी जैसा तय हुआ है, उसके अनुसार जनवरीसे पहले मेरा उधर आना नहीं होगा। लेकिन जब तक मैं सेवाग्रामसे निकल नहीं पड़ता, तब तक कोई बात निश्चित नहीं है। आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। बलवन्तसिंहको बताओ कि मैं समयकी कमीके कारण उसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५११) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९९०६ से भी

५९५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

९ अक्तूबर, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। दोनों देसाई[1] वहाँ पहुँच गये, मैं समझता हूँ यह ठीक ही हुआ।

तूने जो नहीं लिखा, वह सब वालजीभाईने मुझे बताया है। जिन-जिन लोगोंसे मिले, उनका वर्णन भी किया है।

मैंने तुझे पहले नहीं बताया लेकिन अब बताता हूँ कि ज्यों ही मैंने वालजीभाई से वहाँ जाने की बात की, वे तुरन्त राजी हो गये। थोड़ी मोहलत भी नहीं माँगी।

सरदार छुट्टी दे दें तो मैं २१ को सेवाग्राम पहुँचने की सोचता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७८) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. वालजीभाई और मगनभाई

५९६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

९ अक्तूबर, १९४५

चि० काका,

तुम्हारा अत्यन्त सावधानीके साथ लिखा गया और खबरोंसे भरा पत्र मिला। सोचा है, तुम्हारा पत्र दूसरोंको भी पढ़ने को दूँगा।

अभी तो इतना ही लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री काकासाहेब कालेलकर
स्वराज्य आश्रम
बारडोली
टी० वी० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६६) से

५९७. पत्र : चम्पा मेहताको

९ अक्तूबर, १९४५

चि० चम्पा,

तेरा हृदय-द्रावक पत्र[1] मिला। मैं तुझे क्या सलाह दूँ? और किस प्रकार तेरा मार्ग-दर्शन करूँ? मैं तो तेरे कलके पत्रके लिखे वाक्यपर दृढ़ हूँ और उससे साहस बटोरता हूँ कि तू अपनी मुश्किलोंका मुकाबला सफलतापूर्वक कर लेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती चम्पाबहन मेहता
चन्द्रकुंज
जागनाथ प्लॉट
राजकोट

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७५८) से। सी० डब्ल्यू० १०४४ से भी; सौजन्य : चम्पा मेहता

१. जिसमें चम्पा मेहताने अपने पति रतिलाल मेहताके मानसिक सन्तुलन खो बैठने की सूचना दी थी; देखिए "पत्र : मगनलाल मेहताको", १८-१०-१९४५।

५९८. पत्र : पुष्पा देसाईको

९ अक्तूबर, १९४५

चि० पुष्पा,

तेरा पत्र मिला। विनोबाके सम्पर्कमें बनी रह और उनसे जो सीख सके सो सीख।

रजनीको लिखा तेरा पत्र मैं उसे नहीं भेज रहा हूँ। यह पत्र तेरे पिताजीकी मार्फत ही भेजा जा सकता है, लेकिन पिताजीको यह पत्र बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए मेरी सलाह है कि तुझे रजनीको अभी कोई पत्र नहीं लिखना चाहिए। तू सहमत हो तो मैं रजनीको इतना लिख दूं कि अपने पिताकी खातिर तू अभी उसे या अपने किसी पुराने मित्रको पत्र नहीं लिखना चाहती। तेरा पिताजीकी मूल इच्छा का अनुसरण न करना उचित है, यह सिद्ध करने के लिए तथा उन्हें शान्ति प्रदान करने के लिए भी तुझे ऐसे संयमका पालन करना चाहिए।

तूने अपनी सखीको पत्र लिखा, यह भूल की। खैर, एक भूल क्षम्य मानी जा सकती है। लेकिन अब भूल मत करना। पत्र लिखे, तो या तो मुझे या पिताजीको। इसीमें तेरा कल्याण है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६६) से

५९९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

पूना
९ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिल गया है।

फिलहाल मुझे ऐसा कुछ नहीं सूझ रहा है, जिससे मैं त्र्यम्बकलालके पत्रके सम्बन्धमें कुछ कर सकूं। ऐसी स्थिति नहीं है कि मैं बीचमें उतर सकूं। और यदि उतर भी जाऊँ तो मुझे नहीं लगता कि मैं कुछ सेवा कर सकूंगा।

कैलाशके बारेमें मैं समझ गया। किन्तु यदि इस प्रकार कैलाशका खर्च आश्रम को ही उठाना पड़ा तो शायद हम अपनी सीमा-रेखाको लाँघ जायेंगे। क्योंकि मेरी मान्यता है कि नागपुरमें भी हमें थोड़ा-बहुत खर्च तो देना ही पड़ेगा। और मुझे इस बारेमें पूरा सन्देह है कि वह वहाँ कुछ सीख सकेगी। लेकिन मैं निश्चिन्त हूँ, क्योंकि तुम बीचमें हो।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६००. पत्र : गोकुलभाई भट्टको

९ अक्तूबर, १९४५

भाई गोकुलभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। पसिलसे लिखा तुम्हारा पत्र तो मैंने संभालकर रखा है। अपनी इस जिज्ञासाको शान्त करने के लिए कि उतावलीमें पढ़ने के कारण मैंने उससे वैसा अर्थ निकाला, अथवा वही अर्थ उसमें निहित है,[1] उक्त पत्रको मैं फुरसतसे पढ़ूंगा।

तुम्हारे जैसे साथीसे भी मैं खड़े-खड़े ही मिल सका। यह बात अच्छी लगने वाली नहीं थी, किन्तु ऐसे [कड़वे] घूंट तो गलेके नीचे उतारने ही पड़ते हैं।

तुमने जो मसौदा भेजा है वह मुझे बिलकुल ठीक लगता है। इसमें अन्य लोगोंकी सम्मति ले लेना और काम शुरू कर देना। जिन दो व्यक्तियोंके नामोंका तुमने उल्लेख किया है उन्हें मैं उपयोगी मानता हूँ। और इस कारण तुम्हें अपने काममें समुचित सहयोग मिलना चाहिए।

गोकुलभाई भट्ट
भगिनी सेवा मन्दिर ट्रस्ट
विले पार्ले

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

६०१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
९ अक्तूबर, १९४५

चि० कृ० चं०,

तुमारा खत मिला। गुलाटी[2] का [पत्र] वापिस करता हू। अच्छा है। वह ठीक कहते हैं। लेकिन तज्ञ [दक्ष] न मिले यहा तक बैठ नही सकते हैं। काम करते बढता है, अगर उसे जड़वत न करे तो। गुलाटीका हाल जाजूजी को बताओ।

कैलासका [को] पूरा नही समजा हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३२) से

१. देखिए पृ० ३३८।
२. वास्तुकार रामदास गुलाटी

६०२. एक पत्र

[१० अक्तूबर, १९४५ या उसके पूर्व][1]

प्रिय . . .,

फील्ड-मार्शल स्मट्स[2] का वह भाषण मैंने पढ़ा था जिसकी नकल आपने भेजी है।

फीनिक्सकी भावी सम्भावनाओंके बारेमें आपने बड़े उत्साहसे लिखा है। लेकिन क्या मणिलाल उतना कर सकता है जितनेकी आप उससे उम्मीद रखते हैं?

हाँ, हम सबको १२५ वर्ष जीने की कामना करनी है, लेकिन शर्त यह है कि हम सबके जीवन, बिना किसी परिणाम या पुरस्कारकी अपेक्षाके, सेवाको पूर्णतः समर्पित हों।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१० अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

इस पत्रके साथ एक मामलेका विवरण भेज रहा हूँ, जिसे पत्र-लेखक[3] ने किंचित विस्तारसे प्रस्तुत किया है। क्या यह सच हो सकता है? यदि है तो क्या वाइसराय महोदय मामलेको दुरुस्त करने के लिए कोई कदम उठाने का इरादा रखते हैं? मुझे बताया गया है कि ऐसा यह अकेला मामला नहीं है बल्कि ऐसे मामले तो होते रहते हैं।[4]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर एवन जेन्किन्स
वाइसराय महोदयके निजी सचिव
वाइसराय हाउस, नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ५८-५९

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रको ९ और १० अक्तूबर, १९४५ के पत्रोंके बीच रखा गया है।

२. दक्षिण आफ्रिकाके प्रधान मन्त्री

३. फॉरवर्ड ब्लॉकके सदस्य, बादमें संसद सदस्य और पूर्वोत्तर अंचलमें जनजातियोंके बीच सेवारत कार्यकर्ता शीलभद्र याजीने, जो भारत छोड़ो आन्दोलनके दौरान गिरफ्तार हो गये थे, जेलमें अपने साथ हुए दुर्व्यवहारके बारेमें लिखा था।

४. एवन जेन्किन्सने १३ अक्तूबरको इसके उत्तरमें सूचित किया था कि वाइसरायके दौरेपर होने के कारण पत्र और संलग्न पत्र उन्हें वहीं भेजा जा रहा है। देखिए खण्ड ८२, "पत्र: ई० एम० जेन्किन्सको", ७-११-१९४५ भी।

६०४. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१० अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

मैं अखिल भारतीय चरखा संघका अध्यक्ष हूँ। सघ २५ साल पुरानी एक सर्वथा पारमार्थिक सस्था है, जिसका सचालन भारतकी करोड़ों गरीबसे-गरीब बेरोजगार या अंशत. बेरोजगार स्त्रियोंके हितमे किया जाता है। हाथ-कताईको और भी लोकप्रिय बनाने के लिए मेरे कहने पर हालमें यह नियम शुरू किया गया कि खादीके खरीदारोंसे पैसेके बदले अमुक मात्रामे सूत माँगा जाये। इस संघकी, जिसका नाम कुछ दिनों तक खादी बोर्ड था, स्थापनाके समयसे लेकर अब तक भारत-भरकी कत्तिनोंके बीच इसके जरिये चार करोड रुपयेसे अधिककी राशि बाँटी जा चुकी है। इन कत्तिनोंमें सभी कौमोंकी गरीब भारतीय स्त्रियाँ शामिल हैं। मुझे मालूम हुआ है कि अब प्रान्तीय प्रशासन लाइसेंस देने के नियम जारी कर रहे हैं, जिनके अधीन खादी-भण्डारोंको लाइसेंस लेने पड़ेंगे, मानो वे मिलके बने कपडेके विक्रेता हों। कीमतमे अशत हाथ-कता सूत माँगे जाने पर भी आपत्ति उठाई गई है। मुझे यकीन है कि सरकारका इरादा खादीको और इस तरह गरीबोंको दण्डित करने का नही है। यह मामला चूंकि पूरे भारत से सम्बन्धित है, इसलिए मैं वाइसराय महोदयसे ही इस आशासे निवेदन करने की धृष्टता कर रहा हूँ कि इस आसन्न भूलको सुधार दिया जायेगा। यहाँ यह बता देना भी अनुचित न होगा कि संघके अवैतनिक मन्त्रीने इस मामलेके बारेमे सम्बन्धित प्रान्तीय प्रशासनोंसे चर्चा शुरू कर दी है।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६७-६८

१. ई० एम० जेन्किन्सने इसके उत्तरमें १९ अक्तूबरको सूचित किया कि उद्योग तथा नागरिक आपूर्ति विभागने खादीकी कीमतपर कोई नियन्त्रण नहीं लगाया था और न लगाने का सुझाव दिया था और वह प्रान्तीय सरकारोंसे इस मामलेमें उचित कार्रवाई करने को कहने वाला है।

६०५. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

पूना
१० अक्तूबर, १९४५

प्रिय जयरामदासभाई,

. . . मैंने बापूको आपका पूरा पत्र पढ़कर सुना दिया। उनका कहना है कि बड़ी मात्रामें उनके पास सूत भेजने पर रोक उन नये नियमोंके कारण लगाई गई जिनके अधीन एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तको सूत या कपड़ा डाकसे भेजना मना है, और साथ ही डाक-खर्च बचाने के लिए भी। वे कहते हैं कि अगर आप उन नियमोंसे छुटकारा पा सकते हैं और खर्चसे बच सकते हैं तथा संयोगसे इधर आते किसी व्यक्तिको मार्फत सूत भेज सकते हों तो भेज दीजिए, यानी यदि हरएकका आग्रह सूत उनके पास भेजे जाने पर ही हो तो। लेकिन वे ज्यादा पसन्द यह करेंगे कि आप सूतका कपड़ा बुनवा लें, और आपके सुझाव, जो बिलकुल सही हैं, स्वीकार कर लिये जाने चाहिए। आप उनके व्यक्तिगत उपयोगके लिए धोती वगैरह, जब कोई आसानी से ला सके तब, भेज सकते हैं। जहाँ हस्ताक्षरोंकी बात है, वे प्रति हस्ताक्षर ५ रुपयेकी दरसे कमपर नहीं मिल सकते। हस्ताक्षरोंसे प्राप्त होने वाला पैसा हरिजन-फण्डमें ही दिया जा सकता है। जयन्तीके अवसरपर नीलाम की गई खादी या दानमें दिया गया सूत या कपड़ा, यह सब चरखा संघको जाता है। आशा है, बापूकी इच्छा मैं आपको स्पष्ट बता पाई हूँ। . . .

खुद मैं जाने[1] की उत्सुक नहीं हूँ, लेकिन बापूको लगता है कि मुझे वहाँ जाना और अवसरसे लाभ उठाकर प्रसंगवश कुछ काम करना चाहिए। यह कहते हुए मुझे खुशी होती है कि बापू अब फिर बिलकुल ठीक हैं। हाँ, थक वे जल्दी जाते हैं। लेकिन यहाँ उनकी अच्छी मालिश और इलाजकी सुविधा है, और साथ ही अन्य अधिकांश जगहोंकी अपेक्षा मुलाकातियोंसे बचने का भी यहाँ ज्यादा गुंजाइश है। फिर, यहाँकी आबहवा अगस्त, सितम्बर और अक्तूबरमें सेवाग्रामसे बेहतर रहती है। अभी जो योजना है, उसके मुताबिक वे १९ को सेवाग्राम रवाना होंगे और वहाँ ९ दिन रहकर बंगाल चल देंगे तथा २ नवम्बरको कलकत्ता पहुँचेंगे। लेकिन यह सब इस बातपर निर्भर है कि इस हफ्ते सरदारके स्वास्थ्यमें कैसी प्रगति होती है। अब तक तो उनमें कोई वास्तविक सुधार नहीं हुआ है, लेकिन बापूको आशा है कि अगर वे यहाँ बने रहेंगे तो सुधार होगा। . . .

आपकी,
अमृतकौर

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ११०६०) से। सौजन्य : अर्जुन जयरामदास

1. अमृतकौर जाकिर हुसैनके साथ भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके एक सदस्यके रूपमें संयुक्त राष्ट्र, सांस्कृतिक और शैक्षणिक सम्मेलनकी प्रारम्भिक बैठकमें भाग लेने के लिए जा रही थीं।

६०६. पत्र : ग० वा० मावलंकरको

१० अक्तूबर, १९४५

भाई मावलंकर,

तुम्हारा पत्र मिला। इतना लिखने की तकलीफ करने की तो कोई जरूरत नही थो। तुम्हारे न आने का उलटा अर्थ तो मैं कभी लगा ही नही सकता। मैं तुम्हें खूब जानता हूँ। लेकिन अब तो तुमने देखा होगा कि समितिकी बैठक सेवाग्राममें २५, २६ और २७ को होने वाली है। उस समय आ सको तो आना, लेकिन, ट्रेनका सीधा मार्ग अगर अभी न शुरू हुआ हो तो तकलीफ उठाकर आने की कोई जरूरत नही है। जो करना, तबीयतका खयाल रखकर ही करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५५) से

६०७. पत्र : खुशाल शाहको

१० अक्तूबर, १९४५

भाई शाह,

चि० किशोरलाल द्वारा १५ जूनके आसपास [बॉम्बे] 'क्रॉनिकल' को भेजे गये लेखकी नकल मुझे आज पढ़ने को मिली। लेख छोटा-सा है। उसे साथमें भेज रहा हूँ। इसपर नजर दौड़ाने में आपको देर नही लगेगी।

यदि उसके सुझावमें आपको सार दिखाई दे तो आप अपने ही बलबूतेपर और आगे बढ़ सकते हैं। यदि उसका लिखा ठीक हो और अगर दशमिक प्रणालीके सिक्के लोगों पर जबरदस्ती थोपे जाने वाले हो तो उसका विरोध करके आप उसका पूरा लाभ उठा सकते हैं।

के० टी० शाह
८, लेबर्नम रोड
गामदेवी
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०८. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

१० अक्तूबर, १९४५

भाई वैकुण्ठ,

चि० किशोरलाल द्वारा १५ जूनके आसपास 'बॉम्बे क्रॉनिकल' को भेजे गये लेख की नकल मुझे आज पढ़ने को मिली है। लेख छोटा-सा है। उसे साथमें भेज रहा हूँ। इस पर नजर दौड़ाने में आपको देर नहीं लगेगी।

यदि उसके सुझावोंमें आपको तथ्य दिखाई दे तो मुझे लिखियेगा, और आगे क़दम उठा सकते हों तो उठाइएगा। इसी तरहका पत्र भाई गगनविहारी[1] और शाह[2] को भी लिख रहा हूँ। जनताके सिरपर मंडराता यह बादल — यदि सचमुच यह बादल हो तो — समयपर कार्रवाई करने से शायद छँट जाये।

वैकुण्ठ मेहता
बम्बई प्रोविंशियल को-ओपरेटिव बैंक
बेक हाउस लेन
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१० अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

आज सुबहके समय प्रार्थनाके उपरान्त मैं तुम्हारा दशमिक सिक्कोंसे सम्बन्धित लेख ध्यानपूर्वक पढ़ गया। लेख मुझे अच्छा लगा। तुमने यह इतने विलम्बसे क्यों भेजा? या तुम्हारे भेजने के बावजूद वह मेरे ध्यानसे उतर गया? उस समय मैं पंचगनी[3] में था और मुश्किलसे ही अखबार देखता था। आज भी वही स्थिति है।

१. वैकुण्ठलाल मेहताके छोटे भाई
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. ३१ मई से १९ जून, १९४५ तक

ध्यानपूर्वक पढ़ जाने का मतलब यह नही कि तुम्हारे द्वारा किये गये हिसावको मैंने खुद भी जाँच लिया है और वह मेरे लिए स्पष्ट है। हिसाव करने में तुम इतने ज्यादा चौकस हो कि मैंने यह मान लिया है कि आँकड़े सही ही है। मान लो कि तुम्हारे आँकड़े सही है और तुमने जो सुझाव दिये है वे बहुत लोकोपयोगी हैं तो एक लेख लिखकर तुम चुप नही बैठ सकते। यदि तुम्हारा स्वास्थ्य इजाजत दे तो तुम इसी कामके पीछे लगो अथवा नरहरि, जाजूजी और कुमारप्पासे इस बारेमें विचार-विमर्श करो। विनोबा भी हिसावके मामलेमे बहुत पक्के है। यदि यह बात उनके गले उतर जाये तो जाजूजी अथवा नरहरि गहराईसे विचार करे और कोदण्डरावसे पत्र-व्यवहार करे। मैं तो उन्हे यहाँसे लिख रहा हूँ। मैंने के० टी० शाह,[1] 'वैकुण्ठ'[2] और गगनविहारीको पत्र लिखे है तथा उन्हे लेखकी प्रतियाँ भेज दी है।

अब जाजूजी के बारेमें। मैं यह नही मानता कि उन्हे विधान-सभामें भेजने से हमें कोई लाभ होगा। उनका स्वास्थ्य बिगड़ जायेगा। हमारा तन्त्र विचित्र है और उसमें कार्य करने वाले उससे भी विचित्र हैं। जाजूजी आदिकी काफी माँग की जायेगी, लेकिन उन्हे सिंहासनपर बैठाकर फिर उनकी कोई नही सुनेगा। विधान-सभामें जाने की अपेक्षा बाहर रहने से जाजूजी का प्रभाव अधिक पड़ सकेगा।

दादाके बारेमे विचार किया जा सकता है और शायद समय आने पर कुदरत ही उन्हें घरके जंजालसे मुक्त कर सकेगी।

तुमने सरदारको जो पत्र लिखा था उसके सम्बन्धमें उन्होंने मुझसे चर्चा की थी।

अपने स्वास्थ्यके बारेमें तुम्हारी बात मेरे गले नही उतरती। और तुम एक बात पर ही आग्रह कर रहे हो, इसलिए मैं लाचार हो जाता हूँ। तुम्हारा आग्रह मेरी समझमें नही आता, किन्तु उसके पीछे जो तुम्हारी विशिष्ट विचारधारा है उसे मैं कैसे तोड सकता हूँ? यदि तुम सरदारके-से स्वभाव वाले होते तो मैं तुम्हे उपचारके लिए यहाँ रख लेता या ऐसा ही कुछ करता। मैं यह मानता ही नही कि तुम्हारा शारीरिक तन्त्र भीतरसे ठडा होता जा रहा है और उसका कोई उपाय किया ही नही जा सकता। मेरी मान्यता है कि प्राकृतिक चिकित्सासे उसे ठीक किया जा सकता है। मुझसे रहा नही गया इसलिए इतना लिख दिया है। यदि इनमें से किसी बातका तुम पर असर हुआ हो तो मुझे सूचित करना, जिससे मैं इस दिशामें आगे विचार कर सकूँ।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१ और २. देखिए पिछले दो शीर्षक।

६१०. पत्र : सत्यदेवीको

१० अक्तूबर, १९४५

चि० सत्यदेवी[1],

तेरा पत्र पढ़कर प्रसन्नता हुई। तेरे अक्षर तो खूब सुडौल हो गये हैं। तुममें से किसीने चरखेको नहीं छोड़ा है, यह बात मुझे अच्छी लगती है। आगे-पीछेकी सभी क्रियाओंको भली-भाँति समझकर चरखा चलाओ।

दुर्गा[2], मैत्रेयी[3] अच्छी होंगी। कृष्णमैया[4] भी। महावीर[5] क्या करता है? धर्मकुमार[6] की भी खबर तूने नहीं दी। क्या तुम सब साथ रहते हो?

सत्यदेवी
बोरीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६११. पत्र : चौंडे महाराजको

१० अक्तूबर, १९४५

चौंडे महाराज,

आपका पत्र मिला है। मैंने तो मेरी मान्यता प्रकट की[7] लेकिन उसका मतलब यह नहीं है कि कोई एक नई संस्था अखिल भारतके लिए नियुक्त करें। गोसेवा संघ ऐसे ही संस्था है, उसका काम भी चल रहा है। लेकिन काम ही बहुत कठिन है। गोसेवा शास्त्रको जानने वाले और उसका अमल करने वाले काफी लोग होने चाहिए।

आपकी भावना ऊंची है, लेकिन केवल भावनासे यह काम आगे नहीं बढ़ेगा। जिस रोज मैं आया था उस रोजका दृश्य भी मुझको अच्छा नहीं लगा। सब लोग भावनामय थे, उनमें न ज्ञान था न कर्म था। जो काम गोशालाका होता है उसीको बढ़ाने की चेष्टा कीजिए। वहां अब तक चर्मालय तो है ही नहीं। अच्छा सांड है या नहीं उसका ज्ञान मुझे नहीं है।

१, २ और ३. नेपालके स्व० दलबहादुर गिरिकी पुत्रियाँ
४. सत्यदेवीकी माता
५ और ६. सत्यदेवीके भाई
७. देखिए पृ० ३४९।

८१–२४

दूधका कोई शास्त्री है क्या? है तो वही आदर्श दुग्धालय बन जायेगा तो मुझको बड़ा हर्ष होगा और मैं उसमें से ही बड़े परिणामकी आशा कर सकूंगा। वर्धा में मेरी आंखोंके नीचे भी यही प्रयोग चल रहा है। महत्वका परिणाम तो मैं वता नही सकता हूं। सम्पूर्णता मिलना बहुत कठिन है इतना तो मैं समझता हूं। कठिनता दूर करने का कोई आसान मार्ग अब तक मेरे हाथमें नही आया — शायद कभी न आयेगा। मेरी उम्मीद है कि मेरे कहने का तात्पर्य आप समझ गये होंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

गोवर्धन संस्था
पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१२. एक पत्र

१० अक्तूबर, १९४५

भाई . .[1],

तुम्हारा खत दुःखद है। अपराध भयंकर है। उपवाससे प्रायश्चित नही होगा। उपवासकी मर्यादा है। तुम्हारा प्रायश्चित तो तुम्हारे हृदयके परिवर्तनमें है। वधूके साथ तो तुम्हारे पतनकी बात करना ही होगा। फिर भी वधू शादी करना चाहे तो शादी करो। वधूकी मांका तो तुम्हारे त्याग करना ही चाहिए। मां कुलटा है क्या? ऐसी माताएं मैंने देखी हैं। सब किस्सा नाजुक है। मैं इसे पूरा समझ नही सकता हूं; न मुझे समझने का अवकाश है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिया गया है।

६१३. पत्र : महाजनीको

१० अक्तूबर, १९४५

भाई महाजनी,

आपका १८ सप्टेम्बरका खत आज ही मिलता है।

आपको जो सन्देशा मैंने १९३५ में भेजा था उसे आज भी दोहराता हूं — ऐसी आशासे कि दोनों संस्थाका आयु बढ़ता ही है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१४. एक पत्र

[११ अक्तूबर, १९४५ या उसके पूर्व][1]

प्रिय . . .[2],

तुम्हारा मामला तो सरल है। अगर तुम्हारी पत्नी बहक गई है तो उसके प्रति तुम्हारा कोई दायित्व नहीं है। उसे तुम्हें छोड़कर अपनी पसन्दके व्यक्तिके साथ विवाह कर लेना चाहिए या उसके साथ रहना चाहिए।

अगर तुम अपने व्रतपर दृढ़ हो तो उसका पालन करो। अगर नहीं हो तो पाखण्ड नहीं होना चाहिए।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र १० और ११ अक्तूबर, १९४५ के कागजातके बीच रखा गया है।
२. नाम छोड़ दिया गया है।

६१५. पत्र : रामप्रसादको

पूना
११ अक्तूबर, १९४५

चि० रामप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। समझमे नही आता कि तुम मुझे लिखने मे सकोच क्यो करते हो। किन्तु अब तो मैं वहाँ आने की तैयारीमें हूँ इसलिए स्वय ही कहना।

मैंने बालकका नाम जीवनराम सुझाया है। वे महान् पडित थे। आजकल मैं उनका किया हुआ 'भर्तृहरि शतक' का अनुवाद पढ़ रहा हूँ। इसी बीच कान्ताकी माँग आई और मुझे यह नाम सूझा। वह मौतके मुँहसे बच गया। यह भी उक्त नाम सुझाने का एक कारण है।

सेवाग्राम
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

६१६. पत्र : दिनेश सिंहको

पूना
११ अक्तूबर, १९४५

चि० दिनेश[१],

तुमारा खत पाकर राजी हूआ। सब साथ हैं। अभ्यास [अध्ययन] पूरा करो और लोक सेवा पेट भरके करो।

बापुके आशीर्वाद

श्री दिनेशकुमार
कालाकाकर कोठी
लखनऊ (यू० पी०)

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६७६) से

१. कालाकांकरके राजा और संसद-सदस्य

६१७. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पूना
११ अक्तूबर, १९४५

भाई जाजूजी,

मैंने वाइसरायके सेक्रेटरीको खत[1] लिखा है, उसकी नकल भेजता हूं। जितना हो सके उतना संक्षिप्त करना चाहता था। कोई मुद्देकी बात रह गई है ऐसा मानें और मुझे बता देंगे तो मैं और खत लिख सकूंगा।

कानूनी बातके बारेमें मैं काफी सोच रहा हूं। उस बारेमें डॉ० केदारकी मदद लेना अच्छा लगता है। और आप मानें कि आपके मार्फत वह मदद नहीं मिल सकती है तो मैं उनको लिखने के लिए तैयार हूं। ब्रीफ[2] बनाकर देंगे तो वही भेजूंगा या मैं बना लूंगा। इस तरह भी आपको अच्छा न लगे तो मैं मुंबईके किसी वकीलको लिखूं।

सब पढ़ने पर मुझे ऐसा लगता है कि हमारे शीघ्रतासे निर्णय करने की कोई जरूरत नहीं रहती है। नये नियममें ऐसा है न कि उसका अमल करने की तारीख भविष्यमें दी जायगी। पुराने नियमोंमें हमको कोई मुसीबत नहीं है ऐसा मैं समझा हूं। यह ठीक है क्या?

मेरी तजवीज सेवाग्राम २१ तारीखको पहुंचने की है—अगर पहुंचा तो ३१ तारीख तक तो मैं वहीं रहूंगा।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१८. पत्र : देवदास गांधीको

११/१२ अक्तूबर, १९४५

चि० देवदास,

तेरी कमेटीकी संशोधित रिपोर्ट मैं पढ़ गया। यदि मैंने तुझसे पहले न कहा हो तो अब कहता हूं कि जब तक हमें मुख्य संचालिका[3] नहीं मिलती तब तक यह

१. देखिए पृ० ३६४।
२. यह शब्द साधन-सूत्रमें रोमन लिपिमें है; अर्थ है, "मामलेका सार"।
३. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके लिए

रेतका महल खड़ा करने जैसी बात होगी। की हुई मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती। यदि हमें एक जिम्मेदार महिला निरीक्षिका मिल जाये तो वह तुम्हारी रिपोर्ट जैसा कुछ तो रिकार्ड रखेगी। किन्तु अब कोई अगला कदम उठाने से पूर्व, जो बात मैंने पहले लिखी है, मुझे लगता है कि वह जमीनकी पसन्दगीके मामलेमें भी लागू होनी चाहिए। आशा है, तू स्वस्थ होगा।

'हिन्दुस्तान टाइम्स'
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१९. पत्र : उमा अग्रवालको

पूना
१२ अक्तूबर, १९४५

चि० ओम्[1],

तेरा पत्र मिला। अक्षर अस्वच्छ लिखकर माफी क्या माँगनी? अक्षर खराब लिखने ही नहीं चाहिए।

बेबीका मूक सन्देश मिला। "उनका" का क्या मतलब? [पतिका] नाम लेने में शर्म रखने को तो अबलापनकी हद ही कहूँ न? नाम तू भेजे तो कोई पसन्द करूँ।

सुशीलाबहन आ गई है। उसका काम सुन्दर हुआ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३४५

१. जमनालाल बजाजकी पुत्री, जिनका विवाह राजनारायण अग्रवालसे हुआ था।

६२०. पत्र : प्रेमा कंटकको

१२ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रेमा,

तू १७ तारीखको सुबह साढ़े सात बजे मेरे साथ टहलना। अधिक समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४४०) से। सी० डब्ल्यू० ६८७९ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

६२१. पत्र : रामदास गांधीको

१२ अक्तूबर, १९४५

चि० रामदास,

इसके पीछे सुमीका पत्र है। इसलिए अब उसके आने या न आने का कोई सवाल ही नहीं है। मणिलाल और सुशीला कल अकोला चले गये। अरुण यहीं रह गया है। उसे वाल्जीभाई पढ़ाते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२२. पत्र : लीलावती आसरको

१२/१३ अक्तूबर, १९४५

चि० लिली,

कहा जा सकता है कि तूने बहुत अच्छा किया। इसी प्रकार जुटी रहना और उत्तीर्ण होना तथा काम करना आरम्भ कर देना।

सेवाग्राम लौटने की तारीख अभी निश्चित नहीं हुई है। यदि याद रहा तो निश्चित हो जाने पर तुझे लिखूंगा; अन्यथा तुझे मालूम तो हो ही जायेगा। अपना स्वास्थ्य मत बिगाड़ना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती लीलावती उदेशी
जी० एस० मेडिकल कॉलेज
परेल,

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२३. पत्र : एफ० एम० पिंटोको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
[१३ अक्तूबर, १९४५

प्रिय पिंटो,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं चुनावोंमें बहुत कम दिलचस्पी लेता हूँ या कहो कि लेता ही नहीं हूँ। लेकिन कभी-कभी सलाह देनी पडती है। तुम्हारा पत्र मुझे अच्छा लगा और खराब भी। पत्रकी साफगोई मुझे अच्छी लगी, लेकिन उसकी दलील[१] खराब है। मैं चाहता हूँ कि हर अल्पसख्यक वर्ग शक्तिशाली और सच्चे अर्थोंमें स्वतन्त्र हो। ईसाई भी पूर्ण भारतीय है, क्योंकि वह और कुछ हो नहीं सकता और न भारतीय बने रहने के लिए वह किसी पुरस्कारकी अपेक्षा रखता है या कोई पुरस्कार चाहता है तब "अल्पसख्यक" शब्दका कोई महत्व ही नहीं रह जाता। मैंने अपनेको अल्पसख्यकोंकी स्थितिमें रखा है। इसलिए मैं दो टूक बात कर सकता हूँ, बल्कि अधिकारपूर्वक अपनी बात कह सकता हूँ। अगर पुरानी पीढीके ईसाई सरकारसे चिपटे हुए हैं और उसके दिये टुकडोंपर नजर टिकाये हुए हैं तो उससे क्या फर्क पडता

१. एफ० एम० पिंटोकी दलील यह थी कि निर्वाचन-सूचीमें ईसाइयोंकी संख्या बहुत कम होने के कारण उनके केन्द्रीय विधान-सभाके लिए स्वतन्त्र रूपसे चुने जाने की सम्भावना बहुत कम है, इसलिए उन्हें कांग्रेसके टिकटपर खड़ा किया जाना चाहिए।

है? यह तो नई पीढ़ीके ईसाइयोंके लिए परीक्षाकी घड़ी ही है। कारण, समयकी गति पुरानोंके विपरीत और नयोंके अनुकूल है।

अगर तुमने मेरी दलील ठीकसे समझ ली है तो अपने प्रति और जिस राष्ट्रके तुम सदस्य हो उसके प्रति सच्चे रहकर निजी बातचीतमें भी पुरानी पीढ़ीके ईसाइयों के विरोधको विफल करोगे।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री एफ० एम० पिंटो
नेशनलिस्ट क्रिश्चियन पार्टी
मार्फत एंग्लो लुसीटैनो
१५, बैंक स्ट्रीट
फोर्ट, बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२४. पत्र : के० ईश्वर दत्तको

१३ अक्तूबर, १९४५

प्रिय ईश्वर दत्त[1],

ऐसे [अभिनन्दन] ग्रन्थका मैं खुद भी शिकार हो चुका हूँ, इसलिए पता नहीं, इस तरहके ग्रन्थपर मेरी आपत्तिको तुम ठीक समझ सकोगे या नहीं। इससे क्या कोई लाभ होता है? क्या उस भुक्तभोगीको बड़ेसे-बड़े आदमीकी भी प्रशस्तिकी जरूरत रहती है? अगर रहती है तो उसे वह प्रशस्ति नहीं दी जानी चाहिए। अगर नहीं रहती है तब तो प्रशस्ति बेकार ही है। अब ऐसे विचार रखते हुए — और सो भी दृढ़ताके साथ — मैं तो आपके सुझावपर तुषारपात ही करूँगा। सर तेज बहादुर इतने अच्छे आदमी हैं कि उन्हें किसी बाहरी सहारेकी जरूरत ही नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री के० ईश्वर दत्त
२८, स्टेशन रोड
जयपुर (राजपूताना)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एक पत्रकार, जिन्होंने तेज बहादुर सप्रूपर एक अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रकाशित करने का सुझाव रखा था।

६२५. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको[1]

१३ अक्तूबर, १९४५

भाई प्रफुल्लो,

क्यों खास आदमीको भेजा? क्यों इतना लम्बा लिखा? रा[ज] कु[मारी]ने जो खत लिखा सो मुझे बताया था। मैं, तो अभी भी उसमें कोई दोष नही पाता। महादेव भी ऐसा खत भेज सकता।

सतीश बाबू और तुम्हारे बीचमें वैमनस्य मुझे बहुत चुभता है। मैं २ नवेम्बर को न पहुचू यह शक्य है, क्योकि सरदारको छोडना मुश्किल-सा लगता है। ऐसा होगा तो मुझे देर होगी। दूसरा सबब इलेक्शनकी धमाल वहाकी है। उस बारेमें तुम्हारे तरफसे कुछ आवेगा पीछे तारीख निश्चित होगी। प्रोग्राम तो वही बनाना ठीक होगा। थोड़ी मुसीबत होगी। उसकी बरदाश्त करना उचित होगा।

तुम्हारी तबियत अच्छी होगी।

बापुका आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

६२६. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

पूना

१४ अक्तूबर, १९४५

चि० चिमनलाल,

चि० बबुको तो मैंने [लिख दिया][2] कि अब मैं वापस [सेवाग्राम] लौट रहा हूँ। लेकिन मेरी अनुपस्थितिमें वह वहाँ नही आयेगी, और न आये, यही ठीक भी है। मैं वहाँ उपस्थित रहूँ, तब आने के लिए तो वह तैयार ही हो रही है, लेकिन मेरा ही ठिकाना नही है। मैं कब आकर आश्रममें बैठ सकूंगा, कहा नही जा सकता। बंगाल, मद्रास और सीमा प्रान्तका काम समाप्त कर दूं, तभी आकर बैठ सकूंगा। और अब तो एक नया काम भी निकाल रहा हूँ। जो हो सो ठीक।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

मैं वहाँ २१ को तो नही ही आ सकूंगा। [निश्चित] तारीख इसके बाद कभी दूंगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४७) से

१. यह पत्र कलकत्तासे आये कान्तिलालके हाथ भेजा गया था।

२. यहाँ का शब्द अस्पष्ट है; देखिए पृ० ३२८ भी।

६२७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१४ अक्तूबर, १९४५

बापा,

मृदुलाका पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ। जो उत्तर मैं देना चाहता हूँ उसका मसौदा साथमें है।[1] यदि तुम्हें पसन्द हो तो मैं इसे मृदुलाको भेजने की सोचता हूँ। और यदि उसे भी पसन्द हो तो हम उसे अखबारोंको भेज सकते हैं।

लीला जोगसे सम्बन्धित पत्रपर भी नजर डालना। मुझे लगता है कि उसे २५० रुपये भेजना ठीक ही है। लेकिन तथ्योंकी जानकारी तो तुम्हें ही है, अतः इस मामलेमें मेरा पथ-प्रदर्शन करना। मैं समझता हूँ कि वहाँसे आना कष्टकारक है और तुम अपनी वर्तमान हालतमें भाग-दौड़ करो, ऐसा भी मैं नहीं चाहता। इसलिए पत्र-व्यवहारके द्वारा हम जितना कर सकें उतना करें।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२८. पत्र : रतिलाल बेचरदास मेहताको

पूना
१४ अक्तूबर, १९४५

भाई रतिलाल बेचरदास,

तुम्हारे द्वारा भेजा हुआ १६३५-६-० का चैक मिल गया है। इसका उपयोग मैं रचनात्मक कार्योंके लिए करना चाहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

रतिलाल बेचरदास मेहता
घाटकोपर कांग्रेस कमेटी
नवरोजी लेन
घाटकोपर
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. मृदुला साराभाईको लिखे पत्रके लिए देखिए पृ० ३८५-८६।

६२९. पत्र : धर्मकुमार गिरिको

१४ अक्तूबर, १९४५

चि० धर्मकुमार,

तेरा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। सत्यदेवीका ऑपरेशन हो जाने पर मुझे सूचित करना। यदि अनुत्तीर्ण हो गये हो तो फिर परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो जाओ। हाथमें लिया हुआ काम पूरा करना ही अच्छा है। सूत मिल गया है।

बापूके आशीर्वाद

श्री धर्मकुमार गिरि
भीमजी काराका बंगला
बोरीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३०. पत्र : खुशाल शाहको

१४ अक्तूबर, १९४५

भाई शाह,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने मुझे तुरन्त उत्तर दिया है। तुम्हारी सभी दलीलें मुझे अच्छी लगती हैं। यदि तुम इस तरहका आन्दोलन आरम्भ करो तो अभी हालमें किये परिवर्तन शायद वापस ले लिये जायें।

बापूके आशीर्वाद

प्रो० के० टी० शाह
गामदेवी
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

६३१. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१४ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

क्या तुमने मरने का ही निश्चय कर लिया है? यदि इस तत्वज्ञानमें कोई तथ्य हो तो मुझे समझाओ, ताकि मैं भी तुम्हारी नकल करूँ। अब तो देखता हूँ कि हद हो गई है। जो भी लिखता है वह तुम्हारी बढ़ती हुई कमजोरीकी बात ही लिखता है। मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? यदि मेरा वहाँ आना टलता ही जा रहा है तो मैं क्या करूँ?

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३२. पत्र : अभ्यंकरको

१४ अक्तूबर, १९४५

भाई अभ्यंकर,

आपका खत मिला। मुझे दुःख है कि मैं अखबार पढ़ता नहीं हूं, और चीमूर अष्टीकी बात आपसे ही मालूम हुई है। अगर आप लिखते हैं, वह सब सही है तो बड़े दुःखकी बात है और मेरे लिए और भी ज्यादह दुःखकी बात है कि मेरे ही नामकी खातिर ऐसी घटना की जा सकती है। ऐसे ही यहां आजकल जो चल रहा है उस बारेमें भी मैं बिलकुल अनजान हूं। मैं कहीं देखने को तो जा नहीं सकता हूं, लेकिन दोनों चीजकी बाबत तलाश करता हूं। दूसरी घटना भी आप कहते हैं ऐसी ही है तो दुःखद है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३३. पत्र : गोप गुरबख्शानीको

पूना
१४ अक्तूबर, १९४५

भाई गुरुबक्सानी,

तुम्हारा अंग्रेजी खत मिला है। अंग्रेजीकी कुछ जरूरत न थी। स्वतन्त्र कमाई करते हैं वह अच्छा है। अपने पिताको भी पैसे भेजे और आश्रमके कर्जके भी वह अच्छा है। कांग्रेसके बाहिर रहकर मूक सेवा करते रहो। जब मैं चवन्नीका मेम्बर बनू तब मुझसे पूछो कि तुम्हे भी बनना चाहिए क्या?

चि० विमला[1] को लिखता हू।

बापुके आशीर्वाद

श्री गोप गुरुबख्शानी
१७, हसन बिल्डिग
निकलसन रोड
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६३४. पत्र : विमलारानी गुरबख्शानीको

पूना
१४ अक्तूबर, १९४५

चि० विमला,

गुरबक्सानी लिखते हैं कि तू तेरे पिताके पास गई है और तेरा वक्त नजदीक आ रहा है। मेरी उम्मीद है कि आसानीसे प्रसव हो जायगा। होने पर मुझे खबर दो।

बापुके आशीर्वाद

श्री विमलारानी गुरुबख्शानी, एम० ए०
२ ए, कंवेंट रोड
देहरादून

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गोप गुरबख्शानीकी पत्नी; देखिए अगला शीर्षक।

६३५. पत्र : अमृतकौरको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० अमृत,

आशा है, तुम सकुशल मैनरविले पहुँच गई होगी और वहाँ सब-कुछ ठीक ही मिला होगा। उम्मीद है, लन्दन जाने और लौटने में तुम्हें रास्तेमें कोई कठिनाई नहीं होगी। प्रवासमें, जो मैं आशा करता हूँ यथासम्भव छोटा होगा, अपना स्वास्थ्य ठीक रखना।

प्यारेलाल अब भी रोग-शय्यापर ही है। पिछली रात कुछ समय तो बुखार सामान्यसे भी नीचे था, लेकिन दिनमें १०३° से ऊपर चढ़ गया। लेकिन वैसे वह बेहतर दिखता है।

सरदारको सप्ताह-भरके लिए बम्बई जाना पड़ेगा। मैं यहीं रहूँगा। इसका मतलब यह हुआ कि २ नवम्बरसे पहले मैं सेवाग्राम नहीं जा पाऊँगा।

सबको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६७) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०३ से भी

६३६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

पूना

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तेरा पत्र मिला था। मुझे किसीने कल ही खबर दी कि तुम्हें तुरन्त टिकट नहीं मिला। अरुण मजेमें है। केवल चड्डी पहनता है और मस्त रहता है। पढ़ता कम है, खेलता ज्यादा है। कातता तो है ही। तुम लोगोंकी अनुपस्थिति उसे खलती हो, ऐसा मालूम तो नहीं होने देता। वालजीभाई उसे पढ़ाते हैं। कनैयो मेरी अनुमति

लेकर ही गया है। मैं उसे अनुमति दे सकने की स्थितिमें था। प्यारेलाल आया तो है, लेकिन जोरका बुखार लेकर। किस किस्मका बुखार है, इसका निर्णय अभी नहीं हुआ। तू मेरी चिन्ता मत करना।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिलाल गांधी
मशरूवाला बंगला
अकोला (सी० पी० बरार)

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५८) से

६३७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० काका,

तुम्हारे पत्र मिले। बालके साथ मैंने संक्षिप्त सन्देश तो भेजा ही था। और अपने पराक्रमकी बात तो बाल खुद ही करेगा, इसलिए उसके बारेमें मैं कुछ नहीं लिखता।

हिन्दुस्तानीके बारेमें देवके साथ चर्चा की। देव अपने विचारोंपर दृढ़ हैं। वे पोद्दार-देव वाले वक्तव्यपर अक्षरशः डटे हुए हैं। तुम्हारा पूरा पत्र उन्हें पढ़ने को दिया। वे उसमें तथ्योंकी कई भूलें बताते हैं, जिनमें मुख्य यह है कि उन्होंने तुम्हारे हिन्दुस्तानी-प्रचारका कभी जरा भी विरोध नहीं किया। विरोध उनके मनमें भी नहीं है, बल्कि विरोध करने वालोंको उन्होंने रोका है। वे कहते हैं कि तुम अथवा अन्य जो विरोध करना चाहें और जिस ढंगसे करना चाहें, कर सकते हैं। अतः मेरा रास्ता साफ है। अतः अब तो तुम्हें, मुझे तथा जो दो भाषाओंके ज्ञानकी आवश्यकता अनुभव करते हैं उन्हें अपना काम पूरे जोरके साथ लेकिन अपने-अपने ढंगसे करना चाहिए।

अतुलानन्द[1] की पुस्तिका तथा अन्य साहित्य तुम्हें भेजा गया है। शायद उसका पत्र भी उसमें था। उसे पढ़कर अपनी राय सहित वह पत्र सेवाग्राम भेज सको, तो अच्छा हो। यह लिखने का कारण यह है कि अतुलानन्दने मुझे चेतावनी देते हुए पत्र लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६७) से

१. अतुलानन्द चक्रवर्ती

६३८. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० मथुरादास,

तुम बीमार क्यों पड़ गये? जबरदस्ती कुछ नहीं करना चाहिए। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि अपने शरीरको ताँबे जैसा चमचमाता हुआ रखो। खुराक जो माफिक आये वही लेनी चाहिए। मेहनत जितनी बने उतनी ही करनी चाहिए। सेवक अगर बीमार पड़ जाता है तो उसे दूसरोंसे सेवा करानी पड़ती है और उसका खुदका काम रुक जाता है। दूसरे जो काम कर सकते हैं उससे हमारे कामकी क्षति-पूर्ति नहीं होती, यह समझना मुश्किल नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७६४) से

६३९. पत्र : मृदुला साराभाईको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० मृदुला,

तेरा त्यागपत्र मिला है। मुझे लगता है कि त्यागपत्र देकर तूने समझदारी की है। मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि तूने संयोजक मन्त्रीका स्थान इस शुभ हेतुसे स्वीकार किया था कि व्यापक रूपमें स्त्री-सेवा कर सकेगी। त्यागपत्र देने में भी तेरा हेतु शुभ है। क्योंकि तूने और मैंने भी देखा कि इस स्थानपर रहकर तू अपना हेतु सिद्ध नहीं कर सकती। तेरे और बापाके स्वभावमें मेल नहीं है। तूने उसके स्वभावसे अपने स्वभावका मेल बैठाने की कोशिश तो की, लेकिन मूल भेदको कौन टाल सकता है? तूने देखा कि काम करने के तरीकेकी दृष्टिसे तू बापाके काम नहीं आ सकती। बापाने भी मेल बैठाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसमें सफलता असम्भव थी। मैंने तो देख लिया कि अन्तर बहुत अधिक है। मेरी दृष्टिमें इसमें किसीका दोष नहीं है। कभी-कभी ऐसा होता है कि ऐसा अन्तर मिट ही नहीं सकता। ऐसे प्रसंग में दोनों अलग-अलग रहकर काम करें, यही हर तरहसे हितकर है। बापा खुद ही अलग हो जाने को तैयार था और अब भी है। लेकिन बापाकी तो यह कृति है ही।

बापा इस तरहके काममें परिपक्व हो गया है। उसके बिना यह बोझ उठाना मैं कठिन मानूंगा। बापाका और मेरा भी आदर्श यही है न कि अन्तमें समितिमें से सभी पुरुष अलग हो जायें और सारा कारोबार बहनोंके हाथोंमें सौंप दें। इसीमें उसकी शोभा है। यह प्रयास जारी ही रहेगा और जब तक सफल नहीं होगा तब तक हम शान्तिसे बैठने वाले नहीं हैं। लेकिन अभी बापाके निकलने से या हम सबको निकलने की इजाजत देने से सफलता कोई जल्दी नहीं मिलेगी। इसलिए मैं तुझे संयुक्त मन्त्रीके स्थानसे अलग हो जाने दे रहा हूँ और तेरा त्यागपत्र स्वीकार कर रहा हूँ। ऐसा करके मैं तेरी सेवा खोता नहीं हूँ, यह जानता हूँ। तू संरक्षिका तो है ही और रहेगी। गुजरातमें तो तू कस्तूरबा स्थानिक निधि मण्डलमें काम करती ही रहेगी और जहाँ-जहाँ केन्द्रीय समितिको तेरी मददकी जरूरत पड़ेगी वहाँ तू मदद करेगी ही। तुझे मैं जानता हूँ, इसलिए मुझे भरोसा है कि मण्डल छोड़कर तू उसकी पहलेसे कुछ कम सेवा नहीं करेगी। फिर यह नहीं भूलना चाहिए कि तूने त्यागपत्र मन्त्री-पदसे दिया है, ट्रस्टी-पदसे नहीं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च.]

त्यागपत्र प्रकाशित करने का तेरा विचार ठीक है। इससे निजी तौरपर या सार्वजनिक रूपसे चलने वाले तर्क-वितर्ककी सम्भावना खत्म हो जायेगी। तू छुट्टी पर तो है ही। लेकिन क्या त्यागपत्र अभीसे ही लागू है?

मूल गुजरातीसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

६४०. पत्र : वजुभाई शुक्लको

१५ अक्तूबर, १९४५

भाई वजुभाई,

तुम्हारी पत्नीके देहान्तका समाचार अभी ही सुना। तुमसे शान्ति-सान्त्वना की क्या बात की जाये? जो जन्म लेता है उसे मरना तो है ही। कोई आगे, कोई पीछे।

बापूके आशीर्वाद

वजुभाई शुक्ल
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

६४१. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

अभी-अभी प्रभाकरने सुशीलाको फोन करके बताया कि तुम्हें आज बुखार है। इससे मुझे हर्ष नहीं हो रहा है। बुखार बिल्कुल न आये, तभी मुझे सन्तोष होगा।

रामेश्वरदासने बुलियाके महादेव स्मारकके लिए चार बहनोंके नाम भेजकर उनमें से एकको मुझे पसन्द करने को कहा है। मैंने तो गोमतीको पसन्द किया है। गोमती स्वीकार कर ले तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४२. पत्र : आर० अच्युतनको

पूना

१५ अक्तूबर, १९४५

भाई अच्युतन[1],

मैंने रचनात्मक कार्यके बारेमें बहुत लिखा है। सब बार-बार पढ़ो, दूसरोंकी टीका मत सुनो। सुनो तो उनका उत्तर देने की शक्ति तुमारेमें होनी चाहीये। मैं कहां तक व्यक्तियोंका उत्तर देता रहूं? विद्यार्थीओंमें ऐसी बातें समजने की और उत्तर देने की शक्ति ले आनी चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८५३) से

१. विद्यार्थियोंके लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय रचनात्मक मण्डलके मन्त्री

६४३. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्को

पूना
१५ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सुंदरम्[1],

तुमारी प्रसादी सोमवारके लिये मिली। सुंदर है। पुराने स्मरण तुमने ठीक याद दिलाये हैं।

बापुके आशीर्वाद[2]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१८७) से

६४४. पत्र : चाँदरानीको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० चांद,

मुझे निर्णय देने में कोई कष्ट नहीं है। किसी कारणवश तू नागपुर नहीं छोड़ सकती है, माता-पिताकी बीमारी हो तो भी। अभ्यासी [विद्यार्थी] जीवन एक प्रकारका सन्यास है। मैं नहीं मानता हूं कि सत्यवती तेरा अभ्यास छुड़वाना चाहती है। तू जाकर[3] भी क्या कर सकती है?

बाकी सुशीलाबहन लिखेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. सम्बोधन और हस्ताक्षर तमिल लिपिमें हैं।
३. दिल्लीके तपेदिक अस्पतालमें, जहाँ सत्यवती भर्ती थीं

६४५. पत्र : अबुल कलाम आजादको

पूना
१५ अक्तूबर, १९४५

भाई साहब,

मौलाना . . .[1] लिखते हैं कि आपको खूब आरामकी जरूरत है। मैं भी मानता हूं। देशके खातिर भी आप आराम लें।

आपका,
मो० क० गांधी

मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४६. पत्र : अब्दुल गफ्फार खाँको

१५ अक्तूबर, १९४५

भाई बादशाह खान,

वहां इलेक्शनकी धूम चलती होगी। उस वक्त मेरा आना ठीक होगा क्या? क्या मैं बादमें आऊं? कब आ सकूंगा, नहीं जानता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

बादशाह खान
चरसड्डा, फ्रंटियर प्रोविन्स

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

६४७. पत्र : वामनराव जोशीको

१५ अक्तूबर, १९४५

भाई वामनराव,

मुझे सरदारने खबर दी कि तुम अकस्मातमें बच तो गये लेकिन चोट तो सख्त लगी। मेरी आशा है कि चोट घातक नहीं होगी और कई बरसो तक सेवा करते रहोगे।

बापुके आशीर्वाद

वीर वामनराव
अमरावती
वरार

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६४८. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

१५ अक्तूबर, १९४५

चि० रामेश्वरी[1],

तुम्हारा खत मिला है। बहन चली गई और बडा परिवार छोड गई है। इसका दु ख माताजीको तो सबसे ज्यादा होगा। आजकल चन्द मिनिट हमेशा भर्तृहरि शतक पढता हूं। नीति और वैरागपर ऐसे मौकेपर [यह] बहुत मननीय है। जो चीज अनिवार्य है उसका शोक क्यो? गढवाल [समस्याके] सम्बन्धमें उपवास बद रहा वह बहुत अच्छा हुआ।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामेश्वरीबहन नेहरू
श्रीनगर
काश्मीर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हरिजन सेवक संघकी उपाध्यक्षा

६४९. पत्र : जे० बी० कृपलानीको

१५ अक्तूबर, १९४५

भाई कृपलानी,

तुम्हारा खत मिला। बादमें तार। तुम्हारे निश्चयके अनुकूल ही मेरा तार तैयार हो गया था। सो उसे रोका। अब तो बुखार बिलकुल गया होगा। सुचेता अच्छी हो गई होगी। सरदारका भी यही निर्णय था।

बापुके आशीर्वाद

आचार्य कृपलानी
स्वराज्य भवन
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५०. पत्र : एन मारी पीटरसनको

पूना
१६ अक्तूबर, १९४५

प्रिय मारिया,

राजकुमारीके नाम तुम्हारा पत्र पढ़ा। कहना होगा कि पत्र असन्तोषजनक है। अपनी अर्जी वापस ले लेने के लिए तो यही कारण पर्याप्त था कि तुम डेनमार्क जा रही हो और तुम्हारी अनुपस्थितिके दौरान संस्था बन्द रहेगी। धर्मान्तरणके मामलेको उठाना क्या ठीक और जरूरी था? जब तुम और एस्थर मेरे पास आई थीं तब, मेरा खयाल है, हम सब इस बातपर सहमत थे कि धर्मान्तरण अनावश्यक चीज है और उससे द्वेष पैदा होता है। व्यक्तिके धर्मका विस्तार उसमें निहित बुरी चीजोंको निकालने और दूसरे धर्मोंके अच्छे और नये तत्वोंको उसमें समाविष्ट करने में होता है। तुम्हें इसके प्रतिकूल विचार रखने का पूरा अधिकार है। मेरी बात सीधी-सी है। एक अप्रासंगिक प्रश्न उठाये बिना अपनी अर्जी वापस ले लेने का तुम्हारे पास निर्णायक कारण था।

आशा है, डेनमार्कमें तुम्हारा समय आनन्द बीतेगा और तुम स्वस्थ-प्रसन्न वापस आओगी।

स्नेह।

बापू

कु० ए० मा० पीटरसन
सेवा मन्दिर, पोर्टो नोवो

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५१. पत्र : छोटूभाई मेहताको

१६ अक्तूबर, १९४५

चि० नेपोलियन[1],

सुन्दर अक्षरोंमें लिखा हुआ तेरा पत्र मिला। मामाके बारेमें पढ़कर प्रसन्न हुआ। तू अपने मंडलके लिए आशीर्वाद क्यों माँगता है? शुभ काममें सबके आशीर्वाद होते ही हैं, ऐसा मानकर शुभ काम चुपचाप करते रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

चि० नेपोलियन
आदर्श दुग्धालय
मलाड
बम्बई होकर

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से

६५२. पत्र : ताराबहन मोडकको

१६ अक्तूबर, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा लेख अगर स्याहीसे लिखा हुआ होता तो मैं खुद उसे पहले ही पढ़ लेता। लेकिन पेंसिलसे लिखे होने के कारण मैं पूरा पढ नहीं सका, हालाँकि जिस कमरेमें मैं हूँ उसमें प्रकाश तो बहुत है। अन्तमें उसे पढवाना पड़ा। पढने में और पढ़वाने में बहुत अन्तर पड़ जाता है, यह बात मैं तो प्रत्यक्ष अनुभवसे जानता हूँ। रोज समाचारपत्रोंकी कतरनें पढवाकर सुनता हूँ और फुरसत होती है तो खुद पढ जाता हूँ। कई बार पढवाई हुई चीज ही फिरसे खुद पढने का संयोग बन जाता है, और उससे मेरी समझमें आश्चर्यजनक अन्तर आ जाता है। मेरा तो खयाल है कि सबका अनुभव यही होगा। इसका फैसला तो तुम खुद ही करोगी। मैंने तो अप्रासंगिक होते हुए भी यह महत्वपूर्ण बात तुमसे इसलिए कह डाली कि मुझे यह कहने लायक लगी। पेंसिलसे लिखी चीज डाकसे भेजने में हिंसाका समावेश है,

१. बारडोली तालुकेके एक कांग्रेसी कुँवरजी मेहताके पुत्र

यह स्वीकार कर सको तो मुझे अच्छा लगेगा। पेंसिलकी लिखावट हलकी तो हो ही जाती है।

तुम्हारा लेख वापस भेज रहा हूँ। इसका जो अंश पढ़ पाया उसमें मैंने कुछ संशोधन किये, उन्हें देखना। संशोधन भाषा-सम्बन्धी ही हैं। बाकी सब मुझे ठीक लगा है। मेरी कही बात अधिक स्पष्ट हो जाये, इसलिए मैं अपने कुछ अनुभवोंका सार दे रहा हूँ।

मोन्टेसरीबहनके अधीन प्रशिक्षित शिक्षिकाओंका काम मैंने देखा। बाल-कक्षाको काम करते ध्यानपूर्वक देखा। चीजें तो स्थानीय थीं ही नहीं, बेचारी शिक्षिकाएँ भी सीखी हुई बातें पचा नहीं पाई थीं। बच्चोंका तो कहना ही क्या? वे तो सामान्य तौर-तरीके भी नहीं सीख पाये थे। इसमें मैं किसीकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ। तुम्हारी जानकारीके लिए ही अपने अनुभवका सार दे दिया है। इसमें यदि कुछ ग्रहण करने लायक हो तो ग्रहण कर लेना, अन्यथा छोड़ देना। मैंने इस अनुभवसे यह निष्कर्ष निकाला है: बाल-शिक्षणके इस शास्त्रीय ज्ञानका व्यापक प्रचार तभी हो सकेगा जब शिक्षक या शिक्षिकाएँ बहुत समझदार होंगी, और उनमें बच्चोंमें घुलमिल जाने की शक्ति होगी। मुझे लगता है कि यह लिखकर मैं तुम्हें कुछ नया नहीं कह रहा हूँ। ये बातें तुम्हारे अनुभवके दायरेके बाहरकी नहीं होनी चाहिए। फिर भी, चूँकि मैं तुम्हें ठीक पहचानता हूँ और बहुत चाहता हूँ, इसलिए मुझे पूरी आशा है कि जिन चीजोंको तुम जानती हो वही मैं कह रहा हूँ, इस बातमें तुम दोष नहीं मानोगी।

श्री ताराबहन मोडक

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५३. पत्र : हरकिशनदास चावड़ाको

१६ अक्तूबर, १९४५

भाई हरकिशनदास चावड़ा,

आपके मण्डलकी ओरसे ७७ पैसेके सिक्के मिले हैं।[1] इन्हें हरिजन सेवक संघके खातेमें डाल रहा हूँ। सभी नियमपूर्वक कातते होंगे।

हरिजन व्यायाम मण्डल
२०, कोचीन स्ट्रीट
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. २ अक्तूबर, १९४५ को गांधीजी के ७७वें जन्म-दिवसके उपलक्ष्यमें

६५४. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

पूना
१६ अक्तूबर, १९४५

चि० आनंद,

बहुत अच्छा है कि तुमारी श्रद्धा बढ़ी है और शांति भी। रोजके लिये लिख तो रहा हूं।[1] अब जितना बाकी है इतना तो लिखने की आशा है। बादमें शांत रहना चाहता हूं।

चि० महादेव[2] अच्छा होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

६५५. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको

[१७ अक्तूबर, १९४५][3]

वहाला बहन[4],

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी बात समझी। हम अपनी-अपनी समझके अनुसार सेवा करते हैं।

बंगालके दौरेको कुछ दिनोंके लिए स्थगित करना होगा। तिथि अभी निश्चित नहीं है।

जो-कुछ तुम सत्यदेवीके बारेमें कहती हो वह तो चिन्ताजनक है। लेकिन इससे अधिक और कोई आशा भी नहीं की जानी थी। आशा करनी चाहिए कि वह विवाह[5] देख पायेगी।

राजकुमारी महीने-भरके लिए लन्दन जा सकती है। . . .[6] निर्मलकुमारके लिए

१. तात्पर्य "रोजके विचार" से है। इस खण्डसे सम्बन्धित अवधिके इन विचारोंके लिए देखिए अन्तिम शीर्षक।

२. आनन्द तो० हिंगोरानीके पुत्र

३. साधन-सूत्रमें इस पत्रको इसी तिथिके पत्रोंके साथ रखा गया है।

४. सम्बोधन गुजरातीमें है।

५. सत्यदेवीके पुत्रका, देखिए "पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको", २५-१०-१९४५।

६. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूटा हुआ है।

मुझसे जो-कुछ करते बनेगा वह करूँगा। मैं उसे जानता हूँ और उसके कार्यको मैं मूल्यवान मानता हूँ।[1]

सत्यवतीको मेरा प्यार।

खुर्शेदबहन नौरोजी
आई० एन० ए० डिफेन्स कमेटी
८२, दरियागंज, दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६५६. पत्र : छगनलाल जोशीको

पूना
१७ अक्तूबर, १९४५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे कुछ ऐसा याद है कि मैंने अपने दौरेके किसी भागमें तुम्हें अपने साथ रखने की बात लिखी थी।[2] मेरा अनुमान है कि मद्रासमें तुम मेरे साथ रहो तो ठीक होगा, क्योंकि वहांके कामका मुझे अन्दाज है। बंगाल और असमका काम कठिन है। वहांके कामका चित्र मेरे मनमें स्पष्ट नहीं है, इसलिए जिन लोगोंकी खास जरूरत नहीं अथवा जिनके गये बिना काम चल ही नहीं सकता उन लोगोंके सिवाय और किसीको मैं वहां नहीं ले जाना चाहता। मेरे जाने की तारीख भी अभी तय नहीं है। शायद २१ नवम्बरके बाद ही बंगाल जाऊँ। सब सरदारकी तबीयतपर निर्भर है।

तुम राजाओंसे पैसा लेते हो, यह बात मेरे खयालसे थोड़ी विचारणीय है। तुम्हारा पत्र पढ़कर ही इस विचारका जन्म हुआ है। जो राजा लोग जरा से भी अपनी प्रजाके नहीं हैं, उनसे हम पैसा ले सकते हैं या नहीं, क्या यह बात विचारणीय नहीं है? १,००० रुपये आये, तो उन्हें ह[रिजन] से[वक] संघके खातेमें डालूँगा। इस समय तक मुझे उनके आ जाने की कोई जानकारी नहीं है। सेवाग्राम आश्रममें आये हों, यह भी नहीं जानता।

जहां हरिजनोंका दमन किया जाता है, वहाँ क्या तुम समझते हो कि रजवाड़े उनकी किसी प्रकारसे रक्षा करेंगे? हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओंके सामूहिक फलाहारमें तुम सामान्य सवर्ण हिन्दुओंको भी शामिल करते हो, या अपने और मुझ-जैसोंको ही?

1. खुर्शेदबहन नौरोजीने गांधीजी से निर्मलकुमार बोसकी सेवाका उपयोग करने को कहा था।
2. देखिए पृ० ३६४।

मेरे दौरेकी तारीख देखो, तो मुझे फिर याद दिला देना। राजकुमारी शिमला गई है। वहाँसे उसे एक महीनेके लिए शायद इंग्लैण्ड जाना पड़े।

सुशीलाबहन और मणिलाल अकोला गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५४९) से

६५७. पत्र : शान्तिलाल मेहताको

१७ अक्तूबर, १९४५

चि० शान्ति,

मैं नेटालको कोई सन्देश देना नहीं चाहता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से

६५८. पत्र : प्रभावतीको

१७ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रभा,

तू अपने पत्रोंपर 'निजी' क्यों लिखती है? सेवक-सेविकाओंके लिए निजी क्या है? और फिर तेरे पत्रोंमें निजी है भी क्या? अपने पत्रोंकी नकल मैंने रखी नहीं। इसलिए क्या लिखूं? लेकिन उनमें मैंने तेरी पढाई, जयप्रकाश और तेरे यहाँ आने के विषयमें ही कुछ कहा होगा। तूने बनारसके बारेमें लिखा था, वह भी होगा। और ज्यादा तो मैं जब आऊँ तब पूछना। तब तक धीरज रखो। तेरे नाम लिखे पत्र के विषयमें रा[ज] कु[मारी] और सु[शीला] से पुछवाया है।

मेरे बंगाल जाने में कुछ दिनकी देर होगी। [इस बारेमें] तू समाचारपत्रोंसे जानेगी। सम्भवतः मैं लिखूंगा।

तेरी सहेलीको बादमें बुलायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५८५) से

६५९. पत्र : गजानन नायकको

१७ अक्तूबर, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र मिला। इतनी सीधी बात मैं तुम्हें नहीं समझा सकता, यह दुःखका विषय है। यदि लिखने वाला स्वयं ही अपनी बात साफ नहीं कह पाता तो फिर उसमें कही बातपर क्या हो सकता है? मैं कहता हूँ कि तुम्हारा धर्म है कि तुम अपनी बात साफ कहो। तभी जांच की जा सकती है। यदि तुम्हें छिपाकर ही लिखना हो तो मुझे कुछ नहीं सुनना और अपने मनपर उसका कोई असर भी नहीं होने देना है।[1]

अखिल भारतीय उद्योग संघ
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६०. पत्र : मयाशंकरको

१७ अक्तूबर, १९४५

भाई मयाशंकर,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं लाचार हूँ। तुम जो कहना चाहते हो, लिखो।

मयाशंकर
मार्फत महेन्द्रलाल भोगीलालकी कं०
दीवानगंज बिल्डिंग
३५, झवेरी बाजार
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३५६ भी।

६६१. पत्र : एल० कृष्णस्वामी भारतीको

१७ अक्तूबर, १९४५

भाई कृष्णस्वामी,

मुझे अभी नदार[1] को लिखने का उत्साह नहीं है। पुण्यका फल पुण्यमें ही छिपा है। तो तारीफकी क्या दरकार?

तुम्हारे कुटुम्बका सुनकर खुश होता हूं।

एल० कृष्णस्वामी भारती
१६१, वेस्ट मसि स्ट्रीट, मदुरा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६२. पत्र : रतनदेवीको

१७ अक्तूबर, १९४५

प्रिय भगिनी,

अब मेरी तरफसे संदेशा मत मांगो। हो सके वहां तक मैं मूक काम करना चाहता हूं। मिलना है तब मेरे स्थिर होने पर मिलो।

रतनदेवी
वनस्थली विद्यापीठ
जयपुर स्टेट

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कामराज नाडार; तमिलनाडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष, १९४०-१९५४; संविधान-सभाके सदस्य; मद्रासके मुख्य मन्त्री, १९५४-१९६३; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके अध्यक्ष, १९६४-१९६७

६६३. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

[१८ अक्तूबर, १९४५ या उसके पूर्व][1]

प्रिय भारतन,

बस, इतना ही लिखने का समय है कि तुम्हारे सभी संशोधन मुझे स्वीकार हैं।

एल० कोटवाल, गॉर्डन हाउस
न्यू नागपाड़ा रोड, बाइकुला
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६६४. तार : प्रफुल्लचन्द्र घोषको[2]

[१८ अक्तूबर, १९४५][3]

खेद है कि मुझे बंगाल-यात्रा कुछ दिनोंके लिए स्थगित करनी पड़ी है। आने की ठीक तारीख देने में असमर्थ हूँ। यथासम्भव अधिक-से-अधिक स्थानोंमें जाना चाहता हूँ, लेकिन मेरे स्वास्थ्यकी जो स्थिति है उसको देखते हुए शायद मुझे यथासम्भव कमसे-कम स्थानोंमें जाकर ही सन्तोष करना पड़े। मुख्य बात स्थितिका अध्ययन करने और लोगोंके दुःखमें अपनी सामर्थ्य-भर अधिकसे-अधिक भागीदार बनने की है। कलकत्ता पहुँचकर ही कार्यक्रम अन्तिम रूपसे निश्चित करना चाहूँगा।

[अंग्रेजीसे]

गांधीज एमिसरी, पृ० ५५। सुधीर घोष पेपर्ससे भी; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. यह पत्र साधन-सूत्रमें १७ और १८ अक्तूबर, १९४५ के कागजोंके बीच रखा हुआ है।

२. ऐसा ही तार सतीशचन्द्र दासगुप्तको भी भेजा गया था।

३. साधन-सूत्रमें सुधीर घोषने लिखा है कि इस तारका मसौदा गांधीजी ने प्रफुल्लचन्द्र घोषके नाम पत्र लिखाने के पूर्व तैयार किया था; देखिए अगला शीर्षक।

६६५. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको[1]

पूना
१८ अक्तूबर, १९४५

भाई प्रफुल्ला,

जवाहरलालजी के बारेमें[2] तुम्हारा तार और पत्र मिला। उनके बारेमें समजा।

भाई सुधीर कल आए। उनसे कल और आज काफी बाते की। मेरे निर्णयका तार तो नही दे सकता। बहुत लम्बा होने वाला था। इसलिए यह खत भेजता हूं। एक छोटा तार तो भाई सुधीरने भेजा होगा।[3]

सब देखते हुए मेरी राय है कि अभी तो इतना जाहिर करो कि 'अनिवार्य कारणोसे गाधीजी दो नवम्बरको कलकत्ते नही पहुँच सकते। तारीखका निश्चय जब कर सकेंगे तब बतावेंगे। सभव है कि नवम्बरके आखिरके हफ्तेमें या उसके आसपास उनका आना हो। उनका कार्यक्रम जो अखबारोमें छप गया है वह भी स्थगित किया जाता है। लेकिन जिस-जिस जगहपर उनका जाना सम्भव है वहाके कार्यकर्ताओको लिखा जायेगा ताकि वह लोग सामान्य व्यवस्थाका विचार कर ले। किसी तरहका खर्च अभीसे नही करना है। जिस जगह जायेंगे वहाका वाहन-खर्च तो देना ही है मगर वह खर्च उसी वक्त होगा। इतना गाधीजी ने साफ किया है कि जितनी जगह उनके ख्यालमें है, वहा सेहत काम देगी तो जाना चाहते हैं और जाने की भरसक कोशिश करेंगे। लेकिन उनकी उम्मर और उनके स्वास्थ्यको नजरमें रखते हुए जाहिर है कि ज्यादा जगह जाने की इच्छा होते हुए भी वह कमसे-कम जगह जा सकते हैं।'

इतना तो आप लोग छपा सकते हैं। अब मेरी इच्छाकी बात करें। हो सके तो मिदनापुर, चिटागाव, ढाका, बारकामता और शान्तिनिकेतन और आसाम जाना ही है। और कोई जगह ऐसी है जो छुट जाती है---जैसे कि फनी, तो वहा भी जाने की इच्छा रहेगी। आप लोग सब मिलकर जो कार्यक्रम तय करें वहाके कार्यकर्ताओको तय्यारी करने को दें और वाहनकी भी तजवीज कर ले। अखबारमें अभी कुछ न दें। अखबारमें देने का आने पर निश्चय कर लेंगे। प्राथमिक तय्यारी करने में तो दिन चाहिए, इसीलिए मैंने उपरोक्त रास्ता निकाला है। कहा-कहां आसानीसे मैं जा सकूंगा, वह भी आप ही को सोचना है।

१ यह पत्र सुधीर घोषकी मार्फत भेजा गया था।

२. प्रफुल्लचन्द्र घोष चाहते थे कि जवाहरलाल नेहरू फिलहाल अपनी कलकत्ता यात्रा स्थगित कर दें और बादमें अधिक लम्बे समयके लिए आये।

३. देखिए पिछला शीर्षक।

मेरे साथ कौन-कौन होंगे इसकी खबर आजसे देने की मैं कोई आवश्यकता नहीं समझता हूं। इस बारेमें कुछ सूचना [सुझाव] करनी हो तो कीजिए।

जो लोग मुझे पहले मिलने आये हैं वह तो अवश्य मिलें, दूसरोंको भी बुलाना चाहिए तो बुलाइए। मौलाना साहब आजकल वहीं हैं, उन्हें खास तकलीफ तो नहीं देनी, लेकिन उन्हें जो कहना हो वह सुनने के लिए आपको उनके यहां जाना ही चाहिए।

मानपत्रकी झंझटमें कहीं भी नहीं पड़ना चाहिए। अपने हाथों काता हुआ सूत या अपने मित्रोंका काता हुआ सूत जितना मिले उतना कम ही मानूंगा। मेरा हेतु यह रहेगा कि उसकी खादी वहीं बनाकर, वहीं सस्तेसे सस्ते दाममें दे देना। जो पैसे देना चाहें वे आरामसे दें, लेकिन उसके लिए खास तजवीज नहीं करनी चाहिए। स्वेच्छासे जो देना चाहें वह दें। पैसोंका उपयोग बंगालके ही किसी रचनात्मक कार्यमें मैं करूंगा। लेकिन याद दीया जाए कि यह दौरा न सूतके लिए होगा न पैसोंके लिए।

केसी साहबको अवश्य मिलना चाहूंगा और जो राहत उनकी तरफसे प्रजाको मिल सकती है वह पाने की कोशिश करूंगा। मेरा जाती अनुभव तो आज तक यह रहा है कि जब मैं किसी जगह बैठ जाता हूं तो उस जगहपर गरीब और कंगाल लोग मेरी हाजरी [के] दरम्यान खुश रहते हैं। इतना भी हो सके तो मुझे सन्तोष रहेगा।

बंगालके राज्य-प्रकरणमें मैं कुछ हिस्सा लेना नहीं चाहता। इच्छा भी नहीं है और ज्ञान भी नहीं।

जो भी निर्णय किया जाए वह बहुमतिसे नहीं, लेकिन सर्वमतिसे होना चाहिए। यह कोई बहुमतिसे करने की बात नहीं है। जितने मेरे आगमनमें हिस्सा लेने वाले हैं, उनमें से कोई भी किसी चीजको पसन्द न करें तो उसे मैं नहीं करना चाहता। मेरे जाने से विग्रह तो होना ही नहीं चाहिए। विग्रह मिटाना ही मेरा धर्म है। इस पत्रकी नकल या तो यहां सतीश बाबूके पास भेज दें। मैं चाहता हूं कि मेरे आने तक तुम दोनों दो शरीर तो हो, लेकिन एक दिल बन जाओ। एक ही गुरुके दोनों बड़े शिष्य हो। और गुरु भी पी० सी० रे[1] जैसा महान व्यक्ति। मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हें सच्ची तरहसे एक दिल हुए देखूं। दोनों मेरा ही काम करने वाले हैं। उनमें क्यों मतभेद भी हो? लेकिन इसमें ईश्वर-कृपा बड़ी चीज है।

बापुका आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : सुधीर घोष पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. प्रतिष्ठित रसायनज्ञ और देशभक्त, जिनका १६ जून, १९४४ को निधन हो गया था

६६६. तार : जाकिर हुसैनको

एक्सप्रेस

पूना

जाकिर हुसैन

१८ अक्तूबर, १९४५

मार्फत जामिया

दिल्ली

तेरह तारीखके 'डॉन' में तुम्हारे साथ हुई बातचीतकी रिपोर्ट छपी है।[1] मैंने मित्रोंके सामने इस बयानके सच होने का खण्डन किया है। मैं चाहूँगा कि रवाना होने से[2] पहले तुम अपना बयान दे दो। आशा है तुम स्वस्थ-प्रसन्न होगे।

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

६६७. पत्र : जाकिर हुसैनको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई जाकिर,

आज तार[3] तो किया है। मैं मान नहीं सकता कि तुमने ऐसा कहा होगा। कुछ भी है, जो कहा है उसका बयान देना अच्छा होगा।

अच्छे होगे।

बापुकी दुआ

डॉ० जाकिर हुसैन

जामिया मिलिया

देहली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. रिपोर्ट इस प्रकार थी: "डॉ० जाकिर हुसैनने . . . यह राय जाहिर की कि . . . हालाँकि आरम्भमें तो पाकिस्तानकी माँग 'सौदेमें ज्यादा हासिल करने की युक्ति' के रूपमें की गई थी, लेकिन अब वह माँग वास्तविक बन गई है। कांग्रेसके सामने अब एकमात्र रास्ता यही है कि वह पाकिस्तानकी माँगपर सहमत होकर भारतकी स्वतन्त्रताके लिए संघर्ष करने के निमित्त मुसलमानोंके साथ संयुक्त मोर्चा बनाये। डॉ० जाकिर हुसैनने कहा कि हिन्दुओंकी ओरसे जो एकमात्र व्यक्ति कुछ करके दिखा सकता है वह है श्री गांधी, लेकिन अगर वे यह माँग स्वीकार कर लेंगे तो अधिकतर हिन्दू उसका अनुमोदन नहीं करेंगे। . . ." लेकिन जाकिर हुसैनने इस रिपोर्टका खण्डन किया।

२. संयुक्त राष्ट्र सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक सम्मेलनमें भारतीय प्रतिनिधिमण्डलके सदस्यकी हैसियतसे शरीक होने के लिए लन्दन रवाना होने से पहले

३. देखिए पिछला शीर्षक।

६६८. पत्र : अमृतकौरको

१८ अक्तूबर, १९४५

चि० अमृत,

शिमलासे तुम्हारा तार पाकर प्रसन्नता हुई। आशा है, तुम्हें सब-कुछ उसी अवस्थामें मिला जैसी हमने उम्मीद की थी।

साथमें 'डॉन' की एक कतरन भेज रहा हूँ। इसके बारेमें जाकिरको तार दिया है और पत्र भी लिखा है।[1] मैं नहीं मानता कि उन्होंने ऐसी कोई बात कही होगी जैसी कि रिपोर्टमें बताई गई है। खैर, हमें तो अविकल तौरपर यह मालूम होना चाहिए कि डॉ० जाकिरने क्या कहा। अगर तुम्हें उससे इस विषयकी चर्चा करने में संकोच लगे तो चर्चा करने की जरूरत नहीं है।

मैं ठीक हूँ।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६८) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०४ से भी

६६९. पत्र : के० सन्तानम्को

१८ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सन्तानम्[2],

कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके छोटे-से कार्यकालके दौरान डॉ० अम्बेडकर द्वारा कांग्रेस पर लगाये गये आरोपोंके बारेमें तो तुम्हें मालूम ही है। बापाकी यह राय है और मैं भी इससे सहमत हूँ कि उसके उत्तरमें एक निष्पक्ष वक्तव्य दिया जाना चाहिए, जिसमें इस पुस्तकमें दिये गये बहुतसे झूठे बयानोंका पर्दाफाश किया जाये। बापाने हरिजन सेवक संघकी ओरसे एक उत्तर तैयार किया है, जो तुम्हें देखना चाहिए

१. देखिए पिछले दो शीर्षक।

२. इंडियन एक्सप्रेस के सम्पादक, १९३३-४०; संयुक्त सम्पादक, हिन्दुस्तान टाइम्स, १९४३-४८; केन्द्रीय विधान-सभाके सदस्य, १९३७-४२; संविधान-सभाके सदस्य; रेल तथा परिवहनके राज्य मन्त्री, १९४८-५२; विन्ध्य प्रदेशके राज्यपाल, १९५२-५६

और देखोगे ही। कांग्रेसका उत्तर राजाजी तैयार करने वाले थे, लेकिन बदली हुई परिस्थितियोंमें वे नहीं कर सकते।[1] उनके बाद सबसे उपयुक्त व्यक्ति तुम्हीं हो और मैं चाहूँगा कि तुम यह काम करो। बापा अधिक विस्तारसे लिखेगा।

तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत के० सन्तानम्
'हिन्दुस्तान [टाइम्स]'
नई दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१८ अक्तूबर, १९४५

बापा,

देखता हूँ, तुम तो वर्धा रवाना हो गये हो। अपनी तारीख मैं अब भी निश्चित नहीं कर सकता। लगता है, २ नवम्बरके बाद शीघ्र निश्चित कर सकूँगा।

यह पत्र तो तुम्हें सन्तानम्को जो मैंने पत्र[2] लिखा है उसकी नकल भेजने और इस सम्बन्धमें तुमसे अधिक विस्तारसे लिखने को कहने के लिए लिख रहा हूँ। तुमने जो जवाब तैयार किया है उसकी नकल सन्तानम्को भेज देना, ताकि उसमें उसे संशोधन-परिवर्धन करना हो तो वह भी कर सके और उसके आधारपर कांग्रेसकी ओरसे भी केस तैयार कर दे। डॉ० अम्बेडकर वाली पुस्तक तो उसके पास होगी ही। अगर नहीं हो तो लिख दो कि तुम पुस्तक भेज दोगे। अपने शरीरका ध्यान रखना।

भाई जहाँगीर पटेलने मुझसे कहा था कि वह एल्विन[3] को तुमसे मिलवाने ले जायेगा। उसके बादसे उसकी कोई खबर नहीं मिली है। कुछ लिखने लायक हो तो लिखना।

कस्तूरबा गांधी स्मारक निधि
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. किन्तु अन्तमें कांग्रेसका उत्तर चक्रवर्ती राजगोपालाचारीने ही तैयार किया, जो "अम्बेडकरका प्रत्याख्यान" ("अम्बेडकर रिफ्यूटेड") शीर्षकसे प्रकाशित हुआ; देखिए पृ० १८३ भी।
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. वेरियर एल्विन, एक अंग्रेज, जो जनजातियोंके उत्थानके लिए कार्य कर रहे थे

६७१. पत्र : मगनलाल मेहताको

१८ अक्तूबर, १९४५

चि० मगन,

तेरा पत्र पढ़कर मुझे दुःख हुआ। चम्पाके साथ मेरा पत्र-व्यवहार तो जारी ही है। वह कुछ और ही बात लिखती है। वर्तमान स्थितिमें तेरा क्या कर्तव्य है, इसका विचार कर। तुझे वहाँ जाकर स्थितिको सँभाल लेना चाहिए। मामला बहुत मुश्किल है। चम्पाके कहने के अनुसार शशि उसे[1] अपने घर ले गया था। थोड़े दिन सब ठीक चला, लेकिन बादमें फिरसे उसका दिमाग खराब हो गया। तुझे खुद ठीक तथ्योंका पता लगाकर जो आवश्यक हो, वह करना चाहिए। नारणदास ने तो बहुत किया। लेकिन अब बात किसीके बसकी नहीं रही। उसपर नियन्त्रण रख सकने वाले तो ऐसे बस दो ही व्यक्ति हैं—तू या मैं। मैं तो अब किसी एक व्यक्तिका रह ही नहीं गया, इसलिए जो तुझसे हो सके वही ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३४) से। सौजन्य : मंजुला मेहता

६७२. पत्र : मंगलदास पकवासाको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई मंगलदास पकवासा,

अनेक प्रान्तीय सरकारोंने कपड़ा बेचने के लिए लाइसेन्स लेना आवश्यक कर दिया है। अब उन्होंने उसकी शर्तोंमें कुछ संशोधन किये हैं। मध्यप्रान्त सरकारने जो संशोधन किया है, उसकी नकल इस पत्रके साथ है। मेरे मतके अनुसार तो खादी जैसी चीज लाइसेन्सके अन्तर्गत नहीं आ सकती, और आनी भी नहीं चाहिए। दक्षिण आफ्रिकाके एक प्रथम श्रेणीके समृद्ध वकीलने मुझसे कहा था, "जहाँ स्पष्ट अन्याय हो, वहाँ उसके प्रतिकारका कोई उपाय अवश्य होगा, ऐसा समझकर कानूनकी खोज

१. मगनलाल मेहताके बड़े भाई रतिलाल मेहताको

करनी चाहिए और यह विश्वास रखना चाहिए कि कोई उपाय अवश्य मिलेगा।" यह बात मुझे बहुत पसन्द आई थी, और दक्षिण आफ्रिकाके अपने काममें मैं सदा इस विश्वासका सहारा लिया करता था, तथा उपाय भी हाथ लगते रहते थे। यही बात मैं यहाँके बारेमें भी मानता हूँ। सब कानून तो मैंने पढ़े नहीं हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जो कानून करोड़पति मिल-मालिकोंपर लागू होता है, वह खादीपर लागू हो ही नहीं सकता।

"डीलर" (विक्रेता) की परिभाषा तुम देखोगे, तो तुम्हें दिखाई देगा कि उसमें "बिजनेस" (व्यवसाय) का भाव होना ही चाहिए। खादीमें "बिजनेस" की गन्ध भी नहीं है, क्योंकि खादीके उत्पादनकी सभी प्रक्रियाओंसे सम्बद्ध काम करनेवालोंको खादी से बस अपना पेट भरने लायक रोटी ही मिल सकती है।

इतना तर्क करके मैंने केवल इशारा-भर किया है। और भी, तुम देखोगे कि सरकार जिसे चाहे छूट दे सकती है। यद्यपि इसे कानूनी मुद्देकी तरह पेश नहीं किया जा सकता, फिर भी मैं इस बातकी ओर तुम्हारा ध्यान आकर्षित करता हूँ। और जो भी जानकारी तुम्हें वहाँ बैठे न मिल सके, जाजूजी के पाससे मँगा लेना। तुमसे मैं जो चाहता हूँ वह यह है। जिससे सलाह करनी हो, उससे सलाह करने के बाद या तो तुम्हीं सरकारको लिखना, या फिर जिस वकीलसे सलाह लो उससे लिखाना। या अगर तुम्हें लगे कि अन्ततः जो लिखा जाये, वह भाई जाजूजी को ही मन्त्रीकी हैसियतसे भेजना चाहिए तो हम वैसा ही करेंगे। जो भी पत्र-व्यवहार करो, उसकी नकल जाजूजी को और मुझे भेजना। और यदि इस निर्णयपर पहुँचो कि वहींसे सीधे सरकारको लिखा जाये तो पहले पत्रका मसौदा मुझे दिखा लेना और तब भेजना। मेरा यह मोह अभी बना हुआ है कि शायद मैं कोई सुधार सुझा सकूँ।

अभी तत्काल किसी प्रान्तीय सरकारको या केन्द्रीय सरकारको लिखने का निर्णय हो तो वैसा ही करना। मैंने तो चरखा संघके अध्यक्षकी हैसियतसे केन्द्रीय सरकारको पत्र[1] लिखा ही है। उसकी नकल इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। उस पत्रकी प्राप्ति-सूचना भी आ गई है। नकल फिलहाल तो तुम्हारी जानकारीके लिए ही है। हमें इस बातका अखबारोंमें प्रचार नहीं करना है, न सबको यह बात बतानी ही है। यही पद्धति अपनाकर मैं लिनलिथगोके शासन-कालमें चरखा संघको बचा सका था, यह तो तुम्हें मालूम ही होगा। अब इस बार तो जो हो जाये वही ठीक।

तुमने मुझे जो आश्वासन दिया था उसीके आधारपर यह बड़ा काम मैंने तुम्हें सौंपा है। आश्वासन यह था कि वकीलके रूपमें अपनी बुद्धि तथा प्रतिष्ठाका उपयोग तुम पैसेके लिए नहीं, बल्कि सेवाकी दृष्टिसे परोपकारके लिए करोगे। और कुछ समयसे यही तुम करते भी आ रहे हो। सभीकी शक्तिका अच्छेसे-अच्छा उपयोग

1. देखिए पृ० ३६४।

आखिर यही तो हो सकता है न? और कुछ पूछना हो तो पूछ लेना। इस काममें फुर्ती करना जरूरी है, क्योंकि उन लोगोंने लाइसेन्स देना शुरू कर दिया है।

एक बात मैं भूल गया। खादीपर एक विशेष संकट आया है, और वह यह है कि प्रति एक रुपयेकी खादीकी खरीदपर हम खरीदारसे जो अमुक कीमतका सूत चाहते हैं, उसपर संयुक्त प्रान्त सरकारने यह एतराज किया है कि इस प्रकार सूत लेने का हमें कोई अधिकार नहीं है। मुझे तो यह एतराज हास्यास्पद और सभी प्रकारसे हानिप्रद मालूम होता है। फिर भी, इस किस्मका एतराज कानूनके अनुसार जायज है या नहीं, इस बातपर भी साथ-साथ विचार कर लेना। वैसे मेरी दृष्टिमें यह बात गौण है, और मैं ऐसा भी मानता हूँ कि इससे आसानीसे निबटा जा सकता है। असल बात यह है कि खादीको लाइसेन्स-सम्बन्धी कानूनोंके अधीन नहीं माना जाना चाहिए। हमारे पास तो ऐसी भी दुकानें हैं जिनकी बिक्री हर महीने १,००० रुपयेसे भी कम होती है। खादीकी बिक्रीके लिए लाइसेन्सकी जरूरत होना खादीके उत्पादकपर, यानी गरीबपर नियन्त्रण लगाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

संलग्न :

१. निजी सचिवको लिखा पत्र

२. जाजूजी के पत्र

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७८३) से। सौजन्य : मंगलदास पकवासा

६७३. पत्र : वल्लभदास जोशीको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई वल्लभदास,

तुम्हारा पत्र मिला। सच्ची शिक्षा या प्रायश्चित्त यही है कि भविष्यमें ऐसी गलती करने का विचार कभी मनमें भी मत लाना।

वल्लभदास जोशी
नेल्सन मोटर मार्टस
२७, क्वींस रोड
बम्बई – ४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७४. पत्र : गुलजार सिंहको

१८ अक्तूबर, १९४५

सरदार गुलजार सिंह,

आपका खत मिला। मैं नहीं जानता हूं कि बंगालके दौरेमें मैं कहां जा सकूंगा और कहां नहीं। मेरी प्रार्थना तो यह रहेगी कि सब सेवक लोग मुझे बचाते रहें। तब ही जो काम मैं करना चाहता हूं वह कर सकूंगा।

सरदार गुलजार सिंहजी
श्री गुरुसिंघ सभा
३१, राशबिहारी एवेन्यू, कालीघाट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७५. पत्र : मोहनलाल वर्माको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई मोहनलाल वर्मा,

कुमार चिन्तामन विनायककी मृत्युका पता मुझे अभी लगा। अगर यह बात सच है कि उसे कांग्रेसियोंने मृत्युदण्ड दिया, और वह भी बहुत ही अयोग्य कारणोंसे, तो शरमकी बात है। और गैर कांग्रेसियोंसे कांग्रेसियोंके लिए ज्यादा शरमाने की बात है। जबसे मुझे इस मृत्युका पता चला है, मैं सत्य ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा हूं।

क० मोहनलाल वर्मा
जनरल सेक्रेटरी
एंटी पाकिस्तान फ्रंट
गिरगाम, मंगलवाड़ीके सामने
मुंबई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७६. पत्र : अग्रवालको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई अग्रवाल,

अगर आपका इरादा केवल परोपकार वृत्तिसे ही औषधालय खोलने का है और औषध भी ऐसे ही इस्तेमाल करेंगे जो प्रयत्नसे हरेक आदमी बना सकता है, तो अच्छा ही है, ऐसा मेरा विश्वास है।

असिस्टेंट सेक्रेटरी
हिन्दुस्तान मर्कंटाइल एसोसिएशन
६४१, चांदनी चौक
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७७. पत्र : एस० के० गुप्तको

१८ अक्तूबर, १९४५

भाई गुप्ता,

अच्छा है कि सेवाग्रामके बारेमें ऊंचा अभिप्राय आप रखते हैं। इस कल्पनाके आधारसे जितना आगे बढ़ सकते हैं, बढ़ें। अन्यथा सेवाग्राममें कुछ भी नहीं है। ऐसा समझकर वहां जाने का आग्रह छोड़ दें।

एस० के० गुप्ता
एक्साइज इंस्पेक्टर
६, रेल्वे रोड
फर्रुखाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७८. पत्र : ए० एस० सहजानन्दको

[१९ अक्तूबर, १९४५ या उसके पूर्व][1]

प्रिय स्वामीजी,

आपका पत्र मिला। अपने मद्रास-प्रवासके दौरान, बेशक मैं कई जगहोंमें जाना चाहूँगा। लेकिन लगता है, मुझे स्वयंको इस आनन्दसे वंचित रखना पड़ेगा। अभी तो विचार यह है कि प्रवासको खास मद्रास [शहर] तक ही सीमित रखूं, कुछ दिन वहीं रहकर जो काम करते बने वह करूँ। इसलिए अपने उद्देश्यकी खातिर सभी मित्रोको जहाँ तक बने, मुझे बख्शना चाहिए। अपनी आगामी बंगाल-यात्रासे मुझे मालूम हो जायेगा कि मेरा शरीर कितना बरदाश्त कर सकता है।

ए० एस० सहजानन्द
नन्दनार मठ
चिदम्बरम्

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६७९. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

श्री हरिदास मित्र तथा अन्य लोगोके साथ श्री ज्योतिष बोस भी एक ऐसे कैदी हैं, जिन्हें मृत्यु-दण्ड सुनाया गया है। दो दिन पहले इनके पिताने मुझसे मिलकर इनकी दयाकी याचिका दिखाई। यदि श्री हरिदास मित्रकी सजा कम कर दी जाती है—और मैं आशा करता हूँ कि कम कर दी जायेगी—तो इनका मामला ऐसा है जिसमें स्वत सजा कम हो जानी चाहिए। श्री ज्योतिष बोस एक प्रभावहीन तथा निर्धन व्यक्तिके पुत्र हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि उनकी निर्धनताको सजा कम करने के रास्तेमें रुकावट नहीं माना जायेगा।

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रको १८ और १९ अक्तूबर, १९४५ के कागजोंके बीच रखा गया है।

कानूनी कागजातसे मालूम होता है कि इस जत्येके और भी कैदी फाँसीपर चढ़ाये जाने वाले हैं। जब ये सजाएँ सुनाई गईं, वह युद्धका समय था, और तब शान्त चित्तसे कुछ करने की वृत्तिका अभाव था। अब समय बदल गया है। युद्ध समाप्त हो चुका है। ये कैदी, जिन्हें मृत्यु-दण्ड सुनाया गया, युद्धके बाद भी जीवित हैं — चाहे दण्डके कार्यान्वयनमें विलम्बका कोई भी कारण रहा हो। अब अगर मैं यह सुझाव दूँ कि इन सभी मामलोंपर मृत्यु-दण्डके बजाय उसे कम करने की दृष्टिसे पुनर्विचार किया जाये तो यह बहुत अनुचित तो नहीं माना जायेगा? मेरी रायमें, न्याय सच्चा न्याय तभी कहा जायेगा जब इसमें दयाका सम्मिश्रण कर दिया जाये।

क्या मैं आपसे यह पत्र वाइसराय महोदयके समक्ष रखने का अनुरोध कर सकता हूँ?[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४९-५०

६८०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय कु०,

मैंने कतरनोंपर सरसरी निगाह डाली है। उन्हें वापस भेज रहा हूँ। इसमें नया कुछ नहीं है। हिटलरका उल्लेख अप्रासंगिक है। ऐसा नहीं लगता कि इसमें मेरे विचारोंको गलत रूपमें पेश किया गया है।

किशोरलालके बारेमें तुम जो कहते हो, मैं समझ गया। तो तुम्हारी तीक्ष्ण दृष्टिने एक गलती पकड़ ही ली!!!

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१८१) से

१. इसके उत्तरमें १ नवम्बरको लिखे अपने पत्रमें ई० एम० जेन्किन्सने सूचित किया कि वाइसरायने इन सभी याचिकाओंपर विचार करके सबको मृत्यु-दण्डके बदले आजीवन कारावास का दण्ड सुना दिया है; देखिए खण्ड ८२, "पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको," ७-११-१९४५ भी।

६८१. पत्र : जी० एल० क्रॉसको

[१९ अक्तूबर, १९४५][1]

प्रिय भाई क्रॉस,

सुधीरकी मार्फत आपका पत्र पाकर आनन्दित हुआ। मेरी गतिविधिके बारेमें आपको सब-कुछ सुधीर ही बतायेगा।

बेशक, मेरे बंगाल आने पर आप और आपकी पत्नी मुझसे अवश्य मिलें। जहाँ तक "फ्रेंड्स" की बैठकमें शामिल होने की बात है, यह तो आप मुझसे जरा कठिन कार्य करने को कह रहे हैं। उन लोगोंको मुझे बख्शना होगा। लेकिन अगर वे सोदपुर आ सकें तो उनसे मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी।

फ्रेंड जी० एल० क्रॉस
भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी
डी-३, क्लाइव बिल्डिंग, क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८२. पत्र : शैलेशचन्द्र बोसको

१९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय शैलेश[2],

तुम्हारा विजयापत्र[3] पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। तुम सबकी और सबसे अधिक बेलाकी कुशल कामना करता हूँ। तुम्हें बता दूँ कि इस मामलेमें सरकारसे बराबर पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। मेरे बंगाल जाने पर बेलाको वहाँ रहना चाहिए। खेद है कि मैं २ नवम्बरको वहाँ नहीं पहुँच रहा हूँ। आज जहाँ तक कहना सम्भव है, उस हिसाबसे यही कहूँगा कि अब नवम्बरके मध्यके बाद आऊँगा।

शैलेशचन्द्र बोस
५९, फॉबिस स्ट्रीट
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तिथिके कागजातके साथ रखा गया है।
२. सुभाषचन्द्र बोसके भाई
३. तात्पर्य शायद विजयदशमीके अवसरपर लिखे पत्रसे है

६८३. एक पत्र[1]

१९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। यदि आपके मनमें दृढ़ता है तो कुछ भी कठिन नहीं है।

आपका,
मो० क० गांधी

डाकघर येनकुरिसी
वरास्ता पालघाट

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८४. पत्र : भगवानजी पु० पण्डयाको

१९ अक्तूबर, १९४५

चि० भगवानजी,

तुम्हारा कार्ड मिला। खादीके बारेमें मैं तुमसे सहमत हूँ। अपने विचार तो मैंने व्यक्त कर ही दिये हैं। अब सोच रहा हूँ कि और क्या करना चाहिए।

तुम्हारा काम ठीक चल रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

बापूके आशीर्वाद

श्री भगवानजी
हरिजन आश्रम
वढ़वान

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४०२) से। सौजन्य : नवजीवन ट्रस्ट

१. नाम नहीं दिया गया है।

६८५. पत्र : पुष्पा देसाईको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

चि० पुष्पा,

साथके पत्र पढ। दोनोको उत्तर देना, और सम्भव हो तो उनकी शकाका निवारण करना। मैंने तो केवल पत्रोकी प्राप्तिकी सूचना देते हुए कार्ड लिखा है, और सुझाव दिया है कि लौटने पर अगर उन्हे सेवाग्राम आना हो तो आयें।

तेरा सब कामकाज ठीक चल रहा होगा। तुझे आदर्श स्त्री बनना है, यह बात कभी मत भूलना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२७५) से

६८६. पत्र : कानजी जेठाभाई देसाईको

१९ अक्तूबर, १९४५

भाई कानजी,

तुम्हारा और चि० भानुका पत्र मिला। तुम्हारे सेवाग्राम आने से चि० पुष्पाका मन बदलने की सम्भावना नही है। मेरा जाना मुल्तवी हो गया है। २ नवम्बरको मालूम होगा कि कब जा सकता हूँ। उस समय तुम्हारी इच्छा हो तो आ जाना।

कानजी जेठाभाई]
पुरानी हनुमान गली
दूसरा क्रॉस लेन
राजडाकी चाल
दूसरी मंजिल, कमरा न० ४
बम्बई—२

गुजरातीकी नकलसे ' प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

६८७. पत्र : अमतुस्सलामको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

बेटी अ० सलाम,

तेरा खत मिला। मेरा वहां आने का दिन कुछ दूर गया है। नवंबरके बीच या आखरमें होगा। सरदारकी सेहतपर मुवनी[1] है।[2]

तेरे बारेमें क्या लिखूं? तूने मुझसे कुछ भी नहीं लिया है, यह सही है, और मेरे जितना किसीने नहीं लिया है, यह भी सही है। लेकिन उसका कुछ नहीं। मैं पहुंचूं तब बातें करना। प्या[रेलाल] बीमार है। अच्छा हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

कौन साथमें होगा, यह तय नहीं है। तू ठीक बच गई। तेरा जीवन तो ऐसे ही चलेगा। अब तो तू बिलकुल अच्छी होगी।

बापूके आशीर्वाद

उर्दू और गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९०) से

६८८. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रेमाबहनको धूलियाके ट्रस्टमें[3] नहीं रखा जा सकता, और न सुशीलाको। तारा[4] का नाम मुझे जँचता है। तुमने क्या रामेश्वरदासको लिखा है? नहीं लिखा हो तो लिखो। कोई स्त्री होनी चाहिए, इस औपचारिकताके निर्वाह-

१. निर्भर
२. यहाँ तक उर्दूमें है।
३. महादेव स्मारक ट्रस्टमें
४. तारा मशरूवाला

मात्रके लिए मैं किसी बहनका नाम दिये जाने की जरूरत नहीं देखता। जो बात कुमारप्पाने लिखी है वह क्या सही है? वह एक भूल बताता है और एक मुद्दा [उठाता है]।

तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६८९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

१९ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

बीमार होते हुए भी तुम दशमिक प्रणाली-सम्बन्धी मेरे सुझावोंपर अमल कर ही रहे हो।[1] वैकुण्ठके पत्रसे तुम्हें मालूम होगा कि यद्यपि सरकार इस विषयका सारा साहित्य एकत्र कर ही रही है, तथापि वह उसपर तुरन्त अमल नहीं करेगी, और अगर इस बीच यह काम चला तो फिलहाल तो अमल रुक ही जायेगा। मैं तो इसके पीछे पड़ा हुआ ही हूँ।

'डॉन' की एक कतरन मैंने डॉ० जाकिरको भेजी है।[2] तुम्हारी तरह मैं भी यह मानता हूँ कि जैसा रिपोर्टमें प्रकाशित हुआ है वैसा उसने हरगिज नहीं कहा होगा। फिर भी, उसका पत्र आने पर ही मालूम होगा। ऐसी एक कतरन सरदारके पास भी आई थी। मैंने वह लेकर राजकुमारीको भेज दी है।

तुम्हारे स्वास्थ्यके सम्बन्धमें दलील करने से कुछ हासिल हो सकता है, ऐसा मुझे नहीं दीखता। और मैं मानता हूँ कि मेरी कुढ़न बेकार ही है। लेकिन स्वभाव सहज ही बुद्धिके वशीभूत नहीं होता। इसलिए अपने सुझावपर[3] तो मैं कायम ही हूँ।...[4] एनीमा लिया, यह तो ठीक ही हुआ।...[5] मेरा वहाँ आना स्थगित हो गया है। २ नवम्बर तक तो यहाँ हूँ ही। उसके बाद तारीख तय होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३६७-६८।
२. देखिए पृ० ४०२।
३. पूनामें नैसर्गिक उपचार कराने के सुझावपर; देखिए पृ० ३९८।
४ और ५. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूटा हुआ है।

६९०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१९ अक्तूबर, १९४५

बापा,

वर्धाकी आबोहवा तुम्हें मुआफिक आ रही होगी। साथका पत्र[1] देखो।

यह पत्र पढ़कर जो उचित लगे वह करना। इस सम्बन्धमें वह मेरे पास पहले आई तो थी और मुझे याद है कि मैंने कुछ राय भी दी थी।

कस्तूरबा स्मारक निधि
बजाजवाड़ी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९१. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

१९ अक्तूबर, १९४५

भाई जाजूजी,

साथके कार्ड (भगवानजीभाईका) में जो लिखा है उससे मैं तो सहमत हूँ। जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने इस सम्बन्धमें कुछ लिखा है। तुम्हारी और दूसरे साथियोंकी भी राय ऐसी ही हो तो हम आगे बढ़ सकते हैं। मेरे पास तो मात्र विचार हैं। तुम्हारे पास अनुभव है। इस अनुभवका विचारसे मेल हो तभी हम आगे बढ़ें।

खादी विद्यालय
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दुर्गीकी सत्यभामा देवीका पत्र, जिसमें उन्होंने कुछ काम देने का अनुरोध किया था।

६९२. पत्र : डॉ० एस० एम० कुलकर्णीको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

भाई कुलकर्णी,

आपका खत मिला। आप ता० २७ [को] ५-३० वजे आइये।

डॉ० एस० एम० कुलकर्णी
भड़कमकार अस्पताल
कराड
जिला सतारा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९३. पत्र : भवानीदयाल संन्यासीको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

भाई भवानीदयाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नही यह जानकर अफसोस हुआ। शीघ्र अच्छे हो जाओ, यही मेरी आशा है और यही मेरा आशीर्वाद।

आश्चर्यकी वात है कि आप बचपनसे मुझे जानते हैं, मगर मैं जो कर रहा हू उसे पूर्णतया नही समझते, और न लोगोको समझा सकते हैं। शुद्ध सत्य तो यह है कि किसी भी शुभ काममें किसीके आशीर्वादकी आवश्यकता ही नही होती। क्योकि शुभ काम ही आशीर्वाद-रूप होता है, यानी उसीमें उसकी सफलता है। दूसरा मै आशीर्वाद किस वारेमें भेजू? इसमें लवलेश भी सन्देह नही है कि चाचीजी अपने क्षेत्रमें महात्माओंसे भी वडी हो सकती हैं, और शायद हैं। वयमें वृद्ध तो हैं ही, लेकिन मेरा यह दुर्दैव माना जाय कि मैं उन्हे पहचानता नही हू। ऐसी हालतमें मेरे जैसा आदमी कैसे आशीर्वाद भेजे? और जिसमे खितावी लोग, वडे-वडे लोग शरीक हैं उसमें मेरी क्या गिनती, और क्यो गिनती? धनिक लोग अगर किसी प्रसगमें मेरे आशीर्वाद ले लेते हैं तो उसका मतलव यही समझना चाहिए कि मैं उन्हें पहचानता हू, और उनके पाससे सेवा कार्य ले लेता हू। अन्यथा कोई धनिक वर्ग मेरे पास आता नही है, और न मुझसे कुछ पा सकता है। गरीबोकी

तो बात ही क्या? वे मेरे हैं, और मैं उनका हूं। मैं खुद गरीब हूं, लेकिन वह मेरा आशीर्वाद पा लें, तो अखबारमें थोड़े आ सकते हैं! इसलिए हरेक दृष्टिसे देखते हुए, मैं चाचोजी के स्मारकमें खप नहीं सकता। स्मारकमें पड़े हुए लोग मुझे पहचानते नहीं हैं, सो निन्दा ही कर सकते हैं और क्या करें? तुम्हारे जैसे उन्हें सद्भावसे समझा सकते हैं तो समझावें। मुझको लिखने से क्या फायदा है? इतना ही न कि तुमको लम्बा चौड़ा लिखने में मैं अपना समय बर्बाद करूं और तुम्हें बीमारीमें भी उसे पढ़ने का कष्ट दूं? अब मैं कुछ समझा सका हूं तो मेरा काम निपट गया, नहीं समझा सका तो लाचार हूं।

भवानीदयाल संन्यासी
प्रवासी भवन
आदर्श नगर
अजमेर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९४. पत्र : राममनोहर लोहियाको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

भाई राम मनोहर[1],

मोरीशयसका तार तुमको भले मिला। उस निमित्तसे भी तुम्हारा पत्र मुझे मिल सका सो अच्छा लगता है। तुम्हारी तबियतके बारेमें खबर दे सकते हैं तो दें अथवा जेलर देवें।

राम मनोहर लोहिया
सेंट्रल जेल
आगरा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. (१९१०-६७); अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी दलके एक संस्थापक; अ० भा० कां० कमेटीके विदेश विभागके मन्त्री, १९३६-३८; १९४८ में कांग्रेसका त्याग; प्रजा सोशलिस्ट पार्टीके महामन्त्री, १९५३-५४; लोकसभाके सदस्य, १९६३-६७

६९५. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

चि० देव,

तुम्हारा स्वच्छ खत मिला। तुम्हारी बात समजा। अगर तुम्हे हवा बदलकी आवश्यकता नही थी तो मुझे कुछ भी कहने का नही रहता है। लेकिन जिसका शरीर अस्वस्थ है या मन उसे हवा बदली आवश्यक मानता हू। सब चीजमें समजने की सूक्ष्म शक्ति होनी चाहिए।

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे . गाधीजी-सम्बन्धी प्रलेख। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

६९६. पत्र : हुमायूँ कबीरको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

भाई हुमायु[1],

तुम्हारी किताब 'मनुष्य और नदी' मेरे पास पड़ी थी। खुर्शेदबहिन पढने के लिये ले गई। उन्होंने मुझे पढने की खास सलाह दी। मैं बहुत लिज्जतसे पढ़ गया। नवलकथा लिखने की तुमारी ताकतकी पहचान हुई।

हुमायु कबीर

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. (१९०६-१९६९); केन्द्र सरकारके शिक्षा मन्त्री, १९५७-६५; विश्वविद्यालय अनुदान आयोगके अध्यक्ष। बादमें कांग्रेसका त्याग करके बंगला कांग्रेसकी स्थापना की।

६९७. पत्र : वामनराव जोशीको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

भाई वामनराव,

तुम्हारा खत पाकर और तुमको कुछ भी इजा (क्षति) नहीं हुई है पढ़कर मुझे बहुत आनंद हुआ है।

लंबा खत भले लिखो।

वीर वामनराव जोषी
अमरावती (बरार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९८. पत्र : सत्यभामा देवीको

पूना
१९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय भगिनि,

आपका खत मंत्रीजीको भेजता हूं।[1] संभवित होगा वह सब होगा।

सत्यभामादेवी
ग्राम मालवा
पो० आ० तुंगी
जि० गया (बिहार)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४१७।

६९९. पत्र : हीरालाल शर्माको

पूना

[१९ अक्तूबर या उसके पश्चात्][1]

.. [2] पर मेरा समय इस उपचार गृह और सेवाग्रामके बीच बट जावे।

एसेम्बलीमे काग्रेसकी टिकटपर खडा होने की बात सुनकर मुझे बडा आश्चर्य हुआ है। और कुछ दु ख भी। उसके लिये मेरे आशीर्वाद मिल ही नही सकते हैं। जो सामाजिक प्राणी है, और सबके माथ सरलतासे रह सकता है, जिसमें दूसरी शक्तिया हैं और जो एसेम्बलीके कामके सिवाय दूसरे कामकी योग्यता नही रखता है, वही एसेम्बलीमें जा सकता है। इसमें ऊच नीचकी बात नही है। योग्यताकी ही है। खादी सेवक खादी कार्यके लायक है, इसलिए एसेम्बलीके कामके भी लायक है, यह नही कहा जायगा।

सरदारजी अब तक अच्छे हुए नही कहे जा सकते। उन्हे कब्ज है। कमोडपर डेढ़ दो घटे जाते थे। उसका कारण आतोंका (स्पाज्म)[3] अकड़ना हो सकता है। या भीतर कुछ एढेशन्स[4] होने के कारण यह सब तकलीफ हो सकती है। उनका पेल्त्रिक लूप[5] (कोलनका)[6] बहुत बड़ा है। पेटके अंदर खिचाव इत्यादि भी लगता है। दीनशाजी मानते हैं कि तीन महीने तक यहाका उपचार लेने से, जो कष्ट उन्हें आज होता है, उसका अधिकतर हिस्सा दूर हो जायगा। २२ नवम्बरको तीन महीने पूरे होंगे। वह मेरे साथ सेवाग्राम नही आने वाले हैं। मैं भी दो चार दिनके लिये ही सेवाग्राम जाऊगा, और वहासे बगाल, ऐसा आजका क्रम है। उसमें परिवर्तन हो सकता है। सरदारजीके उपचारके बारेमें कुछ कहना चाहते हैं तो लिखो। यहा मैं दो नवम्बर तक तो हूं। २१ तक रहना पड़ेगा तो रहूगा।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३४० और ३४१ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह पत्र गांधीजी ने हीरालाल शर्माको २७ अक्तूबर, १९४५ को लिखे पत्रके पूर्व लिखा था। लेकिन गांधीजी ने २ नवम्बर तक पूनामें ठहरने का निर्णय १९ अक्तूबरके आसपास लिया था। इसलिए लगता है कि यह पत्र उसके पश्चात् लिखा गया होगा।

२. पत्रके पहले तीन पृष्ठ कट-फट गये हैं।

३. साधन-सूत्रमें यह रोमन लिपिमें है।

४. साधन-सूत्रमें यह रोमन लिपिमें है; इसका अर्थ है "चिपकाव"।

५. यह रोमन लिपिमें है; इसका अर्थ है "पेडूका छिद्र"।

६. बड़ी आँत

७००. पत्र : एस० ए० वजको

२० अक्तूबर, १९४५

प्रिय वैज,

जिस बहाने भी हो, तुम्हारा पत्र मिला, जिसे पाकर बड़ी खुशी हुई। आशा है, तुम्हारा ठीक चल रहा होगा।

एस० ए० वैज, आई० आई० सी० ए०
सोहराब हाउस
२३५, हॉर्नबी रोड
फोर्ट, बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०१. पत्र : टी० एस० अब्दुर्रहमानको

[२० अक्तूबर, १९४५][1]

प्रिय मित्र,

आपका गत १५ सितम्बरका पत्र मिला।

दो गलतियाँ मिलकर एक सही चीज तो नहीं बना देतीं। आपने जिस प्रथम प्रतिबन्धका उल्लेख किया है उसकी परिस्थितियोंका स्मरण मुझे नहीं है। दूसरेको तो जानता हूँ। मेरी रायमें, वह खराब है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

जनाब टी० एस० अब्दुर्रहमान
मार्फत सी० ए० अब्दुल वहाब ऐंड कं०
आइरन ब्रिजके निकट
अल्लेप्पी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र इसी तिथिके कागजातोंके साथ रखा हुआ है।

७०२. पत्र : सुशीला गांधीको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा और मणिलालका पत्र मिला।

अरुण बहुत खिलाडी है। उसे पढ़ना अच्छा नही लगता। मुझे नही लगता कि आभा या जोहराका उसपर कोई रोब पडता है। कनु उसका कम ध्यान रखता है। उसे वालजीभाई पढाते हैं। एक पहाडे सिखाने वाला भी इन लोगोने रखा है। अब मुझे लगता है कि तुम्हारे साथ भेज देने पर यदि मैंने जोर दिया होता तो अच्छा होता। मैं तो अब ऐसे कामोके योग्य रह ही नही गया। अरुणको शायद वही भेज देना ज्यादा ठीक होगा।

मेरा कार्यक्रम तो अधरमें लटक रहा है। ऐसा लगता है कि मैं १५ नवम्बरके बाद ही सेवाग्राम जा सकूँगा। सरदारका इलाज बीचमें छोड़ देना मुश्किल मालूम होता है।

प्यारेलालको, लगता है, टायफाइड है। अच्छा हो जायेगा। मेरी तबीयत ठीक है। सम्भव है, नवम्बरके अन्तमें बगाल जाऊँ।

तुम सब मजेमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९५९) से

७०३. पत्र : नरेन्द्र त्रिवेदीको

२० अक्तूबर, १९४५

भाई नरेन्द्र,

यदि आशा रखी जाये तो निराशाको गुंजाइश मिल जाती है। इसके अतिरिक्त मिथ्या आशा करना तो दोष है। मणिबहनने जो लिखा है वह स्पष्ट है। यदि तुम समझते हो कि वह सेविका है—सो भी बीमार पिताकी, उनकी सचिव और सहायिका—तो शायद तुम अपने लेखमें परिवर्तन करना चाहो। यदि तुम उसके उत्तर देनेके ढग या आवाजमें दोष निकालोगे तो यही कहा जा सकता है कि तुम बहुत बड़े हो। मुझे तो कुछ भी याद नही है।

नरेन्द्र अं० त्रिवेदी
सिन्धी गली
सेटनाला बिल्डिग, पहली मंजिल
बम्बई – १४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०४. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२० अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुमने जो तर्क दिया है वही तो शाह और कुमारप्पाने भी दिया है। इसलिए सीधी-सी बात तो यही है कि ऐसे परिवर्तन स्वतन्त्र हिन्दुस्तान ही कर सकता है। अच्छेसे-अच्छे सुधार भी तभी किये जा सकते हैं जब वे लोगोंको अच्छे लगें। मगन मेहताका पत्र भी तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हें टाइपका काम क्यों करना चाहिए? मैं समझता हूँ यह काम तालीमी संघवालोंको करना चाहिए।

तुम्हारे स्वास्थ्यके बारेमें मुझे लगता है कि जब मैं वहाँ होऊँ उस समय तुम उपचार कराओ तो मुझे अच्छा लगेगा। किन्तु उसके लिए तुममें उत्साह होना चाहिए या फिर सरदार-जैसी तटस्थता। हालाँकि इस पद्धतिमें उनका विश्वास नहीं है, फिर भी उपचार करवाते जा रहे हैं।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०५. पत्र : लीलावती आसरको

२० अक्तूबर, १९४५

चि० लिली,

तेरा पत्र मिला। तू बहुत दम्भी है। डॉ० मेहताने कुछ नहीं माँगा होगा। व्यक्ति जो कहे उसका सीधा अर्थ करना चाहिए। यदि ऐसा सम्भव ही न हो, तो इसे उसकी कमजोरी समझकर दरगुजर कर देना चाहिए। इसलिए मेरी सलाह है कि तू अभी तो यहाँ चली आ। मुझे कुछ दिन यहाँ रुकना पड़ेगा। तेरा मन हलका होगा और यहाँ तुझे कुछ अनुभव भी होगा। इसके अतिरिक्त सुशीलाबहन तो यहाँ हैं ही। इसके बावजूद यदि तेरा मन न माने तो कुछ दिन दुर्गाके साथ बिता आ। उसकी नौकरी तो तुझे बजानी ही है। मैं तेरा नागपुर जाना निरर्थक मानता हूँ।

वहाँ अपने भाई और भाभीके पास रहते हुए सम्भवत तू अपना अध्ययन भी जारी रख सके, किन्तु इसके बावजूद तुझे शान्ति नहीं मिलेगी। इन सब बातोंपर विचार करके तुझे जो अच्छा लगे सो करना। इसमें तुझे आज्ञा क्या दी जा सकती है? यह तो सामान्य-सी बात है।

सम्भवत १५ तारीखके आसपास मेरा आश्रम जाना हो, और फिर वहाँ सात दिन रहने के बाद बंगाल।

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

७०६. पत्र : नवनीत शाहको

_।

२० अक्तूबर, १९४५

भाई नवनीत,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे मेरे सन्देशकी तो कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए। सन्देश माँगने का एक नई तरहका रोग पैदा हो गया है। अच्छे कामोंके लिए सन्देश किस बातका? अच्छे काम तो स्वयं ही अपना सन्देश होते हैं। यदि नवयुवक इतना समझ जायें तो वे बहुत-से प्रपंचोंसे बच जायेंगे।

तुम्हारा विवरण मैं पढ़ गया हूँ। तुम्हारे द्वारा एकत्रित किया गया पैसा हरिजन कार्यमें लगाया जायेगा।

नवनीत शाह
श्री युवक संघ
पो० बॉ० ७२६
कम्पाला, उगाण्डा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०७. पत्र : पी० एन० मैथ्यूको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

भाई मैथ्यु,

आपका पो० का० मिला है। मेरे जाने की तारीखका निश्चय नहीं हुआ है। सेवाग्राममें तो थोड़े दिन ही रहना है। जब मैं वहां स्थिर हो सकुं तब आइये। लिखकर पूछना।

पी० एन० मैथ्यु
देवस्कर बंगलो
धनतोली
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७०८. पत्र : वीणा चटर्जीको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

चि० वीणा,

तेरा और शैलेनका खत मिला। मेरे विचार कठिन हैं। मैं इस तरहकी कुटुंब मायामें श्रद्धा नहीं रखता हूं। तुम दोनोंको उचित लगे सो करो। मेरे साथ जाने में कोई फायदा नहीं है। मेरी तारीख भी दूर गई है। जाने का धर्म समजो तो जाओ। तेरी तो शादी भी नवेम्बरमें तो होना है ना? . . .[1] दोनोंकी तबियत अच्छी होगी।

वीणाबहिन
बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूटा हुआ है।

७०९. पत्र : कन्या गुरुकुलकी मुख्य अधिष्ठाताको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

मुख्य अधिष्ठाता,

आपका ४ सप्टेंबरका खत मिला।

मैं आप बताते हैं ऐसे कामोंमें नहीं पड सकता हूं, क्योंकि मेरे पास उतना समय ही नहीं है।

आचार्य, रामदेव स्मारक निधि
कन्या गुरुकुल
६०, राजपुर रोड
देहरादून

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१०. पत्र : डॉ० कृष्णाबाई निम्बकरको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

प्रिय भगिनि,

आपका १० अक्तूबरका खत मिला। आपके सब कागजात पढ़ गया। जाजूजी भी उसे देख गये होंगे।

मेरा अभिप्राय तो बन चूका है कि यज्ञ-रूपमें सबको कातना चाहिये। और जब यज्ञ पैसोंसे बहुत बढ़ जाता है ऐसा लोग मानने लगेंगे तब ही उसका सच्चा प्रभाव जाहिर होगा। काम कठिन हो या आसान उसकी परवाह हम क्यों करें? अब तो तुम भी पुना आ रही है और मद्रास छोडती है। देखो, अब क्या होता है।

डॉ० [श्रीमती] कृष्णाबाई निम्बकर
१९२, पूनामल्ले हाई रोड
डाकघर वेपरी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७११. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

चि० सतीशबाबु,

तुम्हारा १० अक्तूबरका खत मिला।

भाई सुधीर घोष आ गये। उनसे काफी बातें हुई है। वह तुमको सुनायेंगे। प्रफुल्लबाबुको लंबा खत लिखा है[1] वह तुम्हारे पास आना ही चाहिये, क्योंकि वह बताने का मैंने लिखा है उसपरसे सब पता चल जायगा।

मैं इतनी बात दोहरा दूं। अगर मेरे आने से वैमनस्य हो जाय तो मुझको बड़ा खटका लगेगा। आने का कारण बंगालकी हालतका साक्षात्कार कर सकूं और कुछ भी सहायता दे सकूं तो दूं।

तुम बहुत काम कर रहे हो। तबियत बिगडनी नहीं चाहिये। बिगडेगी तो मुझे बहुत बुरा लगेगा।

मेरे आने की तारीख तो अब भी निश्चित नहीं हो सकती है। यहांसे निकलने का आखरी दिन तो २१ नवम्बर है। इसलिए नवम्बरके अंत तक तो मैं वहां पहुंच ही सकूंगा ऐसी आशा करता हूं।

सब अच्छे होंगे।

राज कुमारी सीमलासे आज दिल्ही वापस पहुंचेगी और शायद एक महिनाके लिये लन्डन जाना होगा।

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (२४ परगना)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

पूना
२० अक्तूबर, १९४५

चि० सतीशबाबु,

रा[ज] कु[मारी] पर जो तुमने खत लिखा है, उसकी नकल मिली। रा[ज] कु[मारी] आज सिमलेसे दिल्ही पहुंची होगी, कल परसों उड़कर लंडन जायेगी।

१. देखिए पृ० ४००-४०१।

रा[ज] कु[मारी] को तुमने लिखा हो तो ठीक ही किया। दिलमें क्या रखना था? दिल खोलकर लिखा है तो मुझको कुछ कहने का अवसर भी मिलता है। तुम्हारी अनासक्तिकी मात्रा बहुत बड़ी होनी चाहिये। अपना शक भी प्रफुलबाबुके पास रखना, और वह कहे उसे सूनना और इन्कार करे तो मान ही लेना। जो खत मैंने भाई सुधीरके मार्फत भेजा है उसमें मैंने तो साफ कर दिया है ना कि जब तक तुम सब मिलकर बहुमतिसे नही एकमतिसे निर्णय न करो उसे निर्णय ही न माना जाय। ऐसा होते हुए भी मैं वहा आकर निश्चय करूगा, कहा जाना, और कहा नही। अखबारमें कुछ भी देनेसे रोक दिया है। मैं मानता हू इससे सब मुश्किल हल हो जाती है। सोदपुरमें कितने आदमी रह सकेंगे?

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१३. पुर्जा : चाँदरानीको

पूना
[२१ अक्तूबर, १९४५ के पूर्व][1]

मध्यम मार्गका अर्थ यह है। तूने जो एकाएक पसद किया उससे तू कुछ नही करेगी। अगर आदत हो गई है तो किसी नवयूवकको देखकर तुझे कुछ होने वाला ही नही। तेरे लिये सब भाई-पिता समान है। अगर माता आदर्शरूप है तो माता शिक्षिका है गुरु है। उनको तेरी चिंता रहेगी, वह तेरे लिये पति ढुंढेगी। माता ऐसी नही है तो किसी औरको तुने गुरुपद दिया होगा तो उनको तेरी सब फिकर होगी। ऐसा मौका आ सकता है जब तू ही ऐसे आदमीको देख लेगी। ऐसे मौकेपर वह पूर्वजन्मकी बात होगी। एकाएक मोहकी नही। तो भी तू कहेगी, चलो माको गुरुको पूछे। ऐसेमें चीज गुप्त तो होगी ही नही। यहा 'तू' चादके लिये नही 'तू' मर्यादा के लिये समज। यह मध्यम मार्ग। सत्यवती लिखती है वह आधुनिक वस्तु है करीब त्याज्य है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

आई सो अच्छा किया।

पत्रकी फोटो-नकलसे · चाँदरानी पेपर्स। सौजन्य · राष्ट्रीय गाधी संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. इस पत्रमें उल्लिखित सत्यवती देवीका निधन २१ अक्तूबर, १९४५ को हुआ था।

७१४. तार : सत्यवती देवीको – मसौदा[1]

२१ अक्तूबर, १९४५

सत्यवती
ट्युबरक्युलॉसिस हॉस्पिटल
किंग्सवे, दिल्ली

मैं जानता हूँ कि तुम्हारा चित्त शान्त है। इसे उसका साक्षी बनने दो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : ब्रजकृष्ण चाँदीवाला पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। सी० डब्ल्यू० १०५४३ से भी; सौजन्य : ब्रजकृष्ण चाँदीवाला

७१५. पत्र : अमृतकौरको

हवाई डाकसे दिल्ली

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

चि० अमृत,

हवाई डाकसे भेजा तुम्हारा १८ तारीखका पत्र आज (सुबह ९ बजे) पहुँचा।

सुशीलाके पढ़ लेनेके बाद पत्र नष्ट कर दिया जायेगा। अभी (९ बजकर १० मिनटपर) एक अस्पताल देखने वह तालेगाँव गई है। ११ बजे लौट आयेगी।

तुम्हारा समय जल्द ही बीत जायेगा और तुम फिर मेरे पास होगी। लेकिन स्वास्थ्य ठीक रखना। "चिन्ता किसी बातकी नहीं करनी है।"

जाकिरका प्रत्याख्यान[2] देखोगी ही।

तुमने जिनका उल्लेख किया है उन सभी मामलोंपर ध्यान दे रहा हूँ।

आशा करता हूँ कि प्यारेलाल धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। उसका रंग मृत

१. यह मसौदा सुबह तैयार किया गया था, लेकिन कुछ समय बाद गांधीजी को सत्यवती देवीकी मृत्युका समाचार मिल जाने के कारण यह भेजा नहीं गया। इसकी एक नकल सुशीला नैयरने २५ अक्तूबरको ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको भेज दी थी।

२. १३-१०-१९४५ के डॉन की रिपोर्टका; देखिए पृ० ४०२, पा० टि० २।

व्यक्तिकी तरह जर्द पड़ गया है। लेकिन हो सकता है, यह बीमारीके वेशमें वरदान ही साबित हो। हम उम्मीद तो ऐसी ही करे।

ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१६९) से, सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०५ से भी

७१६. पत्र : खुर्शेदबहन नौरोजीको

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

वहाला बहन,

तुम्हारा पत्र मेरे सामने है।

सत्यवतीको एक तार[1] भेजा है। उसे बता दो कि उसका खयाल मुझे बराबर बना हुआ है। जो लोग उसे जानते हैं या जिन्होंने उसे जाना है, उनके लिए उसका महान साहस और देशप्रेम एक प्रेरणा-रूप है।

तुम्हारा आजाद हिन्द फौजका विवरण मुझे अच्छा लगा है, लेकिन उसने मेरे मनमें उत्साहका सचार नही किया है।[2] तुम्हारा यह कामना करना कि मेरे पास भी ऐसी सामग्री होती तो कितना अच्छा होता, बिलकुल स्वाभाविक ही है। क्या तुम्हें मालूम है कि अगर मैं चाहूँ भी तो यह सम्भव नही है?

वहाँ तुम्हारे कार्यमें तुम्हारी सहायता करने के लिए मैं तुम्हें क्या सामग्री भेज सकता हूँ?

स्नेह।

बापू

श्री खुर्शेदबहन नौरोजी
८२, दरियागज, दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४३१।

२. खुर्शेदबहन नौरोजी अ० भा० कांग्रेस कमेटी द्वारा नियुक्त आजाद हिन्द फौज बचाव समितिमें काम कर रही थीं।

७१७. पत्र : भूलाभाई देसाईको

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

भाई भूलाभाई[1],

मेरे अक्षर पढ़ना मुश्किल तो होता ही है, इसलिए यह पत्र अच्छे अक्षरोंमें लिखवा रहा हूँ।

मेरे पास और सरदारके पास भी तुम्हें केन्द्रीय विधान-सभाके चुनावमें खड़ा करने के सम्बन्धमें तार आते रहते हैं। मैं तो चुनावमें कोई रुचि लेता नहीं। सरदार के आसपास दरबार लगता रहता है। लेकिन उसकी मुझे खबर नहीं मिलती। सामान्यतः वे मुझसे बात नहीं करते, और न मैं पूछता हूँ। मैं अपना काम करता हूँ, वे अपना। इस समय हमारे एकसाथ होने का बस एक ही कारण है — उनका नैसर्गिक उपचार। उन्हें नैसर्गिक उपचारमें विश्वास नहीं है, मुझे बहुत है। शल्यक्रियामें बहुत जोखिम है। डॉ० देशमुखके सिवाय और कोई डॉक्टर इसकी सलाह नहीं देते। इसलिए यह नैसर्गिक उपचार केवल मेरे विश्वासके आधारपर चल रहा है, और इसीलिए मैं उन्हें डॉक्टर मेहताके यहाँ लाया हूँ, क्योंकि मेहतापर मेरा विश्वास है। नैसर्गिक उपचारका मेरा ज्ञान केवल सतही है। यह प्रस्तावना मैंने जरूरी समझकर दी है।

तुम्हारे बारेमें जो कोई बात सरदारके पास आती है, वे उसे मेरे सामने रखते हैं। मेरी सलाह चूंकि तुम स्वीकार कर लेते हो, इसलिए मैं मान लेता हूँ कि तुम्हारे अपने मनमें केन्द्रीय विधान-सभामें जाने का कोई लोभ नहीं है। अतः इन तार भेजने वालों के पीछे तुम्हारी प्रेरणा भी नहीं होगी। कई बड़े-बड़े आदमी तो यह चाहते ही हैं कि तुम केन्द्रीय विधान-सभामें जाओ। यदि मैं पीछे न होऊँ, तो शायद सरदार भी नरम पड़ जायें। लेकिन मैं स्वयं दृढ़ हूँ, क्योंकि मैं तो केवल तुम्हारे हितेच्छुका ही काम करना चाहता हूँ। मुझे तुमसे, अगर तुम कर सको तो, बड़ा काम करवाना है। मैं तो तुम्हें जनताके प्रतिनिधिके रूपमें देखने का इच्छुक हूँ। मैं यह नहीं मानता कि तुम बूढ़े हो गये हो। तुम भी १२५ वर्ष तक क्यों न जियो? मेरी-जैसी इच्छा तुम्हारी न हो, तब भी सेवा करने के लिए १२५ वर्ष तक जीने की इच्छा करने की प्रेरणा तो मैं सबको देने वाला हूँ। मेरी इच्छाके पीछे कोई शक्ति अथवा प्रयत्न न हो, ऐसी

१. (१८७७-१९४६); केन्द्रीय विधान-सभामें कांग्रेस संसदीय दलके नेता; बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष; कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य

बात नही है। अगर न हो, और मेरी इच्छा व्यर्थ हो जाये तो मैं वह भी स्वीकार कर सकूँगा। इसलिए अगर मेरी मृत्यु आज ही आ जाये, तब भी मैं डरूँगा नहीं। बल्कि अन्तिम साँस तक यही इच्छा करता रहूँगा, क्योंकि मुझे सेवा करनी है— अभी मेरी सेवाकी साध पूरी नही हुई। साध पूरी करने की मेरी जो उत्कण्ठा है, वह हम सबमें हो।

इस भूमिकाके साथ मैं तुम्हे सलाह देता हूँ कि तुम स्वय ही एक शोभनीय वक्तव्य प्रकाशित करो। उस वक्तव्यमे तुम उन लोगोका आभार मानो जो तुम्हारे लिए प्रयत्न कर रहे हैं। और उन्हे बताओ कि अभी विधान-सभामें जाने का तुम्हारा कोई इरादा नही है, बल्कि बाहर रहकर ही जो सेवा बन सकती है तुम कर रहे हो और करते रहोगे। आयु हुई, और आगे कभी तुम्हीको लगे कि विधान-सभामें भी जाना चाहिए, तो तुम खुद ही मैदानमें आओगे और लोगोसे वोट माँगोगे।

इस समय तुम जिन कैदियोके बचावका कार्य कर रहे हो,[1] वह मुझे पसन्द है। इसमें तुम्हे यश भी मिलेगा। मेरी यह भी इच्छा है कि तुम जनसाधारणके सम्पर्कमें आओ, जैसे जवाहरलाल आता है, सरदार आते हैं, कुछ हद तक मौलाना आते हैं। सबसे बढ़िया उदाहरण तो मैं शायद राजेन्द्रबाबूका दे सकता हूँ। बिहार राजेन्द्रबाबूको खोजता फिरता है, राजेन्द्रबाबू बिहारको खोजने नही जाते। और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं, लेकिन तुम्हे उदाहरण देने की जरूरत नही है। इतना जो लिख दिया, यह भी मैं तुम्हारे लिए बहुत अधिक मानता हूँ। लेकिन मैं अपने मोहका सवरण नही कर सकता। इस मोहके आगे भी यदि सात्विक विशेषण लगाया जा सकता हो तो यह मोह सात्विक ही है, इसलिए इसे छिपाने की जरूरत नहीं है।

तुम कुशल होगे और सफल हो रहे होगे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य . नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सितम्बर, १९४५ के प्रस्तावके अनुसार तेजबहादुर सप्रू और भूलाभाई देसाईकी एक समिति बनाई गई थी, जिसे आजाद हिन्द फौजके शाहनवाज खाँ, सहगल और ढिल्लोंके खिलाफ चलाये गये राजद्रोहके मुकदमेमें बचाव पक्षकी पैरवीका काम सौंपा गया था। बादमें इस समितिमें जवाहरलाल नेहरू, आसफ अली और काटजू भी शामिल कर लिये गये थे।

७१८. टिप्पणी

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

मैं इसे पढ़ गया हूं। मुजे अच्छा लगता है। थोड़ा आगे बढ़ना चाहता हूं। खादी सत्य और अहिंसाका प्रतीक है। उसे सरकारकी दयापर निर्भर नहीं रहना है। समझ-बूझकर यानि खादीकी सच्ची शक्तिको महसूस करके उसे अपनावें तो बात ही बदल जाती है। और तब कपड़ोंकी तंगी सहजमें मीट जाती है। और शांतिमय उपायसे स्वराज्य भी आ सकता है और उससे हमारा और सरकारका जगतमें जयघोष होगा। कभी-न-कभी तो ऐसा वकत आवेगा ही। उसका शीघ्रतासे आना नई योजनाके सार्वजनिक अमलपर निर्भर है। मैं तो जानता हूं कि ऐसा भी समय आ सकता है कि हमारे दुकानकी खादी[की] बिक्री भी बंद करनी पड़े। स्वावलंबन ही उसका सरल उपाय है। इस दृष्टिसे देखने से श्री जाजूजी का लेख आरंभका और आवश्यक कदम है।

मो० क० गांधी

सर्वोदय, १९४५

७१९. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

भाई जाजूजी,

इसके साथ लेख सुधारकर और नोंध लिखकर भेजता हूं।[1] पसंद न आवे तो जैसा है ऐसा मेरी नोंधके सिवाय छपवा सकते हो।

चि० नारणदास कल आते हैं। लेखकी नकल मैंने रखवा ली है। ना० से चर्चा करूंगा।

तबियत अच्छी होगी।

अ० भा० चर्खा संघ
सेवाग्राम
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

७२०. पत्र : अनन्तरामको

पूना
२१ अक्तूबर, १९४५

चि० अनतराम,

तुमारा २-९-४५ का खत पूरा आज ही पढ़ सका। अच्छा है।

रामनाममें सब-कुछ है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—ऐसा क्रम है। अर्थ काम, धर्म और मोक्षका विरोधी नही हो सकता है। इसलिए अर्थ=अन्नवस्त्रादि आवश्यक वस्तु काम=शुभ इच्छा। रामनाम परिस्थिति और कालसे अतीत है, होना चाहीये। लेकिन यह नाम कठसे नही हृदयसे निकालना है। अभ्याससे निकलना ही है।

'गीताजली'[1] के गीतका बगाली आशादेवीसे लिखवाकर भेजो।

खूब अच्छे बनो, खूब सेवा करो।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (एस० जी० १३३) से

७२१. पत्र : श्रीमन्नारायणको

२१ अक्तूबर, १९४५

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा लेख[2] कल पूरा किया। मै उसे रजिष्टर [डाक] से वापिस करता हू। जगह-जगहपर जो लिखा है सो पढो। जचे सो सुधारणा करो। पाकिस्तानका तो इशारा ही हो सकता है। आखिरके प्रकरणोके बारेमे कुछ भी गूढता नही पाता हू। न कुछ समर्थन है। मेरा अभिप्राय है कि ज्यादा परिश्रमकी, और विचारकी आवश्यकता है। अगर ठीक समझो तो, किशोरलाल और विनोबाको समय मिले तो, उनके साथ वार्तालाप करो। मेरी प्रस्तावना[3] स्थगित करता हू। अगर मेरे पास आना है तो आओ। ठहर सकते हैं तो मेरे आने तक ठहरो। जैसे उचित लगे वैसा करो।

मदालसा अच्छी होगी।

श्रीमन नारायण अग्रवाल
कामर्स कालेज
वर्धा

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रवीन्द्रनाथ ठाकुर-रचित

२ और ३. गांधीयन कॉंस्टीट्यूशन फॉर फ्री इण्डिया; ३० नवम्बर, १९४५ को गांधीजी द्वारा लिखी इसकी प्रस्तावनाके लिए देखिए खण्ड ८२।

७२२. पत्र : मणिलाल गांधीको

२१ अक्तूबर, १९४५

चि० मणिलाल,

तुम दोनोंका पत्र मिला।

सब लोग अब अरुणके पीछे लगे तो हैं। देखूं, क्या होता है। यह पत्र मैं आज रातमें लिख रहा हूँ। उसने भी लिखने को कहा है। यहाँ अभी-अभी बारिश हुई।

मैंने तुमसे कहा है कि मेरा काम तो होता ही रहता है। सुशीलाबहन जबरदस्त काम करने वाली है। राजकुमारीका सारा काम उसने अपने कन्धोंपर ले लिया है। कनैयो तो है ही। गुजरातीके लम्बे पत्र तथा और भी विशेष काम जो मैं उसे सौंपता हूँ, वह झटपट निबटा देता है। इसलिए मेरा कोई काम अटकता हो या मुझे कोई अड़चन होती हो, सो बात नहीं है। मैं ठीक सोता हूँ और आराम करता हूँ। इसलिए मेरे बारेमें कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

प्यारेलालका बुखार आज उतरा तो है। शायद अब चला जायेगा। सुशीला उसकी परिचर्या तो करती है, लेकिन इलाज उसका नैसर्गिक चिकित्साके अनुसार हो रहा है।

अरुण किसीको तंग नहीं करता। मस्त रहता है। सुमि नागपुर आ गई है।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६१) से

७२३. तार : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

पूना
२२[1] अक्तूबर, १९४५

ब्रजकृष्ण चाँदीवाला
१, नरेन्द्र प्लेस
दिल्ली

आशा है भारतकी एक सबसे बहादुर सेविका[2] की मृत्युपर कुटुम्बी और मित्र शोक नही मनायेंगे। हम अपने-आपको मात्र भारतकी स्वतन्त्रताके लिए समर्पित करके उन्हें अमर बनायें।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५४४) से; सौजन्य : ब्रजकृष्ण चाँदीवाला। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

७२४. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

२२ अक्तूबर, १९४५

चि० चिमनलाल,

बबुड़ी फिर वहाँ भी बीमार पड गई, यह क्यो? क्या वह कटि-स्नान करती है? कोई परिश्रम तो नही करती? क्या खाती है? मच्छरदानीका उपयोग करती है या नही? पैसे तो नियमके अनुसार देने ही थे। मेरा खयाल था कि वे जाजूजी को दिये गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० जी० १२८) से

१. सी० डब्ल्यू० साधन-सूत्रमें "२३" है।
२. सत्यवती देवी

७२५. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

[२२ अक्तूबर, १९४५][1]

चि० बबुड़ी,

तू बीमार क्यों पड़ जाती है? अगर खान-पान और खुली हवाका ध्यान रखा जाये, तो तुझे कुछ नहीं होना चाहिए। पानी उबला हुआ पीती है या नहीं? रामनाम लेना आता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० जी० १२८) से

७२६. पत्र : जतीनदास अमीनको

पूना
२२ अक्तूबर, १९४५

चि० अमीन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो तुमने मुझे दोष-मुक्त कर दिया न?

एकादश व्रतोंकी[2] कद्र करने, सभी शास्त्रोंको जानने और रचनात्मक कार्यसे परिचित होने पर भी कोई व्यक्ति आश्रमवासी नहीं बन सकता। हाँ, व्रतोंके पालन से तो बन सकता है। ऐसा लगता है कि तुम यह नहीं देख पाये कि व्रतोंके पालनमें रचनात्मक काम तो आ ही जाता है। अब उन्हें फिर देख जाना। जो व्यक्ति बहुत से या कुछ लोगोंके केवल दोष ही देखता है वह अपने दोष नहीं देख सकता। तुम ऐसी भूल मत करना।

खुद दोष करने से कोई चौधरी नहीं बन सकता। वैसा तो वह अपने दोषोंको दूर करके और चौधरीके गुणोंको आत्मसात् करके ही बन सकता है।

सेवाग्राम आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र उसी कागजपर लिखा गया था, जिसपर पिछला पत्र।

२. अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर-श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी तथा स्पर्शभावना (अस्पृश्यता)

७२७. पत्र : चाँदरानीको

पूना
२२ अक्तूबर, १९४५

चि० चांद,

सत्यवती गई। दुःखसे छुटी। वह तो अमर है। हमारी फर्ज रोने का नहि लेकिन हमारी फर्ज पूर्ण तरह अदा करके हिंदुस्तानकी आझादीके लिये अपने को समर्पित करने का है।

श्री चादरानी (नर्स)
दागा मेमोरियल हॉस्पिटल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२८. पत्र : काशी गांधीको

२३ अक्तूबर, १९४५

चि० काशी,

यह पत्र तो मैं लिखने के लिए ही लिख रहा हूँ — सिर्फ यह सूचित करने के लिए कि दूर होने के बावजूद तुममें से किसीको मैं भूल नहीं गया हूँ।

कृष्णचन्द्र लिखता है कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती और आबोहवा बदलने के खयालसे तुम नागपुर जाना चाहती हो। नागपुरमें आबोहवा बदल सकती है, इसमें मुझे सन्देह है। क्या इसकी अपेक्षा मदालसाका घर अच्छा नहीं रहेगा? मदालसा को भी यह निश्चय ही अच्छा लगेगा। यह तो मेरा सुझाव-भर है। तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७२९. पत्र : दुर्गा देसाईको

२३ अक्तूबर, १९४५

चि० दुर्गा,

मुझे जो पत्र मिलते हैं उनके आधारपर मैं पाता हूँ कि तुम दोनों बीमार रहते हो। ऐसा क्यों? बाबलो आनन्दपूर्वक होगा।

अब शल्य-क्रिया करानेके बाद सुशीकी वह व्याधि (जिसका कि सन्देह था) मिट गई होगी। जहाँ मैं यह पत्र लिखवा रहा हूँ वहीं सुशीलाबहन काम कर रही है। वह मुझे बताती है कि सुशी तो अब बिलकुल ठीक हो गई है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३०. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे तो ऐसा नहीं लगता कि अकारण हमारी ओरसे[1] ढिलाई हो रही है। इसलिए मेरा मन यह स्वीकार करनेको तैयार नहीं कि हमारी ढिलाईके कारण व्यग्रता अथवा अनुशासनहीनता आती है। अनुशासनहीनता तो आनी ही नहीं चाहिए। और यदि ये लोग बिना अनुमतिके प्रसूति केन्द्र आरम्भ करेंगे तो उन्हें पैसा कहाँसे मिलेगा? यदि वे स्वयं ही पैसा एकत्रित करके आरम्भ करें तो हम कुछ नहीं कह सकते। इसके अतिरिक्त मैंने तो कह दिया है न कि जहाँ भी लोग काम करनेको तैयार हों वहाँ हमें परिपत्र निकालकर अनुमति दे देनी चाहिए?

ठक्कर बापा
बजाजवाड़ी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके प्रबन्धक मण्डलकी ओरसे

७३१. पत्र : जेठालाल गांधीको

२३ अक्तूबर, १९४५

चि० काकु,

मुझे यह अच्छा लगा कि बुआ[1] आकर तेरे साथ रह गई। किन्तु वे त्रावण-कोरमें घूम रही हैं और भाषण दे रही हैं, यह अच्छा नही लगा। बुआ तो मुझसे बडी हैं, इसलिए कहा जा सकता है कि बुढापेमें यह नई प्रवृत्ति उन्हें कैसे शोभा दे सकती है? यदि उन्हें यशका लोभ हो तो मैं उसे गलत मानता हूँ। मुझे इसमें सन्देह नही है कि इस अवस्थामे किसी भी तरहके लोभके वशीभूत होकर ऐसी प्रवृत्ति अपनाना तनिक भी शोभा नही देता। मैं नही जानता कि कौन उनके साथ है और किसने उन्हें प्रोत्साहन दिया है। तू इस बारेमें पता लगाना और यदि मेरा सन्देश बुआ तक पहुँचा सके तो पहुँचा देना। तू क्या कर पाया, इस बारेमें मुझे सूचित करना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३२. पत्र : कमाल खांको

२३ अक्तूबर, १९४५

भाई साहेब,

आपका पत्र मिल गया है।

गद्दीनशीनीका सुअवसर आने पर आपको मुझसे कुछ पूछना हो तो लिखिएगा।

आप सानन्द होंगे।

ठाकोर साहेब कमालखानजी
मार्क्स फार्म
पारडी
जिला सूरत

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. गांधीजी की बहन, रलियातबहन वृन्दावनदास

७३३. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

भाई बनारसीदास,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। उसे मैं श्रीमनजी को भेजता हूं।

नकरी [शुद्ध] हिन्दीका प्रचार या नकरी उर्दूका प्रचार रोकने वाले हम कौन हैं? ऐसा प्रयत्न भी करे तो निष्फल ही हो सकता है। हमारा कर्त्तव्य तो दोनों प्रथा का—हिन्दी और उर्दू, जहां तक हो सके, एक करने का है। और यह तो तब ही हो सकता है जब दोनों लिपि और दोनों प्रथाको जानने वाला एक बड़ा वर्ग पैदा हो।

राष्ट्रभाषाका तुम क्या अर्थ करते हो वह कुछ समझने में नहीं आया है। मेरा अर्थ तो अब स्पष्ट ही है कि वही मनुष्य राष्ट्रभाषा जानता है जो दोनों लिपिओंको समझता है और दोनों प्रथाओंमें लिख सकता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
टीकमगढ़
बुन्देलखण्ड

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५१८) से

७३४. पत्र : श्रीमन्नारायणको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

चि० श्रीमन,

रजिस्टर [पत्र][1] तो आज ही होगा। मैं एक चीज लिखने का भूल गया। मेरी सूचना यह है कि तुम्हारे जो कुछ लिखना है उसे हिन्दुस्तानीमें लिखो और अंग्रेजीमें देना आवश्यक लगे तो साथ-साथ अंग्रेजीमें दे दो। इस वक्तका लेख तो अंग्रेजीमें है, लेकिन मेरी सूचना है कि साथ साथ वह हिंदुस्तानीमें भी होना चाहिये। अच्छा तो

१. देखिए पृ० ४३६।

होगा कि देवनागरी और उर्दू लिपिमें भी रहे, और साथ छपे। अग्रेजीका शोख और मोह कभी तो छोडना ही है, और हम शुरू न करें तो कौन करे?

बनारसीदासका कार्ड इसके साथ भेजता हू। मेरे जवाब[1] की नकल भी भेजता हू।

श्रीमन नारायण अग्रवाल
जीवन कुटीर
वर्धा

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३५. पत्र : नायरबुल भोवालीको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

भाई भवाली,

आपने भेजी हुई 'बबुस्तान' नामक किताब मिली। बगालीका मेरा ज्ञान इतना नही है जिससे मैं पुस्तक पढ सकू और समझ सकू।

नायरबुल भोवाली
८५ एफ०, वेलेज्ली स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

७३६. पत्र : डॉ० एच० के० लालको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

भाई लालजी,

आपका ८ सप्टेंबरका खत मुझे मिला था। उसके पहलेके भी मिले थे। दाक्तर होते हुए भी आप शीघ्रतासे गरम हो जाते हैं ऐसा आपके खत सिद्ध करता है। इतना ही कहूंगा कि मैंने खत आते ही तलाश शुरू कर दी थी अगरचे मैं बहुत काममें फंसा हुआ था। अब मेरे लड़केने तलाशके बाद १८ अक्तूबरको मुझे खत लिखा।

आपको मैं खबर दूं कि रक्तपीत वालोंका काम [कुष्ठ कार्य] कस्तूरबा स्मारक निधिके मारफत शुरू हुआ है; और तरहसे भी हो रहा है। अगर आपकी मददकी कुछ दरकार होगी तो मदद ली जायेगी। अभी तो मेरे नजदीक कुछ है नहीं, और आपका ८ सप्टेंबरका खत मुझे डराता है, ऐसा भी मैं कबूल कर लूं।

आप पंजाबके ही लगते हैं इसलिये हिंदुस्तानी अच्छी तरहसे जानते ही होंगे। अंग्रेजी तो आपकी मादरी जबान नहीं है और जिसे आप मादरी जबान जैसी शुद्ध लिख नहीं सकते उसमें मुझे क्यों लिखें?

डा० एच० के० लाल, एम० बी० बी० एस०
१, पूसा रोड
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३७. पत्र : महादेवशास्त्री दिवेकरको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

पंडितजी,

आपका खत और हिन्दु-मुस्लीम वाली किताबकी ३ नकल मिली है। जब आप गुजराती जानते हैं, हिंदी जानते हैं तो मुझे अंग्रेजीमें क्यों लिखा?

आपने पोरबंदर देखा और वहां व्याख्यान भी गुजरातीमें दिये यह पढ़कर आनंद हुआ।

आपकी किताब पढ़ने का समय कब मिलेगा यह तो नहीं कह सकता हूं।

पं० महादेवशास्त्री दिवेकर
मिरज

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३८. पत्र : वासुदेव दास्तानेको

२३ अक्तूबर, १९४५

भाई दास्ताने,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। मैंने समयके अभावसे तुम्हारे पत्रका उत्तर नही दिया ऐसा नही है, लेकिन मैंने नई वात लिखी है इसीलिये दूसरा उत्तर देना अनावश्यक हो गया। नई वात यह है कि आज तक सार्वजनिक कामको प्रथम माना है और कौटुम्विक काम उसके साथ-साथ जितना हो सके उतना किया है। ऐसा करने की शक्ति तुम्हारेमें नही है ऐसा अक्का[1] की सब वात सुनकर मुझे लगा है। अक्काकी ओर तो तुम्हारे देखना हो पड़ता है, लेकिन सव लडकियोकी ओर भी देखना पड़ता है, उसकी तजवीज भी करनी पड़ती है। पत्निका पालन भी तुम्हारे करना ही है, और न करो तो कौन कर सकता है? इसलिये तुम्हारे जैसेका धर्म कौटुम्विक वोझको प्रथम पद देना और वादमें जितना समय मिल सके इतना समग्र प्रजाको देना। जो मनुष्य कौटुम्त्रिक वोझ धर्म समझकर उठाता है वह भी सेवा-कार्य करता ही है। कौटुम्विक वोझ और कौटुम्विक भोग इन दोका विभाग अच्छी तरहसे जानना चाहिए। भोग-विलास तो तुमने कवसे छोड़ रखा है। ज्यादा वहस तुम्हारे साथ क्यो करू? मैंने जितना लिखा है उसमें से काफी पता मिलना चाहिये। ऐसा न करने से विपरीत परिणाम आता है यह तो स्पष्ट होना ही चाहिये।

"[तुम्हारे अन्य प्रश्नोंके उत्तर] नही दे सकता हू" वह वाक्य मैंने किस दृष्टिसे लिखा वह तो मैं नही कह सकता हूं। और सोचने से फायदा भी क्या? अगर समयका अभाव था तो मुझे लिखना चाहिये था कि वाकीके उत्तर दूसरे समय दूगा। मैंने जो खत[2] तुमको अक्काके मारफत भेजा है उसमे इतनी दृष्टि तो स्पष्ट थी और आज है कि दूसरी झझटमें तुमको न डालकर, तुम्हारा धर्म जैसा मैं देखता हू तुमको वता दू। जब तुम मेरी इस दृष्टिको न समज सको, न कवूल कर सको तव ही दूसरा प्रश्न उठता है। इस खतकी चर्चा विनोवाके साथ, किशोरलालके साथ कर सकते हैं। घोत्रे[3] वगैरह रिस्तेदार तो है ही।

वासुदेव दास्ताने
भुसावल

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. वासुदेव दास्तानेकी पुत्री सरयू घोत्रे
२. उपलब्ध नहीं है।
३. वासुदेव दास्तानेके दामाद रघुनाथ श्रीधर घोत्रे

७३९. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको[1]

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

बापा,

गुजरातीकी तालीमी योजनाका अमल साबरमतीमें होने में मुजे आपत्ति नहीं है, अगर तालीम लेने जो बहेनें आवेंगी वह लायक हो या देहाती हो या बाहरकी भी हो। तब भी देहातमें काम करने वाली या काम करने की इच्छा रखने वाली हो।

बापु

मूल पत्रसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

७४०. पत्र : अबुल कलाम आजादको

पूना
२३ अक्तूबर, १९४५

मौलाना साहिब,

आपका खत मिला। मैं तो चाहता हूं कि मुझे इतना वक्त मिले जिससे मैं उर्दूके अच्छे हर्फ निकाल सकूं।

नवम्बरके शुरूमें आप आरामके लिये कहीं जा सकें तो अच्छा होगा। काम तो कामके लिये है ही—लेकिन बाज दफा आराम कामके लिये और बहुत कामके लिये जरूरी रहता है।

राजकुमारी आज डाक्टर सारजन्ट[2] और डाक्टर जाकिर हुसैन साहबके साथ लन्दन जाने के लिये आवेंगी। लन्दनमें सब जगहसे तालीमयाफ्ता लोग आवेंगे। उनकी सभा डाक्टर सारजन्टने बुलाई है। उसमें राजकुमारी और डाक्टर जाकिर हुसैनको न्यौता मिला था। उनको एसेम्ब्ली [कांफ्रेंस] के लिये नाम देने की जरा भी तमन्ना नहीं थी— मेरे साथ बहस हुई थी। लन्दन जाने से [वह] दूसरोंको भी मिल सकेगी।

सरदारका इलाज तो चल रहा है। पांच रोजके लिए बम्बई आना पड़ेगा।

मूल उर्दूसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र गुजराती लिपिमें है।
२. जॉन सारजन्ट

७४१. तार : राधाबाई सुब्बारायनको

२४ अक्तूबर, १९४५

राधाबाई सुब्बारायन[1]
तिरुचेंगोडु

दक्षिणसे आये प्रतिनिधियोके साथ कभी भी चुनाव-सम्बन्धी किसी मुद्देपर चर्चा नही की। कोई दिलचस्पी नही ली है। सरदार चुनावोंके बारेमें शायद ही कभी बात करते है। लेकिन चुनावके लिए इतनी परेशानी क्यो ?[2] देशभक्तोकी एकमात्र महत्वाकांक्षा सेवा है।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७४२. पत्र : के० सन्तानम्को

२४ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सन्तानम्,

पत्रके लिए बहुत धन्यवाद। तुम्हारा लेख पढ़ा। इसमे ऐसा कुछ नही है कि तुम अपना काम आगे नही बढा सकते।

के० सन्तानम्
'हिन्दुस्तान टाइम्स'
पो० बॉ० ४०, नई दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० पी० सुब्बारायनकी पत्नी
२. केन्द्रीय विधान-सभाके लिए राधाबाईको उम्मीदवार बनाने से इनकार कर दिया गया था।

७४३. पत्र : नीलकण्ठ मशरूवालाको

२४ अक्तूबर, १९४५

चि० नीलकण्ठ[1],

तेरा पोस्टकार्ड मिला। चि० अरुणसे सभीने पूछा और मैंने भी पूछा। वह तो मेरे साथ ही निकलना चाहता है। मैं उसे जोर-जबरदस्तीसे नहीं भेजना चाहता। इसलिए तू तो अपनी निश्चित तारीखको रवाना हो जाना।

मशरूवाला
साउथ एवेन्यू रोड
सान्ताक्रुज

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७४४. पत्र : डॉ० एम० डी० डी० गिल्डरको

२४ अक्तूबर, १९४५

भाई गिल्डर,

सरदार बुलायें या न बुलायें, आप जाकर उनके स्वास्थ्यकी जाँच-पड़ताल कर आयें। और मुझे सूचित करें कि आपके विचारसे उनके स्वास्थ्यमें कितना सुधार हुआ है अथवा वह खराब हुआ है या यह कि आप कुछ कहने की स्थितिमें नहीं हैं।

डॉ० एम० डी० डी० गिल्डर
जेनिथ बिल्डिंग
सर फीरोजशाह मेहता रोड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नानाभाई मशरूवालाके पुत्र और सुशीला गांधीके भाई

७४५. पत्र : जहाँगीर पटेलको

२४ अक्तूबर, १९४५

भाई जहाँगीर,

तुम्हारा पत्र मिला। धीरे-धीरे गुजराती लिखने और बोलने की आदत डालना। थोडी गुजराती प्रतिदिन पढ़ना और लिखना।

तुम्हारा पत्र स्पष्ट है और मैं उसे समझ गया हूँ। मुझे लगता है कि फिलहाल हमें तुरन्त सैनेटोरियममें चले जाना चाहिए और जब बिजली पानी मिल जाये तो त्र्यबक रोड चले आयें। किन्तु यदि भाई दिनशाको यह बात पसन्द न हो तो मैं ऐसा नही करना चाहता।

वेरियरके बारेमें समझ गया। शेष जब तुम यहाँ आओगे।

आशा है, माँजी स्वस्थ होगी और तुम्हें फिर बुखार नही आया होगा।

जहाँगीर पटेल
पटेल ब्रदर्स
१०, चर्चगेट स्ट्रीट
बम्बई–१

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

७४६. पत्र : वेणुबाई गोडबोलेको

२४ अक्तूबर, १९४५

बहिन वेणुबाई,

मुझे भाई हरिभाऊ[1] ने खबर दी कि प्रो० गोडबोलेका आज देहात हो गया। मैं तो उनको अच्छी तरह जानता था। उन्होंने देशके कारण असहयोगमें हिस्सा लिया था। उनके स्वर्गवासका सच्चा शोक यह कि उनके त्यागकी शक्ति तुम्हारेमें भी हो।

वेणुबाई गोडबोले
'विनायक घर'
प्रभात रोड
डेक्कन जिमखाना
पुना–४

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. हरि गणेश पाठक

७४७. पत्र : सुशीला गांधीको

पूना

२५ अक्तूबर, १९४५

चि० सुशीला,

कल चि० नीलकण्ठका कार्ड आया था। उसमें लिखा था कि तेरी इच्छा है कि अरुण नीलकण्ठके साथ तेरे पास पहुँच जाये। मैंने तो यह अरुणसे कहा। कनुका ज्यादासे-ज्यादा प्रभाव उसपर है, उसने भी कहा। अन्य लोगोंने भी कहा। लेकिन उसने जो एक हठ पकड़ी तो टससे-मस नहीं हुआ। कहता है, मेरे साथ ही आयेगा। इसलिए अब तुम सबको अरुणके बिना ही दिवाली मनानी पड़ेगी। किसी तरह काम चला लेना। अब यह तो तेरी भी इच्छा नहीं होगी कि मैं अरुणको जबरदस्ती भेजूं। बड़ी मुश्किलसे कल रातको इसके पीछेका पत्र उसने लिखकर दिया। पढ़ने में उसकी रुचि बिलकुल नहीं है। खेलने में और साइकिल चलाने में बहुत है। जो सम्भव होगा, वह सब यहीं करना पड़ेगा। अरुण खुद तो मस्त रहता है। थोड़ा पढ़ता तो है, लेकिन बहुत ही थोड़ा। इस सारे फिसड्डीपनके लिए, उसकी माँ होने के नाते, मैं तुझे सबसे ज्यादा जिम्मेदार मानता हूँ, क्योंकि मैं तो तुझे होशियार समझता था। लेकिन अगर अरुण ढपोलशंख ही रह गया, तो मैं तुझे मूर्ख ही मानूंगा।

तुम सब खुशीसे दिवाली मनाना, और अपनी खुशीमें हम सबका भी हिस्सा रखना। "हम सबमें" हमारा और हिन्दुस्तानके करोड़ों मूक कंगालोंका समावेश होता है। जो उस दिन भी इन लोगोंको याद नहीं करते, मेरी रायमें उनकी दिवाली होलीसे भी बदतर होती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६२) से

७४८. पत्र : मणिलाल गांधीको

[२५ अक्तूबर, १९४५][1]

चि० मणिलाल,

तेरा कार्ड मिला। मेरे लिए तो तू यहाँ आने का लोभ विलकुल मत कर। जब तक रिश्तेदारोंका मन न भर जाये, तब तक वहीं रह ले। जब मैं यहाँसे रवाना होऊँ, तब मेरे साथ हो जाना। प्यारेलालका बुखार उतर गया है। तुमने अपने पत्रके पीछे जो लिखा था, वह अरुणने पढ़ लिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६२) से

७४९. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२५ अक्तूबर, १९४५

चि० काका,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तुमने काफी समाचार दिये हैं। अपनी तबीयत का ध्यान रखना। वर्धा जाओ तो अच्छा ही है। श्रीमन कुछ दिनोंके लिए मैनपुरी गया है। मैं समझता हूँ कि तुम्हें काशी हो आना चाहिए। लेकिन मुझे डर है, हमारी तारीखें टकरायेंगी। मैं २१ नवम्बरको वर्धा पहुँचने की सोचता हूँ। वहाँसे ३० को बंगाल जाऊँगा। अभी तो यही इरादा है। यहाँसे १९ नवम्बरको रवाना होऊँगा। एक दिन बम्बईमें विताऊँगा।

अमृतलालके बारेमें समझ गया। परीक्षा वाली बात तो श्रीमनके साथ तय करोगे न? मैं तो सहमत हूँ। दोनों बहनोंको आशीर्वाद। यहाँ तो तुम जब इच्छा हो, आ जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९६८) से

१. यह पत्र २५ अक्तूबर, १९४५ को सुशीला गांधीको लिखे पत्रके पीछे लिखा हुआ है।

७५०. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

पूना

२५ अक्तूबर, १९४५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला। तुमने द्रावक वर्णन दिया है। सत्यवती थी ही, जैसे लिखते हो। नाम तो मैं किसीका याद नहीं रखता हूं। सब कुटुंबीजनको मेरे तरफसे जो मैंने तारसे तुम्हें भेजा है[1] वही कहो। कैसा अच्छा हुआ कि सत्यवतीकी अभिलाषा लग्नके[2] बारेमें थी वह पूरी हुई!

मृत्युके बारेमें कुछ विधिका ख्याल आया तो लिखुंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५८९) से

७५१. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

२५ अक्तूबर, १९४५

भाई विट्ठलदास,

मैं तुम्हारे सभी कागजात पढ़ गया। मैं मानता हूँ कि २१ तारीखके तुरन्त बाद अ० भा० चरखा संघ समितिकी बैठक होगी। उस समय मैं इस सम्बन्धमें चर्चा करूँगा। इसलिए मैं उसकी यहाँ चर्चा न करके तुम्हारा और अपना समय बचा लेता हूँ।

विट्ठलदास जेराजाणी

खादी भण्डार

३९३, कालबादेवी

बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४३८।

२. सत्यवतीके पुत्रके

७५२. पत्र : इच्छानन्दको

२५ अक्तूबर, १९४५

स्वामीजी,

आपका अंग्रेजी खत मिला। अगर आप राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी नही जानते है तो आप अपने प्रान्तकी भाषामे भी लिख सकते थे। अंग्रेजीका इतना मोह क्यो?

मै नही जानता हू कि आपकी किताब पढ़ने का कब समय मिलेगा।

इच्छानंद
साउथ गोविंदपुर
डाकघर कटरासगढ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

७५३. पत्र : अभ्यंकरको

२५ अक्तूबर, १९४५

भाई अभ्यंकर,

आपका ता० २२ का खत मिला है। आपकी हिन्दी खराब तो नही है, लेकिन आपके भाव प्रगट करने के लिए अपूर्ण हो सकती है। मेरी भी अपूर्ण तो है लेकिन तब भी हिंदुस्तानीओको अंग्रेजी जबानमे लिखना ही मुझे कष्ट पडता है। और मै तो यह भी कबूल नही करूगा कि आप अंग्रेजीमें अपने विचार या भाव सचमुच प्रगट कर सकते है। आप अन्यथा मानते हैं तो वह सही। लेकिन आप अगर मराठीमें लिखते तो आपके भाव मैं ज्यादा समझ लेता इतना मै जानता हू।

मै आपके साथ बहसमें नही पड़ूगा। जो मैने आपको लिखा है वह ठीक ही लिखा है।[1] तलाश तो अब भी हो रही है। जहा तक हुई है, मेरे हाथमे है। जिस बालकका अकाल मृत्यु हो गया उसके पिताके निवेदनकी नकल परसो आ गई, मेरे पास पडी है। और तलाश पूरी होने के बाद आपको मै परिणाम लिखूगा। आज तो इतना ही।

पत्रकी नकलसे · प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३८१।

७५४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पूना
२५ अक्तूबर, १९४५

वापा,

ग्राम सेविकाके बारेमें जो परिपत्र निकालना चाहते हैं वह मुजे मिला था। लेकिन अगर उस वारेमें सम्मति मांगी थी तो कैसे रह गई अब मैं कह नहीं शकता। मुजे दु:ख है कि विलंब हूआ। मैं उसे ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूं। अवश्य निकालो।

सत्यभामा देवीका दान प्रांतिय समिति उपयोग कर शके और अपने पर बोज न आवे तो लेना चाहिये। खत वि० ठीक हो जावेंगे ऐसा मान लेता हूं।

कमला नेहरू अस्पताल[1] के मार्फत दाईयोंको तैयार करने की योजना अच्छी तो है। अस्पतालके तरफसे सुभिता मिलती है वह स्तुत्य है लेकिन ऐसी दाइयोंकी उपयोगिताके बारेमें मुजे शक है। वे गांवोंके लायककी नहीं वनेंगी। अब तो हमारी समिति मिलनेवाली है। उनके मार्फत विचार कर लेने में देर तो नहीं होगी इसलिये वहां तक मुलत्वी रखा जाय तो अच्छा होगा। मैं २१ ता० को वर्धा पहूंचने की आशा करता हूं। उसके वाद और ३० तारीख तकमें जाजुजीसे मिलकर तारीख रखो और नोटिस[2] निकालो।

बापु

मूल पत्रसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

७५५. पत्र : प्रेस्टन ग्रोवरको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२६ अक्तूबर, १९४५

प्रिय ग्रोवर,

आपका पत्र यही सोचते हुए रखे रहा कि इसके सम्बन्धमें क्या करूँ। जितना ही सोचता हूँ उतना ही यह महसूस करता हूँ कि मुझे परमाणु बमके बारेमें नहीं

१. इलाहाबादमें
२. यह शब्द अंग्रेजी लिपिमें है।

बोलना चाहिए।[1] अगर कुछ कर सका तो अवश्य करूँगा। इसलिए अगर आप सही ढंगके पत्रकार हैं तो मुझे ऐसे मामलोंमें चुप रहने में सहायता देंगे।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें पूछा है, उसके लिए धन्यवाद। वह जितना अच्छा रह सकता है, उतना अच्छा है।

हृदयसे आपका,

श्री प्रेस्टन ग्रोवर
एसोसिएटेड प्रेस ऑफ अमेरिका
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७५६. पत्र : फ्लोरेन्स वेजवुडको

पूना
२६ अक्तूबर, १९४५

प्रिय बहन,

गत वर्षकी २७ फरवरीका आपका पत्र जेलमें प्राप्त किया गया था। मुझे वह मेरी रिहाई[2] के कुछ दिन बाद दिया गया। उसे पढ़ने का सुयोग कुछ ही दिन पहले मिला, और पत्रोत्तरके लिए समय मिलने पर उत्तर देने के लिए मैंने उसे रख लिया।

आपकी सहानुभूतिके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं और आपके स्वर्गीय पति[3] अच्छे मित्र थे। मैं उनकी कमी बहुत महसूस करता हूँ।

मैंने मृत्युके बादके जीवनपर लिखा तो है, लेकिन खेद है कि अभी वह मिल नहीं रहा है। वह विभिन्न विषयोंपर लिखे मेरे लेखोंमें कहीं दबा पड़ा है। लेकिन अंग्रेजी साहित्यमें इस विषयपर बहुत सामग्री है। और फिर हम पारलौकिक जीवनमें झाँकें भी क्यों? यदि हममें यह विश्वास हो कि जितना निश्चित वर्तमान है उतना ही भविष्य भी, तो इतना काफी है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीमती फ्लोरेन्स वेजवुड
९०२, हॉवर्ड हाउस
डॉलफिन स्क्वेयर
लन्दन, एस० डब्ल्यू० १

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २९२।

२. ६ मई, १९४४ को

३. जोसिया क्लेमेन्ट वेजवुड (१८७२-१९४३); ब्रिटेनकी लेबर पार्टीके नेता और संसद सदस्य, १९१९-४२। वे १९२० के नागपुर कांग्रेस अधिवेशनमें भी शरीक हुए थे।

७५७. पत्र : महेन्द्र गोपालदास देसाईको

२६ अक्तूबर, १९४५

चि० महेन्द्र,

बहुत दिनों बाद तेरा पत्र मिला। वस्तुतः मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तू क्या करना चाहता है। तूने मगनभाईसे पूछकर ठीक ही किया। किन्तु मेरी सलाह यह है कि किसी नये काममें पड़ने के बजाय सामान्य रूपसे तुझसे जो सेवा हो सके सो किया कर।

महेन्द्र गोपालदास देसाई
पो० बॉ० ३२, गिरिडीह
जिला हजारीबाग

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७५८. पत्र : पी० एन० कौलको

पूना
२६ अक्तूबर, १९४५

भाई कौल,

बारिस्टर होते हैं वे अपनी मातृभाषा भूल जाते हैं क्या?

कवीशर[1] के बारेमें मौलाना साहब कुछ कर रहे हैं। मुझे कुछ करना होगा तब मैं भी करूंगा। भूलने की बात नहीं है, वे छूटेंगे ही।

एडवोकेट पी० एन० कौल
८३, एक्सप्रेस रोड
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शार्दूलसिंह कवीशर (१८८६); पंजाब कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष (१९२०); कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य (१९२८); अ० मा० फॉरवर्ड ब्लॉकमें शामिल हुए और १९४० में इसके कार्यकारी अध्यक्ष बने। इन्हें भारत रक्षा अधिनियमके अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया था।

७५९. पत्र : डॉ० सुरेश बनर्जीको

२६ अक्तूबर, १९४५

भाई सुरेश,

तुम्हारा खत जब मिलता है मुझे आनन्द होता है। खुश खबर ही मेरे लिये काफी है। बाकी सब जब तुम छूटोगे तब सुनुगा। अच्छे रहो।

डॉ० सुरेश बनर्जी
मार्फत सुपरिटेंडेंट सेन्ट्रल जेल
राजशाही
बंगाल

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

७६०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

पूना
२६ अक्तूबर, १९४५

चि० घनश्यामदास,

जहांगीर पटेल[1] का खत मुझे मिल गया। वह भी लिखते हैं कि पाठशालाका मकान ही अनुकूल आने वाला है। वहां और थोडी सुविधा होनी चाहिये। बिजली और पानीका प्रबंध भी होना चाहिये। दिनशाका अभिप्राय है कि सब तैयार होने के बाद सीधे पाठशालाके मकानमें जाये। उसके हिसावसे इसमें ९ मास लगेंगे। मेरा अभिप्राय है कि शीघ्रतासे सेनेटोरियम वाले मकानमें जाना और वही काम शुरू कर देना और पाठशालाका मकान तैयार होने पर वहां चले जाना। यह काम हो सकता है या नहीं, इसका विचार तो आप भाइयोंको ही कर लेना चाहिये। सेनेटोरियमके मकानमें भी पानीके लिये ज्यादे पाइपकी आवश्यकता रहेगी ही, शायद बिजलीके बारेमें भी कुछ करना पड़ेगा। जल-चिकित्सामें जलका उपयोग काफी रहता है। पाठशालाका मकान लेने में मैं कुछ कठिनाई देखता हूं। अगर पाठशालाको होना ही है तो उसी जगहमें दो चीजका चलना मुश्किल-सा लगता है। मेरी कल्पना सिद्ध हो सकती है तो जो

१. नैसर्गिक उपचार-गृहके एक ट्रस्टी

मकान मौजूद है उससे भी शायद पेट नहीं भरेगा। क्योंकि मेरी कल्पनामें गरीबोंको भी लेना है और उनके लिए भी नैसर्गिक उपचारगृह चलाने में मुझे रस मिल सकता है। पाठशालाकी जगहसे, ग्रामीण लोगोंकी सेवा करने का मैंने जो ठाना है वह भी हो सकता है, ऐसा मैं पाता हूं। इन सब चीजोंका ख्याल करके जो करना अच्छा लगे, वह मुझको बताना।

सरदारका अभिप्राय भी मैं लिख दूं। वे मानते हैं कि इस काममें मुझे यहां तक रस नहीं लेना चाहिए। दिनशाको आर्थिक मदद देना है तो वह दिलवाकर शांत रहना चाहिए। इससे ज्यादा अभी जाने में दिनशा[के] आखरमें टूटने का भय है या मुझे निराशा होने का और आजकी जो अतिशय मोहब्बत दिनशा कर रहे हैं उसे भंग होने का। मुझमें यह डर नहीं है। दिनशा टूट सकता है, लेकिन दिनशाका जो मेरे प्रति भाव है वह टूट नहीं सकता, ऐसा मेरा अभिप्राय है। जब पैसेकी कुछ बात भी नहीं थी और मैं उनको पहचानता भी न था तबसे उनका भाव मेरे प्रति रहा है, उसका मुझे ज्ञान है। लेकिन सरदार मनुष्य स्वभावको जानने वाले हैं और मेरे प्रति उनका अतिशय भाव रहा है इसलिए उनकी वृत्तिको भी तुम्हारे सामने रखना मुझे अच्छा लगता है, जिससे तुम तटस्थ भावसे इस चीजका निर्णय कर सको।

नाशीकके बारेमें मुझको आश्वासन दिलाया है, इसलिये अब दूसरा विचार ही नहीं हो सकता है, ऐसा ख्याल न रखा जाय। नैसर्गिक उपचारका काम बहुत महत्व का है। अगर ठीक चले तो उसका परिणाम विस्तृत हो सकता है, जिसकी हदका नाप आज नहीं हो सकता है। दिनशा इस ढांचेमें कहां तक रह सकेगा, उसका विचार भी करना चाहिए। निर्णय करने के पहले मुझको मिलना आवश्यक समझो और इतना वक्त निकल सकता है तो बात कर जाओ। और, लिखने से निपट सकता है तो आने की कोई आवश्यकता न समझी जाय। इस काममें मेरा बहुत रस होते हुए भी मैं तटस्थ रूपसे ही कार्य देख रहा हूं, और कर रहा हूं, ऐसा समझो। और मुझे १२५ वर्ष तक जिन्दा रहना है तो उसकी यह भी शरत है कि मेरी तटस्थता यानी अनासक्तिकी मात्रा दिन-प्रति-दिन बढ़नी चाहिये, और मनुष्यके लिये शक्य है वहां तक सम्पूर्णताको पहुंचनी चाहिये। यह कैसे हो सकता है, होगा या नहीं, यह नहीं जानता हूं। जानने की इच्छा भी क्यों करूं? उस आदर्शको दृष्टिमें रखते हुए मैं जिसे कर्तव्य समझूं वही करना है। मैं इतना समझता हूं कि इस आदर्शको पहुंचना कठिन है। लेकिन कठिन कार्य करते हुए ही जीवन गुजरा है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७३) से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

७६१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
२६ अक्तूबर, १९४५

चि० कृ० च०,

'गीताई' के बारेमें जो योग्य लगे सो करो। फजरकी ही बात है ना। जो नित्य आने वाले हैं उनसे पूछो और जैसे सबको उचित लगे सो करो।

कैलासका समजा। बाबूरामजी और रेड्डीकी बात अच्छी है।

मेरा जी तो वही है। जब यहासे नीकल सकुगा तब आउगा। आखरका दिन २१ तारिखका रखा है। तब तो ईश्वर कृपा होगी तो पहोचुगा ही। गोमतीबहन की बीमारी अच्छी नही लगती है।

काताबहिन क्यो बीमार हुई?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३५) से

७६२. पत्र : एल० एन० गोपालस्वामीको[1]

पूना
२७ अक्तूबर, १९४५

प्रिय गोपालस्वामी[2],

राजाजी के बारेमें आपका पत्र मिला। जहाँ तक इस बातका सम्बन्ध है कि लोगोंने कोई उपद्रव किया, उससे न तो कांग्रेसका कोई सरोकार था और न मेरा। इसमें सन्देह नही कि बिना सोचे-समझे जल्दबाजीमें और एक साथ इतनी बडी सख्यामें नेताओकी जो गिरफ्तारी[3] की गई उससे लोग क्षुब्ध हो गये और

१. इस पत्रकी एक फोटो-नकल १९६९-७० के गांधी दर्शनमें तमिलनाडु मण्डपमें प्रदर्शित की गई थी।

२. तमिलनाडु हरिजन सेवक संघके मन्त्री गोपालस्वामीने राजगोपालाचारीके अगस्त आन्दोलनमें शरीक न होने और पाकिस्तानके प्रश्नपर उनके रवैयेको लेकर उनपर दोषारोपण किया था।

३. अगस्त, १९४२में

उसके खिलाफ उठ खड़े हुए। सविनय अवज्ञा आन्दोलन तो केवल मैं आरम्भ कर सकता था। मैंने उसे कभी आरम्भ ही नहीं किया। कहीं-कहीं लोग संयम खो बैठे। लेकिन सरकारकी अन्धाधुन्ध हिंसाने जनताकी सारी हिंसाको दबाकर रख दिया।

राजाजीपर विश्वासघातका आरोप लगाने का मतलब यह है कि हम उन्हें पहचानते नहीं हैं। वे इतने नेक हैं कि कोई ओछा काम कर ही नहीं सकते। निस्सन्देह मैंने उनका फार्मूला इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि मैं मानता हूँ कि वह सही है।

आपका,
बापू

श्री एल० एन० गोपालस्वामी
मार्फत श्री ए० वैद्यनाथ अय्यर
सनथैपेट
मदुरा
दक्षिण भारत

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५२) से। सौजन्य : तमिलनाडु सरकार

७६३. पत्र : जी० रामचन्द्र रावको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२७ अक्तूबर, १९४५

प्रिय रामचन्द्र राव,

तुम्हारा १३ तारीखका पत्र मिला।

१. स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तिका[1] में अब भी संशोधन किया जा रहा है। मेरे जेलसे निर्धारित समयसे पहले रिहा हो जाने के कारण यह काम स्थगित हो गया और फिर उसे पूरा करने का कभी समय ही नहीं मिला। उसके पूरा हो जाने पर

१. गांधीजी ने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यह पुस्तिका आगाखाँ महलमें २७ अगस्त, १९४२ को लिखनी आरम्भ करके १८ दिसम्बर, १९४२ को पूरी की थी। इस गुजराती पुस्तिकाका हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी अनुवाद सुशीला नैयरने गांधीजी की देखरेखमें किया था। हिन्दुस्तानी अनुवाद आरोग्यकी कुंजी शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। देखिए खण्ड ७७।

तुम्हे इस नई पुस्तकके बारेमें मालूम होगा। तुम उसका अनुवाद, बेशक, प्रकाशित कर सकते हो। उसे नया संस्करण नही कहा जायेगा। अगर प्रकाशित हुई, तो यह एक बिलकुल नई चीज होगी।

२. श्रमिकोकी सेवा करने के दावेदार अनेक है। दुर्भाग्यसे, उसपर कांग्रेसका एकाधिकार, जिसे मूक स्वीकृति मिली हुई थी, समाप्त हो गया है। लेकिन अगर कांग्रेसको चुनौती दी जायेगी तो मैं समझता हूँ, वह कहेगी कि श्रमिकोंके एकमात्र सच्चे सेवक हम लोग ही है। अन्तमे कौन अपना दावा सिद्ध कर पायेगा, यह तो अभी समयके गर्भमें छिपा हुआ है। कार्य-समितिके मामलेमें मैं बहुत कम भाग लेता हूँ, और मैं समझता हूँ कि और भी कम होता जा रहा है। इसलिए तुमने जो झडेकी रूपरेखा बनाई है, उसके बारेमे मुझमें कुछ करने की आशा मत रखना।

३. भंगी : तुम और कुछ अन्य लोग मेरा प्रथम भंगी होने का दावा स्वीकार कर सकते हो, लेकिन भंगियोके किसी सम्मेलनमे तो मुझे लज्जित होना पड़ेगा। तथाकथित भंगी ही मेरे दावेको अस्वीकार कर देंगे; बहुत-से तो अस्वीकार करते भी है। इस अस्वीकृतिमे मेरी सहानुभूति उनके साथ होगी। लेकिन अपनी मर्जीसे अपने रूपको अपनाने वाले व्यक्तिकी स्थितिका सुखद पक्ष यह होता है कि उसे अपने अपनाये रूपकी अन्य लोगो द्वारा स्वीकृतिकी जरूरत नही रहती। इसलिए यदि सम्मेलनके स्थानका चुनाव मुझपर छोड़ दिया जाये तब भी उसके आयोजनका भार मैं अपने सिरपर नही लूँगा। इससे भी बडी बात यह है कि जो भार मुझपर अभी है उससे अधिक अपने सिरपर लेने की मेरी न इच्छा है और न समय। इसलिए इसमें तुम मेरी सेवाका यहाँ तक कि मुझसे कोई सन्देश भी पाने का भरोसा रखे बिना जो-कुछ करना हो, करो। अपने अन्दर यह विश्वास जगाओ कि हर सच्ची सेवा में ही उसकी मान्यता निहित होती है।

४. प्रसूति-गृह : क्या तुम मुख्य रूपसे सरकारी अनुदान और मान्यतापर निर्भर नही हो? जिन उपलब्धियोंका तुमने उल्लेख किया है, वे निस्सन्देह अच्छी है, लेकिन सार्वजनिक गरिमा और महत्वकी दृष्टिसे वे मन्द पड़ जाती हैं। किसी भी सरकारी या सरकारी अनुदान-प्राप्त संस्थाका पैसेकी कमीके कारण कोई नुकसान नही होता। ऐसी सभी संस्थाओंमें जरूरतसे ज्यादा लोग रहते है, कुछमे तो इतने ज्यादा कि दम घुटता है। वे सचमुच जरूरतमन्द गरीब लोगोकी सेवा करती हैं या नही, यह तो अलग सवाल है। इस आलोचनाका इस बातसे कोई सम्बन्ध नहीं है कि मुझे तुमसे यह कहना पड़ रहा है कि मुझपर दया करो और जो जिम्मेदारी तुम मुझपर डालना चाहते हो उससे मुझे बख्शो। अगर हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके काममे मैं मद्रास आ पाऊँगा तो जो मित्रगण मुझे जानते है उनसे यही कहूँगा कि अपने ऊपर संयम रख-कर मुझे अपने ऊपर और बोझ लेने से बचाने में सहयोग करे।

५ "अप फ्रॉम स्लेवरी" ("दासतासे मुक्ति")के विषयमें मैं दो पंक्तियाँ लिखना चाहता हूँ। लेकिन यह देखते हुए कि तुमने इतने वर्ष प्रतीक्षा की है,

मैं तुमसे कहूँगा कि कुछ दिन और प्रतीक्षा कर लो और जिन दौरोंका विचार मेरे मनमें है उन्हें पूरा करके जब एक जगह स्थिर हो जाऊँ तब याद दिलाओ।

तुम्हारा,
बापू

श्री जी० रामचन्द्र राव
सेवाश्रम
गुडिवाडा (जिला कृष्णा)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६४. पत्र : मणिलाल गांधीको

२७ अक्तूबर, १९४५

चि० मणिलाल,

यह तार[1] पढ़कर नगीनको जवाब देना। उसे यह तार करना, "बापू सन्देश नहीं दे सकते"। जिसका रुपया पहले ही भरा जा चुका है, वह फार्म भी इस पत्रके साथ है, ताकि तू उसका उपयोग कर सके। जवाब फौरन भेजना।

अरुण मजेमें है। बाकी यहाँ सब ठीक चल रहा है। सरदार कामसे बाहर गये हैं, दिनशा भी साथ गया है। दोनों पहली तारीखको वापस आ जायेंगे। मेरा काम ठीक चल रहा है। बिलकुल चिन्ता मत करना।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६३) से

१. यह तार डॉ० नगीन देसाईने २६ अक्तूबर, १९४५ को डर्बनसे भेजा था। इसमें ३१ अक्तूबरको होने वाले गुजराती स्कूल तथा काठियावाडी हिन्दू सेवा समाजके भवनके शिलान्यास-समारोहके लिए गांधीजी से सन्देश माँगा गया था।

७६५. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२७ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

गोमती पूरी तरहसे स्वस्थ हो जाये तो बहुत अच्छा हो। उसमें तुम्हारे जितनी ही शक्ति है। चाहे जैसी [तकलीफ] हो उसे सहन करने की शक्ति उसमें है। किन्तु देखने वाला कुढ़ता है।[1]

जब-जब मुझसे अभिनन्दन-ग्रन्थके बारेमें पूछा जाता है मैं उसका विरोध ही करता हूँ। इसलिए काकासाहबके बारेमें यदि कोई मुझसे पूछेगा तो मैं इसका विरोध ही करूँगा। और तुम तो करोगे ही।

नाथूराम प्रेमीके बारेमें भी मैं तो यही कहने वाला हूँ। मैं इसे एक प्रकारका रोग मानता हूँ।

राँका[2] को लिखने को मेरी इच्छा नहीं होती। मैं यह मान लेता हूँ कि तुम्हारे सुझावके अनुसार सरदार लिखेंगे।

अखबारोंकी गप्पपर विश्वास मत करना। मुझे पूनामें रहना ही नहीं है। यह अलग बात है कि दिनशाकी सहायताके लिए मुझे आना पड़े। शेष फिर।

किशोरलाल मशरूवाला
सेवाग्राम
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. गांधीजी ने यहाँ गुजराती कवि प्रीतमकी पंक्ति "देखनारा दाझे जोने" उद्धृत की है। देखिए खण्ड ४४, आश्रम भजनावलि, पृ० ४६७।

२. पूनमचन्द राँका

७६६. पत्र : जतीनदास अमीनको

२७ अक्तूबर, १९४५

चि० अमीन,

तुम्हें इस बातका खयाल नहीं है कि तुम हम सबसे कितनी चिन्ता करवाते हो। ऐसा मानने की अपेक्षा कि सभी तुम्हारे विरुद्ध हैं, तुम्हारा धर्म तो यह मानना है कि स्वयं तुम्हींको भ्रम हो गया है। तुम्हें न तो किसी दुकानपर जाना चाहिए और न ही पैसे माँगने और खर्च करने चाहिए। यदि तुम्हें क्रोध आ जाता है तो तुम्हें आश्रमसे हट जाना चाहिए। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो यहाँ चले आना। हिमालय जाने की तुम्हारी स्थिति नहीं है। तुम्हारी जगह मेरे अथवा तुम्हारे पिताके पास है। इसपर विचार करने के बाद जैसा ठीक समझो, वैसा करना। आश्रम तो छोड़ ही देना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६७. पत्र : हरजीवन कोटकको

२७ अक्तूबर, १९४५

चि० हरजीवन कोटक,

तुम्हारा पत्र मिला। खर्चके बारेमें मैं समझ गया। मैंने क्या निर्णय किया था यह तो मुझे याद नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि यदि वे तुम्हें अधिक देने को राजी हों तो कोई रास्ता निकल सकता है।

यदि मैं यह जान पाऊँ कि हकीम कौन है और उसकी क्या राय है; तो मैं अधिक बता सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम जम-बस जाओ।

हरिजन आश्रम
साबरमती

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६८. पत्र : हीरालाल शर्माको

पूना
२७ अक्तूबर, १९४५

चि० शर्मा,

तुम्हारा रात्रिका बारह बजे लिखा हूआ पत्र मिला। तुमारे भाई चले गये इसका व्यवहारमे तो शोक होना ही चाहिये, लेकिन पारमार्थिक दृष्टिसे अथवा नैसर्गिक दृष्टिसे मृत्युका शोक क्या? जन्मका हर्ष क्या? दोनोकी जोडी है और एकके पीछे दूसरा रहता ही है ऐसी दोनोकी अविछिन्न मित्रता है। इसलिए कमसे-कम तुमारेमें तो इस मृत्युकी ग्लानि होनी नही चाहिये। तुम्हारे सामने धर्म-पालनका एक विशेष कारण उत्पन्न हुआ।

एसेम्बलीमे जाने का विचार स्वर्गस्थ भाईके कहने से हुआ यह और भी दुःखद बात है।

गाडोदियाजी के बारेमें। अगर तुम जिन चीजोपर कायम हो तो १, २, ३, ऐसा करके मुझको लिखो। मैं उनके पास भेजने को तैयार हू और पचके सामने उन चीजोको रखने की सूचना भी करूगा। इसमें जो शिकायत तुमने मेरे सामने रखी थी वह सब आनी चाहिये।

दूसरी चीजोका फैसला भले इस बातपर निर्भर रहे। आज तो मेरे मनमें शक पैदा हो गया है—इतना मुझे कबूल करना होगा।

सरदारका तो अब कुछ नही लिख सका हूं, क्योंकि सरदार और दिनशाजी बंबईमें हैं। १ ली तारीखको वापिस आयेंगे।

बड़े भाईके जाने से घरका कारोबार किसको सभालना हुआ? तुम कितने भाई हो?

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३४२ और ३४३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

७६९. पत्र : आबिद अलीको

पूना
२७ अक्तूबर, १९४५

भाई आबिद अली,

तुम्हारा पो[स्ट] का[र्ड] मिला। जब आना है आना। सब अच्छे होंगे।

जनाब आबिद अली साहेब
ग्रीन होटल
माथेरान

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७०. पत्र : अमृतकौरको

पूना
२८ अक्तूबर, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारा कराचीसे भेजा पत्र अभी-अभी मिला। ईश्वरकी बड़ी कृपा है कि तुम कराची तक बिलकुल ठीक रहीं और आशा है, मेरे पास लौट आने तक तुम ऐसी ही रहोगी। प्यारेलालका बुखार उतर गया, पिछले चार दिनोंसे नहीं आया है। धीरे-धीरे उसमें फिरसे शक्ति आती जा रही है। सरदार बम्बईमें हैं और १ तारीख को लौटेंगे। दिनशा उनके साथ हैं। भगवानने चाहा तो मेरे साथी १९ को पूना से चलकर २१ को सेवाग्राम पहुँचेंगे, और वहाँसे जिनका जाना जरूरी है वे लोग ३० नवम्बरको कलकत्ता रवाना हो जायेंगे। नारणदास, उसकी पत्नी और कुसुम यहीं हैं। वे सब मंगलवारको जायेंगे। मेरी बहन अपनी लड़की[1] के साथ यहाँ आई हुई है। आशा है, तुम्हारे प्रवासके दौरान मुझे बेरिलकी कोई खबर मिलेगी। जो मित्र मुझे याद करें और जिनसे तुम मिलो उन सबसे मेरी नमस्ते कहना।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१७०) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०६ से भी

१. फूलकुँवर

७७१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

२८ अक्तूबर, १९४५

प्रिय कु०,

तो तुम्हारे पास उस मूर्तिके[1] बारेमें अच्छा प्रमाणपत्र है। मगनवाड़ीमें उसके स्थापित होते ही मैं चन्दा इकट्ठा करना शुरू कर दूँगा। यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हें तुम्हारा कमीशन देने के लिए श्रीमती हॉपमैन खुद आ रही हैं।

रक्तचाप ठीक है।

अपने भाई[2] की सफलतापर तुम्हें फूलना नहीं चाहिए। देखो, क्या होता है।

स्नेह।

बापू

डॉ० कुमारप्पा
अ० भा० ग्रा० स०
मगनवाड़ी
वर्धा

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१८२) से]

७७२. पत्र : दिलीपकुमार रायको

२८ अक्तूबर, १९४५

प्रिय दिलीप,

तुम्हारा पत्र मोहक है। तुम्हारे स्वरका स्मरण मुझे सम्मोहित करता है, और इसी तरह बहुत-सी और भी चीजें। लेकिन मुझे सारे लोभोंका संवरण करके अपने सोचे हुए सीधे-सकरे रास्तेपर चलते रहना है। इसलिए मुझे

१. डच कलाकार श्रीमती क्लैरा हॉपमैन द्वारा बनाई गई ईसामसीहकी ६×४ फुटकी मूर्ति, जिसकी कीमत १०,००० रुपये थी, मगनवाड़ी-स्थित अ० भा० ग्रामोद्योग संघको भेंट की जाने वाली थी।

२. भारतन कुमारप्पा

माफ करना। बल्कि कह सकूं तो यहाँ तक कहूँगा, यह योजना बिलकुल छोड़ ही दो। अगर नहीं छोड़ते तो जिन अन्य लोगोंका उल्लेख तुमने किया है उनसे चर्चा करो।

जैसा कि मैं आम तौरपर करता हूँ, तुम्हें भी हिन्दीमें ही लिखता, लेकिन स्पष्ट कारणोंसे ऐसा नहीं किया।

बापू

[पुनश्च:]

बंगाल जाने के लिए पूनासे १९ नवम्बरको चलने की आशा करता हूँ। रास्तेमें कुछ दिन सेवाग्राम रुकूँगा।

श्री दिलीपकुमार राय
अरविन्द आश्रम
पांडिचेरी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७३. पत्र : श्रीमती एम० एच० मॉरिसनको[1]

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२८ अक्तूबर, १९४५

प्रिय महोदय,

अभी-अभी आपका २० सितम्बरका पत्र मिला है, और सहपत्रकी लगभग एक-एक पंक्तिको मैं अत्यन्त चावसे पढ़ गया। कुमारी स्लेडको यहाँ हम मीराबहन के नामसे जानते हैं, क्योंकि वे चाहती हैं कि उन्हें इसी नामसे जाना जाये। इन दिनों वे हिमालयकी एक घाटीमें रह रही हैं। उस स्थानपर वे मुग्ध हैं और उसे बहुत पसन्द करती हैं। वह स्थान हरिद्वारके निकट है। हरिद्वार एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है, जहाँसे होकर महान गंगा नदी बहती है।

१. इसका एक अंश ३१-१०-१९४५ के हिन्दू में इस समाचारके साथ प्रकाशित हुआ था कि लन्दनकी ग्रीन क्रॉस सोसाइटीकी अवैतनिक मन्त्री श्रीमती एम० एच० मॉरिसनने गांधीजी के हस्ताक्षरोंके लिए एक प्रस्ताव भेजा है, जिसमें सर्वत्र "असहाय वन्य जीवन" और "विशुद्ध प्रकृति" की रक्षाके लिए अनुरोध किया गया है।

आपकी ग्रीन क्रॉस योजना मुझे बहुत पसन्द आई। ऐसी बात नहीं है कि इसमें मेरे लिए कोई नई चीज हो। आपके प्रस्तावकी एक खूबी यह भी है कि वह छोटा और यथातथ्य है, और इसलिए वह मुझे हस्ताक्षर करने के लिए प्रलोभित और आमन्त्रित करता है। लेकिन मुझे इस लोभका संवरण करना होगा। आशा है, ग्रीन क्रॉस सोसाइटी इसके लिए मुझे क्षमा करेगी। अगर वह इस तथ्यको समझ ले कि कुछ लोग, जिनमें से एक मैं अपनेको भी मानता हूँ, आपके प्रस्ताव-जैसी किसी चीजपर हस्ताक्षर न करके और मौन तथा शायद अधिक प्रभावकारी रीतिसे काम करके अधिक अच्छी सेवा कर सकते हैं, तो वह मुझे सहज ही क्षमा कर देगी।

हालाँकि मैं आपको अपने हस्ताक्षर नहीं भेज रहा हूँ, लेकिन आपसे अनुरोध है कि अगर आपसे हो सके तो मुझे समय-समयपर अपनी गतिविधियोंसे अवगत कराती रहिए। आप शायद यह जानना चाहें और इस जानकारीसे शायद आपको खुशी भी होगी कि पिछले कई वर्षोंसे मैं अपने जीवनमें आपके उल्लिखित "दस निषेधों"[1] का पालन कर रहा हूँ, और मैंने अपने सहवासियोंको भी वैसा करने के लिए कहा है, क्योंकि बहुत समयसे मैं यह मानता आया हूँ कि "काष्ठमें भी आत्माका निवास है।" यहाँ "काष्ठ" शब्दका दुहरे अर्थमें प्रयोग किया गया है।

हृदयसे आपका,

श्रीमती एम० एच० मॉरिसन
अवैतनिक मन्त्री
ग्रीन क्रॉस सोसाइटी
४१, एसमन्स प्लेस, लन्दन, एन० डब्ल्यू० ११

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हिन्दू की रिपोर्टके अनुसार, उक्त सोसाइटीने वन्य जीवन तथा प्रकृतिका दूषण रोकने के लिए दस निषेध सुझाये थे — जैसे लकड़ी, तिनके, घास-पात वगैरह जहाँ-तहाँ फेंककर या यत्र-तत्र विज्ञापन चिपकाकर गाँवों, सड़कों आदिका रूप न बिगाड़ना; पेड़-पौधे न काटना; फूल न तोड़ना; शोर मचाकर या रेडियो वगैरह बजाकर प्राकृतिक स्थलोंकी शान्ति भंग न करना।

७७४. पत्र : डाह्यालाल जानीको

२८ अक्तूबर, १९४५

भाई डाह्याभाई,

तुम मुझपर क्रोध मत करना बल्कि जी भरकर हँसना। मैं नहीं जानता कि मुझसे किसने कहा, मैंने कहाँ पढ़ा या क्या हुआ, किन्तु मुझे यह भ्रम बना रहा कि तुम गुजर गये हो। बादमें एक दिन जब मैंने किशोरलालको तुम्हारा 'गीता' का अनुवाद जाँचते देखा, तो मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम तो जिन्दा हो। लेकिन मैं वह भूल गया और यह याद रहा कि तुम गुजर गये हो। इसी बीच कल तुम्हारा पत्र मिला और अब मैं इस बातको नहीं भूल सकता। इसलिए अब तो तुम्हें दीर्घजीवी होना है। किन्तु मैं देखता हूँ कि तुम शायद जीवित रहने में मुझे भी पछाड़ दोगे, अर्थात् १२५ वर्षसे अधिक जीवित रहोगे, किन्तु फिर भी जैसे हो वैसे ही बने रहोगे। इसलिए यह तो जीवित रहने के बावजूद मृतके समान हुआ न? तुम्हारा पत्र पढ़ते हुए मेरे मनपर यह छाप पड़ी।

तुमने जिन पाँच वस्तुओंके बारेमें लिखा है उनमें से एक भी नई नहीं है। वस्तुतः थोड़ी-सी सचाई तो उसमें निहित है। इसके बावजूद मेरे विचारसे उसमें इतना अज्ञान भरा हुआ है कि मुझे उनमें से एक भी लाभकारी नहीं जान पड़ी। तुम्हारा अन्तिम वाक्य है: "मेरे योग्य सेवाका आदेश अवश्य दो।" यह कितना गलत वाक्य है! सेवा-कार्य तो मैंने बहुत किया, किन्तु उससे मुझे क्या मिला? देशको क्या मिला और तुम्हें क्या मिला? इसके आधारपर अन्य चार वस्तुओंके बारेमें विचार कर लेना। इसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है और भूलकर भी यह प्रकाशित नहीं होना चाहिए। यह सिर्फ तुम्हारे विनोदके लिए ही है जिससे किसी दिन तुम्हारी आँखें खुल सकें। इस विनोदके पीछे छिपे रहस्यको यदि तुम किसी दिन समझ जाओगे तो मैं यह मान लूँगा कि मुझे पत्रोत्तरकी अपेक्षा कहीं अधिक मिल गया, और मैं तुम्हारा जीवन अर्थपूर्ण हुआ समझूँगा।

श्री डाह्याभाई ह० जानी
९३९, विलसन गार्डन्स
बंगलौर सिटी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२८ अक्तूबर, १९४५

बापा,

साथमें सुशीलाबहन पैका पत्र भेज रहा हूँ। इसे पढना। उसके बारेमें तुम्हारे साथ कुछ बात तो की थी, या नही? वह वहाँ जाकर यदि रह सके तो हमारा काफी काम निबटा सकती है। लिखते समय याद आ रहा है कि उसे मैंने तुम्हारे पास भी भेजा था।

मेरे मनमें तो यह विचार है कि उसके रहने की व्यवस्था बजाजवाडीमें, जहाँ तुम्हारा दफ्तर है, की जा सकती है। मुझे तो सारी सुविधाओका पता नही है। वहाँ भीड़ तो नही ही करनी है।

वेतनकी बात फिलहाल तो नही है। उसे सुचेताके साथ सहमन्त्रीके रूपमें रखा जा सकता है या नही, और वह बजाजवाड़ीमें रह सकती है या नही, यह विचार करने योग्य प्रश्न है। हमें यह भी मालूम करना होगा कि सुचेताबहन उसे सहमन्त्रीके रूपमें स्वीकार करेगी या नही। यदि तुम्हे यह विचार पसन्द आये तो फिर सुचेता-बहनसे पूछना होगा। तुम्हें पसन्द हो तो फिर मैं सुचेताबहनसे पूछूंगा। जवाब देना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७६. पत्र : गिरिराज किशोरको

पूना

२८ अक्तूबर, १९४५

चि० गिरिराज,

तुमारा पत्र मिला। दोनो बहन खुश हुई। तुमारा काम अच्छा चल रहा है। शारीरिक प्रवृत्ति अच्छा रखो। कोष[1] का हिस्सा मिल गया है। दो मिनिटके लिए चचुपात किया। ज्यादा देखने की आशा करता हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७७५) से

१ हिन्दी-गुजराती कोश, जिसे गिरिराज किशोर तैयार कर रहे थे

७७७. पत्र : स्वामी सत्यदेवको

पूना
२८ अक्तूबर, १९४५

स्वामीजी,

आपका पत्र देखकर और प्रयत्नसे किये हुए दस्तखत देखकर आनंद हुआ। दिल्लीमें रहने की आप बात करते हैं, लेकिन वहां भी तो गरमी है। आपका स्थान तो अल्मोड़ा, आबु या गिरनार हो सकता है। आपको शायद कोई पुस्तकालयकी दरकार नहीं होगी, जो मस्तिष्कमें पड़ा है वही लेना है। अगर ऐसा है तो मैं कोशीश करूं। समुद्र किनारे भी कुछ ठंडक तो रहती है, लेकिन आपके शरीरके स्वभावको जानते हुए समुद्र किनारेकी सलाह मैं नहीं दे सकता हूं। मैं समझा हूं कि आप मेरी सलाह केवल स्थानके बारेमें ही मांगते हैं। दूसरा काम करने-कराने की शक्ति आप रखते हैं।

स्वामी सत्यदेव
सत्यज्ञान निकेतन
ज्वालापुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७८. पत्र : चाँदरानीको

पूना
२८ अक्तूबर, १९४५

चि० चांद,

तेरा पो[स्ट] का[र्ड] मिला। तेरा कल्याण ही है। तेरे सेवाभावमें वृद्धि ही होगी। तेरा शरीर वज्र सा बना ले और अभ्यासक्रम पूरा कर। मेरी आशा है कि २१ नवम्बरको मैं सेवाग्राम पहोंचुंगा।

बापुके आशीर्वाद

कुमारी चांदबहन
डागा मेमोरियल हास्पिटल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७७९. पत्र : विचित्रनारायण शर्माको

पूना

२८ अक्तूबर, १९४५

चि० विचित्र,

तुम्हारे सब कागजात ध्यानसे पढ़ गया हू। जैसे मैंने जाजूजी से सुना ऐसे ही मैंने मध्यवर्ती सरकारको लिखा है।[1] दूसरी तजवीज[2] भी कर रहा हू। देखें क्या होता है। जो वहा बने उसका पता देते रहो। मैं ता० २१ को वर्धा पहोचने की आशा करता हू।

बापुके आशीर्वाद

श्री विचित्रनारायण
गांधी आश्रम
मेरठ

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७८०. पत्र : एम० दत्तको

२८ अक्तूबर, १९४५

मंत्री महोदय,

जब मैं कलकत्ता आऊंगा, तब मुझे मिले। प्रफुल्लबाबुसे मिलकर समय लेवें।

एम० दत्त
६१७, क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३६४।
२. देखिए पृ० ३७३।

७८१. प्रस्तावना : 'गीता प्रवेशिका'की[1]

२९ अक्तूबर, १९४५

उपरोक्त दो शब्दमें[2] इतनी वृद्धि कर दूं कि उस प्रवेशिकामें मूल श्लोक मैंने रामदासके लिये चुने थे।[3] उसमें मित्रोंने इतना बढाया कि उसे राम-गीता कहना या मैंने बनाई कहना सत्यसे दूर जाता है।

इस आवृत्तिमें से अर्थ निकाल दिये हैं। मूल पुस्तक 'अनासक्ति योग'[4] देखिये।

मो० क० गांधी

प्रस्तावनाकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५५) से; सी० डब्ल्यू० ६९२९ से भी; सौजन्य : जीवणजी देसाई

७८२. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

यह पत्र मैं बड़े संकोच और इस आशंकाके बावजूद लिख रहा हूँ कि कहीं मैं मर्यादाका उल्लंघन तो नहीं कर रहा हूँ।

श्री सुभाष बोस द्वारा या उनके अधीन बनाये गये सैनिक दलके सदस्यों के मुकदमेकी प्रगतिके प्रति मैं जागरूक रहा हूँ। यद्यपि शस्त्र-बलसे की जाने वाली किसी भी प्रतिरक्षासे मेरा कहीं कोई मेल नहीं हो सकता, तथापि सशस्त्र लोगों द्वारा बहुधा प्रदर्शित वीरता और देशभक्तिको मैं अनदेखा नहीं कर सकता और यहाँ मामला शूरता और देशभक्तिके प्रदर्शनका ही प्रतीत होता है। और क्या सरकार सभी प्रकारके मतोंके भारतीयोंकी सम्पूर्ण नहीं तो प्रायः सर्वसम्मत रायको उपेक्षा करने की स्थितिमें है? भारत इन लोगोंको, जिनपर मुकदमा चल

१. दूसरे संस्करणकी
२. तात्पर्य प्रथम संस्करणकी प्रस्तावनासे है; देखिए खण्ड ५६, पृ० ७६।
३. देखिए खण्ड ५१, पृ० ३९२-९५।
४. देखिए खण्ड ४१।

रहा है, पूछता है। इसमें सन्देह नहीं कि सरकारके पास जबर्दस्त ताकत है। लेकिन अगर इस शक्तिका उपयोग सर्वव्यापी भारतीय विरोधके बावजूद किया जाता है, तो यह उसका दुरुपयोग ही होगा। क्या किया जाना चाहिए, यह बतानेका अधिकार मुझे नहीं है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि जो किया जा रहा है उसका तरीका ठीक नहीं है। वाइसराय महोदय ही तय करें कि इन परिस्थितियोंमें क्या करना ठीक है।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४०-४१

७८३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

प्रिय सर एवन,

खादीपर लाइसेंसकी पाबन्दी लगाये जानेके सम्बन्धमें लिखे अपने १० अक्तूबर, १९४५ के पत्रके[2] सिलसिलेमें आगे यह कहनेकी इजाजत चाहता हूँ कि प्रिवी कौंसिल को अ० भा० च० संघकी आयकरसे छूट देनेके मामलेपर विचार करना पड़ा था। इस मामलेका विवरण प्रिवी कौंसिलकी ए० आई० आर० १९४४ की रिपोर्टके पृ० ८८ में दिया गया है। वाइसराय महोदयके पूर्वाधिकारी[3] ने मेरी प्रार्थनापर यह आदेश जारी किया था कि जब तक मामलेपर प्रिवी कौंसिल फैसला न सुना दे तब तक करकी वसूली स्थगित रखी जाये।[4] प्रिवी कौंसिलने बम्बई उच्च न्यायालयका निर्णय उलट दिया और यह राय जाहिर की कि संघका प्राथमिक उद्देश्य गरीबोंको राहत देना है, उसके उद्देश्योंमें आम जनताकी भलाईसे सम्बन्धित अन्य प्रयोजन शामिल हैं, और व्यापारिक अथवा निजी लाभ कमाना संघका प्रयोजन नहीं है। इन कारणोंसे कौंसिल इस निष्कर्षपर पहुँची कि संघ पारमार्थिक और लोकोपकारी संस्था है और इसलिए

१. इसके उत्तरमें ६ नवम्बरको वाइसरायके उप निजी सचिव जी० ई० बी० एबेल्ने गांधीजीको सूचित किया कि वाइसराय आपका विचार समझ गये हैं और उनका खयाल है कि ये विचार अखबारी खबरोंपर आधारित हैं, जो हमेशा सही नहीं होतीं। उन्होंने यह भी बताया कि चूँकि मामला न्यायाधीन है, इसलिए वाइसराय उसपर कोई राय जाहिर नहीं कर सकते।

२. देखिए पृ० ३६४।

३. लॉर्ड लिनलिथगो

४. देखिए खण्ड ७५, पृ० ३२८-२९ और ४९८-९९।

करसे छूट पाने के योग्य है। क्या खादी निर्माताओंकी ओरसे बेची जाने वाली खादी, जिसपर अगर कोई लाभ होता भी है तो वह कत्तिनों और हथकरघा बुनकरोंके हाथोंमें हो जाता है, मुनाफाखोरी और जमाखोरी-विरोधी विनियमोंके अधीन मिलके कपड़ेकी श्रेणीमें रखी जा सकती है? मेरी विनम्र सम्मतिमें यदि सम्बन्धित गरीब लोगोंकी मामूली-सी कमाईपर कर न लगाना हो, तो खादीको ऐसे नियन्त्रणसे सर्वथा मुक्त होना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६९

७८४. पत्र : मीराबहनको

पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

चि० मीरा,

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला और मालिश करवाने के पहले उसका उत्तर दे रहा हूँ।

मैं सेवाग्राम नहीं छोड़ रहा हूँ, मुझे छोड़ना भी नहीं चाहिए, क्योंकि इसे मैंने अनेक संस्थाओंका केन्द्र बनाया है। मुझे अब इस खबरका खण्डन और इसमें सुधार करना होगा।[1] मैं सरदारको छोड़ नहीं सकता था। मैं सीमा प्रान्तका दौरा निबटाने के बाद या वहाँ जाने के पहले तुम्हारे पास अवश्य आऊँगा। हरएक चीज एक महीनेके लिए मुल्तवी हो गई है।

हमें भरोसा रखना चाहिए कि ईश्वर हमारा मार्ग-दर्शन करेगा। हो सकता है, वह ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दे कि अन्तमें मुझे तुम्हारे ही साथ रहना पड़े। उसकी इच्छा पूरी करने के अलावा और कोई कामना नहीं करनी है।

बलवन्तसिंहके बारेमें खेद है। ज्यादा लिखने का समय नहीं है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५१२) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९९०७ से भी

१. बापूज लेटर्स टु मीरा में मीराबहनने बताया है कि "ऐसी अफवाह शुरू हो गई थी कि बापू सेवाग्रामका त्याग करने वाले हैं।"

७८५. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

[२९ अक्तूबर, १९४५][1]

प्रिय सी० आर०,

अभी-अभी आपका पत्र मिला। झूठे प्रचारको मैं कोई महत्व नहीं देता। फिर भी, आपके विचारमें मुझे कैसा वक्तव्य जारी करना चाहिए? ताड आदिका रस मद्य नहीं, केवल गुड़ बनाने के लिए ही निकाला जा सकता है।

आप कैसे हैं? वहाँका वातावरण कैसा है?

अभी भी मैं सरदारको नहीं छोड़ सकता, इसलिए मेरा दौरा महीनेभरके लिए टल गया है।

स्नेह।

[पुनश्चः]

माधवनका पत्र लौटा रहा हूँ।

श्री च० राजगोपालाचारियर
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७८६. पत्र : जीवणजी देसाईको

पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

चि० जीवणजी,

'गीता प्रवेशिका' के लिए नई प्रस्तावना[2] भी लिखकर भेज रहा हूँ। जैसा कि मैंने सुझाया है, इसमें अर्थ छोड़ देना। नई प्रस्तावनामें मैंने सुझाव दिया है कि अर्थके लिए जिज्ञासु 'अनासक्ति योग' पढ़ें। जो इतना कष्ट न उठाना चाहें, वे इसे न खरीदें। इसीलिए पृष्ठ ६ में मैंने कोई सुधार नहीं किया। एक पैसेमें अभी

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तिथिके कागज-पत्रोंके साथ रखा गया है।
२. देखिए पृ० ४७५।

इतना देने की जरूरत भी नहीं है। जो मूल श्लोक मैंने चुने थे, वे कहीं हैं। अगर वे दिये जा सकें, तो 'राम-गीता' ठीकसे पूरी हो जायेगी। मेरे पास श्लोक कहीं तो हैं। रामदासके पास भी होंगे। तुम बीमार पड़ो, यह असह्य है। तुमपर कितना-कुछ निर्भर है, यह जानकर भी तुम्हें बीमार नहीं पड़ना चाहिए। और इसका उपाय 'आरोग्यकी कुंजी'[1] में तो है ही।

रचनात्मक कार्यक्रम वाला काम[2] हो गया, तो वह भी भेज दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५६) से। सी० डब्ल्यू० ६९३० से भी; सौजन्य : जीवणजी डा० देसाई

७८७. पत्र : क० मा० मुन्शीको

२९ अक्तूबर, १९४५

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र और भाषण अभी मिले। तुम्हारे गुजराती-हिन्दी लिखने की बात मैंने कहीं पढ़ी थी, और बहुत प्रसन्न हुआ था। सब कुछ ठीक निबट गया, यह भी अच्छा हुआ। तुम स्वस्थ होगे। व्युत्पत्ति जाने बिना मैं हमेशा 'समुं सुथरूं'[3] मुहावरेका प्रयोग करता था। तुमने मुझे सिखाया कि मुहावरा 'समे सुतरे'[4] है। यह व्युत्पत्ति मुझे अच्छी क्यों नहीं लगेगी?

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६८९) से। सौजन्य : क० मा० मुन्शी

१. देखिए खण्ड ७७।

२. गांधीजी दिसम्बर, १९४१ में लिखे कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग एंड प्लेस में संशोधन कर रहे थे; देखिए खण्ड ७५, पृ० १६१-८३।

३. अर्थात् साफ-सुथरा

४. अर्थात् इकरार पूरा

७८८. पत्र : गोमती मशरूवालाको

२९ अक्तूबर, १९४५

चि० गोमती,

रामप्रसादने तुम्हारे बारेमे मुझे सब-कुछ बताया। यहाँ बैठा हुआ मै तो यह कामना ही कर सकता हूँ कि तुम अच्छी हो जाओ। दवा तो थोडा ही फायदा पहुँचाती है, किन्तु आराम बहुत फायदा पहुँचाता है। इसलिए तुम्हे उठने, अपने हाथसे काम करने और बाहर पाखाना जाने की जिद छोड़ देनी चाहिए।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

७८९. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२९ अक्तूबर, १९४५

चि० किशोरलाल,

रामप्रसाद और अमीन यहाँ पहुँच गये हैं। लगता है कि अमीन ठीक ढगसे रहा है।

कांग्रेसके सविधानके बारेमें मैं लिख रहा हूँ। पूरा हो जाने पर इसकी एक नकल मैंने तुम्हें भेजना तय किया है। यह तुम्हारी कल्पनासे सर्वथा भिन्न ही है। इसे देखकर तुम्हें जो कहना हो, सो कहना। मुझे लगता है कि यदि कांग्रेस ऐसा कुछ नही करेगी तो आखिरकार हार जायेगी।

तुम्हारे भक्त लक्ष्मीशकर वैद्य कहते हैं कि एक बडा चम्मच अरण्डीका तेल और दो बड़े चम्मच शहद सुबह-शाम लो तो दमा ठीक हो जाता है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९०. पत्र : श्रीकान्त गुप्तको

२९ अक्तूबर, १९४५

भाई श्रीकांत,

तुम्हारे दो पोस्टकार्ड मिले हैं। यहांका [काम] खतम होने पर मेरा भ्रमण होगा। शायद मैं आश्रममें फरवरीमें पहोंचुंगा। तब मुझे लिखो। दरम्यान मैंने बताया हुआ रचनात्मक काम करो।

अखबारोंकी बात गलत समझो। मैं सेवाग्राम छोडने वाला नहीं हूं।

एस० के० गुप्ता
एक्साइज इन्स्पेक्टर
६, रेल्वे रोड
फरूखाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९१. पत्र : जे० बरुआको

पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

महोदय,

आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। "आसानी" शब्द मेरे अज्ञानसे आया है। मेरी गफलतके कारण वह शब्द बादकी आवृत्तिमें से नहीं निकाला गया। अब तो मैंने छापखानेमें लिख दिया है। गल्तीके लिए माफ करें। यह खत आप प्रकट कर सकते हैं।

जे० बरुआ
द्वारा जी० एन० टैगोर
बजाज भवन
तिलक नगर
कानपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९२. पत्र : देवप्रकाश नैयरको

पूना
२९ अक्तूबर, १९४५

चि० देव,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारा शरीर अच्छा रहेगा तो बहुत सेवा काम करोगे। मैं तो मानता हूं कि आश्रम अपूर्ण होते हुए भी जो उसमें है, वह दूसरी जगह नही है। जो दूसरी जगह देखा जाता है उसका जान-बूझकर त्याग किया है।

सेवाग्राम आश्रम
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९३. तार : फैजाबाद जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको

पूना
३० अक्तूबर, १९४५

अध्यक्ष
जिला कांग्रेस कमेटी
फैजाबाद (स० प्रा०)

बसुदासिंह[1] के केसके बारेमें डॉक्टर काटजू[2] की राय भेजिए।

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जिन्हें १९४२ के आन्दोलनमें शरीक होने के कारण मृत्यु-दण्ड सुनाया गया था
२. कैलाशनाथ काटजू

७९४. तार : डी० जी० तेन्दुलकरको

३० अक्तूबर, १९४५

तेन्दुलकर
मार्फत कांग्रेस
बम्बई

खेद है कि पुनर्विचार असम्भव है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७९५. तार : श्रीमन्नारायणको

पूना
३० अक्तूबर, १९४५

प्रोफेसर अग्रवाल
कॉमर्स कॉलेज
वर्धा

आठ नवम्बरको बैठक[1] कर सकते हो।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी

७९६. पत्र : डॉ० कृष्णाबाई निम्बकरको

पूना
३० अक्तूबर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका खत मिला। चूंकि व[किंग] कमिटि जैल [से] बाहर आई है आपकी सब बात उनको लिखो। पुना आवेगी तब मैं यहा हू तो मुझे मिलो।

डा० कृष्णाबाई निम्बकर
१९२, पुनामली हाइ रोड
पी० ओ० वेपरी

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

७९७. पत्र : सर्वजीतलाल वर्माको

३० अक्तूबर, १९४५

भाई सर्वजीतसिंघजी,

आपका खत आज मिला। तार भी मिला था। मैंने तार दिया है डा० काटजूका मत इस केसके बारेमें भेजो।[1] और कोई पेपर हो तो सो भी भेजो। वहासे अरजी या तो कैदीके नामसे या वकीलके नामसे वायसरोयको भेजो। और मुझे अरजी की नकल भेजो। बाकी वकीलसाहब कहे सो भी करो। मैं वहासे [जो] हो सकता है करूंगा।

सर्वजीतलाल वर्मा
प्रधान, जिला का० कमेटी
फैजाबाद

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४८२।

७९८. उत्तर : एक पत्र-लेखकको[1]

[३१ अक्तूबर, १९४५ या उसके पूर्व][2]

सरदार मुझे पुत्रवत् प्रिय हैं। हमारा सम्बन्ध पिता-पुत्रके सम्बन्धके समान है। पिता पुत्रको क्या सन्देश दे सकता है? मुझसे सन्देश मिलने की कोई गुंजाइश नहीं है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १-११-१९४५

७९९. पत्र : कंचन मु० शाहको

पूना
३१ अक्तूबर, १९४५

चि० कंचन,

तेरा पत्र अब तो अप्रिय लगने लगा है। मैं जब वहाँ आऊँ, तब मद्रास के बारेमें पूछना। मैं वहाँ २१ नवम्बरको पहुँचने की आशा करता हूँ। मुन्नालालको एक छोटा-सा पत्र[3] लिखा है, रोज उसके जवाबकी राह देखता हूँ। पूछना, जवाब अभी तक क्यों नहीं दिया।

तेरी तबीयत कब ठीक होगी?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६१) से। सी० डब्ल्यू० ६९८६ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१ और २. गांधीजी से वल्लभभाई पटेलके जन्म-दिन, ३१ अक्तूबरके लिए सन्देश देने का अनुरोध किया गया था।
३. देखिए पृ० ३५२।

८००. पत्र : जयकृष्ण भणसालीको

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० भणसाली,

तुम चाहे पानीमे सोओ या जमीनपर, धूपमें बैठो या छायामें, सब एक ही बात है। इसलिए मेरा विचार यह है कि यदि अब तुम नियमपूर्वक सामान्य जीवन बिताओ तो आसपासके लोगोंका बहुत अधिक कल्याण होगा। यदि इस बारेमें किसी प्रकारकी शंका हो तो मुझसे पूछ लेना, क्योंकि मैं वहाँ ज्यादासे-ज्यादा २१ [नवम्बर] तक पहुँचने की आशा करता हूँ।

आश्रम
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

३१ अक्तूबर, १९४५

बापा,

मृदुलाका पत्र कल मुझे मिल गया। तुमने जो कहा था वही ठीक है।

बहन लीला जोगको तीन महीनेके पैसे बिना टीका-टिप्पणीके भेज देना। यदि चाहो तो यह राशि तुम मुझे भेज सकते हो। मैं अपने ढंगसे और अपनी भाषामें इसे सुलझा लूँगा। इस प्रकार इस प्रकरणको समाप्त कर दूँगा।

२२ से २८ नवम्बरके बीच कोई भी तारीखें निश्चित कर देना।

बापू

कस्तूरबा गांधी स्मारक निधि
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०२. पत्र : वसनजी हाँसजीको

३१ अक्तूबर, १९४५

भाई वसनजी हाँसजी,

आपकी भेजी हुई ४२०५ रु० की हुंडी और चन्दा देने वालोंके नामोंकी सूची तथा भाई प्राणशंकर जानी द्वारा दी गई रिपोर्ट मिल गई है। इस राशिका उपयोग मैं आपके लिखे अनुसार करूँगा। सभी चन्दा देने वालों तक मेरे धन्यवाद पहुँचा दीजिएगा।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

वसनजी हाँसजी
गांधी युवक भजन मण्डली
६७/बी स्ट्रीट
जोहानिसबर्ग

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०३. पत्र : छगनलाल जोशीको

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। जब मैं रियासतोंके पैसेके बारेमें नारणदाससे बात कर रहा था तो उसने तुरन्त कहा कि "यदि आपको बन्द करना हो तो अवश्य कर दें।" अब मैं इस बारेमें तुमसे मिलने पर विचार करूँगा। वांकानेरसे पैसा आ गया है। जिस तरह दो किस्तोंमें यह मुझे मिला है, उसी तरह तुम्हें बीमा किये हुए लिफाफेमें भेज दूंगा।

भाई त्र्यम्बकलाल चोकसीके दानके बारेमें समझ गया। उन्हें मैं तत्काल पत्र लिखना नहीं चाहता। उन्होंने जो शर्त रखी है वह मुझे पसन्द नहीं है। इतने छोटे-से दानके लिए हम ट्रस्ट कैसे बना सकते हैं? हरिजन सेवक संघ-जैसी संस्थामें अविश्वास क्यों? अथवा ट्रस्ट बनाने के लिए यह फिजूल बात क्यों? वे इस शर्तके साथ अपने शेयर हरिजन सेवक संघको दे सकते हैं कि उनसे मिलने वाले पैसेका उपयोग सोरठके हरिजनोंके लिए संघके निर्णयके अनुसार किया जायेगा। मैं यह भी मानता हूँ कि यदि इन शेयरोंको बेच देने से अच्छी रकम मिलती हो

तो ऐसा करने का अधिकार भी संघको मिलना चाहिए। इस बारेमें और भी विचार करना और यदि भाई त्र्यम्बकलालसे विचार-विमर्श करना चाहो तो कर लेना। यदि मेरी रायके बारेमें बापाको सूचित करना चाहो तो लिख देना। मैं जब मद्रास पहुँचूं तो मिलने आना।

बापूके आशीर्वाद

छगनलाल जोशी
हरिजन सेवक संघ
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०४. पत्र : सत्यदेवी गिरिको

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० सत्यदेवी,

तेरा पत्र मिला। तूने पूरे परिवारके समाचार देकर अच्छा किया। यदि डॉक्टर तुझे शल्य-क्रियाकी सलाह देता है तो करा लेनी चाहिए। इसमें तो किसी प्रकारका खतरा है ही नहीं। और यदि यह निश्चित हो जाये कि यह अपेंडिसाइटिस है तो इसका कोई अन्य उपचार मैं नहीं जानता। यह अच्छा किया कि तूने चरखा बिलकुल नहीं छोड़ा है। किन्तु उसपर डटे रहना और उसका शास्त्र भी समझ लेना। मैं मानता हूँ कि धर्मकुमारको अपना अध्ययन पूरा कर लेना चाहिए।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

सत्यदेवी गिरि
भीमजी काराका बँगला
बोरीवली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०५. पत्र : जेठालाल गांधीको

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० काकु,

तेरा पत्र मिला। तूने ठीक लिखा है। मैंने कल इसे बुआको भी पढ़कर सुना दिया। सेवावृत्तिके बारेमें तेरा इतना अधिक स्पष्ट लिखना मुझे अच्छा लगता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तू सतर्क हो जाये। पुरानी रूढ़ियोंपर चलने से कौटुम्बिक भार तो अधिक लगेगा ही और यह भी जान ले कि उनपर चलने से व्यक्ति बहुत बार उनमें बँध जाता है। इसलिए तुझे सेवावृत्तिका और भी विकास करना होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री जेठालाल गांधी
मार्फत जीवनलाल (१९२९) लि०
१२७, मिण्ट स्ट्रीट
जी० टी० मद्रास

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०६. पत्र : खुशाल शाहको

३१ अक्तूबर, १९४५

भाई खुशाल शाह,

समझौतेके आधार-सम्बन्धी[1] तुम्हारी अंग्रेजी पुस्तक मिली। मैंने बदस्तूर दो-चार मिनट पुस्तकके पन्ने उलटे और फिर अनुक्रमणिका खोजनी शुरू की, किन्तु वह नहीं मिली। यदि तुम्हारी गम्भीर पुस्तकोंमें अनुक्रमणिका न हो तो कैसे बात बनेगी? तुम्हें अपना कोई ऐसा सहायक खोज लेना चाहिए जो अनुक्रमणिका तैयार कर सके। मैं जानता हूँ कि तुमने उपन्यास भी लिखे हैं और सम्भवतः अब भी लिखते होंगे। उनमें अनुक्रमणिका न होने की बात तो मैं समझ सकता हूँ। किन्तु गम्भीर पुस्तकोंमें अनुक्रमणिकाका न होना कैसे समझमें आ सकता है? आशा है

१. तात्पर्य "फाउण्डेशन ऑफ पीस" से है।

तुम सकुशल होगे। मैंने तुम्हारा पत्र अभी-अभी देखा। यह तो मैंने पहले ही लिखा था। यदि तुम अपनी पुस्तकें गुजराती अथवा राष्ट्रभाषामें लिखने लगो और सो भी इस प्रकार कि उसे करोड़ो लोग समझ सकें तो कितना अच्छा हो!

बापूके आशीर्वाद

प्रो० के० टी० शाह
८, लेबर्नम रोड
गामदेवी
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

८०७. पत्र : छगनलाल शाहको

३१ अक्तूबर, १९४५

भाई छगनलाल,

तुम्हें वहाँसे घर चले जाना चाहिए और वहाँ सादा जीवन बिताते हुए जैसे ईश्वर रखे वैसे रहना चाहिए। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

छगनलाल शाह
देवजी लधा
दफ्तरी रोड
पूर्व मलाड

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०८. पत्र : डॉ० प्रकाशको

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० प्रकाश,

मेरी उम्मीद है कि डिसेम्बरकी पहली तारीखको कलकत्ता, सोदपुर खादी प्रतिष्ठान पहोंचुंगा। तू मेरे साथ कलकत्ता रहेगी तो मुझे आनंद होगा।

प्या[रेला]ल का बुखार गया है।

बापुके आ[शीर्वाद]

डॉ० प्रकाश
डफरीन राज हास्पीटल
बेतिया
जि० चंपारन

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८०९. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

३१ अक्तूबर, १९४५

भाई राजाजी,

त्रावणकोरमें जो खिस्ती आंदोलन तालीमके बारेमें चल रहा है उसका अभ्यास [अध्ययन] किया है क्या? अगर किया है तो मुझे अभिप्राय [राय] लिखो। शास्त्रीयारने इस बारेमें निश्चयपूर्वक अभिप्राय दिया है। उनसे भी बात करना हो तो करो। सत्य कहां है और क्या है? मैं तो पूरा अभिप्राय नहीं दे सका इसलिए तुमको लिखा है।

इतनी हिन्दी पढ़ने में तुम्हें कष्ट नहीं पड़ना चाहिये।

बापुके आ[शीर्वाद]

सी० आर०
मद्रास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८१०. पत्र : ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्‌को

३१ अक्तूबर, १९४५

चि० आर्यनायकम्,

त्रावणकोरमें जो तालीमके बारेमें आजकल गोलमाल चल रही है उसे तुमने पढ़ा हो तो अपना मत मुझे भेज दो। मुझे बहुत लोग लिख रहे हैं कि मैं कुछ कहूं। मैंने आज तक कुछ पढ़ा नही था। मसाला भी नही था। अब श्री चैरियन कोपेननें एक खत भेजा है और साथमें काफी साहित्य भी भेजा है। मैंने पढ़ा। अगर तुमने नही पढ़ा है और तुम्हें चाहिए तो मैं भेज सकता हूं। ऐसा ही खत कुमारप्पाको भेजा है।

बापूके आ[शीर्वाद]

आश्रम
सेवाग्राम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८११. पत्र : कालीचरण घोषको

३१ अक्तूबर, १९४५

भाई कालीचरण घोष,

आपका खत मिला। बंगालके दुष्कालकी किताब मेरे पास पड़ी है लेकिन मैं पढ़ नही सका हूं। 'इकोनोमिक रीसोर्सिस आफ इन्डिया' भी भेजीए। प्रार्थनाके बारेमें मैंने जितना लिखा है उसे आप गौरसे पढ़ीये। खादी प्रतिष्ठानके सतीशबाबुसे आप मिले। बाबु निर्मलकुमार बोससे भी मिले। यदि इससे भी संतोष न हो तो मुझे आप दुबारा लिखें।

अच्छा है आपको काम कामसे है नामसे नही। अगर नामसे रहे तो सिर्फ रामनामसे क्योंकि उसमें सब काम आ जाता है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री कालीचरण घोष
६, राजा बसंतराय रोड
कालीघाट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८१२. पत्र : चेरियन कोपेनको

[अक्तूबर, १९४५][1]

भाई चेरीअन कोपेन,

आज तक मुझको त्रावणकोरमें शिक्षाके बारेमें जो आंदोलन चल रहा है उस बारेमें कुछ साहित्य आपने ही भेजा है। मैं आपका खत तो पढ़ गया, लेकिन उसके साथका साहित्य सब तो नहीं पढ़ा, लेकिन मेरे कामके जितना देख लिया। अभी निश्चयपूर्वक अभिप्राय देने लायक नहीं बना हूं। ऐसी हालतमें इतना ही आश्वासन दे सकता हूं कि जो मेरे खिस्ती मित्र हैं और ऐसे अन्य धर्मके मित्र हैं, जो ऐसी बातोंमें दिलचस्पी लेते हैं उनसे मैं पूछ रहा हूं कि यह सब है क्या।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८१३. रोजके विचार[2]

१७ जुलाई, १९४५

समुंदरमें पड़ी हुई मछी अगर समंदरको पहचान सकती है तो संसारमें पड़ा हूआ प्राणी संसारको पहचान सकता है।

१८ जुलाई, १९४५

गुरु तेघबहादुर कहते हैं कि गंदा काम नहीं करना यही सही कानून है।

१९ जुलाई, १९४५

जीना जूठ है, मृत्यु सही है, निश्चित है। (नानक)

१. ३१ अक्तूबर, १९४५ को ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम्को लिखे पत्रमें चेरियन कोपेनके उल्लेखके आधारपर लगता है कि यह पत्र भी उसी समय लिखा गया होगा; देखिए पृ० ४९२।

२. आनन्द तो० हिंगोरानीके अनुरोधपर गांधीजी २० नवम्बर, १९४४ से रोज एक विचार लिखा करते थे। इन विचारोंको आनन्द हिंगोरानीने **बापूके आशीर्वाद** शीर्षकसे पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया। प्रस्तुत खण्डकी अवधिमें लिखे गये ये विचार एक ही शीर्षकके रूपमें दिये जा रहे हैं। १७ जुलाई, १९४५ से पूर्वके विचारोंके लिए देखिए इस ग्रन्थमालाके खण्ड ७८, ७९ और ८०।

२० जुलाई, १९४५

सत्य अतरमे ढुढने से मिलता है, दलीलसे सवादसे कभी नही। सत्यके बदलेमें ईश्वर पढ़ो तो भी एक बात है।

२१ जुलाई, १९४५

नानक कहते हैं कि ईश्वर हरेकके हृदयमें है और इस कारन हरेक हृदय ईश्वर मदीर है।

२२ जुलाई, १९४५

अगर हरेक हृदयमे ईश्वर है तो हम किसका तिरस्कार करे?

२३ जुलाई, १९४५

नानक कहते हैं अगर हम ईश्वरके कानूनपर चले तो हमें मनुष्यके कानूनकी गुजायश नही रहती है।

२४ जुलाई, १९४५

नानक कहते हैं इश्वरका कानून है कि हम जगतमे एक कुटुब हैं और हरेक व्यक्तिको दूसरोंके लिये रहना है।

२५ जुलाई, १९४५

अहकाररूपी अधकार अधकारसे भी ज्यादा है।

२६ जुलाई, १९४५

इस अहकाररूपी अधकारको कैसे निकाले? रजवत् होने तककी नम्रता रूपी प्रकाशसे।

२७ जुलाई, १९४५

दु.ख है वह सुखकी दूसरी बाजु है इसलिये सुखके पीछे दु:ख रहा ही है। इससे उलटा दु:खके पीछे सुख।

२८ जुलाई, १९४५

जैसे सुखदु:खकी जोडी एकके पीछे एक चलती है इसी तरह सब चीज के लिये है। उसका नतीजा है कि हमें सच्ची शातिके लिये उस जोडीके उपर जाना है।

२९ जुलाई, १९४५

आत्मारूपी सही धनको जो नही पहचानता न उसकी रक्षा करता है वह और किस चीजकी रक्षा कर सकता है?

३० जुलाई, १९४५

एक वचन भी सत्य है तो काफी है; असत्य वचन कितने भी हों निकम्मे हैं।

३१ जुलाई, १९४५

सत्य वचनकी शक्ति यहां तक जाती है कि मनुष्यको स्वार्थसे परमार्थमें ले जाती है।

१ अगस्त, १९४५

वही जिंदा है जिसके हृदयमें राम रहता है ऐसा जानता है।

२ अगस्त, १९४५

शुद्ध ज्ञान धर्मग्रंथ पढ़ने से नहीं मिलता। शुद्ध ज्ञान सिवाय सद्गुणके असंभवित है।

३ अगस्त, १९४५

आदमी प्रतिक्षण जाग्रत न रहे तो सत्य उसे मिल ही नहीं सकता है।

४ अगस्त, १९४५

सत्याग्रहीके लिये अधिकार जैसी कोई चीज हो नहीं सकती है। क्योंकि अधिकार सेवा ही के लिये लिया जाता है।

५ अगस्त, १९४५

इसलिये सत्याग्रही कभी अधिकार ढुंढ़ेगा नहीं अधिकार उसे ढुंढ़ लेगा।

६ अगस्त, १९४५

सत्यरूपी क्षीरसागरमें असत्यरूपी जहरका एक भी बिंदु दाखल थाय (होवे) तो सारा क्षीरसागर जहरी बन जाता है।

७ अगस्त, १९४५

नानक कहते हैं "मनुष्य औरतमें है और औरत मनुष्यमें है।" तो भी जगत में व्यभिचार क्यों चलता है?

८ अगस्त, १९४५

आकाशके नीचे मैदानमें नानक पड़ा था। एक सुखी गृहस्थने कहा। नजदीकमें सुंदर धरमशाला है वहां जाईये। नानकने जवाब दिया, "मेरी धरमशाला सारी पृथ्वी है आकाश उसका छप्पर है।"

९ अगस्त, १९४५

नानक कहते हैं सुखकी लालसा सच्ची व्याधी है दु:ख उसका उपचार है।

१० अगस्त, १९४५

फिर नानक कहते हैं, "जो देते हो वह तुमारा है जो रखते हो वह तुमारा नहीं है।"

११ अगस्त, १९४५

जब हम कुछ भी लेते हैं तब दूसरोंके मुंसे निकालते हैं। इसलिये हरेक चीज लेने के समय हम देखें कि आवश्यक चीज ही ले और आवश्यकता कम से कम रखे।

१२ अगस्त, १९४५

नानक कहते हैं जो मनुष्य सख्त शरीर महनत करके कमाता है और जो कमाता है उसे दूसरोंके साथ बांटता है वही सच्चा हो सकता है।

१३ अगस्त, १९४५

नानक कहते हैं आदमी जितना भोग भोगता है इतना ही दुखी होता है।

१४ अगस्त, १९४५

इटालीकी संत कथेरिनके पास पैसे नही थे, अपना झभा पहना था। एक मिस्कीनने वह मागा। संतने दे दिया। किसीने पूछा इस तरह रास्तेमें कैसे जायगी? [उसने उत्तर दिया] "प्रेम पहनना मुझे झभासे अधिक ढाकता है।"

१५ अगस्त, १९४५

पैसेसे ही स्मरण कायम होता है इस भ्रमणा [भ्रम] ने कितना नुकसान किया है? यह विचार इस महादेव [देसाई] की संवत्सरीके दिन आता है।

१६ अगस्त, १९४५

नानक कहते हैं कि स्वाव इस चीजका साक्षी है कि आत्मा इंद्रियोंको अपना साधन बनाता है। लेकिन जब आत्मा इंद्रियोंको वशमें रखता है तो ये सच्चा साधन बनती है और आत्मा परमात्माके साथ मिलनकी तैयारी करता है।

१७ अगस्त, १९४५

भूखका दुःख पेट भरकर खाने से नही मिटता है लेकिन थोड़ा सा औषधरूप खाकर संतुष्ट रहने से ही मिटता है।

१८ अगस्त, १९४५

अहंभाव मिटने से ही बीक (डर) मिटती है।

१९ अगस्त, १९४५

अखबार पढ़ना आजकल मुसीबत है। सही खबर मिलती नहीं है। न पढ़ने से नुकसान नहीं है।

२० अगस्त, १९४५

अशक्यको शक्य बनाना[1] जितना सरल है इतना ही मुश्केल अशक्यको शक्य बनाना है।

२१ अगस्त, १९४५

अशक्य दीखता है वह अशक्य है ही ऐसा हमेशा नहीं है।

२२ अगस्त, १९४५

एकके पास ईश्वर है, करोडके पास शैतान है, तो एक करोडसे डरे?

२३ अगस्त, १९४५

माना कि दोनोंके साथ ईश्वर है तो कौन किससे डरे?

२४ अगस्त, १९४५

जो ईश्वरको याद करता है वह दूसरा सब भूल सकता है।

२५ अगस्त, १९४५

जो दूसरा सब याद रखे और ईश्वरको भूले उसने कुछ याद नहीं किया है।

२६ अगस्त, १९४५

जो ईश्वरको भूलता है वह अपनेको भूलता है।

२७ अगस्त, १९४५

अगर आत्मा है तो परमात्मा है ही।

२८ अगस्त, १९४५

हम शरीरधारी होने के कारण परमात्माकी हस्तिकी कल्पना नहीं कर सकते हैं।

१. स्पष्ट ही गांधीजी "शक्यको अशक्य बनाना" लिखना चाहते होंगे।

२९ अगस्त, १९४५

जो आदमी अहिंसाको नहीं मानता है वह सत्यको कैसे मान सकता है? अगर अहिंसा व्यवहारमें नहीं उतरती है तो सत्य भी नहीं उतर सकता।

३० अगस्त, १९४५

जो आदमी अपने कामके लिये हिंसा कर सकता है वह असत्य क्यों नहीं बोलेगा या करेगा?

३१ अगस्त, १९४५

कई चीज आदमी बोलकर करता है, कई मौनसे और कई कार्यसे। सबमें ज्ञान है तो कार्य ही है।

१ सितम्बर, १९४५

हम ऐसी गलती मानने की कभी न करें कि गुनाहमें छोटा-बड़ा होता है।

२ सितम्बर, १९४५

एक चोरी करता है, एक चोरीमें मदद करता है, एक चोरीका इरादा करता है। तीनों चोर हैं।

३ सितम्बर, १९४५

जो मैं करता हूं वह छोटा दोष है और दूसरे करते हैं वह बड़ा दोष है ऐसे मानने वाला अज्ञान कूपमें पड़ा है।

४ सितम्बर, १९४५

शरमके मारे जो आदमी दोष करता है वह दोगुना दोष करता है और कभी ईश्वरके सामने नहीं खड़ा रह सकेगा।

५ सितम्बर, १९४५

जो ईश्वरको साक्षी रखकर कुछ सोचता है, बोलता है, करता है वह सच्चा करने से कभी शरमींदा नहीं होगा।

६ सितम्बर, १९४५

जो मनुष्य अेक वस्तु दिलसे मानता है वह सर्वथा अनुचित है तो भी उसकी दृष्टिसे सही है।

७, सितम्बर १९४५

जो ईश्वरकी हस्तिके बारेमें शंका करता है उसका नाश होता है।

८ सितम्बर, १९४५

जिसका ईश्वरकी हस्तिके लिये शंका है उसे अपनी हस्तिके लिये [भी] शंका होनी चाहीये[1]?

९ सितम्बर, १९४५

जिसका वर्तन पशु जैसा है वह पशुसे बदतर है। पशुका पशुत्व उसके लिये स्वाभाविक है मनुष्यका नहीं।

१० सितम्बर, १९४५

स्त्री अबला नहीं है। अपनेको कभी पुरुषसे बलहीन नहीं है [समझे]। इसलिये किसी पुरुषकी दया न मांगे न अपेक्षा करे।

११ सितम्बर, १९४५

राजा या रंक हरेक अपने धर्मका चौकीदार होता है। इसमें हर्ष क्या शोक क्या?

१२ सितम्बर, १९४५

ताजुब है कि आदमी बहोत दफा नहीं जानता है कि दुश्मन कौन और दोस्त कौन?

१३ सितम्बर, १९४५

जो मातृभाषाकी अवगणना करता है वह अपनी माताकी करता है।

१४ सितम्बर, १९४५

जो जमीनपर बैठता है उसे कौन नीचे बिठा सकता है, जो सबका दास बनता है उसे कौन दास बना सकता है?

१५ सितम्बर, १९४५

क्रोधावेशमें आदमी अपना नुकसान करता है, उसका पुरावा [प्रमाण] रोज मिलता है।

१६ सितम्बर, १९४५

हमारा जीवन रोज नया होता है यह ज्ञान हमको उंचे जाने के लिये मददगार बनना चाहीये।

१७ सितम्बर, १९४५

अगर सुखके पीछे पड़े तो सुख दूर भागता है। सच्च तो यह है कि सुख भीतरसे ही मिलता है। कोई सौदा करने की चीज नहीं है कि हम बाहर से मोल ले।

१. मूलमें यहाँ "नहीं होनी चाहीये" है। लेकिन बापूके आशीर्वाद पुस्तकमें "नहीं" निकाल दिया गया है।

१८ सितम्बर, १९४५

यह पंचीदा प्रश्न है: मनुष्य कहा तक अपने साथीओके साथ चले जब वह जानता है कि वे सचमुच अपने [उसके] साथ नही चलते हैं।

१९ सितम्बर, १९४५

जो मनुष्य क्रोधका कारण मिलते हुए भी क्रोध नही करता है उसीने ही क्रोधपर जय पाया है।

२० सितम्बर, १९४५

क्रोधपर जय पाने का अर्थ यह नही कि बाहरसे क्रोध नही दीखता मगर भीतरमें तो क्रोध भरा ही है। ज्ञानपूर्वक क्रोध जडसे निकालना ही जय है।

२१ सितम्बर, १९४५

बुखारका कारण बदहजमी इ[त्यादि] ही नही है। क्रोध करने से भी बुखार आ सकता है।

२२ सितम्बर, १९४५

दूसरोंपर जीत पाना अपनेपर जीत पाने से बहुत सहल है क्योंकि पहली जीतमें बाहरके साधन काम देते हैं; दूसरीमें निजी मन ही कारण है।

२३ सितम्बर, १९४५

जो धर्म यंत्रवत बनता है वह धर्म नही कहा जा सकता है।

२४ सितम्बर, १९४५

धर्म मनुष्य जीवनमें ओतप्रोत बने तब ही वह धर्म माना जाय, वह वस्त्र जैसी वस्तु नही है।

२५ सितम्बर, १९४५

पैसा परमेश्वर है ऐसे कहना गलत बात है, और गलत सिध हो चूका है।

२६ सितम्बर, १९४५

एक कानून तोड़ा तो सब टूटे क्योंकि सब कानूनोंका मूल एक है और एक टूटने से आत्मसंयम टूटा।

२७ सितम्बर, १९४५

प्रवृत्ति मात्र आत्माके विकासके लिये है या होनी चाहीये। और आत्म-विकासमें ईश्वर दर्शन छिपा है।

२८ सितम्बर, १९४५

मनुष्य ईश्वरको पूजे और मनुष्यका तिरस्कार करे यह बनने लायक नहीं है।

२९ सितम्बर, १९४५

मनुष्यकी सच्ची पहचान उनके हार्दिक विनयसे होती है।

३० सितम्बर, १९४५

कविने कहा है कि विद्या रहित मनुष्य पशु समान है। यह विद्या कौन सी?

१ अक्तूबर, १९४५

विद्या वही है जिससे मनुष्य अपनेको पहचाने। इसका अर्थ आत्मज्ञान हुआ।

२ अक्तूबर, १९४५

"पर दुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे" अगर अंतर्यामी सब करवाता है तो अभिमान कैसे?

३ अक्तूबर, १९४५

श्रद्धामें निराशाको कोई स्थान नहीं है।

४ अक्तूबर, १९४५

व्यवहारमें जो काम न दे वह धर्म कैसे हो सकता है?

५ अक्तूबर, १९४५

धर्मका जामा पहननेसे पाप पुण्य नहीं बनता; भूल भूल नहीं मिटती।

६ अक्तूबर, १९४५

प्राण जाय वरु बचन न जाई — तुलसीदास

७ अक्तूबर, १९४५

नहिं असत्य सम पातक पुंजा, गिरि सम होइ कि कोटिक गुंजा — तुलसीदास

८ अक्तूबर, १९४५

गुरु संपूर्ण होना चाहीये। वह तो ईश्वर ही है।

९ अक्तूबर, १९४५

मूर्खको समजाना आसान है। अर्ध-दग्धको कौन समजा सकता है?

१० अक्तूबर, १९४५

जो नियमोंको जानता नहीं है और उनका पालन नहीं करता है वह लोक-सेवक हो ही नहीं सकता।

११ अक्तूबर, १९४५

अनासक्तिकी एक परीक्षा है कि मनुष्य राम नाम लेकर सोने के समय एक क्षणमें सो सकता है।

१२ अक्तूबर, १९४५

नरसिंह महेता कहता है "मैं करता हूं, ऐसा कहना ही अज्ञानताकी परिसीमा है।" इसके ध्यानमें अनासक्तिकी कूंजी है।

१३ अक्तूबर, १९४५

रोगग्रस्त शरीर स्वस्थ बन सकता है, रोगग्रस्त मन नहीं।

१४ अक्तूबर, १९४५

अपने गुण आप देखे और उसकी स्तुती दूसरोंसे करे उससे बड़के [बढ़कर] नीचता कैसी होगी?

१५ अक्तूबर, १९४५

दूसरोंके दोष ही देखना अपने गुणोंको देखने से भी नीच है।

१६ अक्तूबर, १९४५

विषय आता है ऐसे ही जाता है। सवाल तो यह है: जब वह हमें छोडते हैं तब हम दुःख पाते हैं, जब हम उसे छोडते हैं तब हम सुख और आनंद पाते हैं।

१७ अक्तूबर, १९४५

स्वार्थको जब मनुष्य परमार्थ मानता है तब सियारको सिंह मानने जैसा करता है।

१८ अक्तूबर, १९४५

"हिमालय दूरसे ही अच्छा लगता है", ऐसे प्रायः सब चीजोंके लिये है।

१९ अक्तूबर, १९४५

पवित्रताकी परीक्षा तब होती है जब अपवित्रतासे घर्षण होता है।

२० अक्तूबर, १९४५

जैसे पवित्रताका ऐसे सब गुणोंका। अहिंसाकी परीक्षा हिंसाका सामना करने में होती है।

२१ अक्तूबर, १९४५

अवगुण अंधेरेमें फलता है, प्रकाशमें गैब [गायब] हो जाता है।

२२ अक्तूबर, १९४५

अहिंसा सत्यार्थी स्वयं प्रकाश है। अगर नहीं है तो वह नकली वस्तु है।

२३ अक्तूबर, १९४५

न्यायमें जितनी उदारताकी जरूरत है इतनी ही न्यायकी उदारतामें है।

२४ अक्तूबर, १९४५

सजा तो वही कर सकता है जिसके निर्णयमें निश्चय है। ऐसा ईश्वरके सिवाय कौन हो सकता है?

२५ अक्तूबर, १९४५

बोलना या नहीं ऐसा संशय है तब मौन ही बोलने का स्थान लेता है।

२६ अक्तूबर, १९४५

धर्म पालने खाने न खाने से नहीं होता लेकिन ईश्वरको अंतरसे और अंतरमें पहचानने से ही होता है।

२७ अक्तूबर, १९४५

धर्म जो दूसरोंसे भी वही अपेक्षा करे वह धर्म नहीं है। जैसे अहिंसा धर्म हिंसाके सामने ही प्रदर्शित होता है।

२८ अक्तूबर, १९४५

तामील कवी कहते हैं, "पानीमें लिखे हुए अक्षर रहते हैं इतना ही शारीरिक जीवन है।" इसपर बार २ विचार करना चाहीये।

२९ अक्तूबर, १९४५

मद्यपान मनुष्यको क्षण भर दीवाना बनाता है। मद उसे खा जाता और उसे पता भी नही होता है।

३० अक्तूबर, १९४५

खूबी अकेले झूझने [जूझने]मे है। विरोधी एक हो या अनेक।

३१ अक्तूबर, १९४५

जो जीना नही जानता है वह मरना कैसे जाने?

बापूके आशीर्वाद (रोजके विचार), पृ० २४०-३४६

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

लॉर्ड वेवलको अबुल कलाम आजादका पत्र[1]

आर्म्सडेल, शिमला
१५ जुलाई, १९४५

प्रिय लॉर्ड वेवल,

सम्मेलनकी विफलताकी घोषणा करने के बाद आपने पूर्ण शान्ति बनाये रखने के लिए सभी दलोंसे सहयोगकी जो माँग की, वह अच्छा ही किया। इस विफलताके बारेमें कांग्रेसके दृष्टिकोणको मैं दुहराना नहीं चाहता। सम्मेलनमें मैंने इसे अच्छी तरह बता दिया था। परन्तु आपके और अपने प्रति औचित्य निभाते हुए मैं इतना अवश्य बता दूं कि यह सहयोग सर्वथा तभी सम्भव है जब इस सम्मेलनमें उपस्थित बाधाओंको दूर कर दिया जाये। इनमें से कुछ बाधाएँ तो मनोवैज्ञानिक ढंगकी हैं, जिनकी जड़ें भारत और इंग्लैण्डके बीच पूर्व सम्बन्धोंसे जुड़ी हैं। इन सम्बन्धोंमें परिवर्तन आने पर ही इन बाधाओंको धीरे-धीरे दूर किया जा सकता है। लेकिन बहुत-सी बाधाएँ ऐसी भी हैं जो अधिक मूर्त हैं, जो हम लोगोंको लगातार कष्ट पहुँचाती रहती हैं और जो हमारे दैनिक कार्यकलापोंको भी प्रभावित करती हैं। वे निरन्तर हमारे समक्ष बनी रहती हैं। इसीलिए, इन सब बातोंको महसूस करते हुए भी सिवाय इसके कि आपसे बातचीतके दौरान परोक्ष रूपसे कभी उनकी ओर इशारा किया गया हो, हमने इस मसलेको उठाना मुनासिब नहीं समझा, क्योंकि जिस समय आप ऐसे नाजुक मसलेको हल करने में लगे हुए थे उस समय हम आपके रास्तेमें किसी भी प्रकारकी रुकावट पैदा नहीं करना चाहते थे।

२. लेकिन अब जबकि एक अध्याय समाप्त हो चुका है और हमारे तथा आपके मन एक ऐसे हलको ढूंढ़ने में लगे हुए हैं जो सम्बन्धित पक्षोंके सम्मानको रखते हुए भारतकी स्वतन्त्रताके लक्ष्यकी ओर ले जाने वाला हो, तब ऐसी अवस्थामें सहयोग के मार्गमें आने वाली इन बाधाओंको नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। इसलिए मैं उन्हें इस आशाके साथ आपके सामने रखने का साहस कर रहा हूँ कि आप उन्हें दूर करने के लिए यथाशीघ्र कदम उठायेंगे।

३. नीचे मैं उन उपायोंको दे रहा हूँ जिन्हें मैं आवश्यक समझता हूँ और उनकी मैं आपसे जोरदार सिफारिश करता हूँ।

(क) कांग्रेस और सभी सम्बद्ध संस्थाओंपर लगे प्रतिबन्ध शीघ्र हटा लिये जायें, क्योंकि अब कांग्रेस कमेटीके एक गैर-कानूनी संस्था होने के कारण दूसरी बैठक बुलाना सम्भव नहीं है।

१. देखिए पृ० ४। इस पत्रपर गांधीजी ने स्वयं सुधार किये हैं।

(ख) सभी नजरबन्द बिना किसी शर्त छोड़ दिये जायें — चाहे वे नजरबन्द केन्द्रीय सरकारके हों या प्रान्तीय सरकारोंके।

(ग) रिहा किये गये कैदियों अथवा नजरबन्दोंपर से कहीं भी आने-जाने के सभी प्रतिबन्ध हटा लिये जायें।

(घ) जिन कैदियोंपर राजनीतिक या ऐसे ही अन्य अपराधके मुकदमे चल रहे हैं उनके मामलोंकी जाँच एक सार्वजनिक न्यायाधिकरण द्वारा होनी चाहिए, जिसका निर्णय सरकारको भी अन्तिम मानना चाहिए।

(ङ) समाचारपत्रोंकी स्वतन्त्रतापर अथवा लोगोंके आने-जाने अथवा उनके एकत्र होने पर लगे अतिरिक्त कानूनी प्रतिबन्ध हटा लिये जायें, ताकि लोगोंको यह महसूस हो कि प्रजातन्त्रमें स्वाभाविक रूपमें कामकाज करने की उन्हें भी आजादी है।

(च) अगस्त १९४२ में हुई गड़बड़ीके फलस्वरूप फाँसीकी विचाराधीन सजाएँ आजीवन कारावासमें बदल दी जायें।

(छ) जिन फरारोंको अभी गिरफ्तार नहीं किया गया है उनके गिरफ्तारीके हुक्म रद्द कर दिये जायें।

(ज) जिन कैदियोंने अपनी सजाके पूरे चौदह साल पूरे कर लिये हैं, उन्हें बिना किसी शर्तपर छोड़ दिया जाये।

(झ) ऊपर कैदियोंके बारेमें जो बात कही गई है वही बात उससे भी ज्यादा जोरसे उनकी चल-अचल व अवरुद्ध या जब्त सम्पत्तिपर भी लागू होती है।

४. ऊपर जो माँगें पेश की गई हैं वे उचित हैं या अनुचित, मैंने इस बहसमें पड़ने की कोशिश नहीं की है, क्योंकि आप निःसन्देह स्वयं यही चाहेंगे कि जो दिशा-निर्देश दिये गये हैं उनके अनुसार ही कार्यवाही होनी चाहिए। जब जापान की हारके बाद भारतको स्वतन्त्रता दिलवाने के लिए भारतमें एक वास्तविक राष्ट्रीय प्रतिनिधि कार्यकारी परिषदकी स्थापना होने वाली हो, तब यही रास्ता अख्तियार करना जरूरी है, यह बात स्वयंसिद्ध और प्रमाणित है।

५. मैं आपका ध्यान एक और मामलेकी ओर भी दिलाना चाहता हूँ। कांग्रेसकी ओरसे मुझे यह बताने की जरूरत नहीं कि इस सम्बन्धमें आपने जो उपाय करने का वादा किया है, उसका चाहे कुछ भी परिणाम निकले, लेकिन कांग्रेस सदैव जापानी हमलेके खिलाफ रही है और आज भी उसकी निन्दा करती है। इसलिए कांग्रेसकी तो यही इच्छा रहेगी कि चीनपर जापानी हमलेमें या जापान द्वारा किसी और देशपर हमलेमें जापानकी ही हार हो। लेकिन यदि मैं आपको यह सूचित न करूँ कि कांग्रेसके मतानुसार केन्द्रमें जब तक प्रान्तीय सरकारोंकी सहायतासे एक जनतान्त्रिक सरकारकी स्थापना नहीं हो जाती तब तक भारतमें जो भी कार्यवाही हो रही है वह ब्रिटिश और मित्र-राष्ट्रों द्वारा की गई कार्यवाही ही

समझी जायेगी, तो इस अनुच्छेदमें मैंने आपको जो बात बताई है वह अधूरी ही रह जायेगी।

भवदीय,

माननीय वाइकाउंट वेवल
वाइसराय भवन, शिमला

अंग्रेजी पत्रसे : ए० आई० सी० सी० फाइल नं० १८५१-ए, १९४५-४६। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

परिशिष्ट २

विवाह-विधि[1]

गजानन नारायण महादेव तेन्दुलकर और इन्दुमती नागेश वासुदेव गुणाजीकी विवाह-विधि होती है, उसे मैं ईश्वरको दरम्यान समझकर करता हूँ। आप दोनों भी ऐसा करें। इस विधिमें आप जो साक्षी बने हैं अपने मन पवित्र रखें और विवाहाकांक्षीकी पवित्र इच्छाके सहायभूत हों।

अब मैं ईश्वरको धन्यवाद देने वाला भजन गाता हूँ, सो ध्यानसे सुनें। (भजन 'आज मिलकर गीत गाओ।')

१. प्रश्न : आप दोनों स्वस्थचित्त हैं?

उत्तर : (दोनों कहें) जी हां।

२. प्रश्न : आपने कल सूत यज्ञ[2] जैसा बताया गया था किये?

उत्तर : जी हां।

३. प्रश्न : आप लोग जानते हैं न कि यह सम्बन्ध विषय-सुखके लिए और भोगके लिए नहीं है?

उत्तर : जी हां।

४. प्रश्न : इस (गृहस्थ) आश्रममें आप धर्मभावसे, त्यागभावसे और सेवाभावसे प्रवेश करते हैं?

उत्तर : जी हां।

१. देखिए पृ० ८८।
२. देखिए पृ० १४७।

५. प्रश्न : इस कारण दोनों एक-दूसरेके सेवाकार्यमें विक्षेप नहीं डालेंगे, लेकिन एक-दूसरेकी मदद करेंगे?

उत्तर : जी हाँ।

६. प्रश्न : एक-दूसरेके प्रति मन, कर्मसे हमेशा वफादार रहेंगे?

उत्तर : जी हाँ।

७. प्रश्न : हिन्दुस्तान जब तक स्वतन्त्र नहीं होगा, तब तक आप प्रजोत्पत्तिके काममें नहीं लगने का भरसक प्रयत्न करेंगे?

उत्तर : जी हाँ।

८. प्रश्न : जो अस्पृश्य माने जाते हैं उनके साथ रोटी-बेटीका व्यवहार करने-कराने में मानते हैं न?

उत्तर : जी हाँ।

९. प्रश्न स्त्री-पुरुषके समान अधिकार हैं, ऐसा मानते हैं न?

उत्तर : जी हाँ।

१०. प्रश्न : आप लोग एक-दूसरेके मित्र हैं। दास-दासी कभी नहीं। यह भी ठीक है न?

उत्तर : जी हाँ।

११. प्रश्न : दूसरे प्रश्नमें बताये सात यज्ञ सप्तपदीका स्थान लेते हैं, वह भी आप समझते हैं न?

उत्तर : जी हाँ।

अब मैं आपको अपने हाथके काते हुए सूतके मार्फत इस बन्धनमें डालता हूँ। आप लोग इस सूत-हारको जतनसे रखें और याद रखें कि आपका यह बन्धन आप कभी नहीं तोड़ेंगे और आपने जो प्रतिज्ञा यहाँ की है उसके पालनमें आप इस धर्म-क्रियाको याद करके भगवानसे माँगें कि सर्वशक्तिमान परमात्मा आपकी सहाय करे।

अब हम साथ मिलकर राम-धुन गायेंगे।

१८-८-१९४५

बापूकी कलमसे, पृ० ४४५-४६

सामग्रीके साधन-सूत्र

'(द) इकनॉमी ऑफ परमानेन्स' (अंग्रेजी) : जे० सी० कुमारप्पा, ऑल इंडिया विलेज इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन, वर्धा, १९४६।

'कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऑर विलेजिज्म?' (अंग्रेजी) : भारतन कुमारप्पा, शक्ति-कार्यालयम, पब्लिशर्स, मद्रास, १९४६।

'खादी-जगत्' : अ० भा० ग्रामोद्योग संघ द्वारा सेवाग्राम, वर्धासे प्रकाशित हिन्दी मासिक। सम्पादक : कृष्णदास गांधी। जुलाई १९४१ में प्रथम बार प्रकाशित।

'गांधीज एमिसरी' (अंग्रेजी:) सुधीर घोष, द क्रेसेन्ट प्रेस, लन्दन, डब्ल्यू० आई०, १९६७।

'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७' (अंग्रेजी) : सम्पादक : प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५९।

'ग्राम उद्योग पत्रिका', भाग १ : सम्पादक : भारतन कुमारप्पा, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी मासिक।

तमिलनाडु सरकार।

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद' : सम्पादक : काका कालेलकर, जमनालाल सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

पुलिस कमिश्नरका कार्यालय, बम्बई।

प्यारेलाल पेपर्स : नई दिल्लीमें श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' (अंग्रेजी) : जे० सी० कुमारप्पा, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४५।

'बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) : सम्पादिका : मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) : मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूकी कलमसे' : सम्पादक : काका कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष'. हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम मुद्रणालय, प्रयाग, १९५७।

'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार) : सम्पादक : आनन्द तो० हिंगोरानी, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार। १९६८ में प्रथम बार प्रकाशित।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

भारत कला भवन, वाराणसी।

मध्य प्रदेश सरकार।

'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', भाग ७ (अंग्रेजी) : डी० जी० तेन्दुलकर, विट्ठल के० झवेरी और डी० जी० तेन्दुलकर, बम्बई, १९५२।

'माई डेज विद गांधी' (अंग्रेजी) : निर्मलकुमार बोस, प्रकाशक : अमिभूषण चटर्जी, कलकत्ता, १९५३।

'राष्ट्रभाषाके प्रश्नपर गांधीजी और टण्डनजी का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार'. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली : गांधी साहित्य और गांधीजी से सम्बन्धित कागज-पत्रोंका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

'सर्वोदय' : वर्धासे प्रकाशित हिन्दी मासिक।

साबरमती संग्रहालय, अहमदाबाद : गांधीजी से सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातों का पुस्तकालय तथा अभिलेखागार।

'हरिजन' : गांधीजी की देखरेख और हरिजन सेवक संघके तत्वावधानमें प्रकाशित अंग्रेजी साप्ताहिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' : नई दिल्लीसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१७ जुलाई, १९४५ – ३१ अक्तूबर, १९४५)

१७ जुलाई : गांधीजी दिल्ली पहुँचे।

सत्यवती और शौकत अन्सारीसे भेंट की।

वर्धा जाते हुए आगरा कैन्ट स्टेशनपर एकत्र जनसमुदायके समक्ष भाषण दिया।

'पीपुल्स वार' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

१८ जुलाई : सेवाग्राम पहुँचे।

समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

२५ जुलाई : हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे त्यागपत्र दे दिया।

२८ जुलाई या उसके पूर्व : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

३ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

४ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

६ अगस्त : हिरोशिमापर परमाणु बम फेंका गया।

८ अगस्त : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके लिए चन्देकी अपीलके सम्बन्धमें गांधीजी ने वक्तव्य जारी किया।

९ अगस्त : नागासाकीपर परमाणु बम फेंका गया।

१० अगस्त : जापानने आत्म-समर्पण कर दिया।

११ अगस्त : महेन्द्र चौधरीको मृत्यु-दण्ड दिये जाने के बारेमें गांधीजी ने वक्तव्य जारी किया।

१४ अगस्तके पूर्व : वी० एस० मूर्तिके साथ बातचीत की।

१४ अगस्त : हरिजन सेवक संघकी केन्द्रीय बोर्डकी बैठकमें भाषण दिया।

१६ अगस्त : अष्टी-चिमूरके कैदियोंको दिये गये मृत्यु-दण्डको आजीवन कारावासमें बदल दिया गया।

१९ अगस्त : कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टकी बैठकमें गांधीजी शामिल हुए।

सेवाग्रामसे बम्बईके लिए रवाना हुए।

२० अगस्त : बम्बईमें।

२१ अगस्त : पूना पहुँचे।

२९ अगस्त : अमेरिका सन्देश भेजा।

२ सितम्बरके पूर्व : नरेन्द्र देव और सूरज प्रसाद अवस्थीके साथ बातचीत की।

१२ और १३ सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।

१४ सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए। प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

१५ सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।

१६ सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।
भोपालके नवाबको संवेदना-पत्र भेजा।

१७ से २० सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।

२१ सितम्बर : बम्बई पहुँचे। हल्का-सा फ्लू होने पर पूर्ण विश्रामकी सलाह दी गई। अ० भा० कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें शामिल नहीं हो सके। प्रार्थना-सभामें भाषण दिया।

२२ और २३ सितम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।

२४ सितम्बर : बम्बईमें कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए।
पूना वापस आ गये।

५ अक्तूबर : कस्तूरबा गोशालाकी आधार-शिला रखी।

८ अक्तूबर : समाचारपत्रोंके माध्यमसे अपने जन्म-दिवसपर भेजी बधाइयोंकी प्राप्ति स्वीकार की।

३१ अक्तूबर : पूनामें।

शीर्षक-सांकेतिका

उत्तर: एक पत्र-लेखकको, ४८५
टिप्पणी, ४३५
तार: (जतीनदास) अमीनको, २२७, २२८-२९; –इन्डो-ब्रिटिश फ्रेन्डशिप ग्रुपके अध्यक्षको, ३३२; –(प्रफुल्लचन्द्र) घोषको, ३९९; –(ब्रजकृष्ण) चाँदीवालाको, ४३८; –(दीपक दत्त) चौधरीको, १५९, १७०; – (पुरुषोत्तमदास) टंडनको, ९८; –'टाइम्स' को, २९२; –तान युन-शानको, ३२४; –(डी० जी०) तेन्दुलकरको, ४८३; –(वसन्ती देवी) दासको, २४५; –(वीणा) दासको, ३२२; –पुलिनसीलको, २४७; –(हनुमानप्रसाद) पोद्दारको, १३०; –फैजाबाद जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको, ४८२; –(घनश्यामदास) बिड़लाको, २५७; –(अमियनाथ) बोसको, १८५; –(किशोरलाल घ०) मशरूवालाको, २५०; –राजेन्द्रप्रसादको, १९, ५१; –वाइसरायके निजी सचिवको, १०७; –(वी० एस० श्रीनिवास) शास्त्रीको, ९७; –(कस्तूरी) श्रीनिवासनको, ३३१; –श्रीमन्नारायणको, ४८३; –सत्यवती देवीको – मसौदा, ४३१; –(मृदुला) साराभाईको, १९; –(राधाबाई) सुब्बारायनको, ४४८; –(जाकिर) हुसैनको, ४०२
(एक) पत्र, ३६३, ३७०, ३७१, ४१३; –अग्रवालको, ४०९; – (उमा) अग्रवालको, ३७४; –(रमणलाल) अग्रवालको, ३३०; –(लक्ष्मीनारायण) अग्रवालको, १४४-४५; –(सन्तराम) अग्रवालको, २२२; –(आर०) अच्युतनको, ३८७; –(माधव श्रीहरि) अणेको, ३५१; –अनन्तरामको, ४३६; –(जोहरा) अन्सारीको, २००; –(टी० एस०) अब्दुर्रहमानको, ४२३; –अभ्यंकरको, ३८१, ४५४; –अमतुस्सलामको, २३-२४, २२९, ३००, ३४७, ४१५; –अमराबापाको, २९२; –(जतीनदास) अमीनको, २६८-६९, ३५३, ४३९, ४६५; अमृतकौरको, ६, २१, ३०, ५२-५३, ७५, ९४, ९९, ११४, १३६, १७५, २९६, ३८३, ४०३, ४३१-३२, ४६७; –(एस०) अम्बुजम्मालको, २३०; –(वी० भाष्यम) अय्यंगारको, १३५; –(सी० पी० रामस्वामी) अय्यरको, १७६; –(आदम) अलीको, १८६, ४६७; –(ब्रजबिहारी) अवस्थीको, १८८; –(संचरशा) अवारीको, २३; –(अबुल कलाम) आजादको, ६९, १३७-३८, ३५४, ३८९, ४४७; –(अबुल कलाम) आजादको—अंश, ५१; –(पृथ्वीसिंह) आजादको, २१३, २८५; –आप्टेको, ३४; –(ई० डब्ल्यू०) आर्यनायकम्को, ४९२; –(अरुणा) आसफ अलीको,

११६-१७; –(लीलावती) आसरको, २०४, ३२९ ,३७६, ४२५-२६; –इच्छानन्दको, ४५४; –इफ्तिखारुद्दीन और इस्मतको, ३४८; –ईष-कुमारको, २७;– उत्तिमचन्द गंगारामको, २१७, ३१७; –(प्रेमा) कंटकको, ७, ३१९, ३३३, ३५०, ३७५; –कन्या गुरुकुलकी मुख्य अधिष्ठाताको, ४२८; –(कैलाशनाथ) काटजूको, ११२; –(गजानन नारायण) कानिटकरको, २४५, २५०; –कान्ताको, २६१; –(माधवदास गोपालदास) कापड़ियाको, ६, ७६-७७; –(दत्तात्रेय बा०) कालेलकरको, ८८, १०२-३, ३६०, ३८४, ४५२; –(रफी अहमद) किदवईको, ५; –(जे० सी०) कुमारप्पाको, १०, ३७, ११५, १४२, १५९-६०, १८४, १९५, ४११, ४६८; –(भारतन) कुमारप्पाको, १६, ३९९; –(मोहन) कुमारमंगलम्को, २३३; –(डॉ० एस० एम०) कुलकर्णीको, ४१८; –(जे० बी०) कृपलानीको, ३९१; –(सुचेता) कृपलानीको, ४२-४३; –कृष्णचन्द्रको, १५, २४, ८७, ९४, १२५, १९९, २३९, २६५, २७१, २७५, २८४, २९४-९५, ३००, ३१४, ३२९, ३५३, ३६२, ४६०; – (एम० एस०) केलकरको, ८७, १०६, १८०; –(गासीबहन) कैप्टेनको, ४०, ८१; –(हरजीवन) कोटकको, १२३, ४६५; –(चन्द्रकान्त) कोटाईको, १९६; –(चेरियन) कोपेनको, ४९३; –(पी० एन०) कौलको, ४५७; –(जी० एल०) कॉसको, ४१२;

–(अब्दुल गफ्फार) खाँको, ४७, २२५, ३८९; –(इनायतुल्ला) खाँको, २४८; –(कमाल) खाँको, ४४२;–ख्वाजा साहबको, २८२;–गंगारामको, १९९; –(सरस्वती) गडोदियाको, २७५; –(पी० एच०) गद्रेको, २०९; –(सी० सी०) गांगुलीको, ४५-४६, ८६; –(कनु) गांधीको, १३२, २५४, २८१; –(कान्तिलाल) गांधीको, ८३, २११, ३५९; –(काशी) गांधीको, ४४०; –(जमनाबहन) गांधीको, ३३५; –(जेठालाल) गांधीको, ४४२, ४८९; –(तारा) गांधीको, २०६; –(देवदास) गांधीको, २४४, ३७३-७४; –(नारणदास) गांधीको, ११-१२, ७३, १४३-४४, २७१-७२, २८८, ३०९, ३३२; –(मनु) गांधीको, १०, १४, १७; –(मणिलाल) गांधीको, ४३७, ४५२, ४६३; –(मणिलाल और सुशीला) गांधीको, २८३-८४; –(माणेकलाल अमृतलाल) गांधीको, २३७;–(राजमोहन) गांधीको, २०७; –(राधा) गांधीको, १७२; –(रामचन्द्र) गांधीको, २०७; –(रामदास) गांधीको, २८, ८४-८५, १८४, ३१४, ३७५; –(लक्ष्मी) गांधीको, २०६; –(सीता) गांधीको, ३१, २३७, ३०७; –(सुमित्रा) गांधीको, ८५-८६, ३१३; –(सुशीला) गांधीको, ६७, १४६, ३१८, ४२४, ४५१; –गालिबको, ५६, २००; –(धन्नो) गिडवानीको, २१६-१७, ४४९;–(धर्मकुमार) गिरिको, ३८०; –(सत्यदेवी) गिरिको, ४८८;

–गिरिराज किशोरको, ४७२; –(डॉ० एम० डी० डी०) गिल्डरको, ४४९;–(इन्दुमती) गुणाजीको, १११, १२४; –(एस० के०) गुप्तको, ४०९; –(घनश्यामसिंह) गुप्तको, ४१, १७३, १९२; –(श्रीकान्त) गुप्तको, ४८१; –(गोप) गुरबख्शानीको, १०४, ३८२; –(विमलारानी) गुरबख्शानीको, ३८२; –गुलजार सिंहको, ४०८; –(लक्ष्मणसिंह) गेळाकोटीको, २७६; –(वेणुबाई) गोडबोलेको, ४५०; –(एल० एन०) गोपालस्वामीको, ४६०-६१; –(डंकन) ग्रीनलीजको, ३१२; –ग्रोवरको, १७७; –(प्रेस्टन) ग्रोवरको, ४५५-५६; –(कालीचरण) घोषको, ४९२; –(प्रफुल्लचन्द्र) घोषको, १४५-४६, १९१, ३७८, ४००-१; –(प्रबोध रंजन) घोषको, २४४;–(सुधीर) घोषको, ४४-४५; –(अतुलानन्द) चक्रवर्तीको, ९३; –(अमृतलाल) चटर्जीको, १२; –(धीरेन्द्र) चटर्जीको, ३०१; –(रमेश) चटर्जीको, १३; –(वीणा) चटर्जीको, १७०, २१५, २८५, ४२७; –(शैलेन्द्रनाथ) चटर्जीको, ११०, २१६; –(बनारसीदास) चतुर्वेदीको, २८२, ४४३;–(ए० के०) चन्दाको, २११; –चन्द्रकला और कृष्णकुमारको, ५८;–(महेश) चरणको, २५; चाँदरानीको, १६४, ३३०, ३८८, ४४०, ४७३; –(व्रजकृष्ण) चाँदीवालाको, ६४, ४५३; –(हरकिशनदास) चावड़ाको, ३९३; –(करसनदास) चितलियाको, ३३४; –(आनन्द गो०) चोखावालाको, ३२७; –(गोरधनदास) चोखावालाको, १९४; –(शारदाबहन गो०) चोखावालाको, ७६, १६२, ३०२, ३२८, ४३९; –चौंडे महाराजको, ३६९-७०;–(सरला देवी)चौधरानीको, १५२; –(उपेन्द्र) चौधरीको, २२३; –(रामनारायण) चौधरीको, ५७, १०६-७, १५५, १६९-७०, १८२, २८४; –छतारीके नवाबको, ४९-५०; –(मु० रा०) जयकरको, १५-१६; –जयरामदास दौलतरामको, ६५, २७८, ३६५; –जसवन्तसिंहको, १२५; –(श्रीकृष्णदास) जाजूको, ११९, १९०, २२४, २७३, ३७३, ४१७, ४३५; –(डाह्यालाल) जानीको, ४७१; –(ई० एम०) जेन्किन्सको, ७२, २९८, ३५८, ३६३, ३६४, ४१०-११, ४७५-७६; ४७६-७७; –(पुरुषोत्तम कानजी) जेराजाणीको, १८, ६३-६४; –(विट्ठलदास) जेराजाणीको, ४५३; –(श्रीमती जॉर्ज) जोजेफको, २२४; –(गणेश शास्त्री) जोशीको, २४१; –(छगनलाल) जोशीको, २६४, २९५-९६, ४८७-८८; –(टी० पी०) जोशीको, ३२८; –(पूरणचन्द्र) जोशीको, १६३-६४, २५३; –(वल्लभदास) जोशीको, ४०७; –(वामनराव) जोशीको, ३९०, ४२१; –(सनत्कुमार) जोशीको, २९६-९७; –(पी० डी०) टंडनको, ३१७; –(पुरुषोत्तमदास) टंडनको, ३५, ३५७; –(अमृतलाल वि०) ठक्करको, १६६, २३५, २६३, ३७९, ४०४, ४१७, ४४१, ४४७, ४५५, ४७२, ४८६; –(प्रेमलीला) ठाकरसीको, १०९; (परसराम) ताहिलरामानीको, १९१; –(इन्दुमती) तेन्दुलकरको,

२६६-६७; –(ग० ना० म०) तेन्दुलकरको, १४७; –(रेहाना) तैयबजीको, ३२४, ३५१; –(चिमनलाल माणेकलाल) त्रिवेदीको, २६४; –(नरेन्द्र) त्रिवेदीको, ४२४, –(एम०) दत्तको, ४७४, –(के० ईश्वर) दत्तको, ३७७; –(लावण्यप्रभा) दत्तको, १९०; –(अली रजा) दबीरको, २४२, –दलजोतसिंहको, ९३, –(अहमद) दस्तगीरको, २४९, –(अमलप्रभा) दासको, २६५-६६, –(सतीशचन्द्र) दासगुप्तको, ३०१, ३४८, ४२९, ४२९-३०; –(यशोधरा) दासप्पाको, २६८; –(वासुदेव) दास्तानेको, ४४६, –(महादेवशास्त्री) दिवेकरको, ४४५; –(मनहर) दीवानको, २५२, २६७, –(हर्षदा) दीवानजीको, २७९, – देवराजको, ५५, १३४, –(कानजी जेठाभाई) देसाईको, १५३, १८७, ३१०-११, ४१४, –(जीवणजी) देसाईको, ४७८-७९, –(दुर्गा) देसाईको, ४४१; –(पुष्पा) देसाईको, ३२, १६१, २०३, २३६, ३१३, ३६१, ४१४, –(भूलाभाई) देसाईको, ४३३-३४; –(मगनभाई प्रभुदास) देसाईको, ३०८, –(महेन्द्र गोपालदास) देसाईको, ४५७; –(हसुमति धीरजलाल) देसाईको, ८२, –(प्रियवदा) नन्दकियोलियारको, २०५; –(माधवी कुट्टि अम्मा) नयनारको, १७४; –नवाब साहबको, १८१, –(निशीथ) नाथको, १२०; –(अमृतलाल टी०) नानावटीको, ५४, १६७, १७७; –(गजानन) नायकको, २८९, ३२०, ३५६, ३९७; –नायडूको, ५०; –(ए० वरदाराजुलु) नायडूको, २३३, –(कुसुम) नायरको, १०४, –(गोकुलचन्द) नारंगको, २४३, –(एस०) निजलिंगप्पाको, २०२; (डॉ० कृष्णाबाई) निम्बकरको, ४२८, ४८४, –(जवाहरलाल) नेहरूको, १०२, १५६, २२१, ३४४-४६; –(रामेश्वरी) नेहरूको, ३९०, –(देवप्रकाश) नैयरको, ४२०, ४८१, –(सुशीला) नैयरको, १८-१९, २६१, २९१, ३०४, –(खुर्शेदबहन) नौरोजीको, ३२३, ३४२, ३९४-९५ ४३२, –(मंगलदास) पकवासाको, ४०५-७, –(सीताराम पुरुषोत्तम) पटवर्धनको, ३०२-३, –(जहाँगीर) पटेलको, ४५०; –(डाह्याभाई मणिभाई) पटेलको, ३०७; – (मणिबहन) पटेलको, ३२-३३, – (वल्लभभाई) पटेलको, १७, ३३, ५०, ७४, १०८-९, ११८, –(शिवाभाई) पटेलको, १०८, –(अरुण बाई०) पण्ड्याको, २०८, –(प्रवीणा बाई०) पण्ड्याको, २०८, –(भगवानजी पु०) पण्ड्याको, ४१३, –(वसुमती) पण्डितको, १३३, –पन्नालालको, २१३; –(वामन कृष्ण) पराजपेको, २१५, –(डी०) परिमालाको, २१०, –(नरहरि द्वा०) परीखको, ५३, १६७, २१८, –(वनमाला) परीखको, ११, –(जे०) पॉपलटनको, १३२; –(यशवन्त महादेव) पारनेरकरको, १११, १२६, १६३, १६८, २०२; –(कुँवरजी) पारेखको, ७७-७८, ३४३; –(प्रभाकर) पारेखको, २४०, २५६; –(ए०) पार्थसारथीको, १९४; –(एफ० एम०) पिंटोको, ३७६-७७,

–(एन मारी) पीटरसनको, १७१, २४६, ३२५, ३९१; –(सुशीला) पुरीको, १७५; –(मीठूबहन) पेटिटको, २३२; –(लॉर्ड) पेथिक-लॉरेन्सको, ७५; –(डॉ०) प्रकाशको, ४९१; –(टी०) प्रकाशम्‌को, १९२; –प्रभावतीको, ११७, २०४, २०५, २४०, २८९, ३२७, ३४३, ३९६; –प्रेमी जयरामदासको, ६५; –(मॉरिस) फ्रिडमैनको, ८१, १९६; –(अल्फ्रेड) फ्रेंशको, ९२; –बंगालके गवर्नरको, ६६, १३१; –(अमृतलाल) बत्राको, २३०; –(डॉ० सुरेश) बनर्जीको, ४५८; –(जे०) बरुआको, ४८१; –बलवन्तसिंहको, ४०-४१, ९२, २८७; –(गोपी) बिड़लाको, ३३१; –(घनश्यामदास) बिड़लाको, ३३७, ४५८-५९; –(रामेश्वरदास) बिड़लाको, ८८; –(कृष्णदास) बेगराजको, २०१; –बेन्द्रेको, २८; –बैसिकको, ३१२; –(एन० के०) बोसको, ३४२; –(विभावती) बोसको, २५३; –(शरतचन्द्र) बोसको, ३४१; –(शैलेशचन्द्र) बोसको, ४१२; –(सैयद अब्दुल्ला) ब्रेल्वीको, २९; –भटनागरको, १८५; –(गोकुलभाई) भट्टको, ३३८, ३६२; –(हरिश्चन्द्र) भट्टको, २३९; –(जयकृष्ण) भणसालीको, २१०, ३१८, ४८६; –(एल० कृष्णस्वामी) भारतीको, ३९८; –(डॉ० गोपीचन्द) भार्गवको, १७४; –(प्रेमकान्त) भार्गवको, २३१; –(विनोबा) भावेको, १३९, १५०-५१; –भोपालके नवाबको, २७८; –(नायरबुल) मोवाल्वीको, ४४४; –मंगलदास हरकिशनदासको, २२०; –मथुरादास त्रिकमजीको, २६२, २७९, २९९, ३८५; –मदालसाको, २२, ३५५; –मध्य प्रान्त सरकारके मुख्य सचिवको, २५८; –मयाशंकरको, ३९७; –(किशोरलाल घ०) मशरूवालाको, १६०, १६९, १८७-८८, २२१, २५७, ३१९-२०, ३६१, ३६७-६८, ३८१, ३८७, ४१५-१६, ४२५, ४६४, ४८०; –(गोमती) मशरूवालाको, ४८०; –(नीलकण्ठ) मशरूवालाको, ४४९; –(डॉ० सैयद) महमूदको, १८२-८३; –महाजनीको, ३७१; –(रामभाई) मामटाणीको, २१४; –(श्रीमती एम० एच०) मॉरिसनको, ४६९-७०; –(राधाकान्त) मालवीयको, ३३७; –(ग० वा०) मावलंकरको, ३५५, ३६६; –(कैलाश डाह्याभाई) मास्टरको, २५४, २९३; –(महेशदत्त) मिश्रको, ११२; –मीराबहनको, ३१, २३२, २८७, ३५९, ४७७; –(डॉ० बी० एस०) मुंजेको, २७६; – (धीरेन्द्रनाथ) मुखर्जीको, २१२; – (क० मा०) मुन्शीको, ४७९; –(लीलावती) मुन्शीको, २२०; –मुहम्मद सलीमको, १४१; –(वी० एस०) मूर्तिको, ४५; –(वी० के० कृष्ण) मेननको, १००-१०२; –मेसर्स बच्छराज ऐंड कम्पनी लिमिटेडको, १७८; –(अन्नपूर्णा) मेहताको, २२; –(चम्पा) मेहताको, २८०, ३५६, ३६०; –(छोटूभाई) मेहताको, ३९२; –(जमशेदजी मेहताको, ३४, २८१, ३३६; – (ज्योतिलाल) मेहताको, ५७; – (डॉ० जीवराज) मेहताको, २३८; –(दिनशा) मेहताको, ७-८, ४६, ६२; –(भगवानजी अनूपचन्द) मेहताको,

१८६; –(मगनलाल) मेहताको, ४०५, –(रतिलाल बेचरदास) मेहताको, ३७९; –(वैकुण्ठलाल) मेहताको, १९८, २३८, ३६७, –(शशिकान्त) मेहताको, ३११; –(शान्तिलाल) मेहताको, ३९६, –(सरला) मेहताको, १४, –(हरेकृष्ण) मेहताबको, १२०, १३४; –(यूसुफ) मेहरअलीको, ३३४; –(लॉरेन्स) मैक्केनरको, १७६, –(पी० एन०) मैथ्यूको, ४२७, –(ताराबहन) मोडकको, ३९२-९३; –(शान्तिकुमार) मोरारजीको, २३५; –रंगनायकी देवीको, १८०, –रणजीतसिंह हरभामजीको, २७४, –रतनदेवीको, ३९८, –रत्नमयी देवीको, १२१, –(ए०) रहीमको, २१२, –(पूनमचन्द) रांकाको, २४२, ३५०, –(चक्रवर्ती) राजगोपालाचारीको, १८३, ३२२-२३, ३४९, ४७८, ४९१; –राजेन्द्रप्रसादको, २५, ४२, ५२, १४०, २१४; –रानी राजवाडेको, ३०४, –(एस०) रामनाथनको, ३०६; –रामप्रसादको, १२४, ३७२, –(पामु) राममूर्तिको, २८८; –(दिलीपकुमार) रायको, ४६८-६९; – (ए० कालेश्वर) रावको, २४; –(के० राम) रावको, ३२६, –(जी० रामचन्द्र) रावको, ४६१-६३; –(रामचन्द्र) रावको, १६५, –(विनायक) रावको, १९३; –लक्ष्मीको, १७९, –(वी०) लक्ष्मीको, १२३; –(डॉ० एच० के०) लालको, ४४५; –लालचन्दको, ३१६; –लाला मेघराजको, १३१; –(राममनोहर) लोहियाको, ४१९; –(कृष्ण) वर्माको, ८, ३५, ३९, ६२, ७८-७९, १३३, १७९, २६२, २८०, ३०८; –(मोहनलाल) वर्माको, ४०८; –(सर्वजीतलाल) वर्माको, ४८४, वसनजी हांसजीको, ४८७; –विद्यादेवीको, २२३; –(मोक्षगुण्डम्) विश्वेश्वरैयाको, २६९-७०; –वीरभानुको, ३५७; –(कोंडा) वेंकटप्पैयाको, ३२५; –वेंकटाकृष्णैयाको, ११०; –(फ्लोरेन्स) वेजवुडको, ४५६, –(लॉर्ड) वेवलको, २०, ३६-३७, २७३-७४, – (एस० ए०) वैजको, ४२३; –(देवराज) वोराको, ५६; –(एन०) व्यासतीर्थको, ३०९, –शंकरनको, २२५, २४३, २५१, २५५; –शरद कुमारीको, १३५, – (विचित्रनारायण) शर्माको, ४७४; – (हीरालाल) शर्माको, ४८, ४२२, ४६६; –(धर्मदेव) शास्त्रीको, ५५; –(परचुरे) शास्त्रीको, १२१, २०१; –(वी एस० श्रीनिवास) शास्त्रीको, ३०६; –(कंचन मु०) शाहको, १९८, २८८, ३४०, ४८५, – (खुशाल) शाहको, ३६६, ३८०, ४८९-९०; –(चिमनलाल नरसिंहदास) शाहको, १६०, १७८, १९३, २१९, २७०-७१, ३१०, ३७८, ४३८; –(छगनलाल) शाहको, ४९०, –(त्रिभुवनदास) शाहको, १६८, –(नवनीत) शाहको, ४२६; –(मुन्नालाल गंगादास) शाहको, ८९-९१, ११५, ११९, १३८, १५३-५४, १५५, १६१, १९७, २१८-१९, २३६, २५५, २६०, २९३, २९९, ३२६-२७, ३४०, ३५२, –(रमणलाल) शाहको, २६०; –(हेमेन्द्र किशोरदास) शाहको, २४९, –(प्रयागदत) शुक्लको, १६५, – (मणिलाल) शुक्लको, ३३९, –(वजुभाई) शुक्लको, ३८६; –(श्रीमती) शुक्लको, ३०३, –श्यामलालको, २६-२७, २७, ३०, ४८, १७२, २४१,

२४७, २९०-९१, ३५८; –श्रीमन्नारायणको, २९, १५१, ४३६, ४४३-४४; –(जयन्त) संघवीका, १९७; –(भवानीदयाल) संन्यासीका, ४१८-१९; – (स्वामी) सत्यदेवको, ४७३; सत्यदेवोंको, ३६९; – सत्यभामा देवीको, ४२१; –सत्यवतीको, २३१; –(के०) सन्तानमको, ४०३-४, ४४८; –समरफोर्ड ऑचर्डके व्यवस्थापकको, १२२; –सम्पूर्णानन्दको, ४७; –(एस० बी०) सरदेसाईको, २३४; –(डॉ० वी० एन०) सरदेसाईको, १८१; –सरला देवीको, ४९; –(ए० एस०) सहजानन्दको, ४१०; –(रिचर्ड) साइमण्ड्सको, १००; –(अनसूया) साराभाईको, २२८; –(मृदुला) साराभाईको, ५४, २२८, २८५-८६; –(अनुग्रह नारायण) सिंहको, २८६; –(दिनेश) सिंहको, ३७२; –(चिमनलाल) सीतलवाडको, ३२३; –(पट्टाभि) सीतारामैयाको, ३८, ७०; –सुखदेवको, ३६; –(आनन्द) सुन्दरम्को, ३०५; –(वी० ए०) सुन्दरम्को, १२२, १५८, ३०५, ३८८; –सुन्दरीको, ३१५; –सुरेन्द्रको, २६३, ३५२; –(भूपेन्द्रनाथ) सेनगुप्तको, २४६; –(अब्दुल) हकको, १३, ६७; –(गुणोत्तम) हठीसिंहको, ३४४; –हमीदुल्लाको, १२८; –(आर० सी०) हॉफमैनको, २५१-५२; – (आनन्द तो०) हिंगोरानीको, ६८, १७३, २२२, ३४७, ३९४; –हुमायूं कबीरको, ४२०; –(जाकिर) हुसैनको; – ४०२; –(एगथा) हैरिसनको, २२७; –होशियारीको, ४१, १६२, १८९, २५६, २८६, ३१५

(एक) पुर्जा, २९०; –अमृतकौरको, २५९, २८३; –(इन्दुमती) गुणाजीको, ११३, १२७; –चाँदरानीको, ४३०; –(देवप्रकाश) नैयरको, १८९; –(दिनशा) मेहताको, ३३५-३६; –(कृष्णनाथ) शर्माको, १५२, २०३; – (परचुरे) शास्त्रीको, ९; –(मुन्नालाल गंगादास) शाहको, ३८-३९

प्रशस्ति : जगलुल पाशाकी, ९८

प्रस्तावना, २९७; –'गीता प्रवेशिका' की, ४७५; –'द इकॉनमी ऑफ परमानेन्स'-की, १५८; –नेहरू योर नेबर' की, ३१६

बातचीत : आश्रमके कार्यकर्ताओंके साथ, ९; – नरेन्द्रदेव तथा सूरजप्रसाद अवस्थीके साथ, २२६; –(वी० एस०) मूर्तिके साथ, १२८-३०

भाषण : गोवर्धन संस्थामें, ३४१; –प्रार्थना-सभामें, २७७, २९५; –हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय मण्डलकी बैठकमें, १३६-३७

भेंट : 'पीपुल्स वार' के संवाददाताको, २-४; – 'हिन्दू' के संवाददाताको, ४३-४४, ८०

वक्तव्य : चन्देकी अपीलके सम्बन्धमें, १०५; –समाचारपत्रोंको, ४-५, ७१, ७९-८०, ११३-१४, ३५४

सन्देश : अखिल भारतीय चरखा संघ, लाहौरको, ११६; –अमेरिकाको, १९५; –छात्र कांग्रेस कार्यकर्ताओंको, ९; –(भगवानजी पु०) पण्डयाको, ७३; – विद्यार्थियोंको, १

सलाह : इंजीनियरोंको, १४१

विविध

कैसे करें ?, १५६-५७; खादी खरीदने के लिए सूत देने की शर्त, ३२१; छूटी हुई कड़ी, ९५-९७; रोजके विचार, ४९३-५०४; सूतके बदले खादी क्यों और पैसेके बदले क्यों नहीं ?, ५८-६१; सूतदान, १४८-४९

सांकेतिका

अ

अंग्रेजो, –के मोहका त्याग आवश्यक, १८९, ४४४, –में भारतीयोंको लिखना कष्टपूर्ण, ४५४, –से पहले मातृभाषा, हिन्दी और उर्दूका ज्ञान, ९१

अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू, ६७

अखिल भारतीय काग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, ११६ पा० टि०, २२६, २३१ पा० टि०

अखिल भारतीय किसान सभा, २२६ पा० टि०

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ, १० पा० टि०, ४६८, –में सुधारकी गुंजाइश, १५६-५७

अखिल भारतीय चरखा संघ, २५ पा० टि०, ६३, ६६, ७३, ११६, १५६, १५७, १९६, २०२, २३०, २७१, २७२, २७३, ३६४, ३६५, ४०६; –और खादी खरीदने के लिए सूत देने की शर्त, ३२१; –और नारणदास गाधी का सूतदानके बारेमें सुझाव, १४८-४९; –की समिति, ४५३; –को आयकरसे छूट तथा प्रिवी कौंसिल, ४७६-७७

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस, २२६,

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद, ३८ पा० टि०

अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिस, १३ पा० टि०

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग, ३४८; –एक प्रातिनिधिक संस्था, २४८, –और काग्रेसके बीच शिमला सम्मेलन की विफलताके कारण कटुता, २-३

अखिल भारतीय राष्ट्रवादी मुस्लिम पार्टी, २९ पा० टि०

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, –से गांधीजी का इस्तीफा, ३५

अग्रवाल, ४०९

अग्रवाल, उमा, ३७४

अग्रवाल, रमणलाल, ३३०

अग्रवाल, राजनारायण, ३७४ पा० टि०

अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण, १४४

अग्रवाल, सन्तराम, २२२

अच्युतन, आर०, ३८७

अणे, माधव श्रीहरि, ३५१

अनन्तराम, ३१४, ४३६

अनासक्ति, –का अभ्यास आत्म-दमन किये बिना, ३५२, –के पालनसे दीर्घायु की प्राप्ति, २७२

अनासक्तियोग, ४७५, ४७८

अन्सारी, जोहरा, १३, ५६, ६७, २०० ३००, ३२०, ४२४

अन्सारी, डॉ० शौकतुल्ला, १३

अन्सारी, मु० अ०, १३

अब्दुर्रहमान, टी० एस०, ४२३

अब्दुल हक, १३, ६७, २००

अभ्यंकर, ३८१, ४५४

अमतुस्सलाम, २३, १८०, १९१, २२९, ३००, ३१२, ३४७, ४१५

अमराबापा, दरबारश्री, २३७, २९२

अमीन, जतीनदास, २२७, २२८, २४०,

२५०, २५६, २६८, ३५३, ४३९, ४६५, ४८०
अमृतकौर, ६, ७, २१, ३०, ५२, ७५, ९३, ९४, ९९, ११४, १३६, १७५, २३१, २४०, २४४, २५६, २६३, २८३, २८४, २९६, ३००, ३४२, ३६५, ३७८, ३८२, ३९१, ३९४, ३९६, ४०३, ४१६, ४२९, ४३०, ४३१, ४३७, ४४७, ४६७
अमेरिका, –का भारतके स्वतन्त्रता-संघर्ष में योगदान, १९५
अम्बुजम्माल, एस०, २३०
अम्बेडकर, डॉ० भीमराव, –का कांग्रेसपर आरोप, १८३, ४०३-४; –से हिन्दू धर्मको खतरा, १३०
'अम्बेडकर रिफ्यूटेड', ४०४ पा० टि०
अय्यंगार, वी० भाष्यम, १३५
अय्यर, सर अल्लादि कृष्णस्वामी, २१४
अय्यर, सी० पी० रामस्वामी, १७६
अरेबियन नाइट्स, ३४३
अल्पसंख्यक, –और स्वतन्त्रता, ३७६-७७
अल्लामा मशरीकी, देखिए खाँ, इनायतुल्ला
अवस्थी, ब्रजबिहारी, १८८
अवस्थी, सूरजप्रसाद, २२६
अवारी, मंचरशा, २३
अष्टी-चिमूर, –के कैदियोंका मामला, १०७; –के कैदियोंकी मौतकी सजा कम करनेकी अपील, २३, ७२
असीसी, संत, १२२
अस्पृश्यता, –और सवर्ण हिन्दू, १२८-२९, १३६-३७; –का तपोबलसे निवारण, २६
अहंकार, –अन्धकारसे भी अधिक विनाशकारी, ४९४
अहिंसा, –और मानव-श्रम, ९६; –और रचनात्मक कार्य, १३९; –और विश्व-शान्ति, २९७; –और सत्य, स्वयं प्रकाश है, ५०३; –द्वारा वर्गहीन समाजकी स्थापना, २२६; –द्वारा स्वराज्य-प्राप्ति, ५९-६१, ९५-९६, २९६

आ

आंवगांवकर, २५५
आइस, डॉ०, देखिए केलकर, एम० एस०
आजाद, अबुल कलाम, १, २, १५, ६९, ७०, ७९, ११६, ११८, १३१, १३७, २५६, २८२, ३०३, ३४६, ३५४, ३८९, ४०१, ४४७; –द्वारा आई० एन० ए० अफसरोंके बचावका सुझाव, ५१
आजाद, पृथ्वीसिंह, २१३, २८५
आजाद, बेगम अबुल कलाम, ६९
आजाद हिन्द फौज, –की बचाव समिति, ४३२; –के कैदियोंके साथ दुर्व्यवहार, ३६; –के खिलाफ राजद्रोहका मुकदमा, ४३४
आत्म-दमन, –के बिना अनासक्तिका अभ्यास, ३५२
आत्मा, –अमर है, २८; –का निवास-स्थान, शरीर, १३९
आत्मासिंह, ३१६
आदम अली, १८६
आन्ध्र पत्रिका, ३२२ पा० टि०
आन्ध्र परिपत्र, –के सम्बन्धमें पट्टाभि सीतारामैयाका संशोधित कथन, ७० पा० टि०; –से सम्बन्धित गांधीजी का कथन, ७१
आप्टे, ३४
आबिद अली, ४६७
आरोग्यकी कुंजी, ४६१ पा० टि०, ४७९
आरोग्य भवन, पूना, ५३
आर्यनायकम्, आशादेवी, १५०, १५३, ४३६
आर्यनायकम्, ई० डब्ल्यू०, १५० पा० टि०,

१७१, ४९२, ४९३ पा० टि०
आशा, ८८
आश्रम भजनावलि, ४६४ पा० टि०
आसफ अली, ११६, ४३४ पा० टि०
आसफ अली, अरुणा, ११६
आसर, लीलावती, २०४, २९८, ३२९, ३७६, ४२५
आस्था, –के बिना कार्य निष्प्राण, २५१

इ

इंडियन एक्सप्रेस, ४०३ पा० टि०
इंडिया आफिस, ७५
इंडिया लीग (लन्दन), १०० पा० टि०
(द) इकॉनमी ऑफ परमानेन्स, ११५ पा० टि०, –की प्रस्तावना, १५८
इकॉनॉमिक रीसोर्सिस ऑफ इंडिया, ४९२
इकॉनॉमिक्स ऑफ खादी, ९६ पा० टि०
इच्छानन्द, ४५४
इन्डो-ब्रिटिश फ्रेन्डशिप ग्रुप, ३३२
इफ्तिखारुद्दीन, ३४८
इसलाम (कस्तूरबा विद्यालय, मघानकी), २४
इस्मत, ३४८

ई

ईश्वर, –एकमात्र अचूक निर्णायक, ५०३; –का साम्राज्य मनुष्यके अन्दर, १७६, –की दृष्टिमें भंगी सबसे ऊँचा, २२५; –की पूजा और मनुष्यका तिरस्कार, विरोधाभास, ५०१; –की भक्ति अनासक्त भावसे, ८३, –के अस्तित्वमें अविश्वास नाशका कारण, ४९८; –के आदेशपर ही प्रस्तावित उपवास, १२८-२९; –हमारा परम सबल, ७७, ८५, २२७
ईषकुमार, २७
ईसाई, –भी पूर्ण भारतीय, ३७६

उ

उत्तिमचन्द गंगाराम, २१७, ३१७
उपवास, –[ों] की शृंखला अस्पृश्यता-निवारणके लिए, १२९
उपाध्याय, हरिभाऊ, १५१
उर्दू, –और हिन्दीका सम्मिश्रण ही राष्ट्रभाषा, ४४३, –मुसलमानकी ही नहीं, हिन्दूकी भी जबान, २४२

ए

एकादश व्रत, –का पालन और रचनात्मक कार्य, ४३९
एटली, क्लेमेन्ट, ५२ पा० टि०
एण्ड्रयूज, सी० एफ०, २८२ पा० टि०
एबेल, जी० ई० बी०, ४७६ पा० टि०
एल्विन, वेरियर, ४०४, ४५०

ओ

ओमप्रकाश, ८९

क

कटक, प्रेमा, ७, ३१९, ३३३, ३५०, ३७५, ४१५
कटिस्नान, ८८
कताई, –और स्वराज्य, ५९-६१, ९५-९६, ११६
कथेरिन, सत, ४९६
कन्या गुरुकुल, ४२८
कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम: इट्स मीनिंग एंड प्लेस, ४७९ पा० टि०
कमला नेहरू अस्पताल, ४५५
कम्युनिस्ट पार्टी, –और कांग्रेसियोंके बीच कटुता, १६३-६४
कराका, डी० एफ०, १९५ पा० टि०
कवीशर, शार्दूलसिंह, ४५७
कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, १९ पा० टि०, २६ पा० टि०, २७ पा० टि०, ३७, ५७, १७१, २०५, २२८, २३८, ३३४, ३४६, ३७३ पा० टि०, ४४१

पा० टि०, ४४५; –की प्रान्तीय समिति, ४५५; –की समिति, २०५, २८६-९१, ३८६
कस्तूरबा गोशाला, –का शिलान्यास, ३४९ पा० टि०
कस्तूरबा विद्यालय, मथान, २४ पा० टि०
कस्तूरबा स्थानिक निधि मण्डल, गुजरात, ३८६
कस्तूरबा स्मारक कोष, ३५० पा० टि०
कांग्रेस जनवादी मोर्चा, ४३ पा० टि०
कांग्रेस रिस्पॉन्सिबिलिटी फॉर डिस्टरबेन्सेज इन १९४२-४३, ७१
कांग्रेसी, ७९, ९३, १५७, १६३; –और कम्युनिस्ट पार्टीके बीच कटुता, १६३-६४
कांबले, ८९
(दि) काऊ इन इंडिया, ६६ पा० टि०
काटजू, कैलाशनाथ, ११२, ४३४ पा० टि०, ४८२, ४८४
काठियावाड़ी हिन्दू सेवा समाज, ४६३ पा० टि०
कानिटकर, गजानन नारायण, २४५, २५०
कान्ता, २६१, ३७२, ४६०
कान्तिलाल, ३७८ पा० टि०
कापड़िया, माधवदास गोपालदास, ६, ८, ३५, ६२, ७६, ७७, ७८, १३३, १७९, २३२, ३४३
कामथ, २८९
कामले, २७५, २९५, ३२०
कार्य, –के बिना आस्था निष्प्राण, २५१
काले, अनसूयाबाई, ७२
कालेलकर, दत्तात्रेय बा०, ५४, ५७, ८८, १०२, १०३ पा० टि०, १११, १७७, १८२, २०३, २३४, २७२, २८८, ३०९, ३६०, ३८४, ४५२, ४६४
कालेलकर, बाल द०, १०३, १८२, ३८४
किदवई, रफी अहमद, ५
कुमारप्पा, जे० सी०, १०, ३७, ११५, १४२, १५८, १५९, १८४, १९५, २६४, २९७, ३२०, ३५६, ३६८, ४११, ४१६, ४२५, ४६८, ४९२
कुमारप्पा, भारतन, १०, १६, ५८, ३८६, ४६८
कुमारमंगलम्, मोहन, २३३, २५३
कुरेशी, शुएब, २००
कुलकर्णी, केदारनाथ, २८५
कुलकर्णी, गोपालराव, ८५
कुलकर्णी, डॉ० एस० एम०, ४१८
कुलकर्णी, नलिनी, ८५
कृपलानी, जे० बी०, ४३, १८२, ३९१
कृपलानी, सुचेता, ४२, २६३, २९१, ३९१, ४७२
कृष्ण (भगवान), ३१३
कृष्णकुमार, ५८
कृष्णचन्द्र, १५, २४, ८७, ९४, १२५, १३८, १५४, १६१, १९७, १९९, २३६, २३९, २५६, २६५, २७१, २७५, २८४, २९४, ३००, ३१४, ३१५, ३२९, ३५३, ३६२, ४४०, ४६०
कृष्णसागर बांध, –का निर्माण, २७०
केदार, डॉ०, ३७३
केलकर, एम० एस०, ८७, ९१, १०६, १४२, १७८, १८०
केशवलाल, ३५६
केसी, आर० जी०, ४४, ६६, १३१, ४०१
कैपिटलिज्म, सोशलिज्म ऑर विलेजिज्म?, –की प्रस्तावना, २९७
कैप्टेन, गोसीबहन, ४० ८१
कैप्टेन, नरगिसबहन ३२३
कैप्टेन, पेरिनबहन, ४०
कोटक, हरजीवन, १२३, ४६५

कोटवाल, १२९
कोटाई, चन्द्रकान्त, १९६
कोदंडराव, ३६८
कोपेन, चेरियन, ४९२, ४९३
कौमी जंग,—पर प्रतिबन्ध, ४
कौल, पी० एन०, ४५७
क्रॉस, जी० एल०, ४१२
क्रोध, —से स्वयं मनुष्यका नाश, ४९९, ५००

ख

खाँ, अब्दुल गफ्फार, ४७, २२५, ३८९
खाँ, इनायतुल्ला, २४८, २४९
खाँ, कमाल, ४४२
खाँ, लियाकत अली, १ पा० टि०
खाँ, शाहनवाज, ४३४ पा० टि०
खादी, —की परिभाषा जवाहरलाल नेहरू द्वारा, ९७; —द्वारा स्वराज्य-प्राप्ति, ६३, ७३, १४३-४४, २१६-१७, २९६, ३२१, —पर लाइसेंसकी पाबन्दी, ३६४, ४०५-७, ४७६-७७;— पैसे कमाने के लिए नहीं है, २३०, —में दरिद्रनारायणका दर्शन, १४८,— सत्य और अहिंसाका प्रतीक, ४३५, —सूतके बदले, ५८-६१, ४०७
खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर, १२, ६६, ३०१, ४९१, ४९२
खादी बोर्ड, ३६४
खादी विद्यालय, ५७
खान साहब, डॉ०, १ पा० टि०, ६९
खेती, —द्वारा स्वावलम्बन, १३९
खेर, बाल गंगाधर, ४०, २७२
ख्वाजा साहब, २८२

ग

गंगाराम, १९९
गजराज, ११९, १६१, १८९, २५६, २८६, ३१५
गडोदिया, लक्ष्मीनारायण, २२८, २७५, ४६६
गडोदिया, सरस्वती, २७५
गद्रे, पी० एच०, २०९
गांगुली, सी० सी०, ४५, ८६
गांधी, अरुण, ३०७, ३७५, ३८३, ४२४, ४३७, ४४९, ४५१, ४५२, ४६३
गांधी, आभा, ६८, १४६, १६७, १७०, २६०, ३०१, ४२४
गांधी, इला, ३०७
गांधी, उषा, २८, ८४
गांधी, कनु (नारणदास गांधीका पुत्र), ११, १२, १८, ६३, ६४, ६८ पा० टि०, ७३, ९०, ११३, १३२, १४४, २५४, २७१, २८१, २८८, ३०१, ३३५, ३८३, ४२४, ४३७, ४५१
गांधी, कनु (रामदास गांधीका पुत्र), २८, ८४
गांधी, कस्तूरबा, ६ पा० टि०, ७६, ७७, ९०, १०९ पा० टि०
गांधी, कान्तिलाल, ८३, २११, ३५९
गांधी, काशी, ४४०
गांधी, कुसुम, ४६७
गांधी, कृष्णदास, १४३, ३२९ पा० टि०
गांधी, केशू, ३३५
गांधी, गोपालकृष्ण, २०६
गांधी, छगनलाल, ७३ पा० टि०
गांधी, जमनाबहन, ३३५
गांधी, जयसुखलाल, ७ पा० टि०, १७
गांधी, जेठालाल, ४४२, ४८९
गांधी, तारा, २०६
गांधी, देवदास, ८५, ८६, ११३, २०६ पा० टि०, २४४, ३७३
गांधी, नारणदास, ११, १८, ६३, ७३, १४३, २११, २७१, २७२, २७३,

२८८, ३०९, ३१९, ३३२, ४०५, ४३५, ४६७, ४८७; – का सूतदानके बारेमें सुझाव, १४८-४९
गांधी, निर्मला, ८५, ८६
गांधी, पुरुषोत्तम, ३३५
गांधी, मगनलाल, १७२ पा० टि०, ३३५ पा० टि०
गांधी, मणिलाल, ६२, ७६, ७७, ७८, ८४, १४७, १६९, २२१, २४३, ३६३, ३६५, ३८३, ३९६, ४२४, ४३७, ४५२, ४६३
गांधी, मनु, ७ पा० टि०, १०, १४, १७, ४६, ५३, १६७, १८८
गांधी, मनोज्ञा, ३२९
गांधी, माणेकलाल अमृतलाल, २३७
गांधी, मो० क०,– और आई० एन० ए० के सदस्योंका मुकदमा, ४७५-७६;– और खादीके लिए लाइसेंस का नियम, ३६४;– और जन्मपत्री, ३३९; – और मृत्युके बादका जीवन, ४५६; – और स्टेशनोंपर उन्मत्त प्रदर्शन, ४-५; – का टीके लगाने में विश्वास नहीं, २२९;– का महेन्द्र चौधरीकी फांसीके बारेमें वक्तव्य, ११३-१४; – की कल्पनाका देहात, ३४५; – की चुनावोंमें कोई दिल-चस्पी नहीं, ३७६; – की १२५ वर्ष जीवित रहने की इच्छा, ३४६, ४३३-३४;–की सुभाषचन्द्र बोसकी मृत्युकी खबरपर सन्देह, ८५; – द्वारा अष्टी-चिमूर कैदियोंकी मौतकी सजाएँ कम करने की अपील, ७२; – द्वारा अस्पृश्यता-निवारणके लिए उपवास, १२८-२९; – द्वारा राजाजी फार्मूले के बारेमें स्वीकारोक्ति, ४६१
गांधी, राजमोहन, २०७
गांधी, राधा, १७२, ३३५
गांधी, रामचन्द्र, २०७
गांधी, रामदास, २८, ८४, ८६, १८४, २५४, २६८, ३१४, ३७५, ४७५, ४७९
गांधी, लक्ष्मी, ८५, ८६, २०६
गांधी, लक्ष्मीदास, ३३९ पा० टि०
गांधी, शामलदास, ३३९
गांधी, सन्तोक, १७२, ३३५
गांधी, सरस्वती, ८३
गांधी, सीता, ३१, ८४, २३७, ३०७
गांधी, सुमित्रा, ८५, ३१३, ३१४, ३७५, ४३७
गांधी, सुशीला, ६२, ६७, ८४, ९०, ९१, १४६, १४७, १६९, ३१८, ३७५, ३८३, ३९६, ४२४, ४३७, ४४९ पा० टि०, ४५१
गांधी, हरिलाल, ७६ पा० टि०, ७७, ८३, २११
गांधी आश्रम (मेरठ), ४८ पा० टि०
गांधीज एमिसरो, ४४ पा०टि०
गांधीयन कांस्टीट्यूशन फोर फ्री इंडिया, १५१ पा० टि०, ४३६ पा० टि०
गाय, – और भारतकी खुशहाली, १३०; – और भैंस, १६९-७०; – जीवित और मृत दोनों दशाओंमें एक बड़ा धन, ३४९
गालिब, ५६, ६७, २००
गिडवानी, ए० टी०, २१६ पा० टि०
गिडवानी, घन्नो, २१६
गिरि, कृष्णमैया, ३६
गिरि, दलबहादुर, २६९ पा० टि०
गिरि, दुर्गा, ३६९
गिरि, धर्मकुमार, ३६९, ३८०, ४८८
गिरि, महावीर, ३६९
गिरि, मैत्रेयी, ३६९

गिरि, सत्यदेवी, ३६९, ३८९, ४८८
गिरिराज किशोर, ४७२
गिल्डर, डॉ० एम० डी० डी०, १८, ४४९
गीतांजली, ४३६
गीताई, १५०, १५१, १५४, १५५, ३५३, ४६०
गीता प्रवेशिका, ४७५, ४७८
गुणाजी, इन्दुमती, देखिए तेन्दुलकर, इन्दुमती
गुणाजी, नागेश वी०, २६६
गुप्त, एस० के०, ४०९
गुप्त, घनश्यामसिंह, ४१, १७३, १९२
गुप्त, जे० सी०, ४
गुप्त, मैथिलीशरण, ४७
गुप्त, श्रीकान्त, ४८१
गुरबख्शानी, गोप, १०४, ३८२
गुरबख्शानी, विमलारानी, ३८२
गुरु, –ईश्वर ही है, ५०१
गुलजार सिंह, ४०८
गुलाटी, रामदास, ३६२
गेलाकोटी, लक्ष्मणसिंह, २७६
गोखले, ६८, ३३४
गोखले, गोपालकृष्ण, ३०६ पा० टि०
गोडबोले, प्रो०, ४५०
गोडबोले, वेणुबाई, ४५०
गोपालकृष्ण, २०६
गोपालस्वामी, एल० एन०, २४७, ४६०
गोवर्धन संस्था, पूना, –के कार्योंकी प्रशंसा, ३४९
गोसेवा संघ, १६९, १८२, २२४, ३६९
ग्राम[ों], –की सादगीमें सत्य और अहिंसा के दर्शन, ३४५
ग्राम उद्योग पत्रिका, १० पा० टि०, १६, ९५, १८२
ग्रामवाद, –जीवन-रक्षक प्रक्रिया, २९७
ग्रामोद्योग[ों], –के बलपर स्थायी अर्थ-व्यवस्था, १५८
ग्रामोद्योग प्रदर्शनी, २४
ग्रीन क्रॉस सोसायटी, ४६९ पा० टि०, ४७०
ग्रीनलीज, डकन, ३१२
ग्रोवर, प्रेस्टन, १७७, ४५५

घ

घोष, कालीचरण, ४९२
घोष, प्रफुल्लचन्द्र, २३, १४५, १९१, २२९, ३०१, ३४८, ३७८, ३९९, ४००, ४२९, ४३०, ४७४
घोष, प्रबोध रंजन, २४४
घोष, शान्ति, ४५ पा० टि०
घोष, सुधीर, ४४, ४५ पा० टि०, ६६, १००, १४६, २२९, २५७, ३४८, ३९९ पा० टि०, ४००, ४१२, ४२९, ४३०

च

चक्रवर्ती, अतुलानन्द, ९३, ९४, ३८४
चटर्जी, अमृतलाल, ८ पा० टि०, १२
चटर्जी, धीरेन्द्र, १२, ३०१
चटर्जी, रमेण, १२, १३
चटर्जी, वीणा, १६७, १७०, २१५, २१८, २१९, २५५, २६०, २८५, ४२७
चटर्जी, शान्ति, १२
चटर्जी, शैलेन्द्र, ८, १२, ३५, ३९, ७६, ७९, ११०, १७०, २१६, २८५, ४२७
चतुर्वेदी, बनारसीदास, २८२, ४४३, ४४४
चन्दा, ए० के०, २११
चन्द्रकला, ५८
चरखा[खे], –अहिंसाका सर्वोत्कृष्ट प्रतीक, ९६, –और अहिंसक स्वराज्य, ९६-९७, –और मशीन, १००-१०२, –का विज्ञान, १९६; –की व्युत्पत्ति चक्र है, १२१, –को हर घरमें

स्थान मिलना चाहिए, ६०, ६१; —सादगीका प्रतीक, ३४५; —हमारी बन्दूक, ५९
'चरखा द्वादशी', ६३, ३१९
चाँदरानी, १६४, ३३०, ३८८, ४३०, ४४०, ४७३
चाँदीवाला, ब्रजकृष्ण, ६४, ४३८, ४५३
चावड़ा, अकबर, १३३
चावड़ा, हरकिशनदास, ३९३
चितलिया, करसनदास, ३३४
चिन्तामणि, सी० वाई०, ६१
चीन-भारत सांस्कृतिक संघ, ३२४ पा० टि०
चुनाव, —में गांधीजी की कोई रुचि नहीं, ४३३
चोकसी, त्र्यम्बकलाल, ४८७, ४८८
चोखावाला, आनन्द गो०, ३२७
चोखावाला, गोरधनदास, १६० पा० टि०, १६२, १९४, ३०२, ३१०, ३२८
चोखावाला, शारदा गो०, ७६, १६०, १६२, १७८, १९४, २१९, २७१, ३०२, ३१०, ३२७, ३२८, ३७८, ४३८, ४३९
चौंडे महाराज, — और गो-रक्षा, ३४९; —और गोसेवा संघ, ३६९
चौधरानी, सरला देवी, १५२, १५९
चौधरी, अंजनादेवी, १०६, १०७
चौधरी, उपेन्द्र, २२३
चौधरी, दीपक दत्त, १५२, १५५, १५९, १७०, १७२ पा० टि०
चौधरी, महेन्द्र, २०, २१, २५, ५१, ५२, ९९, १४०, २१४, २२३ पा०टि०; — की फाँसीके सम्बन्धमें वक्तव्य, ११३-१४; — को फाँसी, १९, ४२
चौधरी, रामनारायण, ५७, ९०, १०६, १२६, १३८, १६९, १८२, २५५, २८४
चौधरी, लावण्यकुमार, १४१ पा० टि०, १४५
चौधरी, सीता, १०६, १०७
चौधरी, सुभद्रा, १०६, १०७
च्यांग-काई-शेक, ३४१ पा० टि०

छ

छतारीके नवाब, देखिए सईद खाँ, कैप्टेन मुहम्मद अहमद

ज

जगदीशन, टी० एन०, २७, ३०६
जगलुल पाशा, — की प्रशस्ति, ९८
जड़भरत, २७९
जन्म, — और मृत्यु, ५८, ४६६, ४९३
जयकर, मु० रा०, १५
जयप्रकाश नारायण, १८ पा० टि०, १४४, ३९६
जयरामदास दौलतराम, ६५, ६८, २७८, ३६५
जसवन्तसिंह, १२५
जसानी, नानालाल के०, १४
जाकिर हुसैन, ३६५ पा० टि०, ४०२, ४०३, ४१६, ४३१, ४४७
जाजू, श्रीकृष्णदास, २५, ५७, ११९, १३४, १४३, १५६, १९०, २२४, २३०, २७०, २७३, ३६२, ३६८, ३७३, ४०६, ४१७, ४२८, ४३५, ४३८, ४५५, ४७४
जानी, डाह्यालाल, ४७१
जिन्ना, मुहम्मद अली, १ पा० टि०, १५ पा० टि०, ८०, ११८
जीवनराम, ३७२
जेन्किन्स, ई० एम०, ३७ पा० टि०, ५२, ७२, २७४ पा० टि०, २९८, ३५८, ३६३, ३६४, ४१०, ४११ पा० टि०, ४७५, ४७६
जेराजाणी, पुरुषोत्तम कानजी, १८, ६३

जेराजाणी, विट्ठलदास, ४५३
जोग, लीला, ३७९, ४८६
जोजेफ, जॉर्ज, २२४ पा० टि०
जोजेफ, श्रीमती जॉर्ज, २२४
जोशी, गणेश शास्त्री, २४१
जोशी, छगनलाल, १४३, २६४, ३९५, ४८७
जोशी, टी० पी०, ३२८
जोशी, पूरणचन्द्र, ४, १६३, २५३, २८५
जोशी, प्राणशंकर, ४८७
जोशी, वल्लभदास, ४०७
जोशी, वामनराव, ३९०, ४२१
जोशी, सनत्कुमार, २९६

ट

टंडन, पी० डी०, ३१६, ३१७
टंडन, पुरुषोत्तमदास, ३५, ९८, ३५७
टंडन, महादेव नारायण, २, ३
टाइम्स, २९२
टाटा, जमशेदजी, ४६
टॉपलेडी, ए० एम०, २२७ पा० टि०
टु विमेन, २६३ पा० टि०
ट्रस्टीशिप, – का सिद्धान्त, २२६
ट्रान्सफर ऑफ पॉवर, १३७ पा० टि०, १३८ पा० टि०

ठ

ठक्कर, अमृतलाल वि०, ५५, १६६, २२८, २३५, २६३, २७१, २९१, ३१९, ३३४, ३५०, ३७९, ३८५, ३८६, ४०३, ४०४, ४१७, ४४१, ४४७, ४५२, ४५५, ४७२, ४८६, ४८८
ठाकरसी, प्रेमलीला, ३२३ पा० टि०, – द्वारा पूनाके आगाखाँ महलमें कस्तूरबाकी समाधिका निर्माण, १०९
ठाकुर, रवीन्द्रनाथ, ३२४ पा० टि०, ४३६ पा० टि०

ड

डॉन, ४०२, ४०३, ४१६, ४३१

ढ

ढिल्लो, ४३४ पा० टि०

त

तपेदिक अस्पताल, दिल्ली, ३८८ पा० टि०
तान युन-शान, ३२४
तारासिंह, मास्टर, १ पा० टि०
तालीमी संघ, १८५, २०२, २३१, ३१८, ४२५
ताहिलरामानी, परसराम, १९१
तिलक विद्यापीठ, १०२
तुलसीदास, १५०, २२२, ५०१
तेगबहादुर, गुरु, ४९३
तेन्दुलकर, इन्दुमती, ८८ पा० टि०, १०३, १११, ११३, १२४, १२७, १४६ पा० टि०, १४७, २६६
तेन्दुलकर, गणपत नारायण महादेव, – का विवाह, ८८ पा० टि०, १०३, १२४, १२७, १४६, १४७
तेन्दुलकर, डी० जी०, ४८३
तैयबजी, रेहाना, १७१, ३२४, ३५१
त्रावणकोर, – में शिक्षाके बारेमें खिस्ती आन्दोलन, ४९१-९३
त्रिवेदी, चिमनलाल माणेकलाल, २६४
त्रिवेदी, नरेन्द्र, ४२४
त्र्यम्बकलाल, ३६१

द

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, – के लिए चन्देकी अपील, १०५
दत्त, एम०, ४७४
दत्त, के० ईश्वर, ३७७
दत्त, लावण्यप्रभा, १९०
दबीर, अली रजा, २४२

दरिद्रनारायण, ८३; — और खादी, १४८
दलजीतसिंह, ९३, ९९, ११४
दशमिक सिक्के, २६६-६७
दस्तगीर, अहमद, २४८, २४९
दाल, — भोजनमें जरूरी नहीं है, ३९
दास, अमलप्रभा, २६५
दास, चित्तरंजन, २४५ पा० टि०
दास, डॉ०, २६५ पा० टि०
दास, बसन्ती देवी, २४५
दास, वीणा, ३२२
दासगुप्त, सतीशचन्द्र, १२ पा० टि०, ६६, १४५, १६९, २२९, ३०१, ३२७, ३४८, ३७८, ३९९ पा० टि०, ४०१, ४२९, ४९२
दासप्पा, एच० सी०, २६८ पा० टि०
दासप्पा, यशोधरा, २६८
दास्ताने, वासुदेव, ४४६
दिनेश सिंह, ३७२
दिवेकर, महादेव शास्त्री, ४४५
दीवान, मनहर, २१९, २५२, २६७
दीवानजी, दूपंदा, २३९
देव, नरेन्द्र, २२६
देव, शंकरराव, ३०३, ३१९, ३८४
देवराज, ५५, १३४
देवी जयरामदास, २७८
देशबन्धु, १७३
देशमुख, डॉ०, ४३३
देसाई, कन्हैयालाल, ५४
देसाई, कानजी जेठाभाई, ३२ पा० टि०, १५३, १८७, ३१०, ४१४
देसाई, जीवणजी, ४७८
देसाई, दुर्गा, २३६, ३२९, ४७५, ४८१
देसाई, नगीन, ४६३
देसाई, नारायण, २६०, ४८१
देसाई, पुष्पा, ३२, ८९, १२४, १५३, १६१, १८७, २०३, २३६, २७५, ३११, ३१३, ३६१, ४१४
देसाई, भूलाभाई, १ पा० टि०, ४३, ४४, १६३, ४३३; देखिए देसाई-लियाकत फार्मूला भी
देसाई, मगनभाई प्रभुदास, १७७, ३०८, ३५९, ४५७
देसाई, मणिभाई, १६७
देसाई, महादेव, ७४, २१७, २३५, २३६ पा० टि०, २६० पा० टि०, ३७८, ४९६
देसाई, महेन्द्र गोपालदास, ४५७
देसाई, मोरारजी, २७२
देसाई, वालजीभाई, १६६, १८७, ३५९, ३७५, ३८३, ४२४
देसाई, हसुमति धीरजलाल, ८२
देसाई-लियाकत फार्मूला, —साम्प्रदायिक समझौतेका आधार, ४३; —कांग्रेस-लीग समानताके सम्बन्धमें, ३
दोशी, मणिलाल पोपटलाल, ३३

ध

धर्म, —का पालन ईश्वरको अपने अन्तरमें पहचानने से, ५०३; —यन्त्रवत्, धर्म नहीं, ५००
धर्मान्तरण, —से द्वेषकी उत्पत्ति, ३९१
धोत्रे, रघुनाथ श्रीधर, ४४६ पा० टि०
धोत्रे, नत्थू, ४४६
ध्रुव, आनन्दशंकर बापूभाई, १०३

न

नई तालीम, १५०
नन्दगिर्योल्लियार, प्रियंवदा, २०५, २४०
नयनार, माधवी कुट्टि अम्मा, १७४
नलिनी, २८
नया काल, ३१९, ३३३, ३५० पा० टि०
नवाब साहब, १८१
नाडार, कामराज, ३९८
नाथ, निर्दोष, १२०
नानक, ११४

नानक, गुरु, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६
नानकचन्द, वैद्य, १३६
नानावटी, अमृतलाल टी०, ५४, १६७, १७४, १७७, २६८, ३०८, ३४६
नायक, गजानन, २८९, ३२०, ३५६, ३९७
नायडू, ५०
नायडू, ए० वरदाराजुलु, २३३
नायर, १७७
नायर, कुसुम, १०४
नारंग, गोकुलचन्द, २४३
नारायण, १६९
निजलिंगप्पा, एस०, २०२
निम्बकर, डॉ० कृष्णाबाई, ४२८, ४८४
नियामत, २४, ११५, २९५, ३२९
निर्मला, ३०३
नेशनल लिबरल फेडरेशन, ६१ पा० टि०
नेशनल हेरल्ड, ३२६ पा० टि०
नेहरू, इन्दिरा, १०२, ३४६
नेहरू, जवाहरलाल, ४२, ५१, १००, १०२, १५६, २२१, २४७, २७७ पा० टि०, ३१६, ३१७, ३४१, ४००, ४३४, –और गांधीजी में मतभेद, ३४४, ३४६, –की दृष्टिमें खादी स्वतन्त्रताकी पोशाक, ९७, –गांधीजी के वारिस, ३४६
नेहरू, मोतीलाल, २१४
नेहरू, रामेश्वरी, १३६, ३९०
नेहरू योर नेबर, –की प्रस्तावना, ३१६
नैयर, देवप्रकाश, १८९, ४२०, ४८२
नैयर, सुशीला, १७, १८, २१, ३०, ३१, ३८, ५३, ६५, १३६, १६४, १६७, १७३, १७५, १८८, १९६ पा० टि०, २२५, २३६, २४१, २५०, २५५, २५७, २६१, २६२, २६५, २६८, २६९, २७०, २७१, २८०, २९१, ३०४, ३३४, ३७४, ३८७, ३८८, ३९६, ४१५, ४२५, ४३१, ४३७, ४४१
नोड, कार्डन, २७३
नौरोजी, खुर्शेदबहन, ३२३, ३४२, ३९४, ३९५ पा० टि०, ४२०, ४३२
नौरोजी, दादाभाई, ४० पा० टि०
न्याय, – सच्चा तभी जब उसमें दयाका सम्मिश्रण हो, ४११

प

पकवासा, मंगलदास, ४०५
पटवर्धन, सीताराम पुरुषोत्तम, ३०२
पटेल, खीमजी, २१८, २६०
पटेल, जहाँगीर, ४०४, ४५०, ४५८
पटेल, डाह्याभाई मणिभाई, ३०७
पटेल, मणिबहन, ३२, ७४, १०८, ११८, २०३, ३३८, ४२४
पटेल, वल्लभभाई, ८, १७, १८, २१, ३०, ३१, ३२ पा० टि०, ३३, ३६, ५०, ५१, ५२, ५३, ६५, ६७, ७४, १०८, १०९, ११७, ११८, १३३, १५६, १६९, १८०, १८८, १९२, २०४, २१४, २१७, २२१, २३२, २३५, २७८, ३२२, ३३३, ३३६, ३४१ पा० टि०, ३५९, ३६५, ३६८, ३७८, ३८३, ३९०, ३९१, ३९५, ४१५, ४१६, ४२२, ४२४, ४२५, ४३३, ४३४, ४४७, ४४८, ४४९, ४५९, ४६३, ४६४, ४६६, ४६७, ४७७, ४७८, ४८५
पटेल, शिवाभाई, १०८
पण्ड्या, अरुण बाई०, २०७, २०८
पण्ड्या, प्रवीणा बाई०, २०८
पण्ड्या, भगवानजी पु०, ७३, ४१३, ४१७
पण्डित, वसुमती, १३३
पद्मपत, १२२

पद्मा, २३०
पन्नालाल, २१३
परमाणु बम, –के बारेमें गांधीजी की चुप्पी, २९२, ४५५-५६
परांजपे, वामन कृष्ण, २१५
परांजपे, शिवराम महादेव, २१५
परिमाला, डॉ०, २१०
परीख, नरहरि द्वा०, ७ पा० टि०, ५३, १६७, २१५, २१६, २१८, २२४, २७२, ३१०, ३६८
परीख, वनमाला, ७ पा० टि०, १० पा० टि०, ११, ४६, ५३, १६७. १७७
पाटिल, १११, १२६
पाठक, हरि गणेश, ४५०
पॉपलटन, जे०, १३२
पारडीवाला, ३३
पारनेरकर, यशवन्त महादेव, ९०, १११, १२६, १५३, १६०, १६१, १६३, १६८, १६९, १८७, २०२, २६५, २८३, २८४, ३१०
पारेख, कुँवरजी, ७६, ७७, २३२, ३४३
पार्थसारथी, ए०, १९४
पिंटो, एफ० एम०, ३७६
पीटरसन, एन मारी, १७१, १७२, २४६, २४७, ३२५, ३९१
पोपुल्स बार, ३, ४
पुरी, सुशीला, १७५
पुलिनसील, २४७
पूँजीवाद, २९७
पूर्णचन्द्र, २६५
पेटिट, मीठूबहन, २३२
पेथिक-लॉरेन्स, लॉर्ड, ७५
पै, सुशीला, ३५०, ४७२,
पैसा, –परमेश्वर नहीं है, ५००
पोद्दार, ३८४
पोद्दार, हनुमानप्रसाद, १३०
प्यारेलाल, ३८, ६७, १७५, २२७, २९१, ३४३, ३८३, ३८४, ४१५, ४२४, ४३१, ४३७, ४५२, ४६७, ४९१
प्रकाश, डॉ०, ४९१
प्रकाशम्, टी०, १९२
प्रजा सोशलिस्ट पार्टी, ४३ पा० टि०, २२६ पा० टि०
प्रभाकर, १०७, १११, ११३, १२१, २२५, २२८, २२९, २४०, २५१, २५५, २५६, २७५, ३८७
प्रभावती, १८, २४, ११७, २०४, २०५, २४०, २८१, ३२७, ३४३, ३९६
प्राकृतिक चिकित्सा, –में गांधीजी का असीम विश्वास, ४३३; –में स्वच्छता को प्रथम स्थान, ३३५
प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, खुर्जा, ४१ पा० टि०
प्रार्थना, –के समय अनुशासनका पालन, २७७
प्रिवी कौंसिल, २० पा० टि०, ४७६; –द्वारा अष्टी-चिमूर कैदियोंकी याचिका रद, ७२
प्रीतम, ४६४ पा० टि०
प्रेमा, नाथूराम, ४६४
प्रेमी जयरामदास, ६५, ६८, २७८
प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस, १०, १५८
प्रौढ़ शिक्षा समिति, १८९ पा० टि०

फ

फाउन्डेशन ऑफ पीस, ४८९ पा० टि०
फॉरवर्ड ब्लॉक, ३६३ पा० टि०
फीनिक्स, ३६३
फूलकुँवर, ४६७
फिशमैन, मॉरिस, ८१, १९६
फ्रॉश, अल्फ्रेड, ९२

ब

बंगालके गवर्नर, देखिए केसी, आर० जी०
बंधुस्तान, ४४४
बच्ची (बेन्द्रेकी कन्या), २८
बच्छराज ऐंड कं० लि०, १७८
बजाज, जमनालाल, ५७, २८४, ३७४ पा० टि०
बजाज, रामकृष्ण, २२
बत्रा, अमृतलाल, २२४, २३०
बनर्जी, डॉ० सुरेश, ४५८
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय रचनात्मक मण्डल, ३८७ पा० टि०
बबु / बबुड़ी, देखिए चोखावाला, शारदा गो०
बम्बई उच्च न्यायालय, ४७६
बरुआ, जे०, ४८१
बर्वे, वी० एन०, २६
बलवन्तसिंह, ३१, ४०, ४१ पा० टि०, ९२, २३२, २८७, ३५९, ४७७
बापूकी छायामें, ४१ पा० टि०
बापूके आशीर्वाद, ४९३ पा० टि०, ४९९ पा० टि०
बापूज लेटर्स टु मीरा, ४७७ पा० टि०
बावला, देखिए देसाई, नारायण
बाबाजी, २७५
बाबू, २२४
बाबूराम, ४६०
बॉम्बे क्रॉनिकल, २९ पा० टि०, १६५ पा० टि०, ३६६, ३६७
बारीन, २९९
बालसुन्दरम्, १७९
बिड़ला, गोपी, ३३१
बिड़ला, घनश्यामदास, ८८, २५७, ३३७, ४५८
बिड़ला, जुगल किशोर, ८८
बिड़ला, वसन्त, ८८
बिड़ला, रामेश्वरदास, ८८, ३८७, ४१५
बुद्ध, गौतम, १८६
बेगम आजाद पैसा फंड, ९ पा० टि०
बेगराज, कृष्णदास, २०१
बेन्द्रे, २८
बेरिल, ३०, ४६७
बैंक ऑफ इंडिया लि०, १७८
बैसिक, ३१२
बोस, अमियनाथ, १८५
बोस, एन० के०, ३४२
बोस, ज्योतिष, – को मृत्यु-दण्ड, ४१०
बोस, निर्मलकुमार, ३९४, ३९५ पा० टि०, ४९२
बोस, बेला, ४१२
बोस, विभावती, २५३
बोस, शरतचन्द्र, १४५, २७४, ३०१, ३४१, ३४६
बोस, शैलेशचन्द्र, ४१२
बोस, सुभाषचन्द्र, ३६, १८५ पा० टि०, २७३, ४१२ पा० टि०, ४७५; – की विमान-दुर्घटनामें मृत्यु, १७५
ब्रजकिशोर प्रसाद, २४०
ब्रजलाल, १७३
ब्रह्मचर्य, – और विवाह, १११; – का आश्रममें पालन अनिवार्य, २६५
ब्रिटेन, – की अहिंसा और सत्यकी सच्ची कसौटी उसके द्वारा भारतकी पूर्ण स्वतन्त्रतामें, ३३२
ब्रेल्वी, सैयद अब्दुला, २९

भ

भक्ति, – सच्ची, और निष्काम कर्म, २३६
भगवद्गीता, १९, ३४, ८९, १११, १४७, १५०, १५१, २१०, २३४, ३२९, ४७१
भगिनी सेवा मन्दिर, ३३४

भटनागर, १८५
भट्ट, गोकुलभाई, ३३८, ३६२
भट्ट, हरिश्चन्द्र, २३१
भणसाली, ज० प्र०, ३२ पा० टि०, २१०, २६८, ३१८ ४८६
भरत, ३५५
भर्तृहरि शतक, ३७२, ३९०
भागवत्, २७९ पा० टि०
भानु, ४१४
भारत छोड़ो आन्दोलन, २३१ पा० टि०, २४५ पा० टि०
भारत बैंक, २३८
भारती, एल० कृष्णस्वामी, ३९८
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, १०५, १३८, १९६, २२६, २७३, २८०; – एक प्रातिनिधिक संस्था २४८; – एक लोकतान्त्रिक संस्था, १५६; – और खादी, ३२१; और मुस्लिम लीग में मतभेद, २०३; – और शिमला सम्मेलन, २०४; – और हरिजन, २८८; – का अगस्त प्रस्ताव, ७१, ८०; – का धनिकोंकी सेवा करने का एकाधिकार समाप्त, ४६२; – का हिन्दुस्तानीके बारेमें प्रस्ताव, १०५; – की कार्य-समिति, ३, ७०, १३७, १५२, १९४, २०२, २२५ पा० टि०, ३४५; – की मद्रास प्रान्तीय कमेटीसे चक्रवर्ती राजगोपालाचारीका निष्कासन, ३२२ पा० टि०; – के सदस्योंकी गिरफ्तारी का प्रश्न, ४४, ७१, ७९, ८०; – पर डॉ० अम्बेडकरका प्रहार, १८३, ४०३-४
भार्गव, डॉ० गोपीचन्द, १७४
भार्गव, प्रेमकान्त, २३१
भावे, बालकृष्ण, ७, ४१, ४६, २७५, २८४
भावे, विनोबा, ७ पा० टि०, २२, २४, ९४, १०३, १३९, १५०, २१९, २८१, ३००, ३१३, ३५३, ३६१, ३६८, ४३६, ४४६
भावे, शिवाजी, १५१
भोजन, – में मिर्च-मसालेका प्रयोग केवल स्वादकी दृष्टिसे, २९४
भोपाल, – के नवाब, २७८
भोवाली, नायरकुल, ४४४

म

मंगल ग्रह, – पर जीवन, ३४२
मंगलदास हरिकिशनदास, २२०
मथुरादास, त्रिकमजी, १८, १६७, २६२, २७९, २९९, ३८५
मदालसा, २२, ३५५, ४३६, ४४०
मद्यपान,– और मद, ५०४
मनुष्य और नदी, ४२०
मन्दिर प्रवेश आन्दोलन, २७
मयाशंकर, ३९७
मशरूवाला, कान्ति, ७८
मशरूवाला, किशोरलाल घ०, ३५, १०३, १५० पा० टि०, १५१, १५३, १५४, १६०, १६१, १६३, १६९, १८७, २११, २५०, २५१, २५७, २६१, २६३, २६५, २८५, २९९, ३१०, ३१९, ३२७, ३६१, ३६६, ३६७, ३८१, ३८७, ४११, ४१५, ४१६, ४२५, ४३६, ४४६, ४६४, ४७१, ४८०
मशरूवाला, गोमती, १६९, २६०, ३८१, ३८७, ४६०, ४६४, ४८०
मशरूवाला, तारा, ४१५
मशरूवाला, नानाभाई, ४४९ पा० टि०
मशरूवाला, नीलकण्ठ, ४४९, ४५१
मसाले [लों], – का उपयोग अन्नको

पचाने में, ३९
महबूब, १८२
महमूद, डॉ० सैयद, १८२
महाजनी, ३७१
महादेव स्मारक, २३५, ३८७, ४१५
महादेव स्मारक कोष, ७४ पा० टि०
महेन्द्र प्रताप, राजा, ४२
महेश चरण, २५
महोदय, डॉ०, ३००
माई मास्टर गोखले, ३०६ पा० टि०
मातृभाषा, – की अवगणना, माताकी अवगणना, ४९९
माधवन, ४७८
मामटाणी, रामभाई, २१४
मामा, देखिए कापड़िया, माधवदास
मॉरिसन, एम० एच०, ४६९
मार्क्सवाद, २९७
मालवीय, मदनमोहन, १२२, ३३७ पा० टि०
मालवीय, राधाकान्त, ३३७
मावलंकर, ग० वा०, २७२, ३०२, ३५५, ३५८, ३६६, ३६८
मास्टर, कैलाश डाह्याभाई, २५४, २८४, २९३, ३६१, ३६२, ४६०
मित्र, बेला, २७३ पा० टि०
मित्र, हरिदास, २४५, २७३, २९८, ३५८, ४१०
मिश्र, महेशदत्त, ११२
मीराबहन, ३१, ४०, ९२, २३२, २८७, ३५९, ४६९, ४७७
मीराबाई, ६३
मुंजे, डॉ० बी० एस०, २७६
मुखर्जी, धीरेन्द्रनाथ, २१२
मुन्शी, क० मा०, ४७९
मुन्शी, लीलावती, २२०
मुहम्मद अली, मौलाना, ५९
मुहम्मद सलीम, १४१
मूर्ति, बी० एस०, ४५, १२८, २१३
मेघराज, लाला, १३१
मेनन, एस्थर, ३२५, ३९१
मेनन, बी० के० कृष्ण, १००, १०२, १४०, २२१
मेहता, अन्नपूर्णा, २२
मेहता, कल्याणजी, २३२
मेहता, कुंवरजी, ३९२ पा० टि०
मेहता, गगनबिहारी, ३६७, ३६८
मेहता, गुलबहन, ८, ४६
मेहता, चम्पा, १४ पा० टि०, ५७, २८०, ३५६, ३६०, ४०५
मेहता, छोटूभाई, ३९२
मेहता, जमशेदजी, ३४, २८१, ३३६
मेहता, ज्योतिलाल, ५७
मेहता, डॉ० जीवराज, २३८, ४२५
मेहता, डॉ० दिनशा, ७, ८ पा० टि०, १०, १७, २८, ३३, ४६, ५०, ६२, ८४, १०९, १६५, २२१, २३७, २८३, २९२, ३३५, ४२२, ४३३, ४५०, ४५८, ४५९, ४६३, ४६४, ४६६, ४६७
मेहता, डॉ० प्राणजीवनदास, १४ पा० टि०, २८०, ३११ पा० टि०
मेहता, नरसिंह, ५०२
मेहता, भगवानजी अनूपचन्द, १८६
मेहता, मगनलाल, २८०, ३११, ४०५, ४२५
मेहता, रतिलाल, १४ पा० टि०, ३११, ३६० पा० टि०, ३७९, ४०५ पा० टि०
मेहता, वैकुण्ठलाल, ११४, २३८, ३६७, ३६८, ४१६
मेहता, शशिकान्त, ३११, ३५६, ४०५
मेहता, शान्तिलाल, ३९६
मेहता, सर फिरोजशाह, – भारतीय राष्ट्रीय

कांग्रेसके संस्थापक, २९
मेहता,-सरला, १४, २८०, ३५६
मेहताब, हरेकृष्ण, ११९ पा० टि०, १२०, १३४
मेहरअली, यूसुफ, ३३४
मैक्केनर, लॉरेन्स, १७६
मैथ्यू, पी० एन०, ४२७
मैसूर, – के महाराज, ८३
मोडक, ताराबहन, ३९२
मोन्टेसरीबहन, ३९३
मोरारजी, शान्तिकुमार, २३५
मोहनसिंह, ९०, २३६
मृत्यु, –और जन्म, ४६६, ४९३; – पर शोक व्यर्थ, २८, ५८

य

याजी, शीलभद्र, ३६३ पा० टि०
युद्ध, – की निरर्थकता, २९७

र

रंगनायकी देवी, १८०
रचनात्मक कार्य, ९; – अहिंसाका प्रतीक, १३९
रजनी, २०३, २३६, ३६१
रणजीतसिंह हरमामजी, २७४
रतनदेवी, ३९८
रत्नमयी देवी, १२१, ३५१
रमण, १५४, १५५
रलियातबहन वृन्दावनदास, ४४२
रसगुल्ला, देखिए भरत
रसिकलाल, २७१
रहीम, ए०, २१२
रांका, धनवती, ३५०
रांका, पूनमचन्द, २४२, ३५०, ४६४
राखी,–शुद्धिका चिह्न, २२३
राजगोपालाचारी, चक्रवर्ती, ६९, ८०, १८३, ३२२, ३४९, ४०४, ४६०, ४६१, ४७८, ४९१; – का कांग्रेस से इस्तीफा, २३३
राजवाड़े, राजा, ३०४
राजवाड़े, रानी, ३०४
राजाजी फार्मूला, ८०, ९७ पा० टि०; –स्वीकार करने के बारेमें गांधीजी का स्पष्टीकरण, ४६१
राजू, डॉ०, ३१२
राजेन्द्रप्रसाद, १६, २५, ४२, ५१, ५२, ८८, १४०, २१४, ४३४
राठी, मोतीलाल, २७०
रानाडे, महादेव गोविन्द, ३०४ पा० टि०
रानाडे, रमाबाई, ३०४
राम-गीता, ४७९
रामचन्द्रन, १५४, ८८५
रामनाथन, एस०, ३०६
रामनाम, १६२, ४९२; – और श्रद्धा, २६३; – का महत्त्व, ६५, ४३६
रामप्रसाद, ११५, १२४, २७०, २९५, ३२९, ३७२, ४८०
राममूर्ति, पामु, २८८
रामरखामल, पंडित, ३१६
रामायण, १५०
राय, डॉ०, २४४
राय, दिलीपकुमार, ४६८
राव, ए० कालेश्वर, २४
राव, के० राम, ३२६
राव, जी० रामचन्द्र, ४६१
राव, रामचन्द्र, १६५
राव, विनायक, १९३
राष्ट्रभाषा, – की व्याख्या, ३२, १०५, ४४३
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, २९ पा० टि०
रिचर्डसन, सर हेनरी, १ पा० टि०
रूपलेखा, ८६

रे, पी० सी०, ४०१
रेड्डी, ४६०
रेड्डी, गोपाल, ७०
रेड्डी, गोविन्द, १९३

ल

लक्ष्मी, १०३, १७९
लक्ष्मी (देवी), ६३
लक्ष्मी, वी०, १२३
लाल, डॉ० एच० के०, ४४५
लालचन्द, १७२, ३१६
लिनलियगो, लॉर्ड, ४०६, ४७६ पा० टि०
लोडर, ६१ पा० टि०
लेबर सरकार, ५२
लोकयुद्ध, –पर प्रतिबन्ध, ४
लोहिया, राममनोहर, ४१९

व

वन्देमातरम्, ३३९
वर्णव्यवस्था, २६
वर्मा, डॉ० कृष्ण, ६, ८, ३५, ३९, ६२, ७६, ७७, ७८, १३३, १७९, २६१, २६२, २८०, ३०८
वर्मा, मोहनलाल, ४०८
वर्मा, सर्वजीतलाल, ४८४
वसनजी हाँसजी, ४८७
वसन्तलाल, ३४३
वाइकोम सत्याग्रह, २२४ पा० टि०
विद्यादेवी, २२३
विद्यार्थी (थियों) – को एकजुट रहने की सलाह, १, – जीवन एक प्रकारका भारी और कठिन सन्यास, २३७
विनायक, कुमार चिन्तामन, ४०८
विवाह, – की विधियोंमें परिवर्तन आवश्यक, १०३, – भोगके लिए नही, सेवाके लिए, १११
विवेकानन्द, ८३, १७६
विशाल भारत, २८२ पा० टि०
विश्वभारती, ३२४ पा० टि०
विश्व-शान्ति, – के लिए अहिंसा आवश्यक, २९७
विश्वेश्वरैया, मोक्षगुण्डम्, २६९
विष्णु (भगवान), ७
वीरभानु ३५७
वेंकटप्पैया, कोंडा, ३२५
वेंकटाकृष्णैया, ११०
वेजवुड, जोसिया क्लेमेन्ट, ४५६
वेजवुड, फ्लोरेन्स, ४५६
वेद,– और चरखा, १२१; – सच्चे, अव्यक्त, १०३
वेलायुधन, १०३
वेवल, लॉर्ड, १५ पा० टि, २०, २१, २५, ३३ पा० टि०, ३६, ३७, ५१, ५२, ७२, २७३, ४११
वैंज, एस० ए०, ४२३
वैद्य, लक्ष्मीशंकर, ४८०
वोरा, देवराज, ५६
व्यासतीर्थ, एन०, ३०९
व्रजलाल, १५३, २०३
व्हाट कांग्रेस एण्ड गांधी हेव डन टु द अनटचेबल्स, १८३ पा० टि०

श

शकरन, १५४, २२५, २४३, २५०, २५१, २५५, २६९
शमशेर सिंह, ३०, ९९
शम्भू, ३४
शरद कुमारी, १३५
शरीर, – आत्माका निवास-स्थान, १३९
शर्मा, २७१
शर्मा, कमला, १९३
शर्मा, कृष्णनाथ, १५२
शर्मा, डॉ० हीरालाल, ४१, ४८, ९२,

२१९, २७५, ४२२, ४६६
शर्मा, विचित्रनारायण, ४८, ४७४
शर्मा, श्रीकृष्णनाथ, २०३
शर्मा, हरिहर, १९३
शान्ता, २८४
शान्ति, २३
शारजा, ३४
शास्त्री, धर्मदेव, ४८, ५५
शास्त्री, परचुरे, ९, १०३, १२१, २०१, २१९, २५२, २६७, ३००
शास्त्री, वी० एस० श्रीनिवास, ९७, ३०६, ४९१
शास्त्री, वेंकटरामन, २१४
शाह, कंचन मु०, ८९, ९१, ११५, १५३, १५५, १९७, १९८, २५५, २९८, ३००, ३१४, ३२६, ३४०, ४८५
शाह, के० टी०, ३६८
शाह, खुशाल, ३६६, ३६७, ३८०, ४२५, ४८९
शाह, चन्दू, २७८
शाह, चिमनलाल नरसिंहदास, १६०, १६२, १७८, १९३, २१९, २२१, २७०, ३१०, ३७८, ४३८
शाह, छगनलाल, ४९०
शाह, त्रिभुवनदास, १६८
शाह, नवनीत, ४२६
शाह, मुन्नालाल गंगादास, २८, ८९, ९१, १०७, १११, ११५, ११९, १२५, १२६, १३८, १५३, १५५, १६०, १६१, १९७, २१८, २३६, २३९, २५५, २६०, २७५, २८३, २९९, ३२६, ३४०, ३५२, ३५३, ४८५
शाह, रमणलाल, २६०, ३२०
शाह, शकरीबहन, १६२, १९३, १९४, २९४, ३२८
शाह, हेमेन्द्र किशोरदास, २४९
शिक्षा,— धार्मिक, शालाओं और संस्थाओं में, २२०
शिमला सम्मेलन, —की विफलता, १, २, ९
शिव (भगवान), २६३, ३४०
शिवराज, राव बहादुर, १ पा० टि०
शुक्ल, प्रयागदत्त, १६५
शुक्ल, मणिलाल, ३३९
शुक्ल, वजुभाई, ३८६
शुक्ल, श्रीमती, ३०३
श्यामलाल, २६, २७, ३०, ३७, ४८, ५५, ५७, ८१, १६६, १७२, २४१, २४७, २९०, ३५८
श्रद्धा, — और बुद्धि, २६३; — में दलीलको अवकाश नहीं, १५; — में निराशा को कोई स्थान नहीं, ५०१
श्रद्धानन्द, स्वामी, २३१ पा० टि०
श्रीनिवासन, कस्तूरी, ३३१, ३४९
श्रीमन्नारायण, २९, १५१, ४३६, ४४३, ४५२, ४८३

स

सघर्वा, जयन्त, १९७
संन्यासी, भवानीदयाल, ४१८
संयुक्त प्रान्त, — में तीन साम्यवादी साप्ताहिकोंपर सरकारका प्रतिबन्ध, ४
संयुक्त राष्ट्र सांस्कृतिक और शैक्षणिक सम्मेलन, ३६५ पा० टि, ४०२ पा० टि०
सईद खाँ, कैप्टेन सर मुहम्मद अहमद, ४९
सत्य, — अन्तरमें ढूँढ़ने से मिलता है, ४९४; — और अहिंसाके बिना मनुष्य जातिका नाश, ३४५; — और अहिंसा भी राजनीतिक शब्द, २२६; — और अहिंसा स्वयं प्रकाश है, ५०३; — में विश्वास अहिंसाके

बिना सम्भव नही, ४९८
सत्यदेव, स्वामी, ४७३
सत्यनारायण, म०, १०५ पा० टि०
सत्यभामा देवी, ४१७ पा० टि०, ४२१, ४५५
सत्यमूर्ति, एस०, १७९ पा० टि०
सत्यवती, २३१, ३३०, ३८८, ३९४, ३९५, ४३०, ४३१, ४३२, ४३८, ४४०, ४५३
सत्याग्रह, – और हरिजन सेवक संघ, १३७, – वर्गहीन समाजके लिए, २२६, – त्राइकोममें, २२४ पा० टि०
सत्याग्रही, – का एकमात्र अधिकार सेवा, ४९४
सत्यार्थ प्रकाश, १९१ पा० टि०
सद्गुण, – के बिना शुद्ध ज्ञान नही, ४९५
सनाढ्य, तोताराम, २८२
सन्तानम्, के०, ४०३, ४०४, ४४८
सप्रू, तेजबहादुर, ३७७, ४३४ पा० टि०
समाचारपत्र,– में सही खबर नही, ४९७
समाजवाद, २९७
सम्पूर्णानन्द, ४७
सरदेसाई, एम० वी०, २३४
सरदेसाई, डॉ० वी० एन०, १८१
सरला देवी, देखिए हेलिमैन, कैथेरीन
सर्वदलीय राजनीतिक बन्दी मुक्ति संघर्ष समिति, ४ पा० टि०
सहगल, ४३४ पा० टि०
सहजानन्द, ए० एस०, ४१०
साइमण्ड्स रिचर्ड, १००, १३१
साम्यवाद, २९७
साम्यवादी, – और कांग्रेस-लीग समानता का फार्मूला, ३
सारजन्ट, जॉन, ४४७
साराभाई, अनसूया, २२८
साराभाई, अम्बालाल, १९ पा० टि०, २२८ पा० टि०
साराभाई, मृदुला, १९, ५४, २२८, ३३८, ३७९, ४८६,– के कस्तूरबा ट्रस्टके मन्त्री-पदसे त्यागपत्र देने की सराहना, ३८५-८६
सालेहभाई, ३२४
सिंगर, आइजॅक मैरिट, १०१
सिंह, अनुग्रह नारायण, १४४ पा० टि०, २८६
सिंह, बसुदा, – को मृत्यु-दण्ड, ४८२
सीतलवाड, चिमनलाल, ३३३
सीतलवाड, मोतीलाल, २१४
सीतारामैया, डॉ० पट्टाभि, ३८, ६९, ७०, ७१,– और देसाई-लियाकत फार्मूला, ४३
सुखदेव, ३६
सुन्दरम्, आनन्द, ३०५
सुन्दरम् वी० ए०, १२२, २५८, ३०५, ३८८
सुन्दरलाल, पंडित, २३१
सुन्दरी, ३१५
सुब्बारायन, पी०, २३३ पा० टि०, ३२२ पा०टि०, ४४८ पा० टि०
सुब्बारायन, राधाबाई, ४४८
सुरेन्द्र, २६३, ३५२
सुशी, ४४१
सूत, – मुद्राके स्थानपर, ३०९
सूत्रनारायण, ८३
सूरदास, २२२
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया लि०, १७८
सेनगुप्त, भूपेन्द्रनाथ, २४६
सेलर, इमैनुअल, १९५
सैयद, १८२
सोदपुर खादी प्रतिष्ठान, ४९१
सोहनलाल, १९०
सौंदरम्, १२७

स्टेट्स पीपल कांफरेन्स, २०२
स्त्री, –अबला नहीं है, ४९९
स्मट्स, जे० सी०, ३६३
स्वच्छता,– और उसके नियमोंका पालन, ७८-७९
स्वराज पार्टी, ५ पा० टि०
स्वराज्य, – अहिंसक, कताई बिना सम्भव नहीं, ५९-६१, १४८; – और अनुशासन, २७७; – और खादी, ९५-९६, ३२१;–की प्राप्ति अहिंसा द्वारा, ९५-९७, १९५; –की प्राप्ति शान्तिमय उपायों द्वारा, ४३५; – सूतके हर तारमें, ११६, १४३
स्वावलम्बन, – और खादी, ४३५

ह

हठीसिंह, गुणोत्तम, ३४४
हबीब, १८२
हमीदुल्ला, १२८
हरिजन, १६६, २१३; – और बी० आर० अम्बेडकर, १३०; – और हिन्दू-धर्मका उद्धार, १०३; –[ों] के कांग्रेस द्वारा शोषणसे कांग्रेसका ही अहित, २८८; – की सेवा दो प्रकार से, २६-२७; – के नागरिक अधिकार और सत्याग्रह, १३६-३७
हरिजन उद्योगशाला, कोदम्बक्कम, १३५ पा० टि०
हरिजन उद्योगशाला कोष, २९० पा० टि०
हरिजन कोष, – के लिए हाथ-कता सूत देने की अपील, २९५
हरिजन सेवक संघ, २६, १३६, १३७, १६६ पा० टि०, १८३ पा०टि०, ३९३, ३९५, ४०३, ४८७; – और अस्पृश्यता-निवारण, १२८-२९;–में नवजीवनका संचार, १२८-२९
हस्त उद्योग, – और स्वावलम्बन, १३९
हॉग, डोरोथी, २२७
हॉफमैन, क्लैरा, ४६८ पा० टि०
हॉफमैन, आर० सी०, २५१
हिंगोरानी, आनन्द तो०, ६८, १७३, २२२, २७८, ३४७, ३९४
हिंगोरानी, महादेव, ३९४
हिंगोरानी, विद्या, ६८, २२२, ३४७
हिटलर, एडोल्फ, ४११
हिन्द स्वराज, ३४४, ३४५
हिन्दी, – और उर्दूका सम्मिश्रण ही राष्ट्रभाषा, ३५, ४४३
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ३५७ पा० टि०
हिन्दुस्तान टाइम्स, ४०३ पा० टि०
हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघ, – का संविधान, २२६
हिन्दुस्तानी, – हिन्दी-उर्दूका मिश्रण, १०५; – का प्रयोग कार्यालय और बहीखातोंमें, १६६
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, १२६, १५७
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, ४६२
हिन्दू, ४३, ८०, ३३१ पा० टि०
हिन्दू, – और अस्पृश्यता, ४४, १३६-३७; –[ओं] को शुद्धिके लिए अतिशूद्र बनना है, ५०
हिन्दू-धर्म, – और अस्पृश्यता, २६, १२९, १३६; – और हरिजन, १०३
हीरामणि, ११५, १५३, २५५, ३२६
हुमायूं कबीर, २३ पा० टि०, ४२०
हेलिमैन, कैथेरीन, ४९
हैदरी, सर अकबर, ४९, ५०
हैरिसन, एगथा, १४०, २२७
होशियारी, ३१, ४०, ४१, ८९, ९२, ११९, पा० टि०, १६१, १६२, १८९, २३२, २३९, २५४, २५६, २५७, २७५, २८६, २८७, ३१५
हृषिकेश, पंडित, १६५